॥ श्रीः ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-

षोडश रामायण संग्रह।

श्रीरामनहछू, वैराग्यसंदीपिनी, बरवारामायण, पार्वतीमंगल, जानकीमंगल, श्रीरामगीतावली, श्रीकृष्णगीतावली, श्रीरामाज्ञाप्रश्न, दोहावली, कवित्त रामायण, विनयपत्रिका, कलिधर्माधर्मनिरूपण, हनुमान्बाहुक, छप्पयरामायण, हनुमान्चालीसा और संकटमोचन।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् १९८८, शके १८५३.



मुद्रक और प्रकाशक-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
मालिक-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.



श्रीः ।

भूमिका ।



विदित हो कि सम्पूर्ण भगवद्भक्त हरिचरणानुरागियोंके आनन्दार्थ तथा कराल कलिमल ग्रसित पुरुषोंके निस्तारार्थ और भगवत् कथामृत प्रेमियोंकी पूर्ण तृप्त्यर्थ हमने श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजीके समग्र (१६) ग्रंथ एकत्र करके मुद्रित किये हैं। यह ग्रंथ परम क्लिष्टतासे प्राप्त कर उत्तम विद्वानोंके द्वारा शुद्ध कराकर अत्युत्तम रीतिसे छापे हैं। ग्रंथोंकी संख्या निम्न लिखित रूपसे है ॥

१ श्रीरामललानहछू—इसमें सोहर छन्दमें परम मनरंजन दुःखभंजन श्रीरामचंद्रजीके नह काटनेका वर्णन है, तथा शृंगार और हास्यरसका अधिक उद्दीपन है ॥

२ वैराग्यसंदीपिनी—इसमें अत्युत्तम सामयिक दोहा चौपाई ज्ञान भक्तिमार्गी तथा राजनीतिक वर्णित हैं संतस्वभाव संत महिमा और शांति रसका भी उत्तम प्रकारसे वर्णन है ॥

३ बरवारामायण–बरवाछंदमें सातोंकाण्ड रामायण सूक्ष्म रीतिसे वर्णित है ॥

४ पार्वतीमंगल–उमामहेश्वरका विवाह विस्तार पूर्वक वर्णित है॥

५ जानकीमंगल–जगज्जननीजनकसुता जानकीजी और रामचन्द्रजीका विवाह विस्तार पूर्वक वर्णित है ॥

६ गीतावली–सातौकाण्ड रामायण अनेक प्रकारके रागरागिनियोंमें वर्णित है ॥

७ श्रीकृष्णगीतावली–श्रीकृष्णचरित्र तथा उद्धव गोपियोंका पवित्र चरित्र मनहरन रागरागिनियोंमें वर्णित है ॥

८ रामाज्ञाप्रश्न–यह प्रश्न अत्यंतही सत्य प्रश्नके अनुकूल उत्तर बताता है ॥

९ दोहावली–इसमें राजनीतिक अत्युत्तम दोहा हैं ॥

१० कवित्तरामायण–सातौकाण्ड रामायण कवित्त घनाक्षरी और सवैयोंमें वर्णित है ॥

११ कलिधर्म्माधर्मनिरूपण–कलियुगके धर्म और अधर्मका विवरण दोहा चौपाइयोंमें उत्तम रीतिसे वर्णन किया गया है ॥

१२ विनयपत्रिका–अनेक रागरागिनियोंमें विनयके पद गान रसिक हरिभक्तोंके उपकारार्थ वर्णित हैं॥

१३ हनुमानबाहुक–इसके पाठसे शरीरकी पीडा शांत होती है, जो रोचक कवित्तोंमें वर्णित है ॥

१४ छप्पयरामायण–सातौ काण्ड रामायण सूक्ष्मतासे छप्पयछन्दमें वर्णित है ॥

१५ हनुमानचालीसा–इसके पाठसे विघ्नकी शांति और कार्यकी सिद्धि होती है ॥

१६ संकटमोचन–यह भी मांगलिक और दुःखहर्त्ता है ॥

अथ

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-

श्रीरामललानहछू, वैराग्यसंदीपिनी, श्रीबरवारामायण।



खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् १९८८, शकाब्दाः १८५३.

श्रीजानकी वल्लभो विजयते ।

अथ श्रीगोस्वामी तुलसीदासकृत-

श्रीरामलला नहछू प्रारम्भः ।

सोहरछंद ।

आदि शारदा गणपति गौरी मनाइयहो ॥ रामलला कर नहछू गाइ सुनाइयहो ॥ जेहि गाये सिधि होय परमनिधि पाइयहो ॥ काटि जनमकर पातक दूरि सो जाइयहो ॥ १ ॥ कोटिन्ह बाजन बाजहिं दशरथके गृहहो ॥ देवलोक सब देखहिं आनँद अतिहियहो ॥ नगर सोहावन लागत वरणि न जाते हो ॥ कौशल्याके हर्ष न हृदय समाते हो ॥ २॥ आलेहि बाँसके माँडव मणिगण पूरनहो ॥ मोतिन्ह झालर लागि चहूँ दिशि झूलनहो ॥ गंगाजल कर कलशतौ तुरित मँगाइयहो ॥ युवतिन्ह मंगलगाइ राम अन्हवाइयहो ॥३॥ गजमुकता हीरामणि चौक पुराइयहो ॥ देइ सुअरघ राम कहँ लेइ बैठाइयहो ॥ कनकखंभ चहुँ ओर मध्य सिंहासनहो ॥ माणिक दीप बराय बैठि तेहि आसन हो ॥४॥ बनि बनि आवत नारि जानि गृहमायनहो ॥ विहँसत आउ लोहारिनि हाथ बरायनहो ॥ अहिरिनि

हाथ दहैडि शकुन लेइ आवहि हो ॥ उनरत योवन देखि नृपति मनभावइहो ॥ ५ ॥ रूप सलोनि तँबो-लिनि बीरा हाथहिहो ॥ जाकी ओर विलोकहि मन तेहि साथहिहो ॥ दरजिनि गोरे गात लिहे कर जोरा हो ॥ केशरि परस लगाइ सुगन्धन बोराहो ॥ ६ ॥ मोचिनि वदन सकोचिनि हीरा मांगनहो ॥ पनिह लिये करशोभित सुन्दर आँगनहो ॥ बतियाकै सुघरि मलिनिया सुन्दर गातहिहो ॥ कनक रतनमणि मौर लिहे मुसकातहिहो ॥ ७ ॥ कटिकै छीन बरनिआँ छाता पानिहिहो ॥ चन्द्रवदनि मृगलोचनि सब रस खानिहि हो ॥ नैन विशाल नउनियां भौंह चमकावइ हो ॥ देइ गारी रनिवासहि प्रमुदित गावइहो ॥ ८ ॥ कौशल्याकी जेठि दीन्ह अनुशासन हो ॥ नहछू जाइ करावहु बैठि सिंहासनहो ॥ गोद लिहे कौशल्या बैठी रामहि बरहो ॥ शोभित दूलह राम शीशपर आंचर हो ॥ ९ ॥ नाउनि अतिगुणखानि तौ बेगि बोलाइ हो ॥ करि शृंगार अति लोन तौ विहँसति आईहो ॥ कनक चुनिनसो लसित नहरनी लिये करहो ॥ आनँद हिय न समाइ देखि रामहि वरहो ॥ १० ॥ काने कनक तरीवर वेसरि सोहहिहो ॥ गजमुक्ताकर हार कंठमणि मोहहिहो ॥ कर कंकण कटि किंकिणि नूपुर बाजहि हो ॥ रानीकै दीन्हीं सारी तौ अधिक विराजहिहो ॥ ११ ॥

कहे रामजिउ साँवर लछिमन गोरहो ॥ की दुहुँरानि कौशिलहि परिगा भोरहो ॥ राम अहहिं दशरथके लछिमन आनकहो ॥ भरत शत्रुहन भाइ तौ श्रीरघुनाथ कहो ॥ १२ ॥ आजु अवधपुर आनँद नहछू राम-कहो ॥ चलहु नयनभरि देखिय शोभा धामकहो ॥ अति बड भागचल नउनियाँ छुए नख हाथसों हो ॥ नैनन्ह करत गुमान तौ श्रीरघुनाथसों हो ॥ १३ ॥ जो पगु नाउनि धोवइ राम धोवावहिंहो ॥ सो पग धूरि सिद्ध मुनि दरशन पावहिं हो ॥ अतिशय पुहुप-कमाल राम उर सोहहिंहो ॥ तिरछी चितवनि आनँद मुनि मुख जोहहिंहो ॥ १४ ॥ नखकाटत मुसुकाहिं वरणि नहिं जातहिहो ॥ पद्मपरागमणिमानहुँ कोमल गातहिहो ॥ जावक रचित अँगुरियन्ह मृदुल सुठारी हो ॥प्रभुकर चरण प्रछालि तो अति सुकुमारीहो॥१५॥ भई निछावरि बहु विधि जो जस लायकहो ॥ तुलसि-दास बलि जाउँ देखि रघुनायक हो ॥ १६ ॥ भरिगाडी नेवछावरि नाऊ लेइ आवइहो ॥ परिजन करहिं निहाल अशीशत आवइहो ॥ तापर करहिं सुमौज बहुत दुख खोवहिं हो ॥ होइ सुखी सब लोग अधिक सुख सोव-हिंहो ॥१७॥ गावहिं सब रनिवास देहिं प्रभु गारीहो ॥ रामलला सकुचाहिं देखि महतारी हो ॥ हिलिमिलि

करत सर्वांग सभारस केलि हो ॥ नाउनि मनहरषाइ सुगंधन मेलिहो ॥ १८ ॥ दूलहको महतारि देखि मन हरषै हो ॥ कोटिन्ह दीन्हेउ दान मेघ जनुबरषैहो ॥ रामललाकर नहछू अति सुख गाइयहो ॥ जेहि गाये सिधि होइ परमनिधि पाइयहो ॥ १९ ॥ दशरथराउ सिंहासन बैठि बिराजहिंहो ॥ तुलसिदास बलि जाहि देखि रघुराजहिंहो ॥ जे यह नहछू गावैं गाई सुनावइँ हो ॥ ऋद्धि सिद्धि कल्याण मुक्ति नर पावइँ हो॥२०॥

इति श्रीगोसांईतुलसीदासजी विरचित श्रीरामललानहछू संपूर्णम् ।



श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

अथ श्रीगोस्वामि तुलसीदास कृत-

वैराग्यसंदीपिनी–प्रारम्भः ।



॥ दोहा ॥ राम वामदिशि जानकी, लषण दाहिनी ओर ॥ ध्यान सकल कल्याणमय, सुरतरु तुलसी तोर ॥ १ ॥ तुलसी मिटै न मोह तम, किये कोटि गुणग्राम ॥ हृदय कमल फूलै नहीं, विनु रविकुल रवि-राम ॥ २ ॥ सुनत लखत श्रुति नयन विनु, रसना विनु रसलेत ॥ वास नासिका विनु लहै, परसै बिना निकेत ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ अज अद्वैत अनाम, अलख-रूप गुणरहित जो ॥ मायापति सोइराम, दास हेतु नर-तनु धरेउ ॥ ४ ॥ दोहा ॥ तुलसी यह तनु खेत है, मन वच कर्म किसान ॥ पाप पुण्य द्वै बीज हैं, बवै सो लहै निदान ॥ ५ ॥ तुलसी यह तनु तवा है, तपत सदा त्रैताप ॥ शांति होहि जब शांति पद, पावै राम प्रताप ॥ ६ ॥ तुलसी वेद पुराण मत, पूरण शास्त्र विचार ॥ यह विराग संदीपिनी, अखिल ज्ञानको सार ॥ ७ ॥ (अथ संत स्वभाव वर्णनम्) ॥ दोहा ॥ सरल वरण भाषा सरल, सरल अर्थमय मानि ॥ तुलसी सरले

संतजन ताहिपरी पहिचानि॥८॥ चौपाई ॥ अति शीतल अतिही सुखदाई । शम दम राम भजन अधिकाई ॥जड जीवनको करै सचेता । जग माहीं विचरत यहि हेता॥९॥ दोहा ॥ तुलसी ऐसे कहु कहूँ, धनि धरणी ,वहु संत ॥ परकाजे परमारथी, प्रीति लिये निबहंत ॥ १० ॥ की मुख पट दीन्हें रहै, यथा अर्थ भाषंत ॥ तुलसी या संसारमें, सो विचारयुत संत ॥ ११ ॥ बोलै वचन विचारिकै, लीन्हें संत सुभाव ॥ तुलसी दुख दुर्वचनके, पंथ देत नहिं पाव ॥ १२ ॥ शत्रु न काहू करि गनै, मित्र गनै नहिं काहि ॥ तुलसी यह मन संतको, बोलै समता माहिं ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ अति अनन्य गति इंद्रीजीता । जाको हरि विनु कतहुँ न चीता ॥ मृगतृष्णा सम जग जिय जानी । तुलसी ताहि संत पहिचानी ॥ १४ ॥ दोहा ॥ एक भरोसो एक बल, एक आस विश्वास ॥ रामरूप स्वाती जलद, चातक तुलसीदास ॥ १५ ॥ सो जन जगत जहाज है, जाके राग न दोष ॥ तुलसी तृष्णा त्यागिकै, गहेउ शील संतोष ॥ १६ ॥ शीलगहनि सबकी सहनि, कहनि हीय मुख राम ॥ तुलसी रहिए यहि रहनि, संत जनको काम ॥१७॥ निज संगी निज सम करत, दुर्जन मन दुख दून ॥ मलयाचल हैं संत जन, तुलसी दोष विहून ॥ १८ ॥ कोमलवाणी संतकी, श्रवै अमृतमय

आय ॥ तुलसी ताहि कठोर मन, सुनत मौन होइ जाय ॥ १९ ॥ अनुभव सुख उत्पति करत, भवभ्रम धरै उठाय ॥ ऐसी वाणी संतकी, जो उर भेदै आय ॥ ॥ २० ॥ शीतलवाणी संतकी, शशिहूते अनुमान ॥ तुलसी कोटि तपनि हरै, जो कोउ धारै कान ॥ २१॥ चौपाई ॥ पापताप सब शूल नशावै। मोह अंध रवि वचन बहावै ॥ तुलसी ऐसे सद्गुरु साधू। वेद मध्य गुण विदित अगाधू ॥ २२ ॥ दोहा ॥ तन करि मन करि वचन करि, काहू दूषत नाहिं ॥ तुलसी ऐसे संतजन, राम रूप जग माहिं ॥ २३ ॥ मुख देखत पातक हरै, परसत कर्म विलाहिं ॥ वचन सुनत मनमोह गत, पूरुव भाग मिलाहिं ॥२४॥ अति कोमल अरु विमल रुचि, मानसमें मल नाहिं ॥ तुलसी रत मन होइ रहै, अपने साहिबमाहिं ॥ २५ ॥ जाके मनते उठि गई, तिल तिल तृष्णा चाहि ॥ मनसा वाचा कर्मना, तुलसी वंदत ताहि ॥ २६ ॥ कंचन काचहि सम गनै, कामिनि काष्ठ पषान ॥ तुलसी ऐसे संतजन, पृथिवी ब्रह्मसमान ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ कंचनको मृतिका करि मानत। कामिनि काष्ठ शिला पहिचानत ॥ तुलसी भूलि गयो रस एहा ॥ ते जन प्रगट रामकी देहा॥२८॥ दोहा ॥ अकिंचन इंद्रिय दमन, रमन राम इक तार ॥ तुलसी ऐसे संतजन, विरले या संसार ॥२९॥ अहंवाद

मैं तैं नहीं, दुष्टसंग नहिं कोइ ॥ दुखते दुख नहिं ऊपजे, सुखते सुख नहिं होइ ॥ २० ॥ सम कंचन काचे गिनत, शत्रु मित्र सम दोइ॥ तुलसी या संसारमें, कहत संतजन सोइ ॥ २१ ॥ विरले विरले पाइए, माया त्यागी संत॥ तुलसी कामी कुटिल कलि, केकी काक अनंत ॥२२॥ मैं तैं मेटचो मोह तम, उगो आतमा भानु ॥ संतराज सो जानिए, तुलसी या सहिदानु ॥ २३ ॥

इति श्रीवैराग्यसंदीपिनी महामोहविध्वंसिनी संतस्वभाव-
वर्णनं नाम प्रथमप्रकाशः ॥ १ ॥

(अथ संतमहिमावर्णनम्) ॥ सोरठा ॥ को वरणै मुख एक, तुलसी महिमा संतकी ॥ जिन्हके विमल विवेक, शेष महेश न कहि सकत ॥ १ ॥ दोहा ॥ महि पत्री करि सिंधु मसि, तरु लेखनी बनाइ ॥ तुलसी गणपतिसों तदपि, महिमा लिखी न जाइ ॥ २ ॥ धन्य धन्य माता पिता, धन्य पुत्र वर सोइ ॥ तुलसी जो रामहिं भजै, जैसेहु कैसेहु होइ ॥ ३ ॥ तुलसी जाके वदनते, धोखेउ निकसत राम ॥ ताके पगकी पगतरी, मेरे तनुको चाम ॥ ४ ॥ तुलसी भगत श्वपच भलो, भजै रैनि दिन राम ॥ ऊँचो कुल केहि कामको, जहाँ न हरिको नाम॥५॥अति ऊँचे भूधरनिपर, भुजगनके अस्थान ॥ तुलसी अति नीचे सुखद, ऊख अन्न

अरु पान ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ अति अनन्य जो हरिको दासा। रटै नाम निशि दिन प्रतिश्वासा ॥ तुलसी तेहि समान नहीं कोई। हम नीके देखा सब लोई ॥ ७ ॥ यदपि साधु सबही विधि हीना। तद्यपि समता केन कुलीना ॥ यह दिन रैनि नाम उच्चरै। वह नित मान अगिनिमें जरै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ दास-रता एकनामसों, उभयलोक सुख त्यागि ॥ तुलसी न्यारे ह्वै रहे, दहै न दुखकी आगि ॥ ९ ॥

इति श्रीवैराग्यसंदीपिनी महामोहविध्वंसिनीसंतमहिमा-वर्णनं नाम द्वितीयप्रकाशः ॥ २ ॥

(अथ शांतिवर्णनम्) ॥दोहा॥ रैनिको भूषण इंदु है, दिवसको भूषण भानु॥ दासको भूषण भक्ति है, भक्तिको भूषण ज्ञान ॥ १ ॥ ज्ञानको भूषण ध्यान है, ध्यानको भूषण त्याग ॥ त्यागको भूषण शांतिप्रद, तुलसी अमल अदाग ॥ २ ॥ चौपाई ॥ अमल अदाग शांति प्रदसारा। सकल कलेशन करत प्रहारा ॥ तुलसी उर धारै जो कोई। रहै अनंद सिंधु महँ सोई ॥३॥ त्रिविध पाप संभव जो तापा। मिटहि दोष दुख दुसह कलापा ॥ परम शांति सुख रहै समाई। तहँ उतपात न भेदै

आई ॥ ४ ॥ तुलसी ऐसे शीतल संता ॥ सदा रहैं यहिभाँति एकंता ॥ कहा करैं खल लोगभुजंगा ॥ कीन्ह्यो गरल शील जो अंगा ॥ ५ ॥ दोहा ॥ अति शीतल अतिही असल, सकल कामनाहीन ॥ तुलसी ताहि अतीत गनि, वृत्ति शांति लयलीन ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ जो कोइ कोप भरे मुखबैना ॥ सन्मुख हते गिराशरपैना ॥ तुलसी तऊलेश रिस नाहीं ॥ सो शीतल कहिये जगमाहीं ॥ ७ ॥ दोहा ॥ सातदीप नव खंडलों, तीनिलोक जगमाहिं ॥ तुलसी शांति समान सुख, अपर दूसरो नाहिं ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ जहाँ शांति सतगुरुकी दई । तहां क्रोधकी जर जरि-गई ॥ सकल कामवासना बिलानी ॥ तुलसी यही शांति सहिदानी ॥ ९ ॥ तुलसी सुखद शांतिको सागर ॥ संतन गायो करन उजागर ॥ तामें तन मन रहै समोई ॥ अहं अगिनि नहिं दाहै कोई ॥ १० ॥ दोहा ॥ अहंकारकी अगिनिसें, दहत सकल संसार ॥ तुलसी बाचे संतजन, केवल शांति अधार ॥ ११ ॥ महाशान्ति जल परसिकै, शांत भये जन जोय ॥ अहं अगिनिते नहिं दहै, कोटि करै जो कोय ॥ १२ ॥ तेज होत तनतरणिको, अचरज मानत लोइ ॥ तुलसी

जो पानी भया, बहुरि न पावक होइ ॥ १३ ॥ यद्यपि शीतल सम सुखद, जगमें जीवन प्राण ॥ तदपि शांतिजल जनिगनो, पावक तेज प्रमाण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ जरै बरै अरु खीझि खिझावै । राग द्वेष महँ जनम गँवावै ॥ सपनेहु शांति नहीं उन देही । तुलसी जहाँ जहाँ व्रत एही ॥ १५ ॥ दोहा ॥ सोइ पंडित सोइ पारखी, सोई संत सुजान । सोई शूर सचेत सो, सोई सुभट प्रमान ॥ १६ ॥ सोइ ज्ञानी सोइ गुणी जन, सोइ दाता सोइ ध्यानि ॥ तुलसी जाके चित भई, राग द्वेषकी हानि ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ रागद्वेषकी अगिनि बुझानी । काम क्रोध वासना नशानी ॥ तुलसी जबहिं शांति गृह आई ॥ तब उरही उर फिरी दोहाई ॥ १८ ॥ दोहा ॥ फिरी दोहाई रामकी, गे कामादिक भाजि ॥ तुलसी ज्यों रविके उदय, तुरत जात तम लाजि ॥ १९ ॥ यह विराग संदीपिनी, सुजन सुचित सुनि लेहु ॥ अनुचित वचन विचारिकै, जस सुधारि तस देहु ॥ २० ॥

इति तुलसीदासविरचित वैराग्यसंदीपिनी महामोहविध्वंसिनी शांतिवर्णनंनाम तृतीयप्रकाशः समाप्तः ॥ ३ ॥

वैराग्यसंदीपिनी समाप्त ॥

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते.

अथ श्रीबरवारामायणप्रारम्भः ।



बरवा छंद॥केशमुकुट सखि मर्कत मणिमय होत॥ हाथ लेत पुनि मुक्ता करत उदोत ॥ १ ॥ सम सुवरण सुखमाकर सुखद न थोर ॥ सीय अंग सखि कोमल कनक कठोर ॥ २ ॥ सियमुख शरद कमल जिमि किमि कहि जाई ॥ निशिमलीन वह निशि दिन यह विगसाई ॥ ३ ॥ बडे नयन कटि भ्रुकुटी भाल विशाल ॥ तुलसी मोहत मनहिं मनोहरवाल ॥ ४ ॥ चंपक हरवा अंगमिलि अधिक सोहाइ॥ जानिपरै सिय हियरे जब कुँभिलाइ॥५॥सिय तुव अंग रंग मिलि अधिक उदोत॥ हार वेलि पहिरावों चंपक होत ॥ ६ ॥ साधु सुशील सुमति शुचि सरल सुभाव ॥ राम नीति रत काम कहा यह पाव ॥७॥कुंकुम तिलक भाल श्रुति कुंडल लोल ॥ काकपक्ष मिलि सखि कस लसत कपोल ॥८॥ भाल तिलक सर सोहत भौंह कमान ॥ मुख अनुहरिया केवल चंदसमान ॥ ॥ ९ ॥ तुलसी वंक विलोकनि मृदु मुसकानि ॥ कस

प्रभु नैनकमल अस कहौं सुखखानि ॥ १० ॥ कामरूप सम तुलसी रामस्वरूप ॥ को कवि सम सर करै परै भवकूप ॥ ११ ॥ चढत दशा यह उतरत जात निदान ॥ कहौं न कबहूं करकस भौंहकमान ॥ १२ ॥ नित्यनेम कृत अरुणउदय जब कीन ॥ निरखि निशाकर नृप मुख भए मलीन ॥ १३ ॥ कमठ पीठ धनु सजनी कठिन अँदेश ॥ तमकि ताहि ए तोरिहि कहब महेश ॥ १४ ॥ नृप निराश भए निरखत नगर उदास ॥ धनुष तोरि हरि सब कर हरेउ हरास ॥ १५ ॥ का घूँघट मुख मूदहु नवलानारि ॥ चाँद सरगपर सोहत यहि अनुहारि ॥ १६ ॥ गरब करहु रघुनंदन जनि मन माँह ॥ देखहु आपनि मूरति सियके छाँह ॥ १७ ॥ उठी सखी हँसि मिसकरि कहि मृदुबैन ॥ सिय रघु-बरके भए उनीदे नैन ॥ १८ ॥ सींक धनुषसहित सिखन सकुचि प्रभु लीन ॥ मुदित माँगि इक धनुही नृप हँसिदीन ॥ १९ ॥

इति श्रीबरवारामायण बालकांड समाप्त।

सातदिवसभए साजत सकल बनाउ ॥ का पूछहु सुठिराउर सरल स्वभाउ ॥ २० ॥ राजभवन सुख विलसत सिय सँग राम ॥ विपिन चले तजि राज सुविधि बड़वाम ॥ २१ ॥ कोउ कह नरनारायण हरि

हर कोउ ॥ कोउ कह विहरत वनमङ्ग मनसिज दोउ ॥ ॥ २२ ॥ तुलसी भइ मति विथकित करि अनुमान ॥ रामलषणके रूप न देखेउ आन ॥ २३ ॥ तुलसी जनि पग धरहु गंगमहँ जांच ॥ निगानांगकरि नितहिं नचाइहि नाच ॥ २४ ॥ सजल कठौता कर गहि कहत निषाद ॥ चढहु नाव पग धोइ करहु जनि वाद ॥ २५ ॥ कमल कंठकित सजनी कोमलपाइ ॥ निशि मलीन यह प्रफुलितनित दरशाइ ॥ २६ ॥ (वाल्मीकि वचन) द्वैभुज कर हरिरघुवर सुंदर वेष ॥ एक जीभकर लछिमन दूसर शेष ॥ २७ ॥

इति श्रीबरवारामायण अयोध्याकांड समाप्त ।

वदनाम कहि अँगुरिन खंड अकाश ॥ पठयोशूर्पण-खाहि लषणके पास ॥ २८ ॥ हेमलता सिय मूरति मृदु मुसुकाइ ॥ हेम हरिण कह दीन्हेउ प्रभुहि देखाइ ॥ २९ ॥ जटा मुकुट कर शर धनु संग मरीच ॥ चितवनि वसति कनखियनु अँखियनु बीच ॥ ३० ॥ (रामवाक्य) कनक सलाक कला शशि दीप सिखाउ ॥ तारा सियकहँ लछिमन मोहिं बताउ ॥ ३१ ॥ सीय वरण सम केतकि अति हिय हारि ॥ किहेसि भँवर कर हरवा हृदय विदारि ॥ ३२ ॥ शीतलता शशिकी

रहि सब जग छाइ ॥ अगिनि ताप ह्वै हम कहँ सचरत आइ ॥ ३३ ॥

इति श्रीबरवारामायण आरण्यकांड समाप्त।

श्याम गौर दोउ मूरति लछिमन राम ॥ इनते भइ सित कीरति अति अभिराम ॥ ३४ ॥ कुजन पाल गुण वर्जित अकुल अनाथ ॥ कहहु कृपानिधि राउर कस गुण गाथ ॥ ३५ ॥

इति श्रीबरव ारामायण किष्किंधाकांड समाप्त

विरह आगि उर ऊपर जब अधिकाइ॥ ए अँखियाँ दोउ वैरिनि देहिं बुझाइ ॥३६॥ डहकुन है उजियरिया निशि नहिं घाम॥ जमत चरत असलागु मोहिं बिनुराम॥ ३७ ॥ अब जीवन कैहै कपि आश न कोई ॥ कनगुरियाके मुंदरी कंकण होई॥ ३८ ॥ राम सुयश कर चहुँयुग होत प्रचार॥ असुरन कहँ लगि लागत जग अँधियार ॥ ३९ ॥ (कपिवाक्य) सिय वियोग दुख केहिविधि कहउँ बखानि ॥ फूलबानते मनसिज बेधत आनि ॥ ४० ॥ शरद चाँदनी सँचरत चहुँदिशि आनि ॥ विधुहि जोरिकर विनवति कुल-गुरु जानि ॥ ४१ ॥

इति श्रीवरवारामायण, सुंदरकांड समाप्त।

विविधवाहनी विलसत सहित अनंत ॥ जलधि सरिस को कहै राम भगवंत ॥ ४२ ॥

इति श्रीबरवारामायण लंकाकांड समाप्त ।

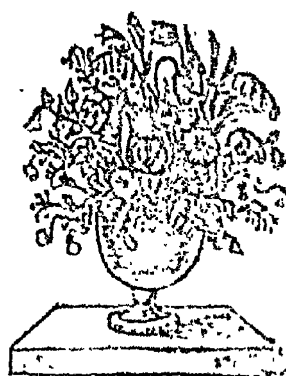
चित्रकूट पयतीर सो सुरतरुवास॥ लषण राम सिय सुमिरहु तुलसीदास ॥ ४३ ॥ पय नहाइ फल खाहु परिहरिय आस ॥ सीयराम पद सुमिरहु तुलसीदास ॥ ४४ ॥ स्वारथ परमारथ हित एक उपाय ॥ सीय-राम पद तुलसी प्रेम बढाय ॥ ४५ ॥ काल कराल विलोकहु होइ सचेत ॥ रामनाम जपु तुलसी प्रीति समेत ॥ ४६ ॥ संकट सोचविमोचन मंगलगेह ॥ तुलसीरामनाम पर करिय सनेह ॥ ४७ ॥ कलि नहिं ज्ञान विराग न योग समाधि ॥ रामनाम जपु तुलसी नित निरुपाधि ॥ ४८ ॥ रामनाम दुइ आखर हिय-हितु जानु ॥ राम लषण सम तुलसी सिखवन आनु॥ ॥ ४९ ॥ माय बाप गुरु स्वामि रामकर नाम ॥ तुलसी जेहि न सोहाइ ताहि विधि वाम ॥ ५० ॥ रामनाम जपु तुलसी होइ विशोक ॥ लोक सकल कल्यान नीक परलोक ॥ ५१ ॥ तप तीरथ मख दान नेम उपवास ॥ सबते अधिक राम जपु तुलसी-दास ॥ ५२ ॥ महिमा रामनामकी जान महेश ॥ देत परमपद काशी करि उपदेश ॥ ५३ ॥ जान आदिकवि

तुलसी नाम प्रभाव ॥ उलटा कोलते भए ऋषिराव ॥ ५४ ॥ कलयोनि जिय जानेउ नाम प्रतापु ॥ कौतुक सागर सोखेउ करि जिय जापु ॥ ५५ ॥ तुलसी सुमिरत राम सुलभ फल चारि ॥ वेद पुराण पुकारत कहत पुरारि ॥ ५६ ॥ रामनामपर तुलसी नेहनिबाहु ॥ एहिते अधिक न एहिसम जीवन लाहु ॥ ॥ ५७ ॥ दोष दुरित दुख दारिद्र दाहक नाम ॥ सकल सुमंगलदायक तुलसी राम ॥ ५८ ॥ केहि गिनती महँ गिनती जस वन घास ॥ राम जपत भए तुलसी तुलसीदास ॥ ५९ ॥ आगम निगम पुराण कहतु करि लीक ॥ तुलसी नाम राम कर सुमिरण नीक ॥ ६० ॥ सुमिरहु नाम राम कर सेवहु साधु ॥ तुलसी उतरि जाहु भव उदधि अगाधु ॥ ६१ ॥ कामधेनु हरिनाम कामतरु राम ॥ तुलसी सुलभ चारि फल सुमिरत नाम ॥६२॥ तुलसी कहत सुनत सब समुझत कोय ॥ बडे भाग्य अनुराग राम सन होय ॥ ६३ ॥ एकहि एक सिखावत जपत न आप ॥ तुलसी राम प्रेमकर बाधक पाप ॥ ६४ ॥ मरत कहत सब सबकहँ सुमिरहु राम ॥ तुलसी अब नहीं जपत समुझि परिणाम ॥ ६५ ॥ तुलसी राम नाम जपु आलस छाँडु ॥ राम विमुख कलिकालको भयो न भाँडु ॥ ६६ ॥ तुलसी राम नाम सम मित्र न आन॥

जो पहुँचाव रामपुर तनु अवसान ॥ ६७॥ नाम भरोस नाम बल नाम सनेहु ॥ जनम जनम रघुनंदन तुलसिहि देहु ॥ ६८ ॥ जनम जनम जहँ जहँ तनु तुलसिहि देहु ॥ तहँ तहँ राम निबाहिब नाम सनेहु ॥ ६९ ॥

इति श्रीगोसाईं तुलसीदासजीविरचितबरवारामायण उत्तरकाण्डसमाप्त ॥

इति बरवारामायण समाप्त ।



श्रीगणेशाय नमः।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते।

अथ पार्वतीमंगलप्रारम्भः।



बरवैछन्द ॥ विनय गुरुहिं गुणि गणहिं गिरिहि गणनाथहि॥हृदय आनि सियराम धरे धनु भाथहि ॥ ॥ १ ॥ गावउँ गौरि गिरीश विवाह सुहावन ॥ पाप नशावन पावन मुनि मनभावन ॥ २ ॥ कवितरीति नहीं जानौं कवि न कहावउँ ॥ शंकर चरित सुसरित मनहिं अन्हवावउँ ॥३॥ पर अपवाद विवाद विदूषित वाणिहि ॥ पावनि करौं सो गाइ भवेश भवानिहि ॥ ॥ ४ ॥ जय संवत फागुन सुदि पाँचै गुरुदिनु ॥ अश्विनिविरचेउँ मंगल सुनि सुख छिनु छिनु ॥ ५ ॥ गुणनिधान हिमवान धरणीधर धुरधनि ॥ मैना तासु घरणि घर त्रिभुवन तियमनि ॥ ६ ॥ कहहु सुकृत केहि भाँति सराहिय तिन्हकर ॥ लीन्ह जाइ जगजननि जनम जिन्हके घर॥ ७ ॥ मंगलखानि भवानि प्रगट जबते भइ ॥ तबते ऋधि सिधि संपति गिरिगृह नित नइ ॥ ८ ॥ छंद ॥ नित नव सकल कल्याण मंगल मोदमय मुनिमानहीं ॥ ब्रह्मादि सुरनर नाग

अति अनुराग भाग बखानहीं ॥ पितु मातु प्रिय-परिवार हरषहिं निरखि पालहिं लालहिं ॥ सित पाख बाढति चंद्रिका जनु चंद्र भूषण भालहिं ॥ १ ॥ कुँवरि सयानि विलोकि मातु पितु शोचहिं ॥ गिरिजा योग जुरिहि वर अनुदिन लोचहिं ॥ ९ ॥ एकसमय हिमवान भवन नारद गए ॥ गिरिवर मैना मुदित मुनिहि पूजत भए ॥ १० ॥ उमहिं बोलि ऋषिपगन मातु मेलत भई ॥ मुनिमन कीन्ह प्रणाम वचन आशिष दई ॥ ११ ॥ कुँवरिलागि पितु काँध ठाढि भइ सोहई ॥ रूप न जाइ बखानि जान जोइ जोहई ॥ १२ ॥ अतिसनेह सतिभाय पाँय परि पुनि पुनि ॥ कह मैना मृदु वचन सुनिय विनती मुनि ॥ १३ ॥ तुम त्रिभुवन तिहुँकाल विचार विशारद ॥ पारवती अनुरूप कहिय वर नारद ॥ १४ ॥ मुनि कह चौदह भुवन फिरउँ जग जहँ जहँ ॥ गिरिवर सुनिय सरहना राउरि तहँ तहँ ॥ १५ ॥ भूरिभाग तुम सरिस कतहुँ कोउ नाहिंन ॥ कछु न अगम सब सुगम भयो विधि दाहिन ॥ १६ ॥ छंद ॥ दाहिन भए विधि सुगम सब सुनि तजहु चितचिंता नई ॥ वर प्रथम बिरवा विरंचि विरचो मंगला मंगलमई ॥ विधि लोक चरचा चलति राउरि चतुर चतुरानन कही ॥ हिमवानकन्या योगवर बाउरविबुध वंदित सही ॥ २ ॥ मेरेहु मन

अस आव मिलिहि वर बाउर ॥ लखि नारद नारदी उमहिं सुखभा उर ॥ १७ ॥ सुनिसहमे परिपाइँ कहत भए दंपति ॥ गिरिजहि लाग हमार जिवन सुख संपति ॥ १८ ॥ नाथ कहिय सोइ जतन मिटइ जेहि दूषण ॥ दोष दलनु मुनि कहेउ बाल विधुभूषण ॥ १९ ॥ अवशि होइ सिधि साहस फलै सुसाधन ॥ कोटि कल्पतरु सरिस शंभु अवराधन ॥ २० ॥ तुम्हरे आश्रम अवहि ईश तप साधहिं ॥ कहिय उमहिं मनुलाइ जाइ अवराधहिं ॥ २१ ॥ कहि उपाउ दंपतिहि मुदित मुनि वरगए ॥ अतिसनेह पितु मातुहिं सिखवत भए ॥ २२ ॥ सजि समाजु गिरिराज दीन्ह सब गिरिजहि ॥ वदति जननि जगदीश युवति जनि सिरजहि ॥ २३ ॥ जननि जनक उपदेश महेशहि सेवहि ॥ अति आदर अनुराग भवति मन भेवहि ॥ २४ ॥ छंद ॥ भेवहि भगति मन वचन करम अनन्यगति हर चरनकी ॥ गौरव सनेह संकोच सेवा जाइ केहि विधिवरनकी ॥ गुणरूप यौवनसींव सुंदरि निरखि छोभ न घर हिए ॥ ते धीर अछत विकार हेतु जे रहत मनसिज वश किए ॥ ३ ॥ देव देखि भल समउ मनोज बुलायउ ॥ कहेउ करिय सुरकाजु साजु सजि धायउ ॥ २५ ॥ वामदेव सन कामु वाम होइ वरतउ ॥ जगजय मद निदरेसि हर पायेसि फरतउ ॥ २६ ॥

रति पतिहीन मलीन विलोकि बिसूरति ॥ नीलकंठ मृदुशील कृपामय मूरति ॥ २७ ॥ आशुतोष परितोष कीन्ह वर दीन्हेउ ॥ शिव उदास तजि वास अनन्त गास कीन्हेउ ॥ २८ ॥ उमा नेहवश विकल देह सुधि बुधि गई ॥ कल्पवेलि वन बढत विषम हिमजनुहई ॥ २९ ॥ समाचार सब सखिन जाइ घर घर कहे ॥ सुनत मातु पितु परिजन दारुण दुख दहे ॥ ३० ॥ जाइ देखि अति प्रेम उमहिं उर लावहिं ॥ विलपहिं वाम विधातहि दोष लगावहिं ॥ ३१ ॥ जो न होहि मंगल मगसुरविधि बाधक ॥ तौ अभिमत फल पावहिं करि श्रम साधक ॥ ३२ ॥छंद॥ साधक कलेश सुनाइ सब गौरिहि निहोरत धामको ॥ को सुनइ काहि सोहाइ घर चितचहत चंद्र ललामको॥ सकुझाइ सबहि हटाइ मन पितु मातु आयसु पाइकै ॥ लागी करन पुनि अगम तप तुलसी कहै किमि गाइकै ॥४॥ फिरेउ मातु पितु परिजन लखि गिरिजापन ॥ जेहि अनुराग लाग चित सोइ हितु आपन ॥ ३३ ॥ तजेहु भोग जिमि रोग लोग अहि गण जनु॥ मुनि मनसहुते अगम तपहि लायो मनु ॥ ३४ ॥ सकुचहिं वसन विभूषण परसत जो वपु ॥ तेहि शरीर हर हेतु अरंभेउ बड तपु ॥ ३५ ॥ पूजहि सबहि समय तिहुँ करहि निमज्जन ॥ देखि प्रेम व्रत नेम सराहहिं सज्जन ॥ ३६ ॥ नींद न

भूँख पियास सरिस निशि वासर ॥ नयन नीर मुख नाम पुलक तनु हियहर ॥ ३७ ॥ कन्द मूल फल असन कबहुँ जल पवनहिं ॥ सूखे बेलके पात खात दिन गवनहिं ॥ ३८ ॥ नाम अपरणा भयो पर्ण जब परिहरे ॥ नवल धवल कलकीरति सकल भुवन भरे ॥ ३९ ॥ देखि सराहहिं गिरिजहिं मुनिवर मुनि बहु॥ अस तप सुना न दीख कबहुँ काहू कहुँ ॥४०॥ छंद ॥ काहू न देख्यो कहहिं यह तप योग फल फल चारिका॥ नहिं जानि जाइ न कहति चाहति काहि कुधर कुमारिका ॥ वटु वेषपै मन प्रेम पण व्रतनेम शशिशेखर गए॥ मनसहि समरपेउ आपु गिरिजहि वचन मृदु बोलत भए ॥ ५ ॥ देखि दशा करुणाकर हर दुख पायउ ॥ मोर कठोर सुभाय हृदय अस आयउ ॥ ॥ ४१ ॥ वंश प्रशंसि मातु पितु कहि सब लायक॥ अमिय वचन वटु बोलेउ सुनि सुखदायक ॥ ४२ ॥ देवि करों कछु विनय सो विलगु न मानव ॥ कहौं सनेह सुभाय सांच जिय जानव ॥ ४३ ॥ जनमि जगत यश प्रगटेहु मातु पिताकर ॥ तीय रतन तुम उपजिहु भव रतनागर ॥ ४४ ॥ अगम न कछु जग तुम कहँ मोहिं अस सूजइ ॥ विनु कामना कलेश कलेश न बूझइ ॥ ॥ ४५ ॥ जो वर लागि करहु तप तौ लरिकाइय ॥ पारस जो घर मिलै तौ मेरु कि जाइय ॥ ४६ ॥

मोरेहि जान कलेश करिय बिनु काजहि ॥ सुधा कि रोगिहि चाहहि रतन कि राजहि ॥ ४७ ॥ लखि न परेउ तप कारण वटुहिय हारेउ ॥ सुनि प्रिय वचन सखी मुख गौरि निहारेउ ॥४८॥ छंद ॥ गौरी निहारेउ सखी मुख रुखपाई तेहि कारण कहा ॥ तप करहि हरहितु सुनि विहँसि वटु कहत मुरुखाई महा ॥ जेहि दीन्ह अस उपदेश बरेहु कलेश करि वरु वावरो ॥ हित लागि कहौं सुभाय सो बड विषम वैरी रावरो ॥ ६ ॥ कहहु काह सुनि रीझिहु वरु अकुलीनहिं ॥ अगुण अमान अजाति मातु पितु हीनहिं ॥ ४९ ॥ भीख माँगि भव खांहिं चिता नित सोवहिं ॥ नाचहिं नगन पिशाच पिशाचिनि जोवहिं ॥ ५० ॥ भाँग धतूर अहार छार लपटावहिं ॥ योगी जटिल सरोष भोग नहिं भावहिं ॥ ५१ ॥ सुमुखी सुलोचनि हर मुख पंच तिलोचन ॥ वामदेव फुर नाम काम मदमो चन ॥ ५२ ॥ एकउ हरहि नव गुण कोटिक दूषण ॥ नर कपाल गजखाल व्याल विष भूषण॥५३॥ कहँ राउर गुण शील स्वरूप सुहावन ॥ कहाँ अमंगल वेष विशेषु भयावन ॥५४॥ जो सोचहि शशि कलहि सो सोचहि रौरेहि ॥ कहा मोर मन धरि वरी वर बौरेहि ॥५५॥ हिए हेरि हठ तजहु हठै दुख पैहहु ॥ व्याह समय सिख मोरि समुझि पछितैहहु ॥ ५६ ॥

॥ छंद ॥ पछिताव भूत पिशाच प्रेत जनेत ऐहैं साजिकै ॥ यमधारि सरिस निहारि सब नर नारि चलिहहिं भाजिकै ॥ गज अजिन दिव्य दुकूल जोरत सखी हँसि मुख मोरिकै ॥ कोउ प्रकट कोउ हिए कहिहहि मिलवत अमिय माहुर घोरिकै ॥ ७ ॥ तुमहिं सहित असवार वसह जब होइहिं ॥ निरखि नगर नर नारि बिहँसि मुख गोइहिं ॥ ५७ ॥ वटुकरि कोटि कुतर्क यथा रुचि बोलइ ॥ अचलसुता मन अचल बयारि कि डोलइ ॥ ५८ ॥ साँच सनेह साँचि रुचि जो हठि फेरइ ॥ सावन सरित सिंधुरुख सूपसो घेरइ ॥ ५९ ॥ मणि विनु फणि जलहीन मीन तनु त्यागइ ॥ सो कि दोष गुण गणइ जो जेहि अनुरागइ ॥ ६० ॥ करणकटुकवटु वचन विशिष सम हियहए ॥ अरुण नयन चढि भ्रुकुटि अधर फरकत भए ॥ ६१ ॥ बोलि फिरि लखि सखिहि काँप तनु थरथर ॥ आलि विदाकरु वटुहि वेगि बड बरबर ॥ ॥ ६२ ॥ कहुँ तियहोहि सयानि सुनहिं सिख राउरि॥ बौरोहिके अनुराग भइउँ बडिबाउरि ॥ ६३ ॥ दोपनिधान इशान सत्य सब भाषेउ ॥ मेटिको सकइ सो आंक जो विधि लिखि राखेउ ॥ ६४ ॥ को करिवाद विवाद विषाद बढावइ ॥ मीठ काहु कवि कहहिं जाइ जोइ भावइ ॥ ६५ ॥ भइ बडिबार आलिकहु काज सिधा-

रहि ॥ बकि जनि उठहि बहोरि कुयुगति सँवारहि ॥ ॥६६॥ छंद ॥ जनि कहहि कछु विपरीत जानत प्रीति रीति न बातकी ॥ शिवसाधु निंदक मंद अति जोउ सुनै सोउ बडपातकी ॥ सुनि वचन सोधि सनेह तुलसी साँच अविचल पावनो ॥ भए प्रगट करुणासिंधु शंकर भालचंद्र सुहावनो ॥ ८ ॥ सुंदरगौर शरीर भूति भलि सोहइ ॥ लोचन भाल विशाल बदन मनमोहइ ॥६७॥ शैलकुमारि निहारि मनोहर मूरति ॥ सजल नयनहिय हरष पुलकतनु पूरति ॥६८ ॥ पुनि पुनि करै प्रणाम न आवत कछु कहि ॥ देखों स्वपनकी कौतुक शशिशेखर सहि ॥ ६९ ॥ जैसे जन्म दरिद्र महामणि पावइ ॥ पेखत प्रगट प्रभाउ प्रतीति न आवइ ॥ ७० ॥ सफल मनोरथ भयउ गौरि सोहइ सुठि ॥ घरते खेलन मनहुँ अबहिं आई उठि ॥ ७१ ॥ देखि रूप अनुराग महेश भए वश ॥ कहत वचन जनुसानि सनेहसुधारस॥७२॥ हमहिं आजुलगि कनउड काहु न कीन्हेउ ॥ पार्वतीतप प्रेम मोल मोहिं लीन्हेउ ॥ ७३ ॥ अब जो कहहु सो करउँ विलंब न यहि घरी ॥ सुनि महेश मृदुवचन पुलकि पाँयनपरी ॥ ७४॥ छंद ॥ परिपाँय सखि मुख कहि जनायो आपनाप अधीनता ॥ परितोपि गिरिजहि चले वर्णत प्रीति नीति प्रवीणता ॥ हरहृदय धरि घर

गौरि गवनी कीन्ह विधिमन भावनो ॥ आनंद प्रेम समाज मंगलगान बाजु बधावनो ॥ ९ ॥ शिव सुमिरे मुनि सात आइ शिर नाइन्हि ॥ कीन्ह शंभु समान जन्मफल पाइन्हि ॥ ७५ ॥ सुमिरहिं सकृत तुम्हहिं जन तेइ सुकृतीवर ॥ नाथ जिन्हहिं सुधि करिअ तिन्हहिं सम तेइ हर ॥ ७६ ॥ सुनि मुनिविनय महेश परमसुख पायउ ॥ कथाप्रसंग मुनीशन्ह सकल सुना-यउ ॥ ७७ ॥ जाहु हिमाचल गेह प्रसंग चलायहु ॥ जो मनमान तुम्हार तौ लगन लिखायहु ॥ ७८ ॥ अरुंधती मिलि मैनहि बात चलाइहि ॥ नारि कुशल इहि काज काज बनि आइहि ॥ ७९ ॥ दुलहिनि उमा ईश्वरु साधक ए मुनि ॥ बनिहि अवशि यहु काज गगनभइ अस धुनि ॥ ८० ॥ भयउ अकनि आनंद महेश मुनीशन्ह ॥ देहिं सुलोचनि सगुण कलश लिए शीशन्ह ॥ ८१ ॥ शिवसों कहे दिन ठाउँ बहोरि मिलनु जहँ ॥ चले मुदित मुनिराज गए गिरि वर पहँ ॥ ८२ ॥ छंद ॥ गिरि गेह गे अति नेह आदर पूजि पहुनाई करी ॥ घर बात घरनि समेत कन्या आनि सब आगे धरी ॥ सुख पाइ बात चलाइ सुदिनु सोधाइ गिरिहि सिखाइकै ॥ ऋषि साथ प्रातहि चले प्रमुदित ललित लगन लिखाइकै ॥ १० ॥ विप्र वृंद सन्मानि पूजि कुलगुरु सुर ॥ परेउ निसानहि घाउ

चाउ चहुँ दिशि पुर ॥ ८३ ॥ गिरि वन सरित सिंधु सर सुनइ जो पायउ ॥ सब कहँ गिरिवर नायक नेवत पठायउ ॥ ८४ ॥ धरि धरि सुंदर वेष चले हरषित हिए ॥ चमर चीर उपहार हार मणिगण लिए ॥ ८५॥ कहेउ हरषि हिमवान वितान बनावन ॥ हरषित लगियँ सुवासिनि मंगल गावन ॥ ८६ ॥ तोरण कलश चँवर ध्वज विविध बनाइन्हि ॥ हाट पटोरन्हि छाय सफल तरु लाइन्हि॥८७॥ गौरी नैहर केहिविधि कहहु बखानिय ॥ जनु ऋतुराज मनोज राज रजधानिय ॥ ८८ ॥ छंद ॥ जनु राजधानी मदनकी विरची चतुर विधि औरही ॥ रचना विचित्र विलोकि लोचन विथकि ठौरहि ठौरही ॥ यहि भाँति व्याह समाज सजि गिरिराज मगु जोवन लगे ॥ तुलसी लगन लै दीन्ह मुनिन्ह महेश आनँद रँग मगे ॥ ११ ॥ वेगि बुलाइ विरंचि बँचाइ लगन तब ॥ कहेन्हि बियाहन चलहु बुलाइ अमर सब ॥ ८९ ॥ विधि पठए जहँ तहँ सब शिवगण धावन ॥ सुनि हरषहिं सुर कहहिं निसान बजावन ॥ ९० ॥ रचहिं विमान बनाइ सगुण पावहिं भले ॥ निज निज साज समाज साजि सुरगण चले ॥ ९१ ॥ मुदित सकल शिवदूत भूतगण गाजहिं ॥ शूकर महिष श्वान खरवाहन साजहिं ॥ ९२ ॥ नाचहिं नाना रंग तरंग बढावहिं ॥ अज उलूक वृकनाद

गीतगण गावहिं ॥ ९३॥ रमानाथ सुरनाथ साथ सब सुरगण ॥ आए जहँ विधि शंभु देखि हरषे मन ॥ ॥ ९४ ॥ मिले हरिहि हर हरषि सुभाखि सुरेशहिं ॥ सुर निहारि सन्मानेउ मोद महेशहिं ॥ ९५ ॥ बहु विधि वाहन यान विमान विराजहिं ॥ चली बरात निसान गहागह बाजहिं ॥ ९६ ॥ छंद ॥ बाजहिं निसान सुगान नभ चढि वसह विधु भूषण चले ॥ वरषहिं सुमन जय जय करहिं सुर सगुण शुभ मंगल भले ॥ तुलसी बराती भूत प्रेत पिशाच पशुपति सँग लसे ॥ गज छाल व्याल कपाल माल विलोकि वर सुर हरि हँसे ॥ १२ ॥ विबुध बोलि हरि कहेउ निकट पुर आयउ ॥ आपन आपन साज सबहिं विलगायउ ॥ ९७ ॥ प्रथम नाथके साथ प्रमथ गणराजहिं ॥ विविध भाँति सुख वाहन वेष विराजहिं ॥ ९८ ॥ कमठ खपर मढि खाल निशान बजावहिं ॥ नर कपाल जलभरि भरि पियहिं पियावहिं ॥ ९९ ॥ वर अनुहरत बरात बनी हरि हँसि कहा ॥ सुनि हिय हँसत महेश केलि कौतुक महा ॥ १०० ॥ बड विनोद मग मोद न कछु कहि आवत ॥ जाइ नगर नियरानि बरात बजावत ॥१०१॥ पुर खरभर उर हरषेउ अचल अखंडल ॥ परब उदधि उमगेउ जनु लखि विधु मंडल ॥ १०२ ॥ प्रमुदित

गे अगवान बिलोकि बरातहि ॥ भभरे बनइ न रहत न बनइ परातहि ॥ १०३ ॥ चले भाजि गज बाजि फिरहिं नहिं फेरत ॥ बालक भभरि भुलान फिरहिं घर हेरत ॥ १०४ ॥ दीन्ह जाइ जनवास सुपास किए सब ॥ घर घर बालक बात कहन लागे तब ॥ १०५॥ प्रेत बेताल बराती भूत भयानक ॥ बरद चढा बरबाउर सबइ सुबानक ॥ १०६ ॥ कुशल करइ करतार कहहिं हम साँचिय ॥ देखब कोटि बिवाह जियत जो बाँचि-य ॥ १०७ ॥ समाचार सुनि शोच भयउ मन मैनहिं॥ नारदके उपदेश कवन घरगे नहिं॥१०८॥छंद॥घरघाल चालक कलहप्रिय कहियत परम परमारथी ॥ तैसी बरेखी कीन्हि पुन मुनिसात स्वारथ सारथी॥ उर लाइ उमहिं अनेक बिधिजलपति जननि दुखमानई॥हिमवान कहेउ इशान महिमा अगम निगम न जानई॥१३॥सुनि मैना भइ सुमन सखी देखन चली ॥ जहँ तहँ चरचा चलइ हाट चौहट गली॥१०९॥श्रीपति सुरपति बिबु-धबात सब सुनि सुनि ॥ हँसहिं कमलकर जोरि मोरि मुख पुनि पुनि ॥११०॥ लखि लौकिक गति शंभुजानि बड सोहर ॥ भए सुंदर शतकोटि मनोज मनोहर ॥ ॥१११॥ नील निचोल छाल भइ फणि मणिभूषण ॥ रोमरोमपर उदित रूपमय पूषण ॥ ११२ ॥ गणभए मंगलवेष मदन मनमोहन ॥ सुनत चले हिय हरषि

नारि नर जोहन॥ ११३॥ शंभु शरद राकेश नखत-गण सुरगण॥ जनु चकोरचहुँ ओर विराजहिं पुर-जन॥ ११४॥ गिरिवर पठए बोलि लगनबेरा भई॥ मंगल अरघर पाँवडे देत चले लई॥ ११५॥ होहिं सुमंगल शकुन सुमन वरषहिं सुर॥ गहगहे गान निशान मोद मंगलपुर॥ ११६॥ पहिलिहि पँवारि सुसामध भा सुखदायक॥ इत विधि उत हिमवान सरिस सबलायक॥ ११७॥ मणि चामीकर चारु थार सजि आरति॥ रतिसिहाहिं लखि रूप गान सुनि भारति॥ ११८॥ भरि भाग अनुराग पुलकतनु मुद मन॥ मदनमत्त गजगवनि चली वरपरिछन॥११९॥ वर विलोकि विधु गौर सु अंग उजागर॥ करति आरती सासु मगन सुखसागर॥१२०॥ छंद॥ सुख-सिंधुमगन उतारि आरति करि निछावरि निरखिकै॥ मधु अरघ वसन प्रसून भरि ले चलीं मंडप हरिषिकै॥ हिमवान दीन्हें उचित आसन सकल सुर सनमानिकै॥ तेहि समय साज समाज सब राखे सुमंडप आनिकै॥ ॥ १४॥ अरघ देइ मणिआसन वर बैठायउ॥ पूजि कीन्ह मधुपर्क अमी अँचवायउ॥१२१॥ सप्त ऋषिन्ह विधि कहेउ विलंब न लाइय॥ लगन वेर भई वेगि विधान बनाइय॥ १२२॥ थापि अनल हरवरहिं वसन पहिरायउ॥ आनहु दुलहिनि वेगि समय अब

आयउ॥१२३॥सखी सुवासिनि संग गौरि सुठि सोहति॥ प्रगटरूप मय मूरति जनु जगमोहति ॥१२४॥ भूषण वसन समय सम शोभा सो भली ॥ सुखमा वाल नवल जनुरूप फलनि फली ॥ १२५ ॥ कहहु काहि पटतारिय गौरि गुणरूपहि ॥ सिंधु कहिय केहिभाँति सरिस सरकूपहि ॥ १२६ ॥ आवत उमहिं विलोकि शीश सुर नावहिं ॥ भये कृतारथ जनमजानि सुख पावहिं ॥ १२७ ॥ विप्र वेद ध्वनि करहिं शुभाशिष कहि कहि ॥ गान निसान सुमन झरि अवसर लहि लहि ॥१२८॥ वरदुलहिनिहि विलोकि सकल मनहर-सहिं ॥ साखोच्चार समय सब सुर मुनि विहँसहिं ॥ ॥१२९॥ लोक वेदविधि कीन्ह लीन्ह जलकुशकर ॥ कन्यादान संकलप कीन्ह धरणीधर ॥ १३० ॥ पूजे कुलगुरु देव कलश शिल शुभ घरी ॥ लावा होम बिधान बहुरि भाँवरि परी ॥ १३१ ॥ वंदन वंदि ग्रंथि विधि करि धुवदेखेउ ॥ भा विवाह सब कहहिं जनम फल पेखेउ ॥ १३२ ॥ छंद ॥ पेखेउ जनम फल भा विवाह उछाह उमगहिं दशदिशा ॥ निसान गान प्रसून झरि तुलसी सुहावनि सो निशा ॥ दाइज वसन मणि धेनु धनु हयगय सु सेवक सेवकी ॥ दीन्हीं मुदित गिरिराज जे गिरिजहि पियारी पेवकी ॥१५॥ बहुरि बराती मुदित चले जनवासहि ॥ दूलह दुलहि-

निगे तब हाँस अवासहि ॥ १३३ ॥ रोंकि द्वार मैना तब कौतुक कीन्हेउ ॥ करि लहकौरि गौरि हर बड सुख दीन्हेउ ॥ १३४ ॥ जुआ खेलावत गारि देहिं गिरिनारिहि ॥ अपनी ओर निहारि प्रमोद पुरारिहि ॥ ॥ १३५ ॥ सखि सुहासिनि सासु पाउ सुख सब-विधि ॥ जनवासहि वर चलेउ सकल मंगलनिधि ॥ ॥ १३६ ॥ भइ जेवनार बहोरि बुलाइ सकल सुर ॥ बैठाए गिरिराज धरम धरणीधुर ॥ १३७ ॥ परसन-लगे सुवार विबुध जन जेवहिं ॥ देहिं गारि वर नारि मोद मनभेवहिं ॥ १३८ ॥ करहिं सुमंगल गान सुघर सहनाइन्ह ॥ जेंइ चले हरि दुहिन सहित सुर भाइन्ह॥ ॥१३९॥ भूधर भोर विदाकर साज सजायउ ॥ चले देव सजि यान निसान वजायउ ॥ १४० ॥ सनमाने सुर सकल दीन्ह पहिरावनि ॥ कीन्हि बडाई विनय सनेह सुहावनि ॥ १४१ ॥ गहि शिवपद कह सासु विनय मृदु मानवि॥गौरि सजीवनिमूरि मोरि जियजा-नवि॥१४२॥भेंटि विदा करि बहुरि भेंटि पहुँचावहि ॥ हुँकरि हुँकरि सुलवाइ धेनु जनु धावहिं॥१४३॥उमामातु मुख निरखि नयन जल मोचहिं ॥ नारि जनम जग-जाय सखी कहि सोचहिं ॥ १४४ ॥ भेंटि उमहिं गि-रिराज सहित सुत परिजन ॥ बहुत भाँति समुझाइ फिरे विलखित मन ॥ १४५ ॥ शंकर गौरि समेत

गए कैलासहि ॥ नाइ नाइ शिर देव चले निज वासहि ॥१४६॥ उमा महेश विवाह उछाह भुवन भरे ॥ सबके सकल मनोरथ विधिपूरण करे ॥ १४७ ॥ प्रेम पाट पटडोरि गौरि हरगुण मणि ॥ मंगल हार रचेउ कवि मति मृगलोचनि ॥ १४८ ॥ छंद ॥ मृगनयनि विधुवदनी रचेउ मणि मंजु मंगल हारसो ॥ उर धरहु युवती जन विलोकि तिलोक शोभा सारसो ॥ कल्याण काज उछाह व्याह सनेह सहित जो गाइहैं ॥ तुलसी उमाशंकर प्रसाद प्रमोद मन प्रिय पाइहैं ॥ १६ ॥

इति श्रीगोसांई तुलसीदासजीविरचित शिवपार्वती मंगलं संपूर्णम् ॥ शुभं भवतु सर्वदा ॥

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते।

अथ जानकीमंगल-प्रारम्भः।

मंगलछंद।

गुरु गणपति गिरिजापति गौरि गिरापति ॥ शारद शेष सुकवि श्रुति संत सरल मति ॥ १ ॥ हाथ जोरि करि विनय सबहि शिर नावौं ॥ सिय रघुवीर विवाह यथामति गावौं ॥ २ ॥ शुभ दिन रच्यो स्वयंवर मंगलदायक ॥ सुनत श्रवण हिय वसहिं सीय रघुनायक ॥ ३ ॥ देश सुहावन पावन वेद बखानिय ॥ भूमि तिलक सम तिरहुत त्रिभुवन जानिय ॥ ४ ॥ तहँ वस नगर जनकपुर परम उजागर॥सिय लखि जहँ प्रगटी सब सुखसागर ॥५॥ जनक नाम तेहि नागर बसै नरनायक ॥ सब गुण अवधि न दूसर पटतर लायक ॥ ॥ ६ ॥ भयउ न होइहि है नं जनक सम नरवइ ॥ सीयसुता भै जासु सकल मंगलमइ ॥ ७ ॥ नृप लखि कुँवरि सयानि बोलि गुरु परिजन ॥ करि मत रच्यौ स्वयंवर शिव धनुधरिपन ॥ ८ ॥ छंद ॥ पण धरहु शिवधनु रचि स्वयंवर अति रुचिर रचना बनी ॥ जनु प्रगटि चतुरानन देखाई चतुरता सब आपनी ॥ पुनि

देश देश संदेश पठयउ भूप सुनि सुख पावहीं ॥ सब साजि साजि समाज राजा जनक नगरहि आवहीं ॥ ১ ॥ रूप शील वय वंश विरद बल दल भले ॥ मनहुँ पुरंदर निकर उतरि अवनी चले॥ ९ ॥ दानव देव निशाचर किन्नर अहिगन॥सुनि धरि धरि नृप वेष चले प्रमुदित मन ॥ १० ॥ एक चलहिं यक बीच एक पुर पैठहिं॥एक धरहिं धनु धाय नाइ शिर वैठहिं॥ ११॥रंग-भूमि पुर कौतुक एक निहारहिं॥ ललकि लोभहिं नयन मन फेरि न पारहिं॥१२॥ जनकहि एक सिहाहिं देखि सनमानत ॥ बाहेर भीतर भीर न बनै बखानत ॥ ॥ १३ ॥ गान निसान कोलाहल कौतुक जहँ तहँ ॥ सीय विवाह उछाह जाइ कहि कापहँ॥ १४॥गाधिसुवन तहि अवसर अवध सिधायउ ॥ नृपति कीन्ह सनमान भवन लै आयउ ॥ १५ ॥ पूजि पहुनई कीन्ह पाइ प्रिय पाहुन ॥ कहेउ भूप मोहिं सरिस सुकृत किए काहुन ॥ ॥ १६ ॥ छंद ॥ काहू न कीन्हेउ सुकृत सुनि मुनि मुदित नृप हि बखानहीं ॥ महिपाल मुनिको मिलन सुख महिपाल मुनिमन जानहीं॥अनुराग भाग सोहाग शील स्वरूप बहु भूषण भरी ॥ हिय हरषि सुतन्ह समेत रानी आइ ऋषि पायन्ह परी ॥ २ ॥ कौशिक दीन अशीष सकल प्रमुदित भई ॥ सींची मनहुँ सुधा रस कल्पलता नई ॥ १७ ॥ रामहिं भाइन्ह सहित

जबहिं मुनि जोहेउ ॥ नैन नीर तनु पुलकरूप मन मोहेउ ॥ १८ ॥ परसि कमल कर शीश हरषि हिय लावहिं ॥ प्रेम पयोधि मगन मुनि पार न पावहिं ॥ ॥१९॥मधुर मनोहर मूरति सादर चाहहिं ॥ बार बार दशरथके सुकृत सराहहिं ॥२०॥ राउ कहेउ कर जोरि सुवचन सुहावन ॥ भयउँ कृतारथ आजु देखि पद पावन ॥ ॥ २१ ॥ तुम्ह प्रभु पूरण काम चारि फल दायक ॥ तेहिते बूझत काज डरौं मुनिनायक ॥२२॥ कौशिक सुनि नृप वचन सराहेउ राजहि॥धर्म कथा कहि कहेउ गयउ जेहि काजहि ॥२३॥जबहिं मुनीश मही-शहि काज सुनायउ ॥ भयउ सनेह सत्यवश उतर न आयउ ॥ २४ ॥ छंद ॥ आयउ न उतर वसिष्ठ लखि बहुभाँति नृप समुझायऊ ॥ कहि गाधिसुत तप तेज कछु रघुपति प्रभाउ जनायऊ ॥ धीरज धरेउ गुरु वचन सुनि कर जोरि कह कोशलधनी॥ करुणानिधान सुजान प्रभु सो उचित नहिं विनती घनी ॥ ३ ॥ नाथ मोहिं बालकन्ह सहित पुर परिजन॥राख निहार तुम्हार अनुग्रह घर वन ॥ २५ ॥ दीन वचन बहु भाँति भूप मुनिसन कहे॥सौंपि राम अरु लषण पाँय पंकज गहे ॥ २६ ॥ पाइ मातु पितु आय गुरूपाँयन परे ॥ कटि निषंग पट पीत करनि शर धनु धरे ॥ २७ ॥ पुरवासी नृपरानिन संग दियेमन ॥ वेगिफिरेउ करि काज कुशल

रघुनंदन॥२८॥ईश मनाइ अशीशहिं जय यश पावहु॥
न्हात खसै जनिबार गहरु जनि लावहु॥२९॥चलत स-
कल पुरलोग वियोग विकलभए ॥ सानुज भरत सप्रेम
राम पाँयन नए॥३०॥होहिं शकुन शुभ मंगल जनु कहि
दीन्हेउ ॥ राम लषण मुनिसाथ गमन तब कीन्हेउ ॥
॥ ३१ ॥ श्यामल गौरकिशोर मनोहरता निधि ॥
सुखमा सकल सकेलि मनहुँ विरचे विधि ॥ ३२ ॥
छंद॥विरचे विरंचि बनाइ वाची रुचिरता रंचौ नहीं ॥
दशचारि भुवन निहारि देखि विचारि नहिं उपमा कहीं॥
ऋषि संग सोहत जात मगछवि वसति सो तुलसी
हिए ॥ कियो गमन जनु दिननाथ उत्तर संग मधु
माधव लिए ॥ ४ ॥ गिरितरु वेलि सरित सर विपुल
विलोकहिं ॥ धावहिं बाल सुभाग विहँग मृग रोकहिं
॥३३॥ सकुचहिं मुनिहि सभीत बहुरि फिरि आवहिं ॥
तोरि फूल फल किशलय माल बनावहिं ॥ ३४ ॥
देखि विनोद प्रमोद प्रेम कौशिक उर ॥ करत जाहिं
घनछाँह सुमन वरषहिं सुर ॥ ३५ ॥ वधी ताडका
राम जानि सबलायक ॥ विद्यामंत्र रहस्य दिए मुनिना-
यक ॥३६॥ मग लोगन्हके करत सफल मन लोचन॥
गए कौशिक आश्रमहि विप्र भव मोचन ॥ ३७ ॥ मारि
निशाचर निकर यज्ञ करवायउ ॥ अभय किए मुनिवृंद
जगत यश गायउ ॥ ३८ ॥ विप्रसाधु सुरकाज महा

मुनि मन धरि॥ रामहिं चले लिवाइ धनुषमख मिसु कारि॥ ३९॥ गौतमनारि उधारि पठै पतिधामहि॥ जनक नगर लैगयेउ महामुनि रामहिं॥ ४०॥ छंद॥ लेगयउ रामहि गाधिसुवन विलोकि पुर हरषे हिये॥ सुनि राउ आगे लेन आयउ सचिव गुरु भूसुर लिए॥ नृप गहे पाँय अशीश पाई मान आदर अतिकिए॥ अवलोकि रामहि अनुभवत मनु ब्रह्म सुख सौगुण दिए॥ ५॥ देखि मनोहर मूरति मन अनुरागेउ॥ बँध्यो सनेह विदेह विराग विरागेउ॥ ४१॥ प्रमुदित हृदय सराहत भल भवसागर॥ जहँ उपजहि असमानिक विधि बडनागर॥ ४२॥ पुण्य पयोधि मातु पितु ए शिशु सुरतरु॥ रूप सुधासुख देत नयन अमरनि वरु॥ ४३॥ केहि सुकृतीके कुँवर कहिय मुनिनायक॥ गौरश्याम छबि धाम धरे धनुशायक॥ ४४॥ विषय विमुख मन मोर सेइ परमारथ॥ इन्हहिं देखि भयो मगन जानि बड़स्वारथ॥ ४५॥ कहेउ सप्रेम पुलकि मुनि सुनि महिपालक॥ ए परमारथ रूप ब्रह्ममय बालक॥ ४६॥ पूषण वंश विभूषण दशरथनंदन॥ नाम राम अरु लषण सुरारि निकंदन॥ ४७॥ रूप शील वय वंश राम परिपूरन॥ समुझि कठिन प्रण आपन लाग बिसूरन॥ ४८॥ छंद॥ लागे बिसूरन समुझि प्रण मन बहुरि धीरज आनिकै॥

ल चले देखावन रंगभूमि अनेक विधि सनमानिकै ॥ कौशिक सराही रुचिर रचना जनक सुनि हरषित भए॥ तब राम लषण समेत मुनि कहँ सुभग सिंहासन दए॥ राजत राजसमाज युगल रघुकुलमनि ॥ मनहु शरद विधु उभय नखत धरणी धनि ॥ ४९ ॥ काक पक्ष शिर सुभग सरोरुह लोचन ॥ गौर श्याम शत कोटि काम मदमोचन॥५०॥तिलक ललित शरभ्रकुटी काम कमानै ॥ श्रवण विभूषण रुचिर देखि मनमानै ॥ ५१ ॥ नाशा चिबुक कपोल अधररदसुन्दर ॥ बदन शरदविधु निंदक सहज मनोहर ॥ ५२ ॥ उर विशाल वृष कंध सुभग भुज अति बल ॥ पीत वसन उपवीत कण्ठ मुकुताफल ॥ ५३ ॥ कटि निषंग कर कमलन्हि धरे धनुशायक ॥ सकल अंग मनमोहन जोहन लायक ॥ ॥ ५४ ॥ राम लषण छबि देखि मगन भए पुरजन ॥ उर आनँद जल लोचन प्रेम पुलक तन ॥ ५५ ॥ नारि परस्पर कहहिं देखि दुहुँ भाइन्ह ॥ लहेउ जनम आजु जनमि जग आइन्ह ॥५६॥ छंद ॥ जग जनमि लोचन लाहु पाए सकल शिवहि मनावहीं ॥ वर मिलौ सीतहि साँवरो हम हरषि मंगल गावहीं ॥ एक कहहिं कुँवर किशोर कुलिश कठोर शिव धनु है महा ॥ किमि लेहि बाल मराल मंदर नृपहिं अस काहु न कहा ॥ ७ ॥ भे निराश सब भूप विलोकत रामहिं ॥ पण

परिहरि सिय देव जनक वर श्यामहिं ॥ ५७ ॥ कहहिं एक भलिबात व्याहु भल होइहि ॥ वरदुलहिनि लगि जनक अपन प्रण खोइहि ॥ ५८ ॥ शुचि सुजान नृप कहहिं हमहिं अस सूझइ ॥ तेज प्रताप रूप जहँ तहँ बल बूझइ ॥ ५९ ॥ चितइ न सकहु रामतन गाल बजावहु ॥ विधि वश बलउ लजान सुमति न लजावहु ॥ ६० ॥ अवशि रामके उठत शरासन टूटिहि ॥ गवनिहि राज समाज नाक असि फूटिहि ॥ ६१ ॥ कसन पियहु भरिलोचन रूप सुधारसु॥ करहु कृतारथ जन्म होहु कत नर पशु ॥ ६२ ॥ दुहुँ दिशि राजकुमार विराजत मुनिवर ॥ नील पीत पाथोज बीच जनु दिनकर ॥ ६३ ॥ काकपक्ष ऋषि परसत पाणि सरोजनि ॥ लाल कमल जनु लालत बाल मनोजनि॥ ॥ ६४ ॥ छंद ॥ मनसिज मनोहर मधुर मूरति कस न सादर जोवहू ॥ बिनुकाज राज समाज महँ तजि लाज आपु बिगोवहू ॥ शिख देइ भूपनि साधु भूप अनूप छवि देखन लगे ॥ रघुवंश कैरवचंद जितई चकोर जिमि लोचन ठगे ॥ ८ ॥ पुर नर नारि निहारहिं रघुकुल दीपहि ॥ दोष नेहवश देहिं विदेह महीपहि ॥ ॥ ६५ ॥ एक कहहिं भल भूप देहु जनि दूषण ॥ नृप

न सोइ विनु वचन नाक विनु भूषण ॥ ६६ ॥ हमरे जान जनेश बहुत भल कीन्हेउ ॥ पगमिस लोचन लाहु सबन्हि कहँ दीन्हेउ ॥ ६७ ॥ अस सुकृती नरनाह जो मन अभिलाषिहि ॥ सो पुरइहि जगदीश पैज प्रण राखिहि ॥ ६८ ॥ प्रथम सुनत जो राउ राम गुण रूपहि ॥ बोलि ब्याहि सिय देत दोष नहिं भूपहिं ॥ ॥ ६९ ॥ अब करि पैज पञ्चमहँ जो प्रण त्यागै ॥ विधि गति जानि न जाइ अयश जग जागै ॥ ७० ॥ अजहुँ अवशि रघुनंदन चाप चढाउब ॥ ब्याह उछाह सुमंगल त्रिभुवन गाउब ॥ ७१ ॥ लागि झरोखन्ह झांकहिं भूपति भामिनि॥कहत वचन रद लसहिं दमक जनु दामिनि॥७२॥छंद॥ जनुदमकदामिनिरूप रति मृदु निदरि सुन्दरि सोहहीं॥मुनि ढिग देखाये सखिन्ह कुँवर विलोकि छवि मन मोहहीं ॥ सियमातु हरषी निरखि सुखमा अति अलौकिक रामकी ॥ हिय कहति कहँ धनु कुँवर कहँ विपरीत गति विधि वामकी ॥९॥ कहि प्रिय वचन सखिन्हसन रानि विसूरति॥ कहाँ कठिन शिव धनुष कहाँ मृदुमूरति ॥ ७३ ॥ जो विधि लोचन अतिथि करत नहिं रामहिं ॥ तौ कोउ नृपहि न देत दोष परिणामहि ॥ ७४ ॥ अब असमंजस भयउ न

कछु कहि आवै ॥ रानिहि जानि सशोच सखी समु-
झावै ॥ ७५ ॥ देवि सोच परिहरिय हरष हिय
आनिय ॥ चाप चढाउब राम वचन फुर मानिय ॥
॥ ७६ ॥ तीनि काल कर ज्ञान कौशिकहि करतल ॥
सो कि स्वयंवर आनहि बालक विनुबल ॥७७॥ मुनि-
महिमा सुनि रानिहि धीरज आयउ ॥ तब सुबाहु-
सूदन यश सखिन सुनायउ ॥७८॥ सुनि जिय भयउ
भरोस रानि हिय हरखइ ॥ बहुरि निरखि रघुवरहि
प्रेम मन करखइ ॥ ७९ ॥ नृप रानी पुर लोग राम-
तन चितवहिं ॥ मंजु मनोरथ कलश भरहिं अरु रित-
वहिं ॥८०॥ छन्द ॥ रितवहिं भरहिं धनु निरखि छिन
छिन निरखि रामहि शोचहीं ॥ नर नारि हरष विषाद-
वश हिय सकल शिवहि सकोचहीं ॥ तब जनक
आयसु पाइ कुलगुरु जानकिहि लै आयऊ ॥ सिय
रूप राशि निहारि लोचन लाहु लोगन्हि पायऊ ॥१०॥
मंगल भूषण वसन मंजु तन सोहहिं ॥ देखि मूढ महि-
पाल मोहवश मोहहिं ॥ ८१ ॥ रूप राशि जेहिं ओर
सुभाय निहारइ ॥ नील कमल सर श्रेनि मयन जनु
डारइ ॥८२॥ छिन सीतहि छिन रामहि पुरजन देखहिं॥
रूप शील वय वयस विशेष विशेषहिं ॥ ८३ ॥ राम

दीख जब सीय सीय रघुनायक ॥ दोउतन तकि तकि नयन सुधारत शायक ॥ ८४ ॥ प्रेम प्रमोद परस्पर प्रगटत गोपहि ॥ जनु हिरदय गुण ग्राम थूनि थिररोपहि ॥ ८५ ॥ राम सीय वय समौ सुभाय सुहावन॥ नृप यौवन छबि पुरइ चहत जनु आवन ॥ ८६ ॥ सो छबि जाइ न वरणि देखि मनमानै ॥ सुधा पान करि मूक कि स्वाद बखानै ॥ ८७ ॥ तब विदेहप्रण बंदिन्ह प्रगटि सुनायउ ॥ उठे भूप आमरषि शकुन नहिं पायउ ॥ ८८ ॥ छंद ॥ नहिं शकुन पायेउ रहे मिसुकरि एक धनु देखन गए ॥ टकटोरि कपि ज्यौं नारियर शिर नाइ सब बैठत भए ॥ इक करहिं दाप न चाप सज्जन वचन जिमि टारे टरै ॥ नृप नहुष ज्यों सबके विलोकत बुद्धि बल बरबश हरै ॥ ११ ॥ देखि सपुर परिवार जनकहिय हारेउ ॥ नृप समाज जनु तुहिन वनज बन मारेउ ॥ ८९ ॥ कौशिक जनकहि कहेउ देहु अनुशासन ॥ देखि भानुकुल भानुइ सानु शरासन ॥ ९० ॥ मुनिवर तुम्हरे वचन मेरु महिडोलहि ॥ तदपि उचित आचरत पाँच भल बोलहि ॥ ॥ ९१ ॥ बानुबानु जिमि गयउ गवहि दशकंधर ॥ को अवनीतल इन्द्रसम वीरधुरंधर ॥ ९२ ॥ पार्वती मन-

सरिस अचल धनु चालक ॥ अहहिं पुरारि तेउ एक नारिव्रत पालक ॥९३॥ सो धनु कहि अविलोकन भूप किशोरहि ॥ भेद कि सिरिस सुमन कण कुलिश कठोरहि ॥ ९४ ॥ रोम रोम छवि निंदति सोम मनोजनि ॥ देखिय मूरति मलिन परिय मुनि सोजनि॥ ॥ ९५ ॥ मुनि हँसि कहेउ जनक यह मूरति सोहइ ॥ सुमिरत सकृत मोह मल सकल बिछोहइ ॥ ९६ ॥ छंद ॥ सब मल बिछोहनि जानि मूरति जनक कौतुक देखहू॥धनु सिंधु नृप बल जल बढ्यो रघुवरहि कुंभज लेखहू ॥ सुनि सकुचि सोचहिं जनक गुरु पद वंदि रघुनंदन चले ॥ नहिं हरष हृदय विषाद कछु भए शकुन शुभ मंगल भले॥ १२॥ बरसन लगे सुमन सुर दुंदुभि वाजहिं ॥ मुदित जनक पुरपरिजन नृप गण लाजहिं ॥ ९७ ॥ महि महिधरनि लषण कह बलहि बढावन ॥ राम चहत शिव चापहि चपरि चढावन॥ ॥ ९८ ॥ गए सुभाय राम जब चाप समीपहि ॥ सोच सहित परिवार विदेह महीपहि॥९९॥कहि न सकति कछु सकुचति सिय हिय सोचइ ॥ गौरि गणेश गिरीशहि सुमिरि सकोचइ ॥१००॥ होति बिरहसर मगन देखि रघुनाथहि ॥ फरकि वाम भुज नयन देहिं जनु

हाथहि ॥ १०१ ॥ धीरज धरति शकुन वल रहति सो नाहिंन ॥ वर किशोर धनु घोर दइउ नहिं दाहिन ॥ १०२ ॥ अंतर्यामी राम मरम सब जानेउ ॥ धनु चढाइ कौतुकहिं कानलगि तानेउ॥१०३॥प्रेम परखि रघुबीर शरासन भंजेउ ॥ जनु मृगराज किशोर महा-गज गंजउ ॥ १०४ ॥ छंद ॥ गंजेउ सो गर्जेउ घोर धुनि सुनि भूमि भूधर लरखरे ॥ रघुवीर यश मुकुता विपुल सब भुवन पटु पेटकभरे॥हित मुदित अनहित रुदित मुख छबि कहत कवि धनु जागकी ॥ जनु भोर चक्क चकोर कैरव सघन कमल तडागकी॥१३॥ नभ पूर मंगल गान निसान गहागहे ॥ देखि मनोरथ सुर तरु ललित लहालहे ॥ १०५ ॥ तब उपरोहित कहेउ सखी सब गावत ॥ चली लेवाइ जानकिहि भा मनभा-वत ॥१०६॥ कर कमलनि जयमाल जानकी सोहइ ॥ वरणि सकै छबि अतुलित अस कवि कोइइ ॥ ॥ १०७ ॥ सीय सनेह सकुचवश पियतन हेरइ ॥ सुर तरु रुख सुरवेलि पवन जनु फेरइ ॥ १०८ ॥ लसत ललित कर कमल माल पहिरावत ॥ काम फंद जनु चंदहि वनज फँदावत ॥ १०९ ॥ रामसीय छबि निरु-पम निरुपम सो दिन ॥ सुख समाज लखि रानिन्ह

आनँद छिनछिन॥११०॥प्रभुहि माल पहिराइ जानकिहि लैचली ॥ सखीमनहुँ विधु उदय मुदित कैरव कली ॥ १११ ॥ वरषहिं विबुध प्रसून हरषि कहि जयजए ॥ सुख सनेह भरे भुवन रामगुरुपहिं गए ॥११२॥ छंद ॥ गए राम गुरुपाहिं राउ रानी नारि नर आनँद भरे ॥ जनु तृषित करि करिनी निकर शीतल सुधा सागर परे ॥ कौशिकहि पूजि प्रशंसि आयसु पाइ नृप सुखपायऊ॥ लिखि लगन तिलक समाज सजि कुलगुरुहि अवध पठायऊ ॥ १४ ॥ गुणि गण बोलि कहेउ नृप मांडव छावन ॥ गावहिं गीत सुआसिनि बाज वधावन ॥ ११३ ॥ सीय राम हित पूजहिं गौरि गणेशहि ॥ परिजन पुरजन सहित प्रमोद नरेशहि ॥ ११४ ॥ प्रथम हरदि वेदन करि मंगल गावहिं ॥ करि कुलरीति कलश थपि तेलु चढावहिं ॥ ॥ ११५ ॥ गे मुनि अवध विलोकि सुसरित नहायउ॥ सतानंद शत कोटि नामफल पायउ ॥ ११६ ॥ नृप सुनि आगे आइ पूजि सनमानेउ ॥ दीन्ह लगन कहि कुशल राउ हरषानेउ ॥११७॥ सुनि पुर भयउ अनंद बधाव बजावहिं ॥ सजहिं सुमंगल कलश वितान बनावहिं ॥ ११८ ॥ राउ छाँडि सब काजसाज सब

साजहिं ॥ चलेउ बरात बनाइ पूजि गणराजहि ॥११९॥ बाजहिं ढोल निसान शकुन शुभ पायन्हि ॥ सियनैहर जनकौर नगर नियरायन्हि ॥ १२० ॥छंद॥ नियरानि नगर बरात हरषी लेन अगवानी गए ॥देखत परस्पर मिलत मानत प्रेम परिपूरण भए॥ आनंदपुर कौतुक कोलाहल बनत सो बरणत कहां ॥ लै दियो तहँ जनवास सकल सुपास नित नूतन जहां ॥ १५॥ गे जनवासेहि कौशिक रामलषण लिए॥ हरषे निरखि बरात प्रेम प्रमुदित हिए॥ १२१ ॥ हृदय लाइ लिए गोदमोद अति भूपहि ॥ कहि न सकहिं शत शेष अनंद अनूपहि ॥ १२२ ॥ राय कौशिकहि पुनि दान विप्रन्ह दिए ॥ राम सुमंगल हेतु सकल मंगल किए॥ ॥ १२३ ॥ ब्याह विभूषण भूषित भूषण भूषण॥ विश्व विलोचन वनज विकासक पूषण॥ १२४ ॥ मध्य बरात विराजत अति अनुकूलेउ ॥ मनहुँ काम आराम कल्पतरु फूलेउ॥ १२५ ॥ पठई भेंट विदेह बहुत बहु भाँतिन्ह ॥ देखत देव सिहाहिं अनंद बरातिन्ह ॥ ॥ १२६ ॥ वेदविहित कुलरीति कीन्हि दुहुँ कुलगुर॥ पठइ बोलि बरात जनक प्रमुदित उर॥ १२७॥ जाइ कहेउ पगुधारिय मुनि अवधेशहि ॥ चले सुमिरि गुरु

गौरि गिरीश गणेशहि ॥ १२८ ॥ छंद ॥ चले सुमिरि गुरु सुर सुमनवर्षांहिं परे बहुविधि पाँवडे ॥ सनमानि सबविधि जनक दशरथ किए प्रेम कनावडे ॥ गुण सकल सम समधी परस्पर मिलत अति आनंद लहे ॥ जय धन्य जय २ धन्य २ विलोकि सुरनर मुनि कहे ॥ १६ ॥ तीनि लोक अवलोकहिं नहिं उपमा कोऊ ॥ दशरथ जनक समान जनक दशरथ दोऊ ॥ १२९ ॥ सजहिं सुमंगल साज रहस रनिवासहिं ॥ गान करहिं पिकबैनि सहित परिहासहिं ॥ १३० ॥ उमा रमादिक सुरतिय सुनि प्रमुदित भईं ॥ कपट नारि वर वेष विरचि मंडप गईं ॥१३१॥ मंगल आरति साजि वरहिं परिछनिचली ॥ जनु विकसी रवि उदय कनक पंकज कली ॥ १३२ ॥ नख शिख सुंदर राम रूप जब देखहिं॥ सब इंद्रिन्ह महँ इन्द्रबिलोचन लेखहिं॥१३३॥ परम प्रीति कुलरीति करहिं गजगामिनि॥नहिं अघाहि अनुराग भाग भरि भामिनि ॥ १३४ ॥ नेगचार कहँ नागरि गहरु लगावहिं ॥ निरखि २ आनंद सुलोचनि पावहिं ॥ १३५ ॥ करि आरती निछावरि वरहिं निहा-रहिं ॥ प्रेम मगन प्रमदागण तनुन सम्हारहिं ॥ ॥ १३६ ॥ छंद ॥ नहिं तनु सम्हारहिं छवि

निहारहिं निमिष रिपु जनु रणजए ॥ चकवै लोचन रामरूप सुराजसुख भोगी भए ॥ तब जनक सहित समाज राजहि रुचित रुचिराशन दये ॥ कौशिक वाशिष्ठहि पूजि पूजे राउ दै अंबर नये ॥ १७ ॥ देत अरघ रघुवरहि मंडप लै चलीं ॥ करहिं सुमंगल गान उमँग आँनद अलीं ॥ १२७ ॥ वर विराज मंडपमहँ विश्व विमोहई ॥ ऋतु वसंत वन मध्य मदन जन सोह ई ॥ १२८ ॥ कुल व्यवहार वेद विधि चाहिय जहँ जस ॥ उपरोहित दोउ करहिं मुदित मन तहँ तस ॥ ॥ १२९ ॥ वरहि पूजि नृप दीन्ह सुभग सिंहासन ॥ चलीं दुलहिनिहि ल्याइ पाइ अनुशासन ॥ १३० ॥ युवती युत्थमहँ सीय सुभाइ विराजइ ॥ उपमा कहत लजाइ भारती भाजइ ॥ १३१ ॥ दूलह दुलहिनिन्ह देखि नारि नर हरषहिं ॥ छिन छिन गान निसान सुमन सुर वरषहिं ॥ १३२ ॥ लैलै नाम सुहासिनि मंगल गावहिं ॥ कुँवर कुँवरि हित गणपति गौरि पुजावहिं ॥ १३३ ॥ अगिनि थापि मिथिलेश कुशोदक लीन्हेउ ॥ कन्यादान विधान संकलप कीन्हेउ॥१३४॥ छंद ॥ संकलिप सिय रामहि समर्पी शील सुख शोभामई ॥ जिमि शंकरहि गिरिराज गिरिजा हरिहि श्रीसा

गर दई ॥ सिंदूरवंदन होम लावा होन लागीं भाँवरी॥ शिलपोहनी करि मोहनी मन हरचौ मूरति साँवरी ॥ ॥ १८ ॥ यहि विधि भयो विवाह उछाह तिहूं पुर ॥ देहिं अशीश मुनीश सुमन वरषहिं सुर ॥ १४५ ॥ मन भावत विधि कीन्ह मुदित भामिनि भई ॥ वरदु- लहिनहि लेवाइ सखी कोहवर गई ॥ १४६ ॥ निरखि निछावरि कराहिं बसन मणि छिन छिन ॥ जाइ न वरणि विनोद मोदमय सो दिन ॥ १४७ ॥ सिय भ्राताके समय भौम तहँ आयउ ॥ दुरीदुरा करि नेग सुनात जनायउ ॥ १४८ ॥ चतुर नारि वर कुँवरहि रीति सिखावहिं ॥ देहि गारि लहकौरि समौ सुख पावहिं ॥ १४९ ॥ जुआ खेलावत कौतुक कीन्ह सयानिन्ह ॥ जीति हारि मिस देहिं गारि दुहुं रानिन्ह॥१५०॥ सीय मातु मन मुदित उतारति आरती ॥ को कहि सकइ अनंद मगन भइ भारति ॥१५१॥ युवति यूथ रनिवास रहस बस यहि विधि ॥ देखि देखि सिय राम सकल मंगलनिधि ॥ १५२ ॥ छंद ॥ मंगल निधान विलोकि लोचन लाह लूटति नागरी ॥ दई जनक तिहुँ कुँवरन्हि कुँवरि विवाह सुनि आनंदभरी ॥ कल्याण मो कल्याण पाइ वितान छबि मन मोहई ॥ सुर धेनु शशि सुरमणि सहित मानहुँ कलपतरु सोहई ॥ १९ ॥ जनक अनु-

जतनया द्वै परम मनोरम ॥ जेठि भरत कहँ व्याहि रूपरतिशयसम ॥ १५३ ॥ सिय लघुभगिनी लषण कहँ रूपउजागरि ॥ लषण अनुज श्रुतिकीरति सब गुण आगरि ॥ १५४ ॥ राम विवाह समान व्याह तीनिउ भए ॥ जीवन फल लोचन फल विधि सबकहँ दए ॥ १५५ ॥ दाइज भयउ विविधि विधि जाइ न सो गनि ॥ दासी दास वाजि गज हेम वसन मनि ॥ ॥ १५६ ॥ दान मान परमान प्रेस पूरण किये॥ समधी सहित बरात विनय वश करि लिए ॥ १५७॥ गे जन-वासेहि राउ संगसुतसुतबहू॥जनुपाएफलचारिसहितसा-धन,चहूँ॥१५८॥चहुँ प्रकार जेंवनार भई बहु भाँतिन्ह॥ भोजन करत अवधपति सहित बरातिन्ह ॥ १५९ ॥ देहिं गारि वर नारि नास लै दुहुँ दिशि ॥ जेंवत बढेउ अनंद सोहावनि सो निशि ॥ १६० ॥ छंद ॥ सो निशि सोहावनि मधुर गावनि बाजने बाजहिं भले ॥ नृप कियो भोजन पान पाइ प्रमोद,जनवासहि चले ॥ नट भाट सागध सूत याचक यश प्रतापहि वरनहीं॥सानंद भूसुरवृंद मणि गज देत मन करषै नहीं ॥२०॥ करि करि विनय कछुक दिन राखि बरातिन्ह ॥ जन कीन्ह पहुनाई अगनित भाँतिन्ह ॥ १६१ ॥ प्रात बरात चलिहि सुनि भूपति भामिनि ॥ परि न विरहवश नींद

बीति गइ यामिनि ॥ १६२ ॥ खरभर नगर नारि नर विधिहि मनावहिं॥बार बार ससुरारि राम जेहिं आवहिं ॥ १६३ ॥ सकल चलनके साज जनक साजत भए॥ भाइन्ह सहित राम तब भूप भवन गए ॥ १६४ ॥ सासु उतारि आरती करहिं निछावरि ॥ निरखि निरखि हिय हरषहिं मूरति साँवरि ॥१६५॥ माँगेउ विदा राम तब सुनि करुणा भरी ॥ परिहरि सकुच सप्रेम पुलकि पायन्ह परी ॥ १६६ ॥ सीय सहित सब सुता सौंपि कर जोरहिं ॥ बारबार रघुनाथहि निरखि निहोरहिं ॥ ॥ १६७ ॥ तात तजिय जनि छोह मया राखवि मन॥ अनुचर जानब राउ सहित पुर परिजन ॥ १६८॥छंद॥ जन जानि करब सनेह बालि कहि दीन वचन सुनावहीं॥ अति प्रेम बारहिं बार रानी बालकिन्ह उर लावहीं ॥ सिय चलत पुरजन नारि हय गय विहँग मृग व्याकुल भए ॥ सुनि विनय सासु प्रबोधि तब रघुवंशमणि पितुपहँ गए ॥ २१ ॥ परेउ निसानहिं घाउ राउ अवधहि चले ॥ सुरगण वरषहिं शकुन सगुन पावहिं भले ॥ १६९ ॥ जनक जानकिहि भेंटि सिखाइ सिखावन॥ सहित सचिव गुरु बंधु चले पहुँचावन ॥ १७० ॥ प्रेम पुलकि कहिराय फिरिय अब राजन ॥ करत पर-

रूपर विनय सकल गुणभाजन ॥ १७१ ॥ कहेउ जनक कर जोरि कीन्ह मोहिं आपन ॥ रघुकुल तिलक सदा तुम्ह उथपन थापन ॥ १७२ ॥ बिलग न मानव मोर जो बोलि पठायउँ ॥ प्रभु प्रसाद यश जाति सकल सुख पाएउँ ॥ ॥ १७३ ॥ पुनि वशिष्ठ आदिक मुनि वंदि महीपति ॥ गहि कौशिकके पायँ कीन्हि विनती अति ॥ १७४ ॥ भाइन्ह सहित बहोरि विनय रघुवीरहि ॥ गदगद कंठ नयन जल उर धरि धीरहि॥१७५॥ कृपासिंधु सुखसिंधु सुजान शिरोमनि ॥ तातसमय सुधिकर बिछोह छांडब जनि ॥ ॥ १७६ ॥ छंद॥जनि छोह छांडब विनय सुनि रघुवीर बहु विनती करी ॥ मिलि भेंटि सहित सनेह फिरेउ विदेह मन धीरज धरी॥ सो समौ कहत न बनत कछु सब भुवन भरि करुणा रहे ॥ तब कीन्ह कोशलपति पयान निसान बाजे गहगहे ॥ २२ ॥ पंथ मिले भृगुनाथ हाथ फरसा लिये॥ डाटहिं आँखि देखाइ कोप दारुण किए ॥ १७७ ॥ राम कीन्ह परितोष रोषरिस परिहरि ॥ चले सौंपि शारंग सुफल लोचन करि ॥ १७८ ॥ रघुवर भुज बल देखि उछाह बरातिन्ह ॥ मुदित राउ लखि सन्मुख विधि सब भाँतिन्ह ॥ १७९ ॥ एहि विधि ब्याहि सकल

सुत जग यश छायउ॥ मगलोगनि सुख देत अवध पति आयउ॥१८०॥ होहिं सुमंगल शकुन सुमन सुर वरषहिं॥नगर कोलाहल भयउ नारि नर हरषहिं॥१८१॥ घाट वाट पुर द्वार बजार बनावहिं॥ वीथी सींचि सुगंध सुमंगल गावहिं॥ १८२॥ चौकैं पूरैं चारु कलश ध्वज साजहिं॥ विविधि प्रकार गहागहे बाजन बाजहिं ॥ १८३ ॥ वंदनवार वितान पताका घर घर॥ रोंपे सफल सपल्लव मंगल तरुवर॥ १८४॥ छंद॥मंगल विटप मंजुल विपुल दधि दूब अक्षत रोचना॥ भरि थार आरतिसजहिं सब शारंग शावक लोचना॥ मन मुदित कौशल्या सुमित्रा सकल भूपति भामिनी॥ सजि साज परिछन चलीं रामहिं मंत्र कुंजरगामिनी ॥२३॥वधुन्ह सहित सुत चारिउ मातु निहारहिं॥बारहिं बार आरती मुदित उतारहिं॥१८५॥ करहिं निछावरि छिनु छिनु मंगल मुद भरीं॥ दुलह दुलहिनिन्ह देखि प्रेमपयनिधि परीं॥१८६॥देतपाँवडे अरघ चलीं लै सादर॥उमँगि चलेउ आनंद भुवन भुँइ बादर॥१८७॥नारि उहार उघारि दुलहिनिन्ह देखहिं॥नैन लाहु लहि जनम सफल करि लेखहिं॥ १८८॥ भवन आनि सनमानि सकल मंगल किए॥ बसन कनकमणि धेनुदान विप्र-

न्ह दिए ॥ १८९ ॥ याचक कीन्ह निहाल अशीशहिं जहँ तहँ ॥ पूजे देव पितर सब राम उदय कहँ॥१९०॥ नेगचार करि दीन्ह सबहि पहिरावनि ॥ समधी सकल सुआसिनि गुरु तिय पावनि ॥ ॥ १९१ ॥ जोरी चारि निहारि अशीशत निकसहिं ॥ मनहुँ कुमुद विधु उदय मुदित मन विकसहिं ॥१९२॥ छंद ॥ विकसहिं कुमुद जिमि देखि विधु भए अवध सुख शोभामई ॥ एहि जुगुति राम विवाह गावहिं सकल कवि कीरति नई ॥ उपवीत व्याह उछाह जे सिय राम मंगल गावहीं ॥ तुलसी सकल कल्याण ते नर नारि अनुदिनुपावहीं॥२४॥

इति श्रीगोसाईं तुलसीदासजीविरचितं श्रीजानकी-
स्वयंवरमंगलं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीः ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-

गीतावली ।

गान रसिक हरिभक्तोंके आनन्दार्थ सातौ कांड रामायण अनेक प्रकारके राग रागिनियोंमें वर्णित है ।



खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् १९८८, शकाब्दाः १८५३.

५

॥ श्रीरामपञ्चायतन ॥



श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

अथ गीतावलीप्रारम्भः ।

श्लोक ॥ नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागम् ॥ पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ १ ॥ राग आसावरी ॥ आजु सुदिन शुभ घरी सुहाई ॥ रूपशील गुणधाम रामनृप भवन प्रकट भए आई ॥ १ ॥ अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह बार योग समुदाई ॥ हर्षवंत चरअचर भूमिसुत तनरुह पुलकि जनाई ॥२॥ बरषहिं विबुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदुभी बजाई ॥ कौशल्यादि मातु मन हरषित यह सुख बरणि न जाई ॥३॥ सुनि दशरथसुत जन्म लिये सब गुरु जन विप्र बोलाई॥वेद विहित करि कृपा परम शुचि आनँद उर न समाई ॥ ४ ॥ सदन वेद धुनि करत मधुर धुनि बहु विधि बाज बधाई ॥ पुरवासिन्ह प्रियनाथ हेतु निज निज संपदा लुटाई ॥ ॥ ५ ॥ मणि तोरण बहु केतु पताकनि पुरी रुचिर करि छाई ॥ मागध सूत द्वार बंदीजन जहँ तहँ करत बडाई ॥ ६ ॥ सहज शृँगार किए वनिता चलीं मंगल विपुल बनाई ॥ गावहिं देहिं अशीश मुदित चिरजिवो

तनय सुखदाई ॥ ७ ॥ वीथिन्ह कुंकुम कीच अरगजा अगर अबीर उडाई ॥ नाचहिं पुर नर नारि प्रेमभर देह दशा बिसराई ॥ ८ ॥ अमित धेनु गज तुरँग वसन मणि जातरूप अधिकाई ॥ देत भूप अनुरूप जाहि होइ सकल सिद्धि गृह आई ॥ ९ ॥ सुखी भए सुर संत भूमि सुर खल गण मन मलिनाई ॥ सबइ सुमन विकसत रवि निकसत कुमुद विपिन बिलखाई ॥१०॥ जो सुख सिन्धु सुकृत सीकरते शिव विरंचि प्रभुताई॥ सोइ सुख अवध उमँगि रह्यो दश दिशि कौन जतन कहौं गाई ॥ ११ ॥ जे रघुवीर चरण चिंतक तिन्हकी गति प्रगट देखाई ॥ अविरल अमल अनूप भगति दृढ तुलसिदास तब पाई ॥ १२ ॥१॥ (राग जयतश्री) सहेली सुनु सोहिलो रे ॥ सोहिलो सोहिलो सोहिलो २ सब जग आज ॥ पूत सपूत कौशिला जायो अचल भयो कुलराज ॥ १ ॥ चैत चारु नौमी शिता मध्य गगन गत भानु ॥ नखत योग ग्रह लगन भले दिन मंगल मोद निधानु ॥ २ ॥ व्योम पवन पावक जल थल दिशि दशहु सुमंगल मूल ॥ सुर दुंदुभी बजावहिं गावहिं हरषहिं वरषहिं फूल ॥ ३ ॥ भूपति सदन सोहिलो सुनि बाजैं गह गहे निसान ॥ जहँ तहँ सजाहिं कलश ध्वज चामर तोरण केतु वितान ॥ ४ ॥ सींचि सुगन्ध रचै चौकै गृह आँगन गली बजार ॥

दल फल फूल दूब दधि रोचन घर घर मङ्गलचार ॥
॥ ५ ॥ सुनि सानंद उठे दशस्यंदन सकल समाज समेत ॥ लिये बोलि गुरु सचिव भूमिसुर प्रमुदित चले हैं निकेत ॥ ६ ॥ जातकर्म करि पूजि पितर सुर दिये महिदेवन दान ॥ तेहि औसर सुत तीनि प्रगट भए मंगल मुद कल्यान ॥ ७ ॥ आनँद महँ आनंद अवध आनंद बधावन होइ ॥ उपमा कहँ चारि फलकी मोको भलो न कहै कवि कोइ ॥ ८ ॥ सजि आरती विचित्र थारकर यूथ यूथ वरनारी ॥ गावत चलीं बधावनो लैलै निज निज कुल अनुहारी ॥ ९ ॥ असही दुसही मरहु मनहिं मन वैरि न बढहु विषाद ॥ नृपसुत चारि चारु चिरंजीवहु शंकर गौरि प्रसाद ॥
॥ १० ॥ लैलै ढोल प्रजा प्रमुदित चले भाँति भाँति भरभार ॥ करहिं गान करि आन रायकी नाचहिं राज-दुवार ॥ ११ ॥ गज रथ वाजि वाहिनी वाहन सबनि सँवारे साज ॥ जनु रतिपति ऋतुपति कोशलपुर विह-रत सहित समाज ॥ १२ ॥ घंटा घंटि पखाउज झांझ बेणु डफ तार ॥ नूपुर धुनि मंजीर मनोहर कर कंकण झनकार ॥ १३ ॥ नृत्य करहिं नट नटी नारि नर अपने अपने रंग ॥ मनहुँ मदनरति विविध वेषधरि नटत सुदेश सुधंग ॥ १४ ॥ उगटहिं छंद प्रबंध गीत पद राग तान बन्धान ॥ सुनि किन्नर गंधर्व सरा-

हृत विथके हैं विबुध विमान ॥ १५ ॥ कुंकुम अगर अरगजा छिरकहिं भरहिं गुलाल अबीर ॥ नभ प्रसून झरि पुरी कोलाहल भो मन भावति भीर॥१६॥बडी वयस विधि भयो दाहिनो सुरगुरु आशिरवाद ॥ दशरथ सुकृत सुधासागर सब उमँगे हैं तजि मरयाद ॥ १७ ॥ ब्राह्मण वेदबंदि विरदावलि जय धुनि मंगल गान ॥ निकसत पैठत लोग परसपर बोलत लगि लगि कान॥ ॥ १८ ॥ वारहिं मुकुता रतन राजमहिषी पुर सुमुखि समान ॥ वगरे नगर निछावरि मणिगण जनु जुवारि जव धान ॥ १९ ॥ कीन्हि वेद विधि लोकरीति नृप मंदिर परम हुलास ॥ कौशल्या कैकयी सुमित्रा रहस विवश रनिवास ॥ २० ॥ रानिन दिए वसनमणि भूषण राजा सहन भंडार ॥ मागध सूत भाट नट याचक जहँ तहँ करहिं कबार॥२१॥विप्रवधू सनमानि सुआसिनि जन पुरजन पहिराइ॥सनमाने अवनीश अशीशत ईश रमेश मनाइ ॥२२॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि भूति सब भूपति भवन कमाहिं ॥ समउ समाज राजदशरथको लोकप सकल सिहाहिं ॥ २३ ॥ को कहिसकै अवध वासिनको प्रेम प्रमोद उसाह ॥ शारद शेष गनेश गिरीशहि अगम निगम अवगाह ॥२४॥ शिव विरंचि मुनि सिद्ध प्रशंसत बडे भूपके भाग ॥ तुलसीदास प्रभु सोहिलो गावत उमँगि उमँगि अनुराग ॥ २५ ॥ २ ॥

(राग बिलावल)॥ आजु महामंगल कोशलपुर सुनि नृपके सुत चारि भए ॥ सदन सदन सोहिलो सोहावनो नभ अरु नगर निशान हये ॥ १ ॥ सजि सजि यान अमर किन्नर मुनि जानि समय समगान ठये॥ नाचहिं नभ अप्सरा मुदित मन पुनि पुनि वरषहिं सुमन चये॥ ॥ २ ॥ अति सुख वेगि बोलि गुरु भूसुर भूपति भीतर भवन गए ॥ जातकर्म करि कनक बसन मणि भूषित सुरभि समूह दये ॥ ३ ॥ दल फल फूल दूब दधि रोचन युवतिन्ह भरि भरि थार लये॥ गावत चलीं भीर भइ वीथिन्ह वंदिन्ह बाँकुरे विरद वये ॥४॥ कनक कलश चामर पताक ध्वज जहँ तहँ वंदनवार नये ॥ भरहिं अबीर अरगजा छिरकहिं सकल लोक एक रंगरये ॥ ५ ॥ उमँगि चल्यौ आनंद लोक तिहुँ देत सबनि मंदिर रितये ॥ तुलसिदास पुनि भरेइ देखियत रामकृपा चितवनि चितये ॥ ६ ॥ ३ ॥ (राग जयतश्री॥) गावैं विबुध विमल वर वानी ॥ भुवन कोटि कल्याण कंदु जायो पूत कौशिलारानी ॥ १ ॥ मास पाख तिथि वार नखत ग्रह योग लगन शुभ ठानी॥जल थल गगन प्रसन्न साधु मन दशदिशि हिय हुलसानी ॥ २ ॥ बर- षत सुमन बधाव नगर नभ हरष न जात बखानी॥ज्यों हुलास रनिवास नरेशहि त्यौं जनपद रजधानी ॥ ३ ॥ अमर नाग मुनि मनुज सपरिजन विगत विषाद गलानी

मिलेहि माझ रावण रजनीचर लंकशंक अकुलानी॥४॥ देव पितर गुरु विप्र पूजि नृप दिए दान रुचि जानी ॥ मुनि वनिता पुरनारि सुआसिनि सहस भाँति सनमानी ॥ ५ ॥ पाइ अघाइ अशीशत निकसत याचक जन भये दानी ॥ यौं प्रसन्न कैकयी सुमित्रहि होउ महेश भवानी ॥ ६ ॥दिन दूसरे भूप भामिनि दोउ भईं सुमंगल खानी॥भयो सोहिलो सोहिलो सोजनु सृष्टि सोहिलो सानी ॥७॥ गावत नाचत मो मन भावत सुख आवत अधिकानी ॥ देत लेत पहिरत पहिरावत प्रजा प्रमोद अघानी ॥ ८ ॥ गान निसान कुलाहल कौतुक देखत दुनी सिहानी ॥ हरि विरंचि हरपुर शोभा कुलि कौशलपुरी लोभानी ॥ ९ ॥ आनंद अवनिराज रानी सब माँनहु कोखि जुडानी ॥ आशिष दे दे सराहहिं सादर उमारमा ब्रह्मानी॥ १० ॥ विभव विलास बाढि दशरथकी देखि न जिनहिं सोहानी ॥ कीरति कुशल भूति जय ऋधि सिधि तिन्ह पर सबै कोहानी ॥ ११ ॥ छठी बारहौं लोक वेद विधि करि सुविधान विधानी ॥ राम लषण रिपुदवन भरत धरे नाम ललित गुरुज्ञानी ॥ १२ ॥ सुकृत सुमन तिल मोद वासिविधि जतन यंत्र भरि घानी ॥ सुख सनेह सव दियो दशरथहि खरि खलेल थिरथानी ॥ १३ ॥ अनुदिन उदय उछाह उमँग जग घर घर अवध कहानी ॥ तुलसी राम

जनम यश गावत सो समाज उर आनी ॥ १४ ॥ ४ ॥
(राग केदारा ॥) अवध बधावने घर घर मंगल साज समाज ॥ सगुण सोहावने मुदित करत सब निज निज काज ॥ छंद ॥ निज काज सजत सँवारि पुर नर नारि रचना अनगनी ॥ गृह अजिर अटनि बजार वीथिन्ह चारु चौकैं विधि घनी ॥ चामर पताक वितान तोरण कलश दीपावलि बनी ॥ सुख सुकृत शोभामय पुरी विधि सुमति जननी जनु जनी ॥दोहा॥ चैत चतुर्दशि चांदनी, अमल उदित निशिराज ॥ उडुगण अवलि प्रकाशहीं, उमँगत आनँद आज ॥ १ ॥ छंद ॥ आनंद उमँगत आजु विबुध विमान विपुल बनाइकै ॥ गावत बजावत नटत हरषत सुमन वरषत आइकै ॥ नर निरखि नभ सुरपेखि पुरछबि परस परस चुपाइकै ॥ रघुराज साज सराहि लोचन लाहुलेत अघाइकै ॥ २ ॥ जागिये राम छठी सजनी री रजनी रुचिर निहारि ॥ मंगल मोदमठी मूरति जहँ नृप बालक चारि ॥ छंद ॥ मूरति मनोहर चारि विरचि विरंचि परमारथ मई ॥ अनुरूप भूपहि जानि पूजनयोग विधि शंकर दई ॥ तिन्हकी छठी मंजुलमठी जग सरस जिन्हकी सरसई ॥ किये नींद भामिनि जागरण अभिरामिनी यामिनि भई ॥३॥ दोहा ॥ सेवक सजग भये समय, साधन सचिव सुजान ॥ मुनिवर गुरु सिखये लौकिक, वैदिक

विविध विधान ॥छंद॥ वैदिक विधान अनेक लौकिक आचरत सुनि जानिकै ॥ बलिदान पूजा मूलिकामनि साधि राखीं आनिकै ॥ जे देव देवी सेइयत हितलागि चित सनमानिकै ॥ ते यंत्र मंत्र सिखाइ राखत सब-निसों पहिचानिकै ॥ ४ ॥ सकल सुआसिनि गुरुजन पुरजन पाहुनेलोग ॥ विबुध विलासिनी सुर मुनि याचक जो जेहि योग ॥ छंद ॥ जेहि योग जे तेहि भाँतिते पहिराइ परिपूरण किये ॥ जय कहत देत अ-शीश तुलसीदास ज्यों हुलसत हिये ॥ ज्यों आजु कालिहु परँव जागर होहिंगे नेवते दिए ॥ ते धन्य पुण्य पयोधि जे तेहि समै सुख जीवन जिये ॥ ५ ॥ भूपति भागबली सुर वर नाग सराहि सिहाहिं ॥ तिय वरवेष अली संपति सिधि अणिमादिक माहिं ॥छंद॥ अणिमाहिं शारद शैलनंदिनि बाल लालहिं पालहीं ॥ भरि जनम जे पाये नते परितोष उमा रमा लही॥ निजलोक बिसरे लोकपति घरकी न चरचा चालहीं॥ तुलसी तपत तिहुँ ताप जगजनु प्रभु छठी छाया लही ॥ ६ ॥ ९ ॥ (राग जयतश्री) ॥ बाजत अवध गहागहे आनंद बधाये ॥ नामकरन रघुवरनिके नृप सुदिन सो-धाए ॥ पाय रजायसु रायको ऋषिराज बोलाए ॥ शिष्य सचिव सेवक सखा सादर शिर नाए ॥ साधु सुमति समरथ सबै सानंद सिखाए ॥ जल दल फल

मणि मूलिका कुलिकाज लिखाए ॥१॥ गणप गौरि हर पूजिके गोवृंद दुहाए ॥ घर घर मुद मंगल महा-गुण गान सुहाए ॥ तुरत मुदित जहँ तहँ चले मनके भय भाए ॥ सुरपति सासनु घन मनो मारुत मिलि धाए ॥ २ ॥ गृह आँगन चौहट्ट गलीं बाजार बनाए ॥ कलश चँवर तोरण ध्वजा सुवितान तनाए ॥ चित्रचारु चौकै रची लिखि नाम जनाए ॥ भरि भरि सरवर वा-पिका अरगजा सनाये ॥ ३ ॥ नर नारिन्ह पल चारिमें सब साज सजाये ॥ दशरथ पुर छबि आपनी सुर नगर लजाए ॥ विबुध विमान बनाइके आनंदित आए ॥ हरषि सुमन बरसन लगे गये धन जनु पाए ॥ ४ ॥ वर विप्र चहुँ वेदके रविकुल गुरुज्ञानी ॥ आपु वशिष्ठ अथर्वणी महिमा जग जानी ॥ लोकरीति विधि वेदकी करि कह्यो सुवानी ॥ शिशु समेत वेगि बो-लिये कौशल्या रानी ॥ ५ ॥ सुनत सुआसिनि लै चलीं गावत बडभागी ॥ उमा रमा शारद शची देखि सुनी अनुरागी ॥ निज निज रुचिवेष विरचिकै हिलि-मिलि सँगलागी ॥ तेहि अवसर तिहुँ लोककी सुदशा जनु जागी ॥ ६ ॥ चारु चौक बैठत भई भूप भामिनि सोहैं ॥ गोद मोद मूरति लिये सुकृत जन जोहैं ॥ सुख सुखमा कौतुक कला देखि सुनि मुनि मोहैं ॥ सो समाज कहे वरणिकै ऐसे कवि को हैं ॥ ७ ॥ लगे पढ-

न रक्षा ऋचा ऋषिराज विराजे ॥ गान सुमन झरि जयजये बहु बाजने बाजे ॥ भए असंगल लंकमें शंक संकट गाजे॥ भुवन चारि दशके बडे दुख दारिद भाजे ॥८॥ बाल विलोकि अथर्वणी हँसि हरहि जनायो ॥ सुभको शुभ मोद मोदको राम नाम सुनायो ॥ आल-बाल कल कौशिला दल वरन सोहायो ॥ कन्द सकल आनंदको जनु अंकुर आयो ॥ ९ ॥ जोहि जानि नपि जोरिकै कर पुट शिर राखे ॥ जय जय जय करुणानि-धे सादर सुर भाषे ॥ सत्यसिंधु साँचे सदा जे आखर आषे ॥ प्रणतपाल पाये सही जे फल अभिलाषे ॥ ॥ १० ॥ भूमिदेव देव देखिकै नर देव सुखारी ॥ बोलि सचिव सेवक सखा पट धारि भँडारी ॥ देहु जाहि जोई चाहिए सनमानि सँभारी ॥ लगे देन हिय हरषि-कै हेरि हेरि हँकारी ॥ ११ ॥ राम निछावरि लेनको हठि होत भिखारी ॥ बहुरि देत तेइ देखिए मानहुँ धन धारी ॥ भरत लषण रिपुदवनहू धरे नाम विचारी ॥ फलदायक फल चारिके दशरथ सुत चारी ॥ १२ ॥ भये भूप बालकनिके नाम निरूपम नीके ॥ गये सोच संकट मिटे तबते पुर तीके ॥ सुफल मनोरथ विधि किये सब विधि सबहीके ॥ अब हैहैं गाए सुने सबके तुलसीके ॥ १३ ॥ ६ ॥ (राग बिलावल ॥) ॥ सुभग सेज शोभित कौशल्या रुचिर राम शिशु गोद लिये॥

बारबार विधुवदन विलोकति लोचन चारु चकोर किए ॥ १ ॥ कबहुँ पौढि पय पान करावति कबहूँ राखति लाय हिये ॥ बालकेलि गावति हलरावति पुलकति प्रेम पियूष पिये ॥ २ ॥ विधि महेश मुनि सुर सिहात सब देखत अंबुद ओट दिए ॥ तुलसिदास ऐसो सुख रघुपति पै काहू तो पायो न विये ॥ ३॥७॥ (राग सोरठ) ॥ ह्वैहो लाल कबहिं बडे बलि मैया ॥ राम लषण भावते भरत रिपुदवन चारु चारयो भैया ॥ ॥ १ ॥ बाल विभूषण वसन मनोहर अंगनि विरचि बनैहों ॥ शोभा निरखि निछावरि करि उर लाय वारने जैहों ॥२॥ छगन मगन अँगना खेलिहो मिलि ठुमुकु ठुमुकु कब धैहो॥कलबल वचन तोतरे मंजुल कहि मां मोहिं बुलैहो ॥ ३ ॥ पुरजन सचिव राउ रानी सब सेवक सखा सहेली ॥ लेहैं लोचन लाहु सुफल लखि ललित मनोरथ बेली ॥ ४ ॥ जा सुखकी लालसा लटू शिव शुक सनकादि उदासी ॥ तुलसी तेहि सुखसिंधु कौशिला मगनपै प्रेम पियासी ॥ ५ ॥ ८ ॥ पगनि कब चलिहो चारों भैया ॥ प्रेम पुलकी उर लाइ सुवन सब कहति सुमित्रा मैया ॥ १ ॥ सुंदर तनु शिशु वसन विभूषण नख शिख निरखि निकैया ॥ दलि तृण प्राण निछावरि करिकरि लेहै मातु बलैया॥२॥ किलकनि नटनि चलनि चितवनि भजि मिलनी मनोहर तैया ॥ मणि

खंभनि प्रतिबिंब झलक छबि छलकिहै भरिअँगनैया॥३॥ बालविनोद मोद मँजुल विधु लीला ललित जोन्हैया ॥ भूपति पुण्य पयोधि उमँग घर घर आनंद बधैया॥४॥ ह्वै हैं सकल सुकृत सुख भाजन लोचन लाहु लुटैया॥अना-यास पाय हैं जन्म फल तोतरे वचन सुनैया ॥ ५ ॥ भरत राम रिपुदवन लषणके चरित सरित अन्हवैया ॥ तुलसी तब कैसे अजहुँ जानिबे रघुवर नगर बसैया ॥ ६॥९॥ (राग केदारा)॥ सुपरि उबटि अन्हवाइकै नयन आंजे रचि रुचि तिलक गोरोचनको कियो है॥ भूपर अनूपमसि बिंदुवारे वारे बार बिलसत शीश पर हेरि हरै हियो है ॥ मोद भरी गोदलिये लालति सुमि-त्रा देखि देव कहैं सबको सुकृत उप वियो है ॥ मातु पितु प्रिय परिजन पुरजन धन्य पुण्य पुंज पेखि पेखि प्रेमरस पियो है॥ लोहित ललित लघु चरणकमल चारु चाल चाहि सो छबि सुकबि जिय जियो है॥बालकेलि वातबश झलकि झलमलत शोभाकी दीपटि मानो रूप दीप दियो है॥रामशिशु सानुज चरित चारु गाइ सुनि सुजननि सादर जनम लाहु लियो है ॥ तुलसी विहाइ दशरथ दशचारि पुर ऐसे सुखयोग विधि विरच्यो न वियो है ॥ १० ॥ राम शिशु गोद महामोद भरे दश-रथ कौशिलहु ललकि लषण लाल लये हैं॥ भरत सुमित्रा लये कैकयी शत्रुशमन तन प्रेम पुलक मगन

मन भये हैं ॥ मेढी लटकन मणि कनक रचित बाल भूषण बनाइ आछे अंग अंग ठए हैं ॥ चाहि चुचुकारि चूमि लालत लावत उरतैसे फल पावत जैसे सुबीज बये हैं ॥ घनओट विबुध विलोकि वरषत फूल अनुकूल वचन कहत नेह नये हैं ॥ ऐसे पितु मातु पूत प्रिय परिजन विधि जानियत आयु भरि एई निरमए हैं ॥ अजर अमर होहु करो हरि हर छोहु जरठ जरठेन्हि आशिरवाद दये हैं ॥ तुलसी सराहैं भाग्य तिन्हके जिन्हके हिये डिंभ रामरूप अनुराग रंग रए हैं ॥११॥ (राग आसावरी) ॥ आजु अनरसे हैं भोरके पय पियत न नीके ॥ रहत न बैठे ठाढे पालने झूलतहू रोवत राम मेरो सो शोच सबहीके ॥ देव पितर ग्रह पूजिये तुला तौलिये घीके॥तदपि कबहुँ कबहुँक सखी ऐसेही अरत जब परत दृष्टि दुष्ट तीके ॥ वेगि बोलि कुलगुरु छुए माथे हाथ अमीके ॥ सुनत आइ ऋषि कुश हरे नरसिंह मंत्र पढि जो सुमिरत भयभीके ॥ जासु नाम सर्वस सदाशिव पार्वतीके ॥ ताहि झरावति कौशिला यह रीति प्रीतिकी हिय हुलसति तुलसीके॥ ॥ १२ ॥ माथे हाथ ऋषि जब दियो राम किलकन लागे ॥ महिमा समुझि लीला विलोकि गुरु सजल नयन तनु पुलकि रोम रोम जागे ॥ लिए गोद धाये गोदते मोद मुनि मन अनुरागे ॥ निरखि मातु हरषी

हिये आली ओट कहति मृदु वचन प्रेमकेसे पागे ॥ तुम्ह सुरतरु रघुवंशके देत अभियत मागे ॥ मेरे विशेषि गति शवरी तुलसी प्रसाद जाके सकल असंगल भागे॥ ॥ १३ ॥ अमिय विलोकनि करि कृपा मुनिवर जव जोये ॥ तवते राम अरु भरत लपण रिपुदवन सुमुख सखि सकल सुवन सुख सोये ॥ लाय सुमित्रा लिए हिए फणि मणि ज्यों गोए ॥ तुलसी नेवछावरि करति मातु अति प्रेम मगन मन सजल सुलोचन कोए ॥ १४ ॥ मातु सकल कुलगुरु वधू प्रिय सखी सुहाई ॥ सादर सव मंगल किये महिमनि महेशपर सबनि सुरधेनु दुहाई ॥ वोलि भूप भूसुर लिये अति विनय बडाई ॥ पूजि पाइ सनमानि दान दिए लहि अशीश मुनि वरषे सुमन सुरसाई ॥ घर घर पुर बाजन लगीं आनंद बधाई ॥ सुख सनेह तेहि समयको तुलसी जानै जाको चोरचो है चित चहुँभाई ॥ १५ ॥ (राग धनाश्री) ॥ या शिशुके गुणनाम बडाई ॥ को कहिसकै सुनहु नरपति श्रीपति समान प्रभुताई ॥ यद्यपि बुधि वय रूप शील गुण समयचारु चारचो भाई ॥ तदपि लोक लोचन चकोर शशि राम भगत सुखदाई ॥ सुर नर मुनि करि अभय दनुज हति हरिहि धरणि गरुआई ॥ कीरति विमलविश्व अघमोचनि रहिहि सकल जग छाई॥याके चरण सरोज

कपट तजि जो भजि है मनलाई॥सो कुल युगल सहित तरि हैं भव यह न कछू अधिकाई ॥ सुनि गुरु वचन पुलकि तन दंपति हरष न हृदय समाई॥ तुलसिदास अवलोकि मातु मुख प्रभु मनमें मुसुकाई ॥ १६ ॥

॥ ९ ॥ (राग बिलावल) अवध आजु आदमी एकु आयो॥करतल निरखि कहत सब गुणगण बहुतनिपरि चौपायो ॥ बूढो बडो प्रमाणिक ब्राह्मण शंकर नाम सुहायो ॥ संग सुशिष्य सुनत कौशल्या भीतर भवन बोलायो ॥ पाँय पखारि पूजिदियो आसन अशन वसन पहिरायो ॥ मेले चरण चारु चारचो सुत माथे हाथ दिवायो ॥ नख शिख बाल विलोकि विप्रतनु पुलक नयन जल छायो ॥ लैलै गोद कमलकर निरखंत उर प्रमोद अनपायो ॥जनम प्रसंग कह्यो कौशिक मिसि सीय स्वयंवर गायो ॥ राम भरत रिपुदवन लपणको जय सुख सुयश सुनायो ॥ तुलसीदास रनिवास रहसवश भयो सबको मन भायो ॥ सन्मान्यो महिदेव अशीशत सानँद सदन सिधायो ॥ १७ ॥

(राग केदारा) पौढिये लालन पालने हौं झुलावौं ॥ कर पद मुख चख कमल लसत लखि लोचन भँवर भुलावौं ॥ बाल विनोद मोद मंजुल मणि किलकनि खानि खुलावौं ॥ तेइ अनुराग ताग गुहिबे कहँ मति मृगनयनि बुलावौं ॥ तुलसी भनित भली भामिनि उर

सो पहिराइ झुलावों ॥ चारु चरित रघुबर तेरे तेहिमिलि गाइ चरण चितु लावों ॥ १८ ॥ सोहत लाललाडिले रघुराई ॥ मगनमोदलिए गोद सुमित्रा बारबार बलि जाई ॥ हँसे हँसत अनरसे अनरसत प्रतिबिंबनि ज्यों झाईं ॥ तुम सबके जीवनके जीवन सकल सुमंगल दाईं ॥ मूल मूल सुरवीथि बेलि तम तोमसुदल अधिकाई ॥ नखत सुमन नभ बिटप बोंडि मानो छपा छिटकि छबि छाई ॥ होंजँभात अलसात तात तेरी बानि जानि मैं पाई ॥ गाइ गाइ हलराइ बोलिहौं सुखनींदरी सुहाई ॥ बाछरू छबीलो छौना छगन मगन मेरे कहति कहति मल्हाइ मल्हाई ॥ सानुज हिय हुलसति तुलसीके प्रभुकि ललित लरिकाई॥१९॥ ललन लोने लेरुआ बलि मैया ॥ सुख सोइये नींद बेरिया भई चारु चरित चारयो भैया ॥ कहति मल्हाइ लाइ उर छिन छिन छगन छबीले छोटे छैया ॥ मोद कंद कुल कुमुद चंदमेरे राम चंद्र रघुरैया रघुबर बाल केलि संतनकी सुभग सुभद सुरगैया॥तुलसी दुहि पीवत सुख जीवत पय सप्रेम घनो घैया ॥ २० ॥ सुखनींद कहति आलि आइहौं ॥ राम लषण रिपुदवन भरत शिशु करि सब सुमुख सो आइहौं ॥ रोवनि धोवनि अनखानि अनरसनि डिठि मुठि निठुर नशाइहौं ॥ हँसनि खेलनि किलकनि आनंदनि भूपति भवन बसाइहौं॥ मोदविनोद

मोदमय मूरति हरषि हरषि हलराइहों॥तनु तिल तिल-करि वारि रामपर लेहों राग बलाइहों॥रानी राउ सहित सुत परिजन निरखिनयन फल पाइहों ॥ चारु चरित रघुवंश तिलकके तहँ तुलसिहि मिलि गाइहों ॥२१॥

(राग आसावरी) ॥ कनक रतन मय पालनो रच्यो मनहुँ मार सुतहार ॥ विविध खेलौना किंकिणी लागे मंजुल मुकुताहार ॥ रघुकुल मण्डन रामलला ॥ १ ॥ जननि उबटि अन्हवाइक मणिभूषण सजिलिए गोद॥ पौढाये पटु पालने शिशु निरखि मगन मन मोद ॥ दशरथनंदन राम लला ॥ २ ॥ मदन मोरके चंदकी झलकनि निदरति तनु जोति ॥ नीलकमल मणि जल-दकी उपमा कहे लघु मति होति ॥ मातु सुकृत फल राम लला ॥ ३ ॥ लघु लघु लोहित ललित हैं पद पाणि अधर एक रंग ॥ को कवि जो छबि कहिसके नख शिख सुंदर सब अंग ॥ परिजन रंजन राम लला ॥ ४ ॥ पग नूपुर कटि किंकिणी कर कंजनि पहुँची मंजु ॥ हिये हारनख अद्भुत बन्यो मानो मनसिज मणि गण गंज ॥ पुरजन सुरमणि राम लला ॥ ५ ॥ लोयन नील सरोजसे भूपर मसि बिंदु विराज ॥ जनु विधु मुख छबि अमियको रक्षक राखा रसराज॥शोभा सागर राम लला ॥ ६ ॥ गभुआरीं अलकावलीं लस लटकन ललित ललाट ॥ जनु उडुगण विधु मिलनकी चले तम बिदारि कारि बाट ॥ सहज सोहावनो राम

लला ॥७॥ देखि खेलौना किलकहीं पदपानि विलोचन लोल ॥ विचित्र विहग अलि जलज ज्यों सुखमा सर करत कलोल ॥ भगत कल्पतरु राम लला ॥८॥ बाल बोल बिनु अरथके सुनि देत पदारथ चारि ॥ जनु इन्द्र वचनन्हिते भए सुरतरु तापस त्रिपुरारि ॥ नाम काम धुक राम लला ॥ ९ ॥ सखी सुमित्रा वारहीं मणि भूषण वसन विभाग ॥ मधुर झुलाइ मल्हावहीं गावैं उमँगि उमँगि अनुराग ॥ हैं जग मंगल राम लला॥१०॥ मोती जायो सीपमें अरु अदिति जन्यो जग भानु ॥ रघुपति जायो कौशिला गुण मंगल रूप निधानु ॥ भुवन विभूषण राम लला ॥ ११ ॥ राम प्रगट जबते भये गये सकल अमंगल मूल ॥ मीत मुदित हित उदित हैं नित वैरिनके चित शूल ॥ भव भय भंजन रामलला ॥ १२ ॥ अनुज सखा शिशु संग लै खेलन जैहैं चौगान ॥ लंका खर भर परैगो सुरपुर बाजि हैं निसान ॥ रिपुगण गंजन राम ललां ॥१३॥ राम अहेरे चलहिंगे जब गज रथ वाजि सँवारि ॥ दश कंधर उर धकधकी अब जनि धावैं धनुधारि ॥ अरि करि केहरि राम लला ॥ १४ ॥ गीत सुमित्रा सखिन्हके सुनि सुनि सुर मुनि अनुकूल ॥ दै अशीश जय जय कहैं हरषैं वरषैं फूल ॥ सुर सुखदायक राम लला ॥ १५ ॥ बालचरित मय चंद्रमा यह सोरह काला

निधान ॥ चित चकोर तुलसी कियो करैं प्रेम अमिय रस पान ॥ तुलसीको जीवन राम लला ॥१६॥२२॥ (राग कान्हरा) पालनें रघुपतिहि झुलावै ॥ लैलै नाम सप्रेम सरस स्वर कौशल्या कल कीरति गावै। केकि कंठ द्युति श्याम वरण वपु बाल विभूषण विचित्र बनाए। अलक कुटिल ललित लटकन भ्रू नील नलिन दोउ नयन सुहाए ॥ शिशु सुभाय सोहत जब कर गहि वदन निकट पद पल्लव लाये॥मनहुँ सुभग युग भुजग जलज भरि लेत सुधा शशिसों सचुपाए ॥ ऊपर अनूप विलोकि खेलौना किलकत पुनि पुनि पाणि पसारत॥ मनहुँ उभय अंभोज अरुणसों विधु भय विनय करत अति आरत॥ तुलसीदास बहु वास विवश अलि गुंजतसों छवि नहिं जात बखानि॥ मनहुँ सकल श्रुति ऋचा मधुप ह्वै विशद सुयश वर्णत वरवानी ॥ २३ ॥ (राग बिलावल) ॥ झूलत राम पालने सोहैं ॥ भूरि भाग जननी जन जोहैं ॥ तन मृदु मंजुल मेचकताई॥ झलकति बाल विभूषण झांई॥ अधरपाणि पद लोहित लोने ॥ सर शृँगार भव सारस सोने ॥ किलकत निरखि विलोल खेलौना ॥ मनहुँ विनोद लरत छबि छौना ॥ रंजित अंजन कंज विलोचन॥ भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ॥ लसै मसि बिंदु वदन विधु नीको ॥ चितवन चितचकोर तुलसीको ॥ २४ ॥

(राग कल्याण) ॥ राजत शिशुरूप राम सकल गुण निकाय॥धाम कौतुकी कृपालु ब्रह्मजानु पाणि चारी ॥ नील कंज जलद पुंज मरकतमणि सदृशश्याम काम कोटि शोभा अंग अंग ऊपर वारी ॥ हाटक मणिरत्न खचित रचित इंद्र मंदिरभई इंदिरानिवास सदन विधि रच्यो सँवारी॥विहरत नृप अजिर अनुज सहित बाल-केलि कुशल नील जलज लोचन हरि मोचन भयभारी॥ अरुण चरण अंकुश ध्वज कंज कुलिश चिन्ह रुचिर भ्राजत अति नूपुरवर मधुर मुखरकारी ॥ किंकिणी विचित्र जाल कंबु कंठ ललित माल उर विशाल केहरि नख कंकण करधारी ॥ चारु चिबुक नासिका कपोल भाल तिलक भ्रुकुटी श्रवण अधर सुंदर द्विज छवि अनूप न्यारी ॥ मनहुँ अरुण कंज कोश मंजुल युग पाँति प्रसव कुंदकली युगल युगल परम शुभ्रवारी ॥ चिक्कन चिकुरावली मनो षडंघ्रि मंडली बनी विशेषि गुंजत जनु बालक किलकारी॥एकटक प्रतिबिंब निरखि पुलकत हरि हरषि हरषि लै उछंग जननी रसभंग जिय विचारी ॥ जाकहँ सनकादि शंभु नारदादि शुक मुनींद्र करत विविध योग काम क्रोध लोभ जारी ॥ दशरथ गृह सोइ उदार भंजन संसार भार लीला अवतार तुल-सिदास त्रासहारी ॥ २९ ॥ (राग कान्हरा) ॥ आँगन फिरत घुटुरुवनि धाये ॥ नील जलद तनु श्याम राम

शिशु जननि निरखि मुख निकट बोलाए ॥१॥ बंधुक सुमन अरुण पद पंकज अंकुश प्रमुख चिन्ह बनि आए॥ नूपुर जनु मुनिवर कलहंसनि रचे नीरदै बाहँ बसाए ॥ ॥ २ ॥ कटिमेखल वर हार ग्रीव दर रुचिर बाहँ भूषण पहिराए ॥ उर श्रीवत्स मनोहर हरि नख हेम मध्य मणि गण बहु लाये ॥ ३ ॥ सुभग चिबुक द्विज अधर नासिका श्रवण कपोल मोहिं अतिभाए॥भ्रूसुंदर करुणारस पूरण लोचन मनहुँ युगल जल जाए ॥ ४ ॥ भाल विशाल ललित लटकन वर,बालदशाके चिकुर सोहाए॥ मानो दोउ गुरु शनि कुज आगे करि शशिहि मिलन तमके गुण आए ॥ ५ ॥ उपमा एक अभूत भई तब जब जननी पट पीत ओढाए ॥ नील जलदपर उडुगण निरखित तजि सुभाव मानो तडित छपाए ॥ ॥ ६॥ अंग अंग परमारनिकर मिलि छबिसमूह लैलै जनु छाए ॥ तुलसिदास रघुनाथरूप गुण तौ कहौ जो विधि होहिं बनाये ॥ ७ ॥ २६ ॥ (राग केदारा) ॥ रघुवरबाल छबि कहौं वरणि॥सकल सुखकी सीवकोटि मनोज शोभाहरनि ॥ १ ॥ वसी मानहु चरण कमलनि अरुणता तजि तरनि ॥ रुचिर नूपुर किंकिणी मनुहरति रुनझुनु करनि ॥२॥ मंजुमेचक मृदुलतनु अनुहरति भूषण भरनि ॥ जनु सुभग शृंगार शिशु तरु फरचो है अद्भुत फरनि ॥ ३ ॥ भुजनि भुजग सरोज

नयननि वदन विधु जित्यों लरनि॥ रहे कुहरनि सलि-
ल नभ उपमा अपर दुरि डरनि ॥ ४ ॥ लसत कर
प्रतिबिंब मणि आँगन घुटुरुवनि चरनि ॥ जनु जलज
संपुट सु छबि भरि भरि धरति उरधरनि ॥ ५ ॥
पुण्यफल अनुभवति सुतहि विलोकि दशरथ घरनि ॥
वसति तुलसी हृदय प्रभु किलकनि ललित लरखरनि॥
॥ ६ ॥ २७ ॥ नेकु विलोकि धौं रघुवरनि चारि फल
त्रिपुरारि तोको दिये प्रकटकरि नृपघरनि ॥ बाल भूषण
वसन तन सुंदर रुचिर रजभरनि ॥ १ ॥ परस्पर खेल-
नि अजिर उठि चलनि गिरि गिरि परनि ॥२॥ झुक-
नि झाँकनि छाँहसों किलकनि नटनि हठि लरनि ॥
तोतरी बोलनी विलोकनि मोहनी मनुहरनि ॥ ३ ॥
सखि वचन सुनि कौशिला लखि सुढर पासे ढरनि ॥
लेति भरि भरि अंक सैंतति पैं तजनु दुहुँ करनि ॥४॥
चरित निरखत विबुध तुलसी ओट दै जलधरनि ॥
चहत सुर सुरपति भयो सुरपति भयो चहै तरनि ॥
॥ ५ ॥ २८ ॥ (राग जयतश्री) ॥ भूमितल भूपके
बडे भाग ॥ राम लषण रिपुदमन भरत शिशु निरखत
अति अनुराग ॥ १ ॥ बाल विभूषण लसत पाइ मृदु
मंजुल अंग विभाग ॥ दशरथ सुकृत मनोहर बिरवनि
रूप करह जनु लाग ॥ २ ॥ राज मराल विराजत
विरह तजे हर हृदय तडाग ॥ ते नृप

अजिर जानु पाणि धावत धरन चटक चल काग ॥
॥ ३ ॥ सिद्ध सिहात सराहत मुनि गण कहैं सुर किन्नर
नाग ॥ ह्वै वरु विहँग विलोकिय बालक बसि पुर
उपवन बाग ॥४॥ परिजन सहित राय रानिन्ह कियो
मज्जन प्रेम प्रयाग ॥ तुलसी फल चारचो ताके मणि
मरकत पंकजराग ॥ ५ ॥ २९ ॥ (राग आसावरी)
छँगन मगन अँगना खेलत चारु चारचो भाई ॥
सानुज भरत लाल लषण राम लोने लोने लरिका लखि
मुदित मातु समुदाई ॥१॥ बाल बसन भूषण धरे नख
शिख छबि छाई ॥ नील पीत मनसिज सरसिज मंजुल
मालनि मानो है देहनिते द्युति पाई ॥ २ ॥ ठुमुकु
ठुमुकु पगधरनि नटनि लरखरनि सुहाई ॥ भजनि
मिलनि रूठनि टूठनि किलकनि अवलोकनि बोलनि
वरणि न जाई ॥ ३ ॥ जननि सकल चहुँ ओर आल-
बाल मणि अँगनाई॥दशरथ सुकृत विबुध बिरवा वि-
लसत विलोकि जनु विधि वर वारि बनाई ॥४॥ हरि
विरंचि हर हेरि राम प्रेम पर बसताई ॥ सुख समाज
रघुराजके वरणत विशुद्ध मन सुरनि सुमन झरिलाई॥
॥ ५ ॥ सुमिरत श्रीरघुवरनकी लीला लरिकाई॥ तुल-
सिदास अनुराग अवध आनँद अनुभवत तब को सो
अजहुँ अघाई ॥ ६ ॥३०॥ (राग बिलावल) आँगन
खेलत आनँदकंद ॥ रघुकुल कुमुद सुखद चारुचंद ॥

सानुज भरत लषण सँग सोहैं शिशुभूषण भूपित मन मोहैं ॥ तन द्युति मोरचंद जिमि झलकै ॥ मनहुँ उमँगि अँग अँग छवि छलकै॥ १ ॥ कटि किंकिणीपाँय पैंजनी बाजैं ॥ पंकज पाणि पहुँचियाँ राजैं ॥ कठुला कंठबघनहा नीके ॥ नयन सरोज मयन सरसीके ॥ २ ॥ लटकन लसत ललाट लटूरीं॥दमकति द्वैद्वै दँतुरियाँ रूरीं॥ मुनिमन हरत मंजु मसि बुंदा॥ललित वदन वलि बाल मुकुंदा ॥ ३ ॥ कुलहीं चित्र विचित्र झँगूलीं ॥ निरखहि मातु मुदित प्रीति फूलीं ॥ गहि मणि खंभ डिंभ डगि डोलत ॥ कलबल वचन तोतरे बोलत ॥ ४ ॥ किलकत झुँकि झांकत प्रतिबिंबनि॥देत परम सुख पितु अरु अंब-नि॥सुमिरत सुखमा हिय तुलसी है॥लावत प्रेम पुलकि तुलसी है ॥ ५ ॥ २१ ॥ (राग कान्हरा) ॥ ललित सुतहि लालति सचुपाये ॥ कौशल्या कल कनक अजिर महँ सिखवत चलन अँगुरियाँ लाये ॥ १ ॥ कटि किंकिणी पैंजनी पाँयनि वाजति रुनुझुनु मधुर रेंगाये ॥ पहुँची करनि कंठ कठुला बन्यो केहरि नख मणि जरित जराये॥२॥पीत पुनीत विचित्र झंगुलिया सोहति श्याम शरीर सोहाये ॥ दतियाँ द्वैद्वै मनोहर मुख छवि अरुण अधर चित लेत चोराये ॥३॥ चिबुक कपोल नासिका सुंदर भाल तिलक मसि बिंदु बनाये ॥ राजत नयन मंजु अंजन युत खंजन कंज मीन मदनाये ॥४॥

लटकन चारु भ्रुकुटिया टेढी मेढी सुभग सुदेश सुभाये॥ किलकि किलकि नाचत चुटकी सुनि डरपति जननि पाणि छुटुकाये ॥५॥ गिरि घुटुरुवनि टेकि उठि अनुजनि तोतरि बोलत पूप देखाये॥ बालकेलि अवलोकि मातु सब मुदित मगन आनँद अनमाये ॥ ६ ॥ देखत नभ घन ओटचरित मुनि योग समाधि विरात बिसराये ॥ तुलसिदास जे रसिकन येहि रस ते नर जड़ जीवत जग जाये ॥ ७ ॥ ३२ ॥ (राग ललित) ॥ छोटी छोटी गोडियां अँगुरियाँ छोटी छबीली ॥ नख जोती मोति मानो कमल दलनिपर ॥ ललित आँगन खेलैं ठुमुकु२ चलैं झुँझुनु२पाँय पैंजनी मृदु मुखर॥ किंकिणी कलित कटि हाटक रतन जटित मंजु कर कंजनि पहुँ-चियाँ रुचिरतर ॥ पियरी झीनी झगुली साँवरे शरीर खुली बालक दामिनि ओढी मानों वारें वारिधर॥ उर बघनहा कंठ कठुला झंडूले केश मेढी लटकन मसि बिंदु मुनिमनहर ॥ अंजन रंजित नैन चित चोरै चित-वनि मुख शोभापर वारों अमित असमशर ॥ चुटकी बजावति नचावति कौशल्या माता बालकेलि गावति मल्हावति सुप्रेम भर ॥ किलकि किलकि हँसैं द्वैद्वै दँतु-रियाँ लसैं तुलसीके मनवसे तोतरे वचन वर ॥ ३३ ॥ सादर सुमुखि विलोकि राम शिशुरूप अनूप भूप लिये कनियाँ ॥ सुंदर श्याम सरोज वरण तन सब अँग

सुभग सकल सुखदनियाँ ॥ १ ॥ अरुण चरण नख जोति जगमगति रुनुझुनु करति पाँय पैंजनियाँ ॥ कनक रतन मणि जटित रटित कटिकिंकिणि कलित पीतपट तनियाँ ॥ २ ॥ पहुँची करनि पदिक हरिनख उर कठुला कंठ मंजुगज मनियाँ॥ रुचिर चिबुक रद अधर मनोहर ललित नासिका लसति नथुनियाँ॥३॥ विकट भृकुटि सुखमानिधि आनन कल कपोल काननि नगफनियाँ ॥ भाल तिलक ससि बिंदु विराजत सोहति शीश लाल चौतनियाँ ॥ मन मोहिनी तोतरी बोलनि मुनि मनहरणि हँसनि किलकनियाँ ॥ ४ ॥ बाल सुभाय बिलोल विलोचन चोरति चितहि चारु चितवनियाँ ॥५॥ सुनि कुलवधू झरोखनि झाँकति रामचंद्र छविचंद्र वदनियाँ॥तुलसिदास प्रभु देखि मगन भइ प्रेमविवश कछु सुधि न अपनियाँ ॥ ६ ॥२४॥ (राग बिलावल) सोहत सहज सुहाये नैन ॥ खंजन मीन कमल सकुचत तब जब उपमा चाहत कवि दैन ॥ १ ॥ सुंदर सब अंगनि शिशु भूषण राजत जनु शोभा आए लैन ॥ बडो लाभ लालची लोभ वश रहिगए लखि सुखमा बहु मैन ॥ २ ॥ भोर भूप लिए गोद मोद भरे निरखत वदन सुनत कल वैन ॥ बालक रूप अनूप राम छवि निवसति तुलसिदास उर ऐन ॥ ३ ॥ २५ ॥ (राग विभास) भोर भयो जागहु रघुनंदन ॥ गत व्यलीक

गतनि उर चंदन ॥ शशि करहीन छीन द्युति तारे ॥ मधुर सुस्वर सुनहुँ मेरे प्यारे ॥ विकसित कंज कुमुद बेलखाने ॥ लै परागरस मधुप उडाने ॥ अनुजसखा सब बोलनि आए ॥ बंदिन्ह अति पुनीत गुणगाए ॥ मन भावतो कलेऊ कीजै ॥ तुलसिदास कहँ जूँठनि दीजै ॥ २६ ॥ प्रात भयो तात बलि मातु विधु वदन पर मदन वारौं कोटि उठो प्राणप्यारे ॥ सूत मागध वंदि वदत विरदावलि द्वार शिशु अनुज प्रियतम तिहारे ॥ कोक गत शोक अवलोकि शशि छीन छबि अरुणमय गगन राजत रुचिर तारे ॥ मनहुँ रवि बाल मृगराज तमनिकर कारि दलित अति ललित मणि गण बिथारे ॥ सुनहु तम चुर सुस्वर कीर कल-हंस पिक केकि रव कलित बोलत विहँग वारे ॥ मनहुँ मुनि वृंद रघुवंशमणि रावरे गुणत गुण आश्रमनि सप-रिवारे ॥ सरनि विकसित कंज पुंज कमरंद वर मंजु-तर मधुर मधुकर गुंजारे ॥ मनहुँ प्रभु जन्म सुनि चयन अमरावती इंदिरानंद मंदिर सँवारे ॥ प्रेम संमि-लित वर वचन रचना अकनि राम राजीव लोचन उघारे ॥ दास तुलसी मुदित जननि करै आरती सहज सुंदर अजिर पाँव धारे ॥ २७ ॥ जागिये कृपानिधान जानराय रामचंद्र जननी कहै बारबार भोर भयो प्यारे॥ राजीवलोचन विशाल प्रीति वापिका मराल ललित

कमल बदन उपर मदन कोटि वारे ॥ १ ॥ अरुण उदित विगत सर्वरी शशांक किरनि हीन दीन दीप जोति मलिन द्युति समूह तारे॥ मनहुँ ज्ञान घन प्रकाश बीते सब भव विलास आसत्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारे ॥२॥ बोलत खग निकर मुखर मधुर करि प्रतीत सुनहु श्रवण प्राणजीवन धन मेरे तुम वारे ॥ मनहुँ वेद बंदी मुनिवृंद सूत मागधादि विरद वदत जय जय जय जयति कैटभारे ॥ ३ ॥ विकसित कमलावली चले प्रपुंज चंचरीक गुंजत कलकोमल धुनि त्यागि कंज न्यारे ॥ जनु विराग पाइ सकल शोक कूप गृह विहाइ भृत्य प्रेम मत्त फिरत गुनत गुन तिहारे ॥ ॥४॥ सुनत वचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुख कदंबदारे॥ तुलसिदास अति अनंद देखिकै मुखारविंद छूटे भ्रम फंद परम मंद द्वंद भारे ॥ ५ ॥ ३८ ॥ बोलत अवनिप कुमार ठाढे नृपभवन द्वार रूपशील गुण उदार जागहु मेरे प्यारे॥ बिलखित कुमुदिनि चकोर चक्रवाक हरष भोर करत शोर तमचुर खग गुंजत अलि न्यारे ॥ रुचिर मधुर भोजन करि भूषण सजि सकल अंग संग अनुज बालक सब विविध विधि सँवारे ॥ करतल गहि ललित चाप भंजन रिपु निकर दाप कटितट पट पीत तूण शायक अनियारे ॥ उपवन मृगया विहार कारण गवने कृपाल

जननी सुख निरखि पुण्य पुंज निज विचारे ॥ तुलसि-
दास संग लीजै जानि दीन अभै कीजै दीजै मति विमल
गावै चरित वर तिहारे ॥ ३९ ॥ (राग नट) खेलन
चलिये आनँद कंद॥ सखा प्रिय नृप द्वार ठाढे विपुल
बालक वृंद ॥ १ ॥ तृषित तुम्हरे दरश कारण चतुर
चातक दास ॥ वपुष बारिद बरषि छबि जल हरहु
लोचन प्यास ॥ २ ॥ बंधु वचन बिनीत सुनि उठे
मनहुँ केहरि बाल॥ललित लघु शर चापकर उर नयन
बाहु विशाल ॥३॥ चलत पद प्रतिबिंब राजत अजिर
सुखमा पुंज ॥ प्रेम वश प्रति चरण महि मानो
देति आसन कंज ॥ ४ ॥ निरखि परम
विचित्र शोभा चकित चितवहिं मात ॥ हर्ष
विवश न जात कहि निज भवन विहरहु तात ॥ ५ ॥
देखि तुलसीदास प्रभु छबि रहे सब पल रोंकि॥थकित
निकर चकोर मानहुँ शरदइन्दु विलोकि ॥ ६ ॥ ४० ॥
विहरत अवध वीथिन राम ॥ संग अनुज अनेक शिशु
नव नील नीरद श्याम ॥ १ ॥ तरुण अरुण सरोज
पद बनी कनकमय पद त्रान ॥ पीत पट कटितूण वर
कर ललित लघु धनु बान ॥ २ ॥ लोचननिको लेत
फल छबि निरखि पुर नर नारि ॥ बसत तुलसीदास
उर अवधेशके सुत चारि ॥ ३ ॥ ४१ ॥ जैसे राम
ललित तैसे लोने लक्ष्मण लाल ॥ तैसेई भरत शील सु-

खमा सनेह निधि तैसेई सुभग संग शत्रुशालु ॥ १ ॥ धरे धनु शर कर कसे कटि तरकसी पीरे पट ओढे चले चारु चालु ॥ अंग अंग भूषण जरायके जगमगत हरत जनके जीको तिमिर जालु ॥ २ ॥ खेलत चौहटा घाट वीथी बाटिकनि प्रभु शिव सुप्रेम मानस मरालु ॥ शोभा दान देदै सनमानत याचकजन करत लोक लोचन निहालु॥३॥रावण दुरित दुखदलै सुर कहैं आजु अवध सकल सुखको सुकालु॥तुलसी सराहैं सिद्ध सुकृत कोस-ल्याजूके भूरि भाग भाजन भुआलु ॥४॥४२॥ (राग ललित) ललित ललित लघु लघु धनुशर कर तैसी तरकसी कटि कसे पट पियरे ॥ ललित पनही पाँय पैंजनी किंकिणी धुनि सुनि सुख लहै मनु रहै नित नियरे ॥ पहुँची अंगद चारु हृदय पदिक हारु कुंडल तिलक छबि गडी कवि जियरे ॥सिरसोहै पटोरा लाल नीरज नयन विशाल सुंदर वदन ठाढे सुरतरु सियरे ॥ सुभग सकल अंग अनुज बालक संग देखे नर नारि रहैं ज्यों कुरंग दियरे ॥खेलत अवध खोरि गोला भौंरा चक डोरी मूरति मधुर बसै तुलसीके हियरे ॥ ४३ ॥ छोटिऐ धनुहियाँ पनहियाँ पगनि छोटी छोटिऐ कछौटी कटि छोटिऐ तरकसी ॥ लसत झँगुली झीनी दामि-निकी छबि छीनी सुंदर वदन शिर पगिया जरकसी ॥ वय अनुहरत विभूषण विचित्र अँग जोहे जिय आवति

सनेहकी सरकसी॥ मूरति कि सूरति कही न परै तुल-
सीपै जानै सोई जाके उर कसकै करकसी ॥ ४४ ॥
(राग टोडी) ॥ राम लषण एक ओर भरत रिपुद-
वन लाल एक ओर भए॥ सरयुतीर सम सुखद भूमि
थल गनि गनि गोइयाँ बाँटिलये ॥ कंदुक केलि कुशल
हय चढि चढि मन कसकसि ठोंकि ठोंकि खये ॥ कर
कमलनि विचित्र चौगानै खेलन लगे खेल रिझये ॥
व्योम बिमाननि विबुध विलोकत खेलक पेखक छाह
छये ॥ सहित समाज सराहि दशरथहि वरषत निज
तरु कुसुम चये ॥ एक लै बढत एक फेरत सब प्रेम
प्रमोद विनोद मये ॥ एक कहत भइ हाल रामजुकी
एक कहत भइया भरत जये॥ प्रभु बकसत गज बाजि
बसन मणि जय धुनि गगन निशान हये ॥ पाइ सखा
सेवक याचक भरि जीवन दूसरे द्वार गए ॥ नभ पुर
परति निछावरि जहँ तहँ सुर सिद्धनि वरदान
दये ॥ भूरि भाग अनुराग उमगि ते जे गावत
सुनत चरित नित ये ॥ हारे हरष होत
हिय भरतहि जिते सकुचि शिर नयन नए ॥ तुलसी
सुमिरि सुभाव सुकृती तेइ जे एहि रंग रए ॥ ४५ ॥
खेलि खेलि सुखेल निहारे ॥ उतरि उतरि चुचुकारि
तुरंग सादर जाइ जोहारे ॥१॥ बंधु सखा सेवक सरा-
हि सनमानि सनेह सँभारे ॥ दिए वसन गज बाजि

साजि शुभसाज सुभाँति सँवारे ॥ २ ॥ मुदित नयन फल पाइ पाइ गुण सुर सानंद सिधारे ॥ सहित समाज राजमंदिर कहँ राम राउ पगु धारे ॥ ३ ॥ भूप भवन घरघर घमंड कल्याण कोलाहल भारे ॥ निरखि हरषि आरती निछावरि करत शरीर बिसारे ॥ ४ ॥ नितये मंगल मोद अवध सब लोग सुखारे ॥ तुलसी तिन्ह समतेउ जिन्हके प्रभुते चरित पियारे ॥ ५ ॥ ॥ ४६ ॥ (राग सारंग) चहत महामुनियागजयो ॥ नीच निशाचर देत दुसह दुख कृश तनु ताप तयो ॥ ॥१॥ शापे पाप नये निदरत खल तब यह मंत्र ठयो ॥ विप्र साधु सुर धेनु धरणि हित हरि अवतार लयो ॥ ॥ २ ॥सुमिरत श्रीसारंगपाणि छनमें सब सोच गयो॥ चले मुदित कौशिक कोशलपुर सगुणनि साथ दयो॥ ॥ ३ ॥ करत मनोरथ जात पुलकि प्रकटत आनंद नयो ॥ तुलसी प्रभु अनुराग उमँगि मग मंगल मूल भयो ॥ ४ ॥ ४७ ॥ आजु सकल सुकृत फल पाइहौं॥ सुखकी सींव अवधि आनँदकी अवध विलोकिहौं जाइहौं ॥ १ ॥ सुतनि सहित दशरथहि देखिहौं प्रेम पुलकि उर लाइहौं ॥ रामचंद्र मुखचंद्र सुधा छबि नयन चकोरनि प्याइहौं ॥ २ ॥ सादर समाचार नृप बूझिहैं हौं सब कथा सुनाइहौं ॥ तुलसी ह्वै कृतकृत्य आश्रमहि राम लषण लै आइहौं ॥ ३ ॥४८॥ (राग-

नट) देखि मुनिराजरे पद आज ॥ भयो प्रथम गन-
तीमें अबते हों जहँलौं साधु समाज ॥१॥ चरण वंदि
कर जोरि निहोरत कहिय कृपा करि काज ॥ मेरे कछु
न अदेय राम बिनु देह गेह सब राज ॥ २ ॥ भली
कही भूपति त्रिभुवनमें को सुकृती शिरताज ॥ तुलसी
राम जनमहिते जनियत सकल सुकृतको साज॥३॥४९॥
राजन राम लषण जो दीजै ॥ यश रावरो लाभ ढोट-
निहूँ मुनि सनाथ सब कीजै ॥ १ ॥ डरपतहौं साँचेहु
सनेह वश सुत प्रभाव बिनु जाने ॥ बूझिय वामदेव
अरु कुलगुरु तुम पुनि परम सयाने ॥ २ ॥ रिपु रण-
दलि मखराखि कुशल अति अलप दिननि घर ऐहैं ॥
तुलसीदास रघुवंश तिलककी कवि कल कीरति गैहैं॥
॥ ३ ॥ ५० ॥ रहे ठगिसे नृपति सुनि मुनिवरके
वयन ॥ कहि न सकत कछु राम प्रेमवश पुलक गात
भरे नीरनयन ॥ १ ॥ गुरु वसिष्ठ समुझाय कह्यो तब
हिय हरषाने जाने शेष शयन ॥ सौंपे सुत गहि पाणि
पाँय परि भूसुर उर चले उमगि चयन ॥ २ ॥ तुलसी
प्रभु जोहत पोहत चित सोहत मोहत कोटि मयन ॥
मधु माधव मूरति दोउ संग मानो दिनमणि गवन कियो
उत्तर अयन ॥ ३ ॥ ५१ ॥ (राग सारंग) ॥ ऋषि
सँग हरषि चले दोउ भाई ॥ पितु पद वंदि शीश
लियो आयसु सुनि शिष आशिष पाई ॥ १ ॥

नील पीत पाथोज वरण वपु वय किशोर बनिआई ॥ शर धनु पाणि पीत पट कटितट कसे निखंग बनाई॥२॥ कलित कंठ मणि माल कलेवर चंदन खौरि सुहाई । सुंदर वदन सरोरुह लोचन मुख छवि वरणि न जाई॥ ॥ ३ ॥ पल्लव पंख सुमन शिर सोहत क्यों कहौं वेष लुनाई ॥ मानो मूरति धरि उभय भाग भइ त्रिभुवन सुंदरताई ॥ ४ ॥ पैठत सरनि शिलनि चढि चितवत खग मृग वन रुचिराई ॥ सादर सभय सप्रेम पुल-कि मुनि पुनि पुनि लेत बोलाई ॥ ५ ॥ एक तीर तकि हती ताडका विद्या विप्र पढाई ॥ राख्यो यज्ञ जीति रजनीचर भई जग विदित बडाई ॥ ६ ॥ चरण कमल रज परसि अहल्या निज पति लोक पठाई ॥ तुलसिदास प्रभुके बूझे मुनि सुरसरि कथा सुनाई ॥ ॥ ७ ॥ ८२ ॥ (राग नट) दोउ राजसुवन राजत मुनिके संग ॥ नख सिख लोने लोन वदन लोने लो-यन दामिनि वारिद वर वरन अंग ॥ १ ॥ शिरनि शिखा सुहाइ उपवीत पीत पट धनु शर कर कसे कटि निखंग ॥ मानो मख रुज निशिचर हरिवेको सुत पाव-कके साथ पठइ पतंग ॥ २ ॥ करत छोह घन वरषैं सुर सुमन छवि वर्णत अतुलित अनंग ॥ तुलसी प्रभु विलो-कि मगलोग खग मृग प्रेम मगन रँगे रूप रंग ॥ ३ ॥ ॥ ८३ ॥ (राग कल्याण) ॥ मुनिके संग विराजत

वीर ॥ काक पच्छ धर कर कोदंड सर सुभग पीत पट कटि तूणीर ॥ १ ॥ वदन इंदु अंभोरुह लोचन श्याम गौर सोभा सदन शरीर ॥ पुलकत ऋषि अवलोकि अमित छवि उर न समाति प्रेमकी भीर ॥ २ ॥ खेलत चलत करत मग कौतुक बिलँबत सरित सरोवर तीर ॥ तोरत लता सुमन सरसीरुह पियत सुधा सम शीतल नीर ॥ ३ ॥ बैठत विमल शिलनि विटपनि तर पुनि पुनि वर्णत छाँह समीर ॥ देखत नटत केकि कल गावत मधुप मराल कोकिला कीर ॥ ४ ॥ नयननिको फल लेत निरखि खग मृग सुरभी ब्रजबधू अहीर ॥ तुलसी प्रभुहि देत सब आसन निज निज मन मृदु कमल कुटीर ॥ ५ ॥ ५४ ॥ (राग कान्हरा) सोहत मग मुनि सँग दो भाई॥तरुतमाल चारु चंपक छवि कवि सुभाय कहि जाई ॥ १ ॥ भूषण वसन अनुहरत अँगनि उमंगति सुंदरताई ॥ वदन मनोज सरोज लोचननि रही है लोभाइ लोनाई ॥२॥ अंशनि धनु शर कर कमलनि कटि कसे है निखंग बनाई ॥ सकल भुवन शोभा सरबसु लघु लागत निरखि निकाई ॥३॥ महि मृदु पथ घन छाँह सुमन सुर वरषि पवन सुखदाई ॥ जल थल रुह फल सलिल सब करत प्रेम पहुनाई ॥ ४ ॥ सकुच सभीत विनीत साथ गुरु बोलनि चलनि सुहाई ॥ खग मृग विचित्र विलो-

कृत विच विच लसत ललित लरिकाई ॥ ५ ॥ विद्या दई जानि विद्यानिधि विद्यहु लही बडाई॥ख्याल दली ताडका देखि ऋषि देत अशीश अघाई॥६॥बूझत प्रभु सुरसरि प्रसंग कहि निजकुल कथा सुनाई॥गाधीसुवन सनेह सुख संपति उर आश्रम न समाई ॥७॥ वनवासी बटु यती योगि जन साधु सिद्ध समुदाई ॥ पूजत पेखि प्रीति पुलकत तनु नयन लाभ लुटिपाई ॥ ८ ॥ मख राख्यो खल दल दलि भुजवल वाजति विवुध बधाई ॥ नित पथ चरित सहित तुलसी चित वसत लपण रघुराई ॥ ९ ॥ ९६ ॥ मंजुल मंगलमय नृप ढोटा ॥ मुनि मुनितिय मुनिशिशु विलोकि कहैं मधुर मनोहर जोटा ॥ १ ॥ नाम रूप अनुरूप वेप वय राम लषण लाल लोने ॥इन्हते लही है मानो घन दामिनि द्युति मनसिज मरकत सोने ॥ २ ॥ चरण सरोज पीत पट कटि तट तूण तीर धनुधारी ॥ केहरिकंध काम करि करवर विपुल वाहुवल भारी ॥ ३ ॥ दूपण रहत समय सम भूपण पाइ सुअंगनि सोहैं ॥ नवराजीव नयन पूरण विधुवदन मदन मन मोहैं ॥ ४ ॥ शिरनि शिखंड सुमन दल मंडन वाल सुभाय वनाये ॥ केलि अंकतनु रेणु पंकजनु प्रगटत चरित चोराये ॥ ५ ॥ मखराखिवे लागि दशरथसों माँगि आश्रमहिं आने ॥ प्रेम पूजि पाहुने प्राणप्रिय गाधिसुवन सनमाने ॥६॥

साधन फल साधक सिद्धिनके लोचन फल सबहीके॥ सकल सुकृत फल मातु पिताके जीवन धन तुलसीके ॥७॥८६॥ (राग सूहो) ॥ राम पद पदुम परागपरी॥ ऋषितिय तुरत त्यागि पाहन तनु छबिमय देहधरी ॥ १ ॥ प्रबल पाय पति शाप दुसह दव दारुण जरनि जरी ॥ कृपा सुधा सींची विबुध वेलि ज्यों फिरि सुख फरनि फरी ॥ २ ॥ निगम अगम मूरति महेश मति युवति वराय वरी ॥ सोइ मूरति भइ जानि नयन पथ एकटक ते न टरी ॥ ३ ॥ वरणति हृदय स्वरूप शील गुण प्रेम प्रमोद भरी ॥ तुलसिदास ऐसे केहि आरतकी आरति प्रभु न हरी ॥ ४ ॥ ८७ ॥ परत पद पंकज रज ऋषिवरनी ॥ भई है प्रगट अति दिव्य देह धरी मानो त्रिभुवन छबि छवनी ॥ १ ॥ देखि बडो आचरज पुलकि तनु कहत मुदित मुनि भवनी ॥ जो चलि हैं रघुनाथ पयादेहि शिला न रहिहि अवनी ॥ २ ॥ परसि जो पाँय पुनीत सुरसरी सो होतीनि पथ गवनी ॥ तुलसीदास तेहि चरण रेणुकी महिमा कहै मति कवनी ॥ ३ ॥ ८८ ॥ भूरि भाग्य भाजनु भई ॥ रूप राशि अवलोकि बंधु दोउ प्रेम सुरंग रई ॥ १ ॥ कहा कहैं केहि भाँति सराहैं नहिं करतूति नई ॥ विनु कारण करुणाकर रघुवर केहि केहि गति न दई ॥ २ ॥ करि बहु विनय राखि उर मूरति मंगल मोदमई ॥ तुलसी

वै विशोकपति लोकहि प्रभुगुण गनत गई ॥ ३ ॥ ५९ (राग कान्हरा) ॥ कौशिकके मखके रखवारे ॥ नाम राम अरु लषण ललित अति दशरथ राजदुलारे ॥१॥ मेचक पीत कमल कोमल कल काकपच्छ धरवारे ॥ शोभा सकल सकेलि मदन विधि सुकर सरोज सँवारे ॥ २ ॥ सहस समूह सुबाहु सरिसखल समर शूर भट भारे ॥ केलि तूण धनुबाण पाणि रण निदरि निशाचर मारे ॥ ३ ॥ ऋषितिय तारि स्वयंवर पेखन जनक नगर पगु धारे ॥ मग नरनारि निहारत सादर कहि बडभाग्य हमारे ॥ ४ ॥ तुलसी सुनत एक एकनिसों यों चलत विलोकि निहारे ॥ मूकनि बचन लाहु मानो अंधनि लहे हैं विलोचन तारे ॥ ५ ॥ ६० ॥ (राग ठोडी) आए सुनि कौशिक जनक हरषाने हैं ॥ बोलि गुरु भूसुर समाजसों मिलन चले जानि बडे भाग्य अनुराग अकुलाने हैं ॥ १ ॥ नाइ शीश पगनि अशीश पाइ प्रमुदित पांवडे अरघ देत आदरसों आने हैं ॥ अशन बसन वासके सुपास सब विधि पूजि प्रिय पाहुने सुभाय सनमाने हैं ॥२॥ विनय बडाई ऋषिराजऊ परस्पर करत पुलकि प्रेम आनँद अघाने हैं ॥ देखे राम लषण निमेषै विथकित भई प्राणहुँते प्यारे लागे विनु पहिचाने हैं ॥३॥ ब्रह्मानंद हृदय दरश सुख लोचननि अनुभए उभय सरस

राम जाने हैं ॥ तुलसी विदेहकी सनेहकी दशा सुमि-
रि मेरे मन माने राउ निपट सयाने हैं ॥ ४ ॥ ६१ ॥
(राग मलार) ॥ कोशलरायके कुवरोटा ॥ राजत
रुचिर जनकपुर पैठत श्याम गौर नीके जोटा ॥ १ ॥
चौतनी शिरनि कनक कली काननि कटिपट पीत
सोहाये ॥ उर मणि माल विशाल विलोचन सीय स्वयं-
बर आए ॥ २ ॥ वरणि न जात मनहिं मन भावत
सुभग अबहिं वय थोरी ॥ भई है मगन विधुवदन विलो-
कत वनिता चतुर चकोरी ॥ ३ ॥ कहँ शिवचाप लरि-
कवनि बूझत विहँसि चितै तिरछौहे ॥ तुलसी गलिन
भीर दरशन लगि लोग अटनि अवरोहै ॥ ४ ॥ ६२॥
ए अवधेशके सुत दोऊ॥चढि मंदिरनि विलोकत सादर
जनक नगर सब कोऊ ॥१॥ श्याम गौर सुंदर किशो-
रतनु तूण बाण धनधारी ॥ कटि पट पीत कंठ मुकु-
तामणि भुज विशाल बलभारी ॥२॥ मुखमयंक सर-
सीरुह लोचन तिलक भाल टेढी भौंहैं ॥ कल कुंडल
चौतनी चारु अति चलत मत्तगज गौंहैं ॥३॥ विश्वा-
मित्र हेतु पठए नृप इन्हहिं ताडुका मारी ॥ मख राख्यो
रिपु जीति जान जग मग मुनि वधू उधारी ॥ ४ ॥
प्रिय पाहुने जानि नरनारिन नयननि अयन दये ॥
तुलसिदास प्रभु देखि लोग सब जनक समान भये ॥
॥ ५ ॥ ६३ ॥ (राग ठोडी) बूझत जनक नाथ ढोटा

दोउ काके हैं ॥ तरुण तमाल चारु चंपक वरण तनु कौने बडे भागीके सुकृत पीर पाके हैं ॥ १ ॥ सुखके निधान पाये हियके पिधान लाये ठगकेसे लाडू खाये प्रेम मधु झाके हैं ॥ स्वारथ रहित परमारथी कहावत हैं भे सनेह विवश विदेहता विवाके हैं ॥ २ ॥ शील सुधाके अगार सुखमाके पारावार पावत न पेरपार पैरि पैरि थाके हैं ॥ लोचन ललकि लागे मन अति अनुरागे एक रसरूप चिंते सकल सभाके हैं ॥ ३ ॥ जिय जिय जोरत सगाई राम लषण सो आपने आपने भाय जैसे भाय जाके हैं ॥ प्रीतिको प्रतीतिको सुमिरिबेको सेइबेको शरणको समरथ तुलसीहुताके हैं॥४॥ ॥६४॥ ए कौन कहाँते आए॥ नील पीत पाथोज वरण मनहरण सुभाय सुहाए ॥ १ ॥ मुनिसुत किधौं भूप बालक किधौं ब्रह्म जीव जग जाए ॥ रूप जलधिके रतन सुछबि तिय लोचन ललित ललाये ॥ २ ॥ किधौं रवि सुवन मदन ऋतुपति किधौं हरि हर वेष बनाए ॥ किधौं आपने सुकृत सुरतरुके सुफल रावरे पाये ॥ ३ ॥ भए विदेह विदेह नेहवश देह दशा विसराए ॥ पुलक गात न समात हरष हिय सलिल सुलोचन छाए ॥ ४ ॥ जनक वचन मृदु मंजु मधु भरे भगति कौशिकहि भाये ॥ तुलसी अति आनंद उमँगि उर राम लषण गुण गाये ॥ ५ ॥ ६५ ॥ कौशिक कृपालु

हूको पुलकित तनु भो ॥ उमँगत अनुराग सभाके सराहे भाग देखि दशा जनककी कहिबेको मनु भो ॥ ॥ १ ॥ प्रीतिक न पातकी दिएहू शाप पाप बडो मख मिस मरो तब अवध गवनु भो ॥ आशहूते प्यारे सुत माँगे दिये दशरथ सत्यसिंधु सोच सहे शूनो सो भवनु भो ॥ २ ॥ काक शिखा शिर करकेलि तूण धनु शर बालक विनोद यातुधाननिसों रनु भो ॥ बूझत विदेह अनुराग आचरज वश ऋषिराज जाग भयो महाराज अनुभो ॥ ३ ॥ भूमिदेव नरदेव सचिव परस-पर कहत हमको सुरतरु शिवधनु भो ॥ सुनत राजाकी रीति उपजी प्रतीति प्रीति भाग तुलसीके भले साहेबको जनुभो ॥ ४ ॥ ६६ ॥ चारचो भले बेटा देव दशरथ रायके ॥ जैसे राम लषण भरत रिपुहन तैसे राम शील शोभा सागर प्रभाकर प्रभायके ॥ १ ॥ ताडुका सँहारि मखराखे नीके पाले व्रत कोटि कोटि भटकिए एक एक घायके ॥ एक बाण वेगही उडाने यातुधान जात सूख गए गात हैं पतझ्या भये वायके ॥ २ ॥ शिला-छोर छुवत अहल्या भई दिव्य देह गुण पेखे पारसके पंकरुहपायके ॥ रामके प्रसाद गुरु गौतम खसम भये रावरेहु सतानंद पूत भये मायके ॥ ३ ॥ प्रेम परिहास पोख वचन सरसपर कहत सुनत सुख सबही सुभायकें ॥ तुलसी सराहैं भाग कौशिक जनकजूके

विधिके ॥ ४ ॥ सुंदर होत सुंदर सुदायके ॥ ६७ ॥ ए दोऊ दशरथके बारे ॥ नाम राम घनश्याम लषण लघु नखशिख अंग उज्यारे ॥ १ ॥ निज हित लगि माँगि आने मैं धर्मसेतु रखवारे ॥ धीर वीर विरुदैत बाँकुरे महाबाहु बल भारे ॥ २ ॥ एक तीर तकि हती ताडुका किए सुर साधु सुखारे ॥ यज्ञ राखि जग साखि तोषि निदरि निशाचर मारे ॥ ३ ॥ मुनितिय तारि स्वयंवर पेखन आए सुनि वचन तिहारे ॥ एउ देखिहैं पिनाकु नेकु जोहि नृपति लाज ज्वर जारे ॥ ॥ ४॥ सुनि सानंद सराहि सपरिजन बारहिं बार निहारे ॥ पूजि सप्रेम प्रशंसि कौशिकहि भूपति सदन सिधारे ॥५॥सोचत सत्य सनेह विवश निशि नृपति गनत गये तारे ॥ पठये बोलि भोर गुरुके सँग रंगभूमि पगु धारे॥ ॥ ६ ॥ नगर लोग सुधि पाइ मुदित सबही सब काज बिसारे ॥ मनहुँ मघा जल उमँगि उदधि रुख चले नदी नद नारे ॥ ७ ॥ ए किशोर धनु घोर बहुत बिलखात विलोकि निहारे ॥ टर्यो न चाप तिन्हते जिन्ह सुभटनि कौतुक कुधर उखारे ॥८॥ ए जाने विनु जनक जानियत करि पण भूप हँकारे ॥ नतरु सुधासागर परिहरि कत कूप खनावत खारे ॥ ९ ॥ सुखमा शील सनेह सानि मानो रूप विरंचि सँवारे ॥ रोम रोम पर शोभ काम शत कोटि वारि फिरि डारे ॥ १० ॥ कोट

कहै तेज प्रताप पुंज चितये नहिं जात भियारे ॥ छुअत शरासन सलभ जरे गो ये दिनकर वंश दियारे॥ ११ ॥ एक कहै कछु होउ सुफल भए जीवन जनम हमारे ॥ अवलोके भरि नयन आजु तुलसीके प्राणपियारे ॥ ॥ १२ ॥ ६८ ॥ जनक विलोकि बारबार रघुबरको ॥ मुनि पद शीश नाय आयसु अशीश पाई एई बातैं कहत गवन कियो घरको ॥ १ ॥ नींद न परति राति प्रेम पण एक भाँति सोचत सकोचत विरंचि हरि हरको ॥ तुम्हते सुगम सब देव देखिबेको अब जस हंस किए जोगवत युग परको ॥ २ ॥ ल्याये संग कौशिक सुनाये कहि गुण गण आए देखि दिनकर कुल दिनकरको ॥ तुलसी तरु सनेहको सुभाउ बाउ मानो चल दलको सो पातकरै चितचरको ॥ ३ ॥ ६९ ॥ (राग केदारा) रंग भूमि भोरेही जाइकै ॥ राम लषण लखि लोग लूटि हैं लोचन लाभ अघाइकै ॥१॥ भूप भवन घर घर पुर बाहर इहै चरचा रही छाइकै॥ मगन मनोरथ मोद नारि नर प्रेम विवश उठैं गाइकै ॥ २ ॥ सोचत विधि गति समुझि परस्पर कहत वचन बिलखाइकै ॥ कुँवर किशोर कठोर शरासन असमंजस भयो आइकै ॥ ३ ॥ सुकृत सँभारि मनाइ पितर सुर शीश ईशपद नाइकै ॥ रघुबर कर धनुभंग चहत सब अपनो सो हितु चितु लाइकै ॥ ४ ॥ लेत

फिरत कण सुइ शकुन शुभ बूझत गणक बोलाइके ॥ सुनि अनुकूल मुदित मन मानहुँ धरत धीरजहि धाइके ॥ ५ ॥ कौशिक कथा एक एकनिसों कहत प्रभाव जनाइके ॥ सीय राम सयाग जानियत रच्यो विरंचि बनाइके ॥ ६ ॥ एक सराहि सुबाहु मथन वर बाहु उछाह बढाइके ॥ सानुज राज समाज विराजिहैं राम-पिनाक चढाइके ॥ ७ ॥ बडी सभा बडो लाहु बड़ो यश बडी बडाई पाइके ॥ को सोहिहैं और को लायक रघुनायकहि विहायके ॥ ८ ॥ गवनिहैं गँवहि गवाँइ गरब गृह नृपकुल बलहि लजाइके ॥ भली भाँति साहब तुलसीके चलिहैं ब्याहि बजाइके ॥ ९ ॥ ७० ॥

(रागठोडी) ॥ भोर फूल बीनवेको गए फुलवाई हैं॥ शीशनि टेपारे उपवीत पीत पट कटि दोना वाम करनि सलोने भेस वाई हैं ॥ १ ॥ रूपके अगार भूपके कुमार सुकुमार गुरुके प्राणअधार संग सेवकाई हैं ॥ नीच ज्यों टहल करें राखे रुख अनुसरें कौशिकसे कोही वश किय दुहुँ भाई हैं ॥ २ ॥ सखिन सहित तेहि औसर विधि संयोग गिरिराजू पूजिबेको जानकीजू आई हैं॥ निरखि लषण राम जाने ऋतुपति काम मोहिमानो मदनमोहनी मूड नाई हैं॥ ३॥ राघोजू श्रीजानकी लोचन मिलिवेको मोद कहिबेको जोगुनमें बातें सी बनाई हैं॥ स्वामी सीय सखिन्ह लखनहुँ तुलसीको तैसो तैसो मन

भयो जाको जैसियै सगाई हैं ॥ ४ ॥ ७१ ॥ पूजि पार्वती भले भाय पाँय परिकै ॥ सजल सुलोचन शिथिल तनु पुलकित आवै न बचन मनु रह्यो प्रेम भरिकै ॥ १ ॥ अंतर्यामिनि भव भामिनि स्वामिनि सोहौं कही चाहौं बात मातु अंत तोहौं लरिकै ॥ मूरति कृपालु मंजु माल दै बोलत भई पूजो मन कामना भावतो वरु बरिकै ॥ २ ॥ राम कामतरु पाइ वेलि ज्यों बोडी बनाइ माग कोखि तोखि पोषि फैलि फूलि फरिकै ॥ रहौंगी कहौंगी तब साँची कही अंबासिय गहे पाँय है उठाय माथे हाथ धरिकै ॥ ३ ॥ मुदित अशीश सुनि शीश नाइ पुनि पुनि बिदा भई देवीसों जननि डर डरिकै ॥ हरषी सहेली भयो भावतो गावती गीत गौने भवन तुलसी प्रभुको हियो हरिकै ॥ ४ ॥ ७२ ॥ रंगभूमि आए दशरथके किशोर हैं ॥ पेखनो सो पेखन चले हैं पुर नर नारि बारे बूढे अंध पंगु करत निहोर हैं ॥ १ ॥ नील पीत नीरज कनक मरकत घन दामिनि वरण तनु रूपके निचोर हैं ॥ सहज सलोने राम लषण ललित नाम जैसे सुने तैसेई कुँअर सिरमौर हैं ॥ २ ॥ चरण सरोज चारु जंघा जानु ऊरु कटि कंधर विशाल बाहु बडे बरजोर हैं ॥ नीकेकै निषंग कसे कर कमलनि लसै बाण विशिषासन मनोहर कठोर हैं ॥ ३ ॥ काननि कनकफूल उपवीत अनुकूल पियरे दुकूल बिलसत आछे

छोर हैं ॥ राजिवनयन विधुवदन टपारे शिर नख शिख अंगनि ठगौरी ठौर ठौर हैं ॥ ४ ॥ सभा सरवर लोक कोकनद कोकगण प्रमुदित मन देखि दिनमणि भोरहैं॥ अबुध असैले मन मैले महिपाल भये कछुक उलूक कछु कुमुद चकोर हैं ॥५॥ भाईसों कहत बात कौशिकहि सकुचात बोल घन घोरसे बोलत थोर थोर हैं ॥ सन्मुख सबहि विलोकत सबहि नीके कृपासों हेरत हँसि तुलसीकी ओर हैं ॥ ६ ॥ ७२ ॥ एई राम लषण जे मुनि सँग आए हैं ॥ चौतनि चोलना काछे सखि सोहैं आगे पाछे आछे हुते आछे आछे आछे भाय भाये हैं ॥ १ ॥ साँवरे गोरे शरीर महाबाहु महावीर कटि तूण तीरधरे धनुष सुहाये हैं ॥ देखत कोमल कल अतुल विपुल बल कौशिक कोदंड कला कलित सिखाए हैं ॥ २ ॥ इन्हहीं ताडका मारी गौतमकी तिय तारी भारी भारी भूरि भट रण विचलाये हैं ॥ ऋषि मख रखवारे दशरथके दुलारे रंगभूमि पगुधारे जनक बुलाये हैं ॥ ३ ॥ इन्हके विमल गुण गणत पुलकित तनु सतानंद कौशिक नरेशहि सुनाये हैं ॥ प्रभुपद मन दिये सो समाज चित्त किये हुलसि हुलसि हिये तुलसिहुँ गाये हैं ॥ ४ ॥ ७३ ॥ (राग कान्हरा) ॥ सीय स्वयंवरु माई दोउ भाई आए देखन ॥ सुनत चलीं प्रमदा प्रमुदित मन प्रेम पुलकित नयनहुँ मदन मंजुल

पेखन ॥ १ ॥ निरखि मनोहरताई सुख पाई कहैं एक एकसों भूरि भाग हम धन्य आलिए दिन एखन ॥ तुलसी सहजसनेह सुरँग सब सो समाज चित चित्रसार लागी लेखन ॥ २ ॥ ७५ ॥ (राग गौरी) राम लषण जब दृष्टि परे री ॥ अवलोकत सब लोग जनकपुर मानो विधि विविध विदेह करे री ॥ १ ॥ धनुषयज्ञ कमनी अवनी तल कौतुकही भये आय खरे री ॥ छबि सुरसभा मनहुं मनसिजके कलित कलप-तरु रूख फरे री ॥ २ ॥ सकल काम बरषत मुख निर-खत करषत चित हित हरष भरे री ॥ तुलसी सबै सरा-हत भूपहि भले पैत पासे सुढर ढरे री ॥ ३ ॥ ७६ ॥ नेकु सुमुखि चितलाइ चितौरी ॥ राजकुँवर मूरति रचि-वेकी रुचि सुविरंचि श्रम कियो है कतौ री ॥ १ ॥ नख शिख सुंदरता अवलोकत कह्यो न परत सुख होत जितौ री ॥ साँवर रूप सुधा भरिबे कहँ नयन कमल कल कलसरि तौरी॥२॥मेरे जान इन्हहिं बोलिबे कारण चतुर जनक ठयो ठाट इतौ री ॥ तुलसी प्रभु भंजि हैं शंभु धन भूरिभाग्य सिय मातु पितौ री ॥३॥ ७७ ॥ (राग सारंग) ॥ जबते राम लषण चितये री ॥ रहे एकटक नर नारि जनकपुर लागत पलक कलप बितये री॥१॥प्रेम विवश माँगत महेशसों देखतही रहिय नितये री ॥ कै ए सदा बसहु इन्ह नयनन्हि कै ए नयन जाहु

जित ए री ॥२॥ कोउ समुझाइ कहै किन भूपहि बडे भाग्य आए इत ये री ॥ कुलिश कठोर कहाँ शंकर धनु मृदु मूरति किशोर कित ये री ॥ ३ ॥ विरचित इन्हहिं विरंचि भुवन सब सुंदरता खोजत रितये री ॥ तुलसिदास ते धन्य जनम जन मन क्रम वच जिन्हके हित ये री ॥ ४ ॥ ७८ ॥ सुन सखि भूपति भलोइ कियो री ॥ जेहि प्रसाद अवधेश कुँवर दोउ नगर लोग अवलोकि जियो री ॥ १ ॥ मानि प्रतीति कहे मेरे तैं कत संदेह वश करति हियो री ॥ तौलौं है यह शंभु शरासन श्रीरघुवर जौलौं न लियो री ॥ २ ॥ जेहिं विरंचि रचि सीय सँवारी औ रामहिं ऐसो रूप दियो री ॥ तुलसिदास तेहि चतुर विधाता निजकर यह संयोग सियो री ॥ ३ ॥ ७९ ॥ अनुकूल नृपहि शूल-पानि हैं ॥ नीलकंठ कारुण्यसिंधु हर दीनबंधु दिनदानि हैं ॥ १ ॥ जो पहिलेही पिनाक जनक कहँ गए सौंपि जिय जानि हैं ॥ बहुरि त्रिलोचन लोचनके फल सबहि सुलभ किये आनि हैं ॥२॥ सुनियत भव भावते राम हैं सिय भावती भवानि हैं ॥ परखत प्रीति प्रतीति पयज प्रण रहे काज ठटु ठानि हैं ॥३॥ भये विलोकि विदेह नेहवश बालक बिनु पहिचानि हैं ॥ होत हरे होने बिरवनि दल सुमति कहति अनुमानि हैं ॥ ४ ॥ देखियत भूप भोरकेसे उडुगण गरत गरीब गलानि

हैं ॥ तेज प्रताप बढत कुँवरनको यदपि सकोची बानि हैं ॥५॥ वय किशोर बरजोर बाहुबल मेरु मेलि गुण तानि हैं ॥ अवशि राम राजीव विलोचन शंभु शरासन भानि हैं ॥ ६ ॥ देखि हैं व्याह उछाह नारि नर सकल सुमंगल खानि हैं ॥ भूरि भाग्य तुलसी तेउ जे सुनि हैं गाइ हैं बखानि हैं ॥ ७ ॥ ८० ॥ (राग केदारा) ॥ रामहिं नीकेकै निरखि सुनयनि ॥ मनसहु अगम समुझि यह अवसरु कत सकुचति पिकवयनी ॥ १ ॥ बडे भाग्य मख भूमि प्रगट भइ सीय सुमंगल अयनी ॥ जा कारण लोचन गोचर भइ मूरति सब सुख दयनी ॥ २ ॥ कुलगुरु तियके मधुर वचन सुनि जनक युवति मति पयनी ॥ तुलसी शिथिल देह सुधि बुधि करि सहज सनेह विषयनी ॥ ३ ॥ ८१ ॥ मिलो वरु सुंदर सुंदरि सीतहि लायकु साँवरो सुभग शोभाहूको परम शृंगारु॥मनहुको मन मोहै उपमाको को है सोहै सुखमासागर संग अनुज राजकुमारु ॥ १ ॥ ललित सकल अंग तनु धरे की अनंग नैननिको फल कैधौं सियको सुकृत सारु॥शरद सुधा सदन छविहि निंदै वदन अरुण आयत नवनलिन लोचन चारु ॥ २ ॥ जनक मनकी रीति जानि विरहीत प्रीति ऐसी औ मूरति देखे रह्यो पहिलो विचारु॥ तुलसी नृपहि ऐसो कहि न बुझावै कोउ प्रण औ

कुँवर दोउ प्रेमकी तुलाधौं तारु ॥ २ ॥ ८२ ॥
देखि देखि री दोउ राजसुवन ॥ गौर श्याम सलोने
लोने लोने लोयननी जिन्हकी शोभाते सोहै सकल
भुवन ॥ १ ॥ इन्हहिं ताडका मारी मग मुनि तिय तारी
ऋषिमख राख्यो रण दले हैं दुवन ॥ तुलसी प्रभुको
अब जनक नगर नभ सुयश विमल विधु चहत उअन
॥२॥८३॥ (राग टोडी) ॥ राजा रंगभूमि आज बैठे
जाइ जाइके ॥ आपने आपने थल आपने आपने साज
आपनी आपनी बरबानक बनाइकै ॥ १ ॥ कौशिक
सहित राम लषण ललित नाम लरिका ललाम लोने
पठए बुलाइकै ॥ दरशलालसा वश लोग चले भाय
भले विकसत मुख निकसत धाइ धाइकै ॥ २ ॥ सानुज
सानंद हिये आगे हैं जनक लिये रचना रुचिर सब
सादर देखाइकै ॥ दिये दिव्य आसन सुपास सावकाश
अति आछे आछे बीछे बीछे बिछौना बिछाइकै ॥३॥
भूपति किशोर दुहुँ ओर बीच मुनिराउ देखिबेको दोउ
देखो देखिबो बिहाइकै ॥ उदैशैल सोहैं सुन्दरकुँवर जोहैं
मानौ भानु भोर भूरि किरनी छिपाइकै ॥ ४ ॥ कौतुक
कोलाहल निसान गान पुर नभ वरषत सुमन सुविमान
रहे छाइकै ॥ हित अनहित रत विरत विलोकि बाल
प्रेम मोद मगन जनम फल पाइकै ॥ ५ ॥ राजाकी
रजाइ पाइ सचिव सहेली धाइ सतानंद ल्याए सिय

सिबिका चढाइकै॥ रूप दीपिका निहारि मृग मृगी नर नारि विथके विलोचन निमेषै बिसराइकै॥ ६॥ हानि लाहु अनख उछाहु बाहुबल कहि वंदि बोले विरद अकस उपजाइकै॥ द्वीप द्वीपके महीप आये सुनि पैज प्रण कीजै पुरुषारथको अवसर भो आइकै॥ ७॥ आनाकानि कठ हँसी मुहाँ चाही होन लगी देखि दशा कहत विदेह बिलखाइकै॥ घरनि सिधारिये सुधारिये आगिले काज पूजि पूजि धनु कीजै विजय बजाइकै॥ ८॥ जनक वचन छुए विरवा लजारूकेसे वीर रहे सकल सकुचि शिरनाइकै॥ तुलसी लषण माषे रोषे राखे रामरुख भाषे मृदु परुष सुभायन रिसाइकै॥ ९॥ ८४॥ भूपति विदेह कही नीकिये जो भई है॥ बडेही समाज आजु राजनिकी लाज पति हाँकि आँक एकही पिनाक छीनि लई है॥ १॥ मेरो अनुचित न कहत लरिकाई वश प्रण पर मिति और भाँति सुनि गई है॥ नतरु प्रभु प्रताप उतरु चढाय चाप देतो पै देखाइ बल फल पापमई है॥ २॥ भूमिके हरैया उखरइया भूमि धरनिके विधि विरचे प्रभाउ जाको जग जई है॥ विहँसि हिये हरषि हटके लषण राम सोहत सकोच शीलनेह नारि नई है॥ ३॥ सहमी सभा सकल जनक भए विकल राम लखि कौशिक अशीश आज्ञा दई है॥ तुलसी सुभाय

गुरुपाँय लागि रघुराज ऋषिराजकी रजाइ माथे मानि लई है ॥ ४ ॥ ८५ ॥ सोचत जनक पोच पेच परि गई है ॥ जोरि कर कमल निहोरि कहैं कौशिकसों आयसु भो रामको सो मेरे दुचितई है ॥ १ ॥ वाण यातुधानपति भूप द्वीप सातहूके लोकप विलोकत पिनाक भूमिलई है ॥ जोतिलिंग कथा सुनी जाको अंत पाये विनु आये विधि हरि हारि सोई हाल भई है ॥ २ ॥ आपुही विचारिये निहारिये सभाकी गति वेद मर्याद मानो हेतु वादहई है ॥ इन्हके जितौहैं मन शोभा अधिकानी तन मुखनकी सुखमा सुखद सरसई है ॥ ३ ॥ रावसे भरोसो बल कैहैं कोऊ किये छल कैधौं कुलके प्रभाव कैधौं लरिकई है ॥ कन्याकल कीरति विजय विश्वकी बटोरि कैधौं करतार इन्हहींको निरमई है ॥ ४ ॥ प्रणकी न मोहिं न विशेषि चिंता सीताहूकी लुनि हैं पै सोइ सोई जोई जेहि बई है ॥ रहे रघुनाथकी निकाई नाकी नीके नाथ हाथसों तिहारे करतूति जाकी नई है ॥ ५ ॥ कहि साधु साधु गाधि सुवन सराहे राउ महाराज जानि जिय ठीक भली दई है ॥ हरषे लषण हरषाने विलखाने लोग तुलसी मुदित जाको राजाराम जई है ॥ ६ ॥ ॥ ८६ ॥ सजन सराहैं जो जनक बात कही है ॥ रामहि सोहानी जानि मुनिमन मानी सुनि नीच महिपावली दहन विनु दही है ॥ १ ॥ कहैं गाधि-

नंदन मुदित रघुनंदनसों नृपति अगहु गिरा न जाति गही है ॥ देखे सुने भूपति अनेक झूँठे झूँठे नाम साँचे तिरहुतिनाथ साखी देत मही है ॥ २ ॥ रागऊ विराग भोग योग जोगवत मनु योगी जागबलिक प्रसाद सिद्धि लही है ॥ ताते न तरनिते न सीरे सुधा करहूते सहज समाधि निरुपाधि निरवही है ॥ ३ ॥ ऐसेउ अगाध बोध रावरे सनेह वश विकल विलोकियत दुचितई सही है ॥ कामधेनु कृपा हुलसानी तुलसीश उर प्रण शिशु हेरि मर्याद बाँधी ही है ॥ ४ ॥ ८७ ॥ ऋषिराज राजा आजु जनक समान को॥आपु यहि भाँति प्रीति सहित सराहियत रागी औ विरागी बडभागी ऐसो आन को ॥ १ ॥ भूमि भोग करत अनुभवत योग सुख मुनि मन अगम अलख गति जान को ॥ गुरु हर पद नेहु गेह बसि भो विदेह अगुण सगुण प्रभु भजन सयान को ॥ २ ॥ कहनि रहनि एक विरति विवेक नीति वेद बुध संमत पथीन निरवान को ॥ विनु गुनकी कठिन गाँठि जड चेतनकी छोरी अनायास साधु सोधक अयान को ॥ ३ ॥ सुनि रघुवीरकी वचन रचनाकी रीति भए मिथिलेश मानो दीपक विहानको ॥ मिट्यो महा मोह जीको छूट्यो पोच शोच सीको जान्यो अवतार भयो पुरुष पुराणको ॥ ४ ॥ सभा नृप गुरु नर नारि पुर नभसुर सब चितवत मुख करुणानि-

धान को ॥ एकहि एक कहत प्रगट एक प्रेम वश तुलसीश तोरिये शरासन इशानको ॥ ५ ॥८८॥ (राग मारू) सुनो भैया भूप सकल दै कान॥ बज्ररेख गजदशन जनक प्रण वेद विदित जगजान ॥ १ ॥ घोर कठोर पुरारि शराशन नाम प्रसिद्ध पिनाकु ॥ जो दशकंठ दियो बाँवो जेहि हर गिरि कियो है मनाकु ॥ ॥ २ ॥ भूमि भाल भ्राजत न चलत सो ज्यों विरंचिको आँकु॥धनु तोरै सोइ वरै जानकी राउ होइ की राँकु ॥ ३ ॥ सुनि आमरपि उठे अवनीपति लगे वचन जनु तीर ॥ टरै न चाप करैं अपनो सो महा महाबल धीर ॥ ४ ॥ नमित शीश सोचहि सलज्ज सब श्रीहत भये शरीर ॥ बोले जनक विलोकि सीय तन दुखित सरोष अधीर ॥ ५ ॥ सप्त द्वीप नव खंड भूमिके भूपति वृंद जुरे ॥ बडो लाभ कन्या कीरतिको जहँ तहँ महिप मुरे॥६॥डग्यौ न धनु जनु वीर विगत महि किधौं कहुँ सुभट दुरे॥ रोषे लषण विकट भ्रुकुटी करिभुज अरु अधर फुरे ॥७॥ सुनहु भानु कुल कमल भानु जो अब अनुशासन पावौं ॥ का बापुरो पिनाकु मेलिगुण मंदर मरु नवावौं ॥ ८ ॥ देखो निज किंकरको कौतुक क्यौं कोदंड चढावौं ॥ लै धावों भंजौं मृनाल ज्यौं तौ प्रभु अनुग कहावों ॥ ९ ॥ हरषे पुर नर नारि सचिव नृप कुँवर कहे वरवैन ॥ मृदु मुसकाइ राम वरज्यौ प्रिय

बंधु नयनकी सैन ॥ १० ॥ कौशिक कह्यौ उठहु रघु-
नंदन जगवन्दन बलऐन ॥ तुलसिदास प्रभु चले मृग-
पति ज्यों निज भगतनि सुख दैन ॥ ११ ॥ ८९ ॥
जबहिं सब नृपति निराश भए ॥ गुरुपद कमल वंदि
रघुपति तब चाप समीप गए ॥१॥ श्यामतामरसदाम
बरण वपु उर भुज नयन विशाल ॥ पीत वसन कटि
कलित कंठ गल सुंदर सिंधुर मणि माल ॥ २ ॥ कल
कुंडल पल्लव प्रसून शिर चारु चौतनी लाल ॥ कोटि
मदन छबि सदन वदन विधु तिलक मनोहर भाल ॥
॥ ३ ॥ रूप अनूप विलोकत सादर सुरजन राजसमा-
ज ॥ लषण कह्यो थिर होहिं धरनि धरु धरनि धरनि
धर आज ॥ ४ ॥ कमठ कोल दिग दंति सकल अंग
सजग करहु प्रभु काज ॥ चहत चपरि शिव चाप चढा-
वन दशरथको युवराज ॥ ५ ॥ गहि करतल मुनि पु-
लक सहित कौतुकहि उठाइ लियो ॥ नृपगन मुखनि
समेत नमित करि सजि सुख सबहि दियो॥६॥आक-
र्ष्यो सिय मन समेत हरि हरष्यो जनक हियो॥भंज्यो
भृगुपति गर्व सहित तिहुँ लोक विमोह कियो॥७॥भयो
कठिन कोदंड कोलाहल प्रलय पयोद समान ॥ चौंके
शिव विरंचि दिशिनायक रहे मूँदि कर कान ॥ ८ ॥
सावधान ह्वै चढे विमाननि चले बजाइ निसान॥
उमँगि चल्यौ आनंद नगर नभ जय धुनि मंगल

गान ॥ ९ ॥ विप्र वचन सुनि सखी सुआसिनि चलीं जानकिहि ल्याइ ॥ कुँअर निरखि जयमाल मेलिउर कुँअरि रही सकुचाइ ॥१०॥ वरषहिं सुमन अशीशहिं सुर मुनि प्रेम न हृदय समाइ ॥ सीय रामकी सुंदरतापर तुलसिदास बलि जाइ ॥ ११ ॥ ९० ॥

(राग मलार) ॥ जब दोउ दशरथ कुँअर विलोके ॥ जनक नगर नर नारि मुदित मन निरखि नयन पल रोके ॥ १ ॥ वय किशोर घन तडित वरनतनु नखशिख अंग लोभारे ॥ दै चितु कै हित लै सब छवि बितु विधि निज हाथ सँवारे ॥२॥ संकट नृपहि सोच अति सीतहि भूप सकुचि शिरनाए ॥ उठे राम रघुकुल कल केहरि गुरु अनुशासन पाए ॥३॥ कौतुकहीं कोदंड खंडि प्रभु जय अरु जानकि पाई ॥ तुलसिदास कीरति रघुपतिकी मुनिन्ह तिहूँपुर गाई ॥ ४ ॥ ९१ ॥

(राग टोडी) ॥ मुनि पदरेणु रघुनाथ माथे धरी है ॥ रामरुख निरखि लषणकी रजाइ पाइ धराधरा धरनि सुसावधान करी है ॥१॥ सुमिरि गणेश गुरु गौरि हर भूमिसुर सोचत सकोचत सकोची वान धरी है ॥ दीनबंधु कृपासिंधु साहसिक सीलसिंधु सभाकी सकोच कुलहूकी लाज परी है ॥ २ ॥ पेषि पुरुषारथ परखि प्रण प्रेमनेम सिय हियकी विशेषि बडी खरभरी है ॥ दाहिनो दियो पिनाकु सहमि भयो मनाकु महाव्याल

विकल विलोकि जनु जरी है ॥३॥ सुर हरषत वरषत फूल बार बार सिद्धि मुनि कहत शकुन शुभ घरी है ॥ रामबाहु विटप विसाल वोडी देखिअत जनक मनोरथ कलप बेलि फरी है ॥४॥ लख्यो न चढावत न तानत न तोरत हू घोर धुनि सुनि शिवकी समाधि टरी है ॥ प्रभुके चरित चारु तुलसी सुनत सुख एकही सुलभ सबहीकी हानि हरी है ॥ ५ ॥ ९२ ॥ (राग सारंग)॥ राम कामरिपु चाप चढायो ॥ मुनिहिं पुलक आनंद नगर नभ निरखि निसान बजायो ॥१॥ जेहि पिनाकु बिनुनाक किये नृप सबहि विषाद बढायो ॥ सोई प्रभु कर परशत टूटचौ जनु हुतो पुरारि पठायो ॥ २ ॥ पहिराई जयमाल जानकी युवतिन्ह मंगल गायो ॥ तुलसी सुमन वरषि हरषे सुर सुयश तिहूँ पुर छायो॥ ॥ ३ ॥ ९३ ॥ (राग टोडी) ॥ जनक मुदित मन टूटत पिनाकके ॥ बाजेहैं बधावने सुहावने मंगल गान भयो सुख एकरस रानी राजा राँकके॥१॥दुंदुभी बजाइ गाइ हरषि फूल सुरगण नाचैं नाच नायकहू नाकके॥ तुलसी महीश देखे दिनरजनीश जैसे सूने परे सूनसे मनो मिटाये आँकके ॥ २ ॥ ९४॥ लाजतो न साजि साज राजा राउ रोषेहैं ॥ कहा भव चाप चढाए व्याह ह्वै है खाये बोलै खोलै सेल असि चमकत चोखे है ॥ १ ॥ जानि पुरजन त्रसे धीर दै लषण

हँसे बल इन्हके पिनाक नीके नापे जोखे हैं ॥ कुलहि लजावैं बाल वालिस बजावैं गाल कैधौं कूर कालवश तमकि त्रिदोषे हैं ॥ २ ॥ कुँवर चढाई भौंहैं अब को विलोकै सोहैं जहँ तहँ मे अचेत खेतकेसे धोखे हैं ॥ देखे नर नारि कहैं साग खाइ जाए माइ बाह पीन पाँवरनि पीना खाइ पोखे हैं ॥ ३ ॥ प्रमुदित मन लोक कोकनद कोकगण रामके प्रतापपै विशोच शर सोखे हैं ॥ तबके देखैया तोषे तबके लोगनि भले अबके सुनैया साधु तुलसीहुँ तोषे हैं ॥ ४ ॥ ९९ ॥ जयमाल जानकी जलजकर लई है ॥ सुमन सुमंगल शकुनकी बनाइ मंजु मानहुँ मदनमाली आपु निरमई है ॥ १ ॥ राज रुख लखि गुरु भूसुर सुआसिनिन्हि समय समाजकी ठवनि भली ठई है ॥ चली गान करत निसान बाजे गहगहे लहलहे लोयनसा नेह सरसई है ॥ २ ॥ हनि देव दुंदुभि हरषि वरषत फूल सफल मनोरथ भो सुख सुचितई है ॥ पुरजन परिजन रानि राउ प्रमुदित मनसा अनूप राम रूप रंग रई है ॥ ३ ॥ सतानंदशिष सुनि पाँयपरि पहिराई माल सियपिय हिय सोहत सोभई है ॥ मानसते निकसि विशाल सुत माल पर मानहुँ मरालपाँति बैठी बनि गई है ॥४॥ हितनिको लाहकी उछाहकी विनोद मोद शोभाकी अवधि नहिं अब अधिकई है ॥ याते विपरीत अनहितनकी

जानिलीवी गति कहै प्रगट पुनि सखा सिखई है॥५॥ निज निज वेदकी सप्रेम योगक्षेममई मुदित अशीशविप्र विदुषनि दई है॥ छबि तेहि कालकी कृपालु सीतादूलहकी हुलसति हिए तुलसीके नितनई है॥ ॥ ६ ॥ ९६ ॥ (राग केदारा) लेहु री लोचननिको लाहु॥ कुँवर सुंदर साँवरो सखि सुमुखि सादर चाहु॥ १॥ खंडि हर कोदंड ठाढे जानु लंबित बाहु॥ रुचिर उर जयमाल राजति देत सुख सबकाहु॥ २॥ चितैचित हित सहित नख शिख अंग अंग निवाहु॥ सुकृत निज सियरामरूप विरंचि मतिहि सराहु॥ ३॥ मुदित मन वरवदन शोभा उदित अधिक उछाहु॥ मनहुँ दूरि कलंक करि शशि समर सूद्यो राहु॥ ४॥ नयन सुखमा अयन हरत सरोज सुंदरताहु॥ बसत तुलसीदास उरपुर जानकीका नाहु॥ ५॥ ९७॥ (राग सारंग)॥ भूपके भागकी अधिकाई॥ टूट्यो धनुप मनोरथ पूज्यौ विधि सब बात बनाई॥ १॥ तबते दिन दिन उदै जनकको जबते जानकी जाई॥ अब यहि व्याह सफल भयो जीवन त्रिभुवन विदित बडाई॥२॥ बारहि बार पहुनई ऐहैं राम लषण दोउ भाई॥ यहि आनंद मगन पुरवासिन्ह देहदशा बिसराई॥ ३॥ सादर सकल विलोकत रामहिं काम कोटि छबिछाई॥ यह सुखसमउ समाज एक मुख क्यों तुलसी कहै किमि

गाई ॥ ४ ॥ ९८ ॥ (राग सोरठ) मेरे बालक कैसेधौं सग निवहहिंगे ॥ भूख पियास शीत श्रम सकुचनि क्यों कौशिकहिं कहहिंगे ॥ १ ॥ को भोरहिं उबटी अन्हवैहै काढि कलेऊ देहै ॥ को भूषण पहिराइ निछावरि करि लोचन सुख लैहै ॥ २ ॥ नयन निमेषनि ज्यों जोगवैं नित पितु परिजन महतारी ॥ ते पठये ऋषि साथ निशाचर मारन मख रखवारी ॥३॥ सुंदर सुठि सुकुमार सुकोमल काकपक्षधर दोऊ ॥ तुलसी निरखि हरपि उर लैहौं विधि ह्वै है दिन सोऊ ॥ ४ ॥ ९९॥ ऋषिनृप शीश ठगौरिसी डारी ॥ कुलगुरु सचिव निपुण नेवनि अवरेवन समुझि सुधारी ॥ १ ॥ सिरस सुमन सुकुमार कुँवर दोउ शूर सरोष सुरारी ॥ पठए विनहि सहाय पयादेहि केलि बाण धनुधारी ॥ २ ॥ अति सनेह कातरि माता कहै लखि सखि वचन दुखारी ॥ वादि वीर जननी जीवन जग छत्र जाति गत भारी ॥ ३ ॥ जो कहि है फिरे राम लषण घर करि मुनिमख रखवारी ॥ सो तुलसी प्रिय मोहिं लागि है ज्यों सुभाय सुत चारी ॥ ४ ॥ ॥ १०० ॥ जबते लै मुनिसंग सिधाये ॥ राम लषण के समाचार सखि तबते कछुअ न पाए ॥ १ ॥ बिनु पानहीं गमन फल भोजन भूमिशयन तरुछाहीं ॥ सर सरिता जलपान शिशुनके साथ सुसेवक नाहीं ॥२॥

कौशिक परमकृपालु परमहित समरथ सुखद सुचाली॥ बालक सुठि सुकुमार सकोची समुझि सोच मोहिं आली ॥३॥वचन सप्रेम सुमित्राके सुनि सब सनेहवश रानी ॥ तुलसी आइ भरत तेहि औसर कही सुमंगल वानी ॥ ४ ॥ १०१ ॥ सानुज भरत भवन उठि-धाए ॥ पितु समीप सब समाचार सुनि मुदित मातु पहँ आए ॥ १ ॥ सजल नयन तनु पुलक अधर फरकत लखि प्रीति सुहाई ॥ कौशल्या लिए लाइ हृदय बलि कहौ कछु है सुधि पाई ॥ २ ॥ सतानंद उपरोहित अपने तिरहुति नाथ पठाए ॥ क्षेम कुशल रघुवीर लषणकी ललित पत्रिका ल्याए ॥ ३ ॥ दलि ताडुका मारि निशिचर मख राखि विप्र तिय तारी ॥ दै विद्या लै गए जनकपुर हैं गुरु संग सुखारी ॥ ४ ॥ करि पिनाक पण सुता स्वयंवर सजि नृप कटक बटो-र्यो ॥ राज सभा रघुवर मृणाल ज्यों शंभु शरासन तोर्यो ॥ ५ ॥ यों कहि शिथिल सनेह बंधु दोउ अंब अंक भरि लीन्हें ॥ बार बार मुख चूमि चारु म-णि वसन निछावरि कीन्हें ॥ ६ ॥ सुनत सुहावनि चाह अवध घर घर आनंद बधाई ॥ तुलसिदास रनि-वास रहस वश सखी सुमंगल गाई ॥ ७ ॥ १०२ ॥ (राग कान्हरा) ॥ राम लषण सुधि आई बाजै अ-वध बधाई ॥ ललित लगन लिखि पत्रिका उपरोहित

के कर जनक जनेश पठाई ॥ १ ॥ कन्या भूप विदेह-की रूपकी अधिकाई ॥ तासु स्वयंवर सुनि सब आए देश देशके नृप चतुरंग बनाई ॥ २ ॥ पण पिनाक पविसेरुते गुरुता कठिनाई ॥ लोकपाल महिपाल बाण इत रावण सके न चाप चढाई ॥ ३ ॥ तेहि समाज रघुराजके मृगराज जगाई॥ भंजि शरासन शंभुको जग जय कल कीरति तिय तिय मणि सिय पाई ॥ ४ ॥ पुर घर घर आनंद महा सुनि चाह सुहाई ॥ मातु मुदित मंगल सजै कहै मुनि प्रसाद भये सकल सुमंगल माई ॥ ५ ॥ गुरु आयसु मंडप रच्यो सब साज सजाई ॥ तुलसिदास दशरथ बरात सजि पूजि गणेशहि चले निशान बजाई ॥ ६ ॥ १०३ ॥ (राग केदारा) मनसें मंजु मनोरथ होरी ॥ सो हर गौरि प्रसाद एकते कौशिक कृपा चौगुनो भोरी ॥ १ ॥ पण परि-ताप चाप चिंता निशि सोच सकोच तिमिर नहि थोरी ॥ रविकुल रवि अवलोकि सभा सर हितचित वारिज वन विकसो री ॥ २ ॥ कुँवर कुँवरि सब मंगलमूरति नृप दोउ धरम धुरंधर धोरी ॥ राजसमाज भूरि भागी जिन लोचन लाहु लही एक ठोरी ॥ ३ ॥ व्याह उछाह राम सीताको सुकृत सकेलि विरंचि रच्यो री ॥ तुलसिदास जानै सोइ यह सुख जाके उर बसति मनोहर जोरी ॥ ४ ॥ १०४ ॥ राजति राम जानकी

जोरी ॥ श्याम सरोज जलद सुंदर वर दुलहिनि तड़ित
वरण तनु गोरी ॥ १ ॥ व्याह समय सोहति वितान
तर उपमा कहुँ न लहति मति मोरी॥मनहुँ मदन मंजुल
मंडप महँ छबि शृंगार शोभा सोउ थोरी ॥ २ ॥ मंग-
लमय दोउ अंग मनोहर ग्रंथित चूनरि पीत पिछोरी ॥
कनककलश कहँ देत भाँवरी निरखि रूप शारद भइ
भोरी ॥ ३ ॥ मुदित जनक रनिवास रहसवश चतुर
नारि चितवहिं तृण तोरी॥गान निशान वेद ध्वनि सुनि
सुर वरषत सुमन हरष कहैं कोरी ॥ ४ ॥ नयननको फल
पाइ प्रेमवश सकल अशीशत ईश निहोरी ॥ तुलसी
जेहि आनंद मगन मन क्यों रसना वरणै सुख सोरी
॥ ५ ॥ १०५ ॥ दूलह राम सीय दुलही री ॥ घन
दामिनि वर वरन हरन मन सुंदरता नख शिखनि बही
री ॥ १ ॥ व्याह विभूषण वसन विभूषित सखि अवली
लखि ठगिसि रही री ॥ जीवन जन्मलाहु लोचन फल
है इतनोइ लह्यो आजु सही री ॥ २ ॥ सुखमा सुरभि
शृंगार क्षीर दुहि मयन अमिय मय कियो है दही री ॥
मथि माखन सिय राम सँवारे सकल भुवन छबि मनहुँ
महीरी ॥ ३ ॥ तुलसिदास जोरी देखत सुख शोभा
अतुल न जाति कही री ॥ रूप राशि विरची विरंचि
मनो शिला लवनि रति काम लही री ॥ ४ ॥ १०६ ॥
जैसे ललित लषण लाल लोने ॥ तैसिये ललित उर

मिला परस्पर लखत सुलोचन कोने ॥ १ ॥ सुखमासार शृंगारसार करि कनक रचे तिहि सोने ॥ रूपप्रेम परमिति न परत कहि विथकि रही मति मोने ॥ २ ॥ शोभाशील सनेह सोहावनो समउ केलि गृह गोने ॥ देखि तियनिके नयन सफल भयो तुलसिदासहूके होने ॥ ३ ॥ १०७ ॥ (राग बिलावल) ॥ जानकी वर सुंदर माई ॥ इंद्र नील मणि श्याम सुभग अँग अंग मनोजनि बहु छबि छाई ॥ १ ॥ अरुण चरण अंगुली मनोहर नखद्युतिवंत कछुक अरुणाई ॥ कंज दलनि पर मनहुँ भौमदश बैठे अचल सु सदसि बनाई ॥ २ ॥ पीत जानु उर चारु जटित मणि नूपुर पद कल मुखर सोहाई ॥ पीतपराग भरे अलिगण जनु युगल जलज देखिरहे लोभाई ॥३॥ किंकिणि कनककंज अवली मृदु मरकत शिखर मध्य जनु जाई ॥ गई न उपर सभीत नमितमुख विकशि चहूँ दिशि रही लोनाई ॥४॥ नाभि गँभीर उदर रेखावर उर भृगु चरण चिन्ह सुखदाई ॥ भुज प्रलंब भूषण अनेकयुत वसन पीत शोभा अधिकाई ॥ ५ ॥ यज्ञोपवीत विचित्र हेममय मुक्तामाल उरसि मोहिं भाई ॥ कंद तडित बिच जनु सुरपति धनु निकट बलाकपाँति चलि आई ॥ ६ ॥ कंबु कंठ चिबुकाधर सुंदर क्यों कहौं दशननकी रुचि राई ॥ पद्मकोश महँ बसे वज्र

मनो निज सँग तडित अरुण रुचि लाई ॥ ७ ॥ नाशिका चारु ललित लोचन भ्रू कुटिल कचनि अनुपम छबि पाई ॥ रहे घेरि राजीव उभय मनो चंचरीक कछु हृदय डेराई ॥ ८ ॥ भाल तिलक कंचन किरीट शिर कुंडल लोल कपोलनि झाँई ॥ निरखहिं नारि निकर विदेहपुर निमि नृपकी मरयाद मिटाई ॥ ९ ॥ शारद शेष शंभु निशि वासर चिंतत रूप न हृदय समाई ॥ तुलसिदास शठ क्योंकरि वरणै यह छबि निगम नेति कहि गाई ॥१०॥१०८॥ (राग कान्हरा)॥ भुजनि पर जननी वारि फेरि डारी॥क्यों तोरचौ कोमल कर कमलनि शंभु शरासनभारी ॥ १ ॥ क्यों मारीच सुबाहु महाबल प्रबल ताडका मारी ॥ मुनि प्रसाद मेरे राम लषणकी विधि बडि करवर टारी ॥ २ ॥ चरणरेणु लै नयननि लावति क्यों मुनिवधू उधारी ॥ कहौ धौ तात क्यों जीति सकल नृप वरी है विदेहकुमारी॥ ॥३॥ दुसह-रोष-मूरति भृगुपति अति नृपति निकर पक्षकारी॥क्यों सौंप्यो शारंग हारि हिय करि है बहुत मनुहारी ॥ ४ ॥ उमँगि उमँगि आनंद विलोकति वधुनसहित सुत चारी ॥ तुलसिदास आरती उतारति प्रेम मगन महतारी ॥ ५ ॥ १०९ ॥ मुदित मन आरती करै माता ॥ कनक वसन मणि वारिवारिकर पुलक प्रफुल्लित गाता ॥ १ ॥ पाँलागनि दुलहिनिहि सिखा-

वति सरिस सासु सत साता ॥ देहिं अशीश ते वरिस कोटिलगि अचल होउ अहिवाता ॥ २ ॥ रामसीय छबि देखि युवतिजन करहिं परस्पर बाता ॥ अब जान्यो साँचेहु सुनहु सखि कोविद बडो विधाता ॥ ॥ ३ ॥ मंगल गान निसान नगर नभ आनँद कह्यो न जाता ॥ चिरजीवहु अवधेश सुवन सब तुलसिदास सुखदाता ॥ ४ ॥ ११० ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां बालकांडसंपूर्णम् ॥

राग सोरठा ॥ नृप कर जोरि कह्यो गुरुपाहीं ॥ तुम्हरी कृपा अशीश नाथ मेरी सबै महेश निबाहीं॥१॥ राम होहिं युवराज जियत मेरे यह लालच मनमाहीं ॥ बहुरि मोहिं जियबे मरिबेकी चित चिन्ता कछु नाहीं ॥ २ ॥ महाराज भलो काज विचार्यो बेग-विलंब न कीजे ॥ विधि दाहिनो होइ तौ सबमिलि जनम लाहु लुटि लीजै ॥ ३ ॥ सुनत नगर आनंद बधावन कैकेयी बिलखानी ॥ तुलसीदास देवमायावश कठिन कुटिलता ठानी ॥४॥ १ ॥ १११ ॥ (राग गौरी)॥ सुनहु राम मेरे प्राणपियारे ॥ बारौं सत्यवचन श्रुति-सम्मत जाते हो बिछुरत चरण तिहारे ॥ १ ॥ बिनु प्रयास सब साधनको फल प्रभु पायो सो तो नाहिं सम्हारे॥हरि तजि धरमशील भयो चाहत नृपति नारि

वश सरवस हारे ॥२॥ रुचिर काच मणि देखि मूढ ज्यों करतलते चिंतामणि डारे ॥ मणि लोचन चकोर शशि राघव शिव जीवनधन सोउ न विचारे ॥ ॥ ३ ॥ यद्यपि नाथ तात मायावश सुखनिधान सुत तुम्हहिं विसारे ॥ तदपि हमहिं त्यागहु जनि रघुपति दीनबंधु दयालु मेरे वारे ॥ ४ ॥ अतिशै प्रीति विनीत वचन सुनि प्रभु कोमल चित चलत न पारे॥ तुलसिदास जो रहौं मातु हित को सुर विप्र भूमिभय टारे ॥ ५ ॥ २ ॥ ११२ ॥ रहि चलिए सुंदर रघुनायक ॥ जो सुत तात वचन पालन रत जननिउ तात मानिवे लायक ॥ १ ॥ वेद विदित यह बानि तुम्हारी रघुपति सदा संत सुखदायक ॥ राखहु निज मरयाद निगमकी हौं बलिजाउँ धरहु धनुशायक ॥ ॥ २ ॥ शोककूप पुर परिहि मरिहि नृप सुनि सँदेश रघुनाथ सिधायक ॥ यह दूषण विधि तोहिं होत अब रामचरण वियोग उपजायक ॥ ३ ॥ मातु वचन सुनि श्रवण नयन जल कछु सुभाउ जनु नर तनु पायक ॥ तुलसिदास सुरकाज न साध्यौ तौ तो दोष मोहिं महि आयक ॥ ४ ॥ ३ ॥ ११३ ॥ (राग सोरठ) ॥ राम हौं कौन जतन घर रहिहौं ॥ बार बार भरि अंक गोद लै ललन कौनसों कहिहौं ॥ १ ॥ इहि आँगन विहरत मेरे वारे तुम जो संग शिशु लीन्हें ॥ कैसे

प्राण रहत सुमिरत सुत बहु विनोद तुम्ह कीन्हें ॥२॥
जिन्ह श्रवणनि कल वचन तिहारे सुनि सुनि हों अनु-
रागी ॥ तिन्ह श्रवणनि वन गवन सुनतिहों मोते
कवन अभागी ॥ ३ ॥ युग सम निमिष जाहिं रघुनं-
दन वदनकमल विनु देखे ॥ जो तनु रहै वरष वीते व-
लि कहा प्रीति इहि लेखे ॥ ४ ॥ तुलसीदास प्रेमवश
श्रीहरिदेखि विकल महतारी॥गद्गद् कंठ नयन जल फिरि
फिरि आवन कह्यो मुरारी ॥ ५ ॥ ४ ॥ ११४ ॥ राग
बिलावल) ॥ रहहु भवन हमरे कहे कामिनि ॥ सादर
सासु चरण सेवहु नित जो तुम्हरे अतिहित गृह स्वा-
मिनि ॥ १ ॥ राजकुमारि कठिन कंटक मग क्यों च-
लिहो मृदु पद गजगामिनि ॥ दुसह वात वरषा
आतप कैसे सहि हो अगणित दिन यामिनि ॥ २ ॥
हौं पुनि पितु आज्ञा प्रमाण करि ऐहों वेगि सुनहु द्युति
दामिनि ॥ तुलसिदास प्रभु विरह वचन सुनि सहि
सकी मुरछित भइ भामिनि ॥ ३ ॥ ५ ॥ ११५ ॥
कृपानिधान सुजान प्राणपति संग विपिन हौं
गृहते कोटि गुणित सुख मारग चलत साथ सचुपावों-
गी ॥१॥ थाके चरण कमल चापोंगी श्रम भये वायु
डोलावोंगी ॥ नयन चकोरके मुखमयंक छवि सादर
पान करावोंगी ॥ २ ॥ जो हठि नाथ राखि हो
मोकहँ तो सँग प्राण पठावोंगी ॥ तुलसिदास प्रभु विनु

जीवत रहि क्यों फिरि वदन देखावोंगी ॥ ३ ॥
॥ ६ ॥ ११६ ॥ कहो तुम विनु गृह मेरो कौन काजु ॥
विपिन कोटि सुरपुर समान मोको जोपै पिय परिह-
रचो राजु ॥ १ ॥ वल्कल विमल दुकूल मनोहर कंद
मूल फल अमि अनाजु ॥ प्रभु पदकमल विलोकिहों
छिन छिन इहिते अधिक कहा सुख समाजु ॥ २ ॥
हों रहों भवन भोग लोलुप ह्वै पति कानन किथो
मुनिको साजु ॥ तुलसिदास ऐसे विरह वचन सुनि
कठिन हियो बिदरचो न आजु ॥ ३ ॥ ७ ॥ ११७ ॥
प्रिय निठुर वचन कहे कारन कवन ॥ जानत हो सबके
मनकी गति मृदुचित परमकृपालु रवन ॥ १ ॥ प्राण-
नाथ सुंदर सुजान मणि दीनबंधु जन आरती दवन ॥
तुलसिदास प्रभु पदसरोज तजि रहि हौं कहा करोंगी
भवन ॥ २ ॥ ८ ॥ ११८ ॥ मैं तुम्हसों सतिभाव
कही है ॥ बूझति और भाँति भामिनि कत कानन
कठिन कलेश सही है ॥ १ ॥ जो चलि हौ तो चलो
चलिकै वन सुनि सिय मन अवलंब लही है ॥ बूडत
विरह वारिनिधि मानहुँ नाह वचनमिस बाँह गही है ॥
॥ २ ॥ प्राणनाथके साथ चलीं उठि अवध शोकसरि
उमँगि बही है ॥ तुलसी सुनि न कबहुँ काहू कहुँ तनु
परिहरि परिछाँह रही है ॥ ३ ॥ ९ ॥ ११९ ॥ जबहिं
रघुपति सँग सीय चली ॥ विकल बियोग लोग पुर-

तिय कहे अति अन्याउ अली ॥१॥ कोउ कहै मणि-गण तजत काच लगि करत न भूप भली ॥ कोउ कहै कुल कुवेलि कैकेयी दुख विष फलनि फली ॥ २ ॥ एक कहैं वन योग जानकी विधि बड विषम वली ॥ तुलसी कुलिशहुकी कठोरता तेहि दिन दलकि दली॥ ॥ ३ ॥ १० ॥ १२० ॥ ठाढे हैं लषण कमल कर जोरे॥ उर धकधकी न कहत कछु सकुचनि प्रभु परिहरत सबनि तृण तोरे ॥ १ ॥ कृपासिंधु अवलोकि बंधुतन प्राण कृपाण वीरसी छोरे ॥ तात बिदा माँगिए मातुसों बनि है बात उपाइ न औरे ॥२॥ जाइ चरण गहि आयसु याच्या जननि कहत बहुभाँति निहोरे ॥ सिय रघुवर सेवा शुचि ह्वैहौ तौ जानिहौं सही सुत मोरे ॥ ३ ॥ कीजहु इहै विचार निरंतर राम समीप सुकृत नहिं थोरे॥ तुलसी सुनि शिष चले चकित चित उड्यो मानो विहग वधिक भये भोरे ॥ ४ ॥ ११ ॥ १२१ ॥ (राग सोरठ) मोको विधुवदन विलोकन दीजै ॥ राम लषण मेरी यहै भेंट बलि जाँउ मोहिं मिलि लीजै॥ ॥ १ ॥ सुनि पितु वचन चरण गहे रघुपति भूप अंक भरि लीन्हें ॥ अजहुँ अवनि विदरत दरार मिस सो अवसर सुधि कीन्हें ॥ २ ॥ पुनि शिर नाइ गवन कियो प्रभु मुरछित भयो भूप न जाग्यो ॥ करम चोर नृप पथिक मारि मानो राम रतन ले भाग्यो ॥ ३ ॥

तुलसी रविकुल रथ चढि चले तकि दिशि दखिन सुहाई ॥ लोग नलिन भए मलिन अवध सर विरह विषम हिम आई ॥ ४ ॥ १२ ॥

॥ १२२ ॥ (राग बिलावल) ॥ कहो सो विपिन है धौं केतिक दूरि ॥ जहाँ गवन कियो कुँवर कोशलपति बूझति सियपिय पतिहि बिसूरि ॥ १ ॥ प्राणनाथ परदेश पयादेहि चले सुख सकल तजे तृण तूरि ॥ करौं बयारि विलंबिय विटपतर झारौं हौं चरण सरोरुह धूरि ॥ २ ॥ तुलसिदास प्रभु प्रियावचन सुनि नीरजनयन नीरआए पूरि ॥ कानन कहाँ अबहिं सुनि सुंदरि रघुपति फिरि चितये हित भूरि ॥ ३ ॥ १२ ॥

॥ १२३ ॥ फिरि फिरि राम सीयतनु हेरत ॥ तृषित जानि जल लेन लषण गए भुज उठाइ ऊँचे चढि टेरत ॥ १ ॥ अवनि कुरंग विहँग द्रुम डारन रूप निहारत पलक न प्रेरत॥मग ना डरत निरखि कर कमलनि सुभग शरासन शायक फेरत ॥ २ ॥ अवलोकत मग लोग चहूँदिशि मनहुँ चकोर चन्द्रमहि घेरत ॥ ते जन भूरि-भाग्य भूतलपर तुलसी राम पथिक पद जे रत ॥ ३ ॥ १४ ॥ १२४ ॥ नृपति कुंवर राजत मग जात ॥ सुंदर वदन सरोरुह लोचन मर्कत कनकवरण मृदुगात॥ ॥ १ ॥ अंशनि चाप तूण कटि मुनिपट जटा मुकुट बिच नूतन पात ॥ फेरत पाणि सरोजनि शायक चोरत

चितहिं सहज मुसुकात ॥ २ ॥ संग नारि सुकुमारि सुभग सुठि राजति विन भूषण नव सात ॥ सुखमा निरखि ग्राम वनितनिके नलिन नयन विकसित मनो प्रात ॥ ३ ॥ अंग अंग अगणित अनंग छवि उपमा कहत सुकवि सकुचात ॥ सिय समेत नित तुलसिदास चित बसत किशोर पथिक दोउ भ्रात ॥ ४ ॥ १५ ॥

॥ १२५ ॥ तू देखि देखि री पथिक परम सुंदर दोउ॥ मरकत कलधौत वरण काम कोटि कांति हरण चरण कमल कोमल अति राजकुंवर कोउ ॥ १ ॥ कर शर धनु कटिनिषंग मुनिपट सोहैं सुभग अंग संग चंद्रवदनि बधू सुंदरि सुठि सोउ ॥ तापसवर वेप किये शोभा सब लूटि लिये चितके चोर वय किशोर लोचन भरि जोउ ॥ २ ॥ दिनकर कुलमणि निहारि प्रेम मगन ग्राम नारि परस्पर कहैं सखि अनुराग ताग पोउ ॥ तुलसी यह ध्यान सुघन जानि मानि लाभ सघन कृपण ज्यों सनेह सोहिये सुगेह गोउ ॥ ३ ॥ १६ ॥

॥ १२६ ॥ कुँवर साँवरो री सजनी सुंदर सब अंग॥ रोम रोम छबि निहारि आलि वारि फेरि डारि कोटि भानु सुवन शरद सोम कोटि अनंग ॥ ॥ १ ॥ वाम अंग लसत चाप मौलि मंजु जटा कलाप शुचि शरकर मुनिपट कटि तट कसे निषंग ॥ आयत उर बाहु नैन मुख सुखमा को लहै न उपमा

अवलोकि लोक गिरामति गति भंग ॥ २ ॥ यों कहि भई मगन बाल विथकी सुनि युवति जाल चितवंत चले जात संग मधुप मृग विहंग ॥ वरणों किमि तिनकी दशहि निगम अगम प्रेम रसहि तुलसीमन वसन रंगे रुचिर रूपरंग ॥ ३ ॥ १७ ॥ १२७ ॥ (राग कल्यान) ॥ देखु कोउ परम सुंदर सखि बटोही ॥ चलत महि मृदु चरण अरुण वारिजवरण भूप सुत रूपनिधि निरखि हों मोहीं ॥ १ ॥ अमल मरकत श्याम शील सुखमाधाम गौरतनु सुभग शोभा सुमुखि जोहीं ॥ युगल बिच नारि सुकुमारि सुठि सुंदरी इंदिरा इंदु हरि मध्य जनु सोही ॥ २ ॥ करनिवर धनु तीर रुचिर कटि तूणीर धीर सुर सुखद मर्दन अवनि द्रोही ॥ अंबुजायत नैन वदन छबि बहु मैन चारु चितवनि चतुर लेत चित पोही ॥ ३ ॥ वचन प्रिय सुनि श्रवण राम करुणाभवन चितै सब अधिक हित सहित कछु वोही ॥ दास तुलसी नेह विवश बिसरी देह जान नहिं आपु तेहि काल धों कोही ॥ ४ ॥ १८ ॥ १२८ ॥ (राग केदारा) ॥ सखि नीकेकै निरखि कोऊ सुठि सुंदर बटोही ॥ मधुर मूरति मनमनोहन जोहन योग वदन शोभासदन देखिहों मोही ॥ १ ॥ साँवरे गोरे किशोर सुर मुनि चित्त चोर उभय अंतर एक नारि सोही ॥ मनहुँ वारिद विधु बीच ललित अति राजति

तडित निज सहज बिछोही॥२॥उर धीरजहि धरि जन्म सफल करि सुनहि सुमुखि जिनि विकल होही ॥ को जानै कौने सुकृत लह्यौ है लोचन लाहु ताहिते बारहि बार कहति तोही ॥ ३ ॥ सखिहि सुसिख दई प्रेम मगन भई सुरति बिसरि गई आपनी वोही ॥ तुलसी रही है ठाढी पाहन गढीसी काढी कौन जानै कहाँते आई कौनकी कोही ॥ ४ ॥१९॥ १२९ ॥ माई मनके मोहन जोहन जोग जोही ॥ थोडेही वयस गोरे साँवरे सलोने लोने लोयन ललित बिधुबदन बटोही॥ ॥ १ ॥ शिरनि जटा मुकुट मंजुल सुमनयुत तैसिय लसति नव पल्लव खोही ॥ किये मुनि वेष वीर धरे धनु तूण तीर सोहैं मग को हैं लखि परे न मोही ॥ २ ॥ शोभाको साँचो सँवारि रूपजात रूपढारि नारि विरची संग सोही ॥ राजत रुचिर तनु सुंदर श्रमके कन चाहे चकचौंधी लागैं कहौं का तोही ॥ ३ ॥ सनेह शिथिल सुनि वचन सकल सिय चितई अधिक हित सहित वोही ॥ तुलसी मनहुँ प्रभु कृपाकी मूरति फिरि हेरिकै हरषि हिये लियो है पोही ॥ ४ ॥ २० ॥१३०॥ सखि शरद बिमल बिधुबदनि बिधूटी ॥ ऐसी ललना सलोनी न भई न है न होनी रत्यो रची विधि जो छोलत छबि छूटी ॥ १ ॥ साँवरे गोरे पथिक बीच सोहति अधिक तिहुँ त्रिभुवन शोभा मानहुँ लूटी॥तुलसी

निरखि सिय प्रेम वश कहैं तिय लोचन शिशुन्ह देहु अमिय घूटी ॥ २ ॥२१॥ १२१ ॥ सोहैं साँवरे पथिक पाछे ललना लोनी ॥ दामिनि वरण गोरी लखि लखि सखि तृणतोरि बीति हैं बय किशोर जोवन होनी ॥ नीकेकै निकाई देखि जन्म सफल लेखि हमसों भूरि भागिनि नभ न छोनी ॥ तुलसी स्वामी स्वामिनि जोहे हैं भामिनि शोभा सुधा पियेकरि अँखियाँ दोनी ॥ २ ॥ २२ ॥ १३२ ॥ पथिक गोरे साँवरे सुठि लोने। संग सुतियजाके तनुते लही है द्युति स्वर्ण सरोरुह सोने ॥ १ ॥ वयकिशोर सरि पार मनोहर वयस शिरोमणि होने ॥ शोभा सुधा आलि अँचवहु करि नयन मंजु मृदु दोने ॥ २ ॥ हेरत हृदय हरत नहिं फेरत चारु विलोचन कोने ॥ तुलसी प्रभु किधौं प्रभुके प्रेम पढे प्रगट कपट विनु टोने ॥ ३ ॥ ॥ २३ ॥ १३३ ॥ मनोहरताके मानो ऐन ॥ श्यामल गौर किशोर पथिक दोउ सुमुखि निरखि भरि नैन ॥ ॥ १ ॥ वीच वधू विधुवदनि विराजति उपमा कहुँ कोउ है न ॥ मानहुँ रति ऋतुनाथ सहित मुनि वेष बनाये है मैन ॥ २ ॥ किधौं शृंगारति सुखमा सुप्रेम मिलि चले जग चित वित लैन ॥ अद्भुत त्रयी किधौं पठई है विधि मग लोगन्हि सुख दैन ॥ ३ ॥ सुनि शुचि सरल सनेह सुहावने ग्राम वधुन्हके वैन ॥ तुलसी

प्रभु तरु तर विलँबे किए प्रेम कनौडे कैन ॥ ४ ॥२४॥ ॥ १३४ ॥ वे किशोर गोरे साँवरे धनुबाण धरे हैं ॥ सब अंग सहज सोहावने राजीव जितें नैननि बदननि विधु निदरे हैं ॥ १ ॥ तूणस मुनिपट कटि कसे जटा मुकुट करे हैं ॥ मंजु मधुर मूरति पानहीं न पायनि कैसे धौं पंथ विचरे हैं ॥ २ ॥ उभय बीच बीच वनिता बनीं लखि मोहि परे हैं ॥ मदन सप्रिया सप्रिय सखा मुनि वेष बनाये लिए मन जात हरे हैं ॥ ॥ ३ ॥ सुनि जहँ तहँ देखन चले अनुराग भरे हैं ॥ राम पथिक छबि निरेखिके तुलसी मग लोगनि धाम काम बिसरे हैं ॥४॥२५॥१३५॥ कैसे पितु मातु कैसे ते प्रिय परिजन हैं ॥ जगजलधि ललाम लोने लोने गोरे श्याम जिन पठए हैं ऐसे बालकनि बन हैं ॥ ॥ १ ॥ रूपके न पारा वार भूपके कुमार मुनि वेष देखत लोनाई लघु लागत मदन हैं ॥ सुखमाकी मूर-तिसी साथ निशिनाथ मुखी नखशिख अंग सब शोभाके सदन हैं॥२॥पंकज करनि चाप तीर तरकस कटि शरद सरोजहूते सुन्दर चरन हैं ॥ सीता राम लषण निहारि ग्रामनारि कहैं हेरि हेरि हेरि हेली हियके हरन हैं ॥ ३ ॥ प्राणहूँके प्राणसे सुजीवनके जीवनसे प्रेम रंक कृपिणके धन हैं ॥तुलसीकेलोचन चकोरनके चन्द्रमासे आछे मन मोर चित चातकके घन हैं॥ ४ ॥

॥ २६ ॥ १२६ ॥ (राग भैरव) ॥ देखि द्वै पथिक गोरे साँवरे सुभग हैं ॥ सुतिय सलोनी संग सोहते सुमग हैं ॥ १ ॥ शोभासिन्धु संभवसे नीके नग हैं ॥ मातु पितु भाग वश गए परि फंग हैं ॥ २ ॥ पाइँ पनहीं न मृदु पंकजसे पग हैं ॥ रूपकी मोहनी मेलि मोहे अग जग है ॥ ३ ॥ मुनि वेष धरे धनु शायक सुलग हैं ॥ तुलसी हिये लसत लोने लोने डग हैं ॥ ॥ ४ ॥ २७ ॥ १२७ ॥ पथिक पयादे जात पंकजसे पाय हैं ॥ मारग कठिन कुश कंटकनिकाय हैं ॥ १ ॥ सखी भूखे प्यासे पै जलत चित चाय हैं ॥ इन्हके सुकृत सुर शंकर सहाय हैं ॥ २ ॥ रूप शोभा प्रेमकेसे कमनीय काय हैं ॥ मुनिवेष किये किधौं ब्रह्मजीव माय हैं ॥ ३ ॥ वीर वरियार धीर धनुधर राय हैं ॥ दश चारि पुर पाल आली उरगाय हैं॥४॥ मग लोग देखत करत हाय हाय हैं ॥ वन इनको तो वाम विधिके बनाय हैं॥५॥धन्य ते जे मीनसे अवधि अंबुधि आय हैं ॥ तुलसी प्रभु सो जिन्हहूँके भले भाय हैं ॥ ६ ॥ २८ ॥ ॥ १२८ ॥ (राग आसावरी ॥) सजनी हैं कोउ राजकुमार ॥ पंथ चलत मृदुपद कमलनि दोउ शील रूप आगार ॥ १ ॥ आगे राजिवनैन श्याम तनु शोभा अमित अपार ॥ डारों वारि अंग अंगनि पर कोटि कोटि शत मार ॥ २ ॥ पीछे गौर किशोर मनोहर लोचन

वदन उदार ॥ कटि तूणीर बाणवर कर धनु चले हरण क्षिति भार ॥ ३ ॥ युगल बीच सुकुमारि नारि इक राजति विनहिं शृंगार ॥ इंद्र नील हाटक मुकुतामणि जनु पहिरे महिहार ॥४॥ अवलोकहु भरि नैन विकल जनि होहु करहु सुविचार ॥ पुनि कहँ यह शोभा कहँ लोचन देह गेह संसार ॥ ५ ॥ सुनि प्रियवचन चितै हितकै रघुनाथ कृपा सुखसार ॥ तुलसिदास प्रभु हरे सबन्हिके मन तन रहि न सँभार ॥ ६ ॥ २९ ॥१२९॥

देखु री सखी पथिक नख शिख नीके हैं ॥ नीले पीले कमलसे कोमल कलेवरनि तापसहूँ वेष किये काम कोटि फीके हैं ॥ १ ॥ सुकृत सनेह शील सुखमा सुख सकेलि विरचे विरंचि किधौं अमिय अमीके हैं ॥ रूपकीसी दामिनि सुभामिनि सोहति संग उमहुँ रमाते आछे अंग अंगतीके हैं॥२॥ वन पट कसे कटि तूण धनु धीर धरे वीर पालक कृपालु सबहीके हैं॥ पानहीं चरण सरोजनि चलत मग कानन पठाए पितु मातु कैसे हीके हैं ॥३॥ आली अवलोकि लेहु नयननिके फल येहु लाभके सुलाभ सुखजीवनसे जीके हैं ॥ धन्य नर नारि जे निहारि विनु गाहकहूँ आपने आपने मन मोल विनु बीके हैं ॥ ४ ॥ विबुध बरखि फूल हरपि हिए कहत ग्राम लोक मगन सनेह सिय पीके हैं ॥ योगीजन अगम दरश पायो पावँरनि मुदित वचन सुनि सुरप शचीके

हैं ॥ ५ ॥ प्रीतिके सुबालकसे लालत सुजन मुनि मग चारु चरित लषण राम सीके हैं ॥ योग न विराग याग तपन तीरथ त्याग यहि अनुराग भाग खुले तुलसीके हैं ॥ ६ ॥ ३० ॥ १४० ॥ रीति चलिबेकी चाहि प्रीति पहिचानिकै ॥ अपनी अपनी कहैं प्रेम परवश अहै मंजु मृदु वचन सनेह सुधा सानिकै ॥ १ ॥ साँवरे कुँवरके चरणके चिह्न वराइ वधू पग धरति कहा धौं जिय जानिकै॥युगल पद कमल अंक जोगवत जात गोरे गात कुँवर महिमा महा मानिकै ॥ २ ॥ उनकी कहनि नीकी रहनि लषण सीकी तिनकी गहनि जे पथिक उर आनिकै ॥ लोचन सजल तन पुलक मगन मन होत भूरिभागी यश तुलसी बखानिकै ॥ ३ ॥ ३१ ॥ १४१ ॥ (राग केदारा) जेहि जेहि मग सिय राम लषण गए तहँ तहँ नर नारि विनु छरछरिगे ॥ निरखि निकाई अधिक विथकित भए विअ विधि नैन सर शोभा सुधा भरिगे ॥ १ ॥ जोते बिनु बए बिनु निफन गिराए विनु सुकृत सुखेत सुख शालि फूलि फरिगे ॥ मुनिहुँ मनोरथको अगम अलभ्य लाभ सुगमसो राम लघुलोगनिको करिगे ॥ २ ॥ लालची कौडीके कूर पारस परे हैं पाले जानत न कोहैं कहा कीबो सो बिसरिगे॥बुधि न विचार न विगार न सुधार सुधि देह गेह नेह नाते मनसे निसरिगे ॥३॥ वरषि सुमन सुर हरषि हरषि कहैं अनायास

भवनिधि नीच नीके तरिगे ॥ सो सनेह समउ सुमिरि तुलसीहु कैसे भली भाँति भले पैत भले पाँसे परिगे ॥ ४ ॥ ३२ ॥ १४२ ॥ बोले राज देनको रजायसु भो काननको आनन प्रसन्न मन मोद बडो काज भो ॥ मातु पितु बंधु हित अपनो परमहित मोको बीसहूको ईश अनुकूल आजु भो ॥ १ ॥ अशन अजीरनको समुझि तिलक तज्यौ विपिन गमन भले भूखेको सुनाज भो ॥ धरम धुरीण धीर वीर रघुवीरजूको कोटि राज सरिस भरतजूको राज भो ॥२॥ ऐसी बातें कहत सुनत मग लोगनकी चले जात भ्राता दोउ मुनिको सो साज भो ॥ ध्याइबेको गाइबेको सेइबे सुमिरिबेको तुलसीको सब भाँति सुखद समाज भो ॥ ३ ॥ ३३ ॥ ॥ १४३ ॥ सिरस सुमन सुकुमारि सुखमाकी सींव सीय राम बडेही सकोच संग लई है ॥ भाईके प्राण समान प्रियाके प्राणके प्राण जानि बानि प्रीति रीति कृपाशील मई है ॥ १ ॥ आलबाल अवध सुकामतरु काम वेलि दूरि करि केकई विपत्ति वेलि बई है ॥ आप पति पूत गुरुजन प्रिय परिजन प्रजाहूको कुटिल दुसह दशा दई है ॥ २ ॥ पंकजसे पगनि पानह्यौं न परुष पंथ कैसे निबहैंगे निबहैंगे गति नई है ॥ एही शोच संकट मगन मग नर नारि सबकी सुमति राम राग रंग रई है ॥ ३ ॥ एक कहैं वाम विधि दाहिनो

हमको भयो उत कीन्हीं पीठि इतको सुडीठि भई है ॥ तुलसी सहित वनवासी मुनि हमरि औ अनायास अधिक अघाइ वनिगई है ॥ ४ ॥ ३४ ॥ १४४ ॥ (राग गौरी) ॥ नीकेकै मैं न विलोकन पाये ॥ सखि यहि मग युग पथिक मनोहर वधु विधु वदनि समेत सिधाए ॥ १ ॥ नयन सरोज किशोर बयस बर शीश जटा रचि मुकुट बनाए ॥ कटि मुनि वसन तूण धनु शर-कर श्यामल गौर सुभाय सोहाए ॥ २ ॥ सुंदर वदन विशाल बाहु उर तनु छवि कोटि मनोज लजाए ॥ चितवत मोहिं लगी चौंधीसी जानौं न कौन कहाँते धौं आए ॥ ३ ॥ मनु गयो संग सोचवश लोचन मोचत वारि कितौ समुझाए ॥ तुलसिदास लालसा दरशकी सोइ पुरवै जेहिं आनि देखाए ॥ ४ ॥ ३५ ॥ १४५ ॥ पुनि न फिरे दोउ वीर बटाऊ ॥ श्यामल गौर सहज सुंदर सखि वारक बहुरि विलोकिबे काऊ ॥ १ ॥ कर कमलनि शर सुभग शरासन कटि मुनि बसन निषंग सोहाए ॥ भुज प्रलंब सब अंग मनोहर धन्य सो जनक जननि जेहिं जाए ॥२॥ शरद विमल विधुवदन जटा शिर मंजुल अरुण सरोरुह लोचन ॥ तुलसि-दास मनमथ मारगमें राजत कोटि मदन मदमोचन ॥ ३ ॥ ३६ ॥ १४६ ॥ (राग केदारा) आली काहू तौ बूझै न पथिक कहाँ धौं सिधै हैं ॥ कहाँते

आए हैं को हैं कहा नाम श्याम गोरे काज के कुशल फिरि एहि मग ऐहैं ॥ १ ॥ उठत वैस मसि भिजत सलोने सुठि शोभा देखवया विनु वित्तही विकैहैं ॥ हियेहेरि हरि लेत लोनी ललना समेत लोयननि लाहु देत जहाँ जहाँ जैहैं ॥ २ ॥ राम लषण सियपथकी कथा पृथुल प्रेम विथकी कहति सुमुखि सबैहैं ॥ तुलसी तिन्ह सरिस तेऊ भूरिभाग्य जेऊ सुनिके सुचित तेहि समैहैं ॥ ३ ॥ ३७ ॥ १४७ ॥ बहुत दिन बीते सुधि कछु न लही ॥ गए जो पथिक गोरे साँवले सलोने सखि संग नारि सुकुमारि रही ॥ १ ॥ जानि पहिचानि विनु आपुते आपनेहुते प्राणहुते प्यारे प्रियतम उपही ॥ सुधाके सनेहहूके सार लै सँवारे विधि जैसे भावते हैं भाँति जाति न कही॥२॥बहुरि विलोकिबे कबहुँक कहत तनु पुलक नयन जलधार बही ॥ तुलसी प्रभु सुमिरि ग्राम युवती शिथिल विनु प्रयास परीं प्रेम सही ॥ ३ ॥ ३८ ॥ १४८ ॥ आली री पथिक जे एहि पथ परवँ सिधाए ॥ तेतौ राम लषण अवधते आए ॥ १ ॥ संग सिय सब अंग सहज सोहाये ॥ रति काम ऋतुपति कोटिक लजाये ॥ २ ॥ राजा दशरथ रानी कौशिला जाये ॥ कैकेयी कुचालि करि कानन पठाए ॥ ३ ॥ वचन कुभामिनिके भूपहि क्यों भाये ॥ हाँय हाय राउ वाम विधि भरमाये॥४॥कुलगुरु

सचिव काहु न समुझाये॥काच मणि लै अमोल माणिक गवाँए॥५॥ भाग्य मग लोगनिके देखन पाये॥ तुलसी सहित जिन गुण गण गाये॥६॥३९॥१४९॥लखि जबते सीतासमेत देखे दोउ भाई ॥ तबते परै न कल कछू न सोहाई॥१॥नख शिख नीके नीके निरखि निकाई ॥ तन सुधि गई मन अनत न जाई ॥ २ ॥ हेरनि विहँसनि हिय लिये हैं चोराई ॥ पाव न प्रेम विवश भई हौं पराई ॥ ३ ॥ कैसे पितु मातु प्रिय परिजन भाई ॥ जीवत जीवके जीवन वनहिं पठाई ॥ ॥ ४ ॥ समउ सो चितकारि हित अधिकाई॥ प्रीति ग्राम वधुनकी तुलसीहुँ गाई ॥ ५ ॥ ४० ॥ १५० ॥ (राग केदारा) ॥ जबते सिधारे यहि मारग लषण राम जानकी सहित तबते न सुधि लही है॥अवध गए धौं फिरि कै धौं चढे विंध्यगिरि कैधौं कहुँ रहे सो कछु न काहू कही है ॥ १ ॥ एक कहैं चित्रकूट निकट नदीके तीर परणकुटीर करि वसे बात सही है ॥ सुनियत भरत मनाइबेको आवत हैं होइगी पै सोई जो विधाता चित्त चही है ॥२॥ सत्यसंध धर्मधुरीण रघुनाथजूको अपनी निबाहिबे नृपकी निरबही है ॥ दश चारि वरिस विहार वन पदचार करिबे पुनीत शैल सर सरि मही है ॥ ३ ॥ मुनि सुर सुजन समाजके सुधारि काज बिगरि बिगरि जहाँ जहाँ जाकी रही है ॥ पुर पाँउ

धारि हैं उधारि हैं तुलसीहूँसे जन जिन जानिके गरी-बीगाढी गही हैं ॥ ४ ॥ ४१ ॥ १५१ ॥ राग सारंग)॥ ए उपही कोइ कुँवर अहेरी॥श्याम गौर धनु बाणतूण-धर चित्रकूट अब आइ रहे री ॥१॥ इनहि बहुत आ-दरत महा मुनि समाचार मेरे नाह कहे री ॥ वनिता बंधु समेत वसत वन पितु हित कठिन कलेश सहे री ॥ २ ॥ वचन परस्पर कहति किरातिन पुलक गातजल-नयन बहेरी ॥ तुलसी प्रभुहि विलोकति यकटकलोचन जनु विनु पलक लहेरी ॥ ३ ॥ ४२ ॥ १५२ ॥ चित्र-कूट अति विचित्र सुंदर वन महि पवित्र पावनि पय सरित सकल मल निकंदिनी ॥ सानुज जहँ वसत राम लोकलोचनाभिराम वामअंग वामावर विश्ववंदिनी ॥ १ ॥ चितवत मुनिगण चकोर बैठे निज ठौर ठौर अक्षय अकलंक शरद चंद चंदिनी ॥ उदित सदावन अकाश मुदित वदत तुलसीदास जय जय रघुनन्दन जय जनकनंदिनी ॥ २ ॥ ४३ ॥ ॥ १५३ ॥ फटिक शिला मृदु विशाल संकुल सुरतरु तमाल ललित लता जाल हरति छवि वि-तानकी ॥ मंदाकिनी तटनि तीर मंजु मृग विहंग भीर धीर मुनि गिरा गँभीर सामगानकी ॥१ ॥ मधुकर पि-कवरहि मुखर सुन्दर गिरि निर्झर झर जल कण घन छण प्रभात भानकी ॥ सब ऋतुपति प्रभाउ संतत वहे

त्रिविध बाउ जनु विहार वाटिका नृप पंचबानकी॥२॥
विरचित तहँ पर्णशाल अति विचित्र लषणलाल निव-
सत जहँ नित कृपाल राम जानकी ॥ निजकर राजीव
नैन पल्लव दल रचित सैन प्यास परस्पर पियूष प्रेम
पानकी ॥ ३ ॥ सिय अंग लिखैं धातुरोग सुमननि वि-
भूषण विभाग तिलककरनि क्यों कहौं कलानिधानकी॥
माधुरी विलास हास गावत यश तुलसिदास बसति
हृदय जोरी प्रिय परम प्रानकी ॥ ४ ॥ ४४ ॥ १५४ ॥
(राग केदारा) लोने लाल लषण सलोने राम लोनी
सिय चारु चित्रकूट बैठे सुरतरु तर हैं ॥ गोरे-साँवरे
शरीर पीत नील नीरजसे प्रेम रूप सुखमाके मनसिज
सर हैं ॥ १ ॥ लोने नख शिख निरूपम निरखिबेयोग
बडे उर कंधर विशाल भुजवर हैं ॥ लोने लोने लोचन
जटनिके मुकुट लोने लोने वदननि जीते कोटि सुधा-
कर हैं ॥ २ ॥ लोने लोने धनुष विशिषकर कमलनि
लोने मुनि पट कटि लोने शर घर हैं ॥ प्रिया प्रिय
बंधुको दिखावत विटपवेलि मंजु कुंज शिलातल
दल फूल फर हैं ॥ ३ ॥ ऋषिनके आश्रम सराहैं मृग
नाम कहैं लागी मधु सरित झरत निर्झर हैं ॥ नाचत
वरही नीके गावत मधुप पिक बोलत बिहंग नभ जल
थलचर हैं ॥ ४ ॥ प्रभुहि विलोकि मुनिगण पुलके
कहत भूरिभाग्य भये सब नीच नारि नर हैं ॥ तुलसी-

सो सुख लाहु लूटत किरात कोल जाको सिसिकत सूर विधि हरि हर हैं ॥५॥४५॥१५५॥(राग सारंग)॥ आइ रहे जबते दोउ भाई॥तबते चित्रकूट कानन छवि दिन दिन अधिक अधिकाई॥१॥सीता राम लपण पद अंकित अवनि सोहावनि वरणि न जाई ॥ मंदाकिनि मज्जत अवलोकत त्रिविध पाप त्रयताप नशाई॥ ॥ २ ॥ उकठेउ हरित भए जल थलरुह नित नूतन राजीव सुहाई ॥ फूलत फलत पल्लवित पलुहत विटप वेलि अभिमत सुखदाई ॥ ३ ॥ सरित सरनि सरसीरुहसंकुल सदन सँवारि रमा जनु छाई ॥ कूजत विहँग मंजु गुंजत अलिजात पथिक जनु लेत बुलाई ॥४॥ त्रिविध समीर नीर झर झरननि जहँ तहँ रहे ऋपि कुटी बनाई ॥ शीतल सुभग शिलनिपर तापस करत योग जप तप मनलाई ॥ ५ ॥ भए सब साधु किरात किरातिनि राम दरश मिटिगे कलुपाई ॥ खग मृग मुदित एक सँग विहरत सहज विषम बड वैर विहाई ॥ ॥६॥ कामकेलि वाटिका विबुध वन लघु उपमा कवि कहत लजाई ॥ सकल भुवन शोभा सकेलि मनो राम विपिन विधि आनि बसाई ॥ ७ ॥ वन मिस मुनि मुनितिय मुनि बालक वरणत रघुवर विमल बडाई ॥ पुलक शिथिल तनु सजल सुलोचन प्रमुदित मन जीवन फल पाई ॥ ८ ॥ क्यों कहौं चित्रकूट गिरि संपति

महिमा मोद मनोहरताई ॥ तुलसी जहँ वसि लषण राम सिय आनँद अवधि अवध बिसराई ॥ ९ ॥४६॥

॥ १५६ ॥ (राग गौरी) ॥ देखत चित्रकूट वन मन अति होत हुलास ॥ सीताराम लषण प्रिय तापस वृंद निवास ॥१॥ सरित सोहावनि पावनि पापहरनि पय नाम ॥ सिद्धि साधु सुर सेवित देत सकल मन काम॥ ॥ २ ॥ विटप वेलि नव किसलय कुसुमित सघन सुजाति ॥ कंदमूल जल थलरुह अगणित अनवन भाँति ॥ ३ ॥ वंजुल मंजु बकुल कुल सुरतरु ताल तमाल ॥ कदलि कंद वसु चंपक पाटल पनस रसाल ॥ ॥ ४ ॥ भूरुह भूरि भरे जनु छबि अनुराग सुभाग ॥ वन विलोकि लघु लागहिं विपुल विबुध वन वन बाग॥ ॥ ५ ॥ जाइ न वरणि राम वन चितवत चित हरि-लेत ॥ ललित लता द्रुम संकुल मनहुँ मनोज निकेत ॥ ६ ॥ सरित सरनि सरसीरुह फले नाना रंग ॥ गुंजत मंजु मधुप गण कूजत विविध विहंग ॥ ७ ॥ लषण कहेउ रघुनंदन देखिय विपिन समाज ॥ मानहुँ चयन मयन पुर आयउ प्रिय ऋतुराज ॥ ८ ॥ चित्र-कूट पर राउर जानि अधिक अनुरागु ॥ सखा सहित जनु रतिपति आयउ खेलन फागु ॥९॥ झिल्लि झाँझ झरना डफ पणव मृदंग निशान ॥ भेरि उपंग भृंग रवताल करि कलगान ॥ १० ॥ हंस कपोत कबूतर

बोलत चक्र चकोर ॥ गावत मानहुँ नारि नर मुदित नगर चहुँ ओर ॥ ११ ॥ चित्र विचित्र विविध मृग डोलत डोगर डाँग ॥ जनु पुर वीथिन विहरत छैल सँवारे स्वांग ॥ १२ ॥ नटहिं मोर पिक गावहि सुस्वर सुराग वधान ॥ निलज तरुण तरुणी जनु खेलहिं समय समान ॥ १३ ॥ भरि भरि शुंड करिनि करि जहँ तहँ डारहिं वारि ॥ भरत परस्पर पिचकनि मनहुँ मुदित नर नारि ॥ १४ ॥ पीठि चढाइ शिशुन्ह कपि कूदत डारहिं डार ॥ जनु मुँह लाइ गेरु मसि भए खरनि असवार ॥ १५ ॥ लिए पराग सुमनरस डोलत मलय समीर ॥ मनहुँ अरगजा छिरकत भरत गुलाल अबीर ॥ १६ ॥ काम कौतुकी यहि विधि प्रभुहित कौतुक कीन्ह ॥ रीझि राम रतिनाथहि जग बिजयी वर दीन्ह ॥ १७ ॥ दुख बहु मोर दास जनि मानेहु मोरि रजाइ ॥ भलेहि नाथ माथे धरि आयसु चलेउ बजाइ ॥ १८ ॥ मुदित किरात किरातिनि रघुवर रूप निहारि ॥ प्रभुगुण गावत नाचत चले जोहारि जोहारि ॥१९॥ देहिं अशीश प्रशंसहिं मुनि सुरवरषहिं फूल ॥ गवने भवन राखि उर मूरति मंगल मूल ॥ ॥ २० ॥ चित्रकूट कानन छबि को कवि वरणै पार ॥ जहँ सिय लषण सहित नित रघुवर करहिं विहार॥२१॥ तुलसिदास चाचरि मिस कहे राम गुण ग्राम ॥ गाव

हिं सुनहिं नारि नर पावहिं सब अभिराम ॥ २२ ॥
॥ ४७ ॥ १५७ ॥ (राग वसंत) ॥ आजु बन्यो है
विपि नदेखो राम धीर ॥ मानो खेलत फागु मुद मदन
वीर ॥ १ ॥ वट बकुल कदंब पनस रसाल ॥ कुसुमित
तरु निकर कुरव तमाल ॥ मनो विविध वेष धरे छैल
यूथ ॥ बिचबिच लता ललना वरूथ ॥ २ ॥ पन वान-
क निर्झर अलि उपंग ॥ बोलत पारावत मानो डफ
मृदंग॥गायक शुक कोकिल झिल्लि ताल॥ नाचत बहु-
भाँति बरही मराल॥३॥मलय। नीलशीतल सुरभि मंद॥
बहु सहित सुमन रसरेनु वृंद ॥ मानौ छिरकत फिरत
सबनि सुरंग ॥ भ्राजत उदार लीला अनंग॥४॥क्रीडत
जीते सुर नर असुर नाग ॥ हठि सिद्ध मुनिनके पंथ
लाग ॥ कह तुलसिदास तेहि छाडु मैन ॥ जेहि राखे
राम राजीव नैन ॥ ५ ॥ ४८ ॥ १५८ ॥ ऋतुपति
आए भलो बन्यो वन समाज ॥ मानो भए हैं मदन
महाराज आज ॥ १ ॥ मनो प्रमथ फागुमिस करि
अनीति ॥ होरी मिस अरि पुर जारि जीति ॥ मारुत
मिस पत्र प्रजा उजारि ॥ नय नगर वसाये विपिनि
झारि ॥ २ ॥ सिंहासन शैल शिला सुरंग ॥ कानन
छबि रति परिजन कुरंग ॥ सित छत्र सुमन वल्ली
वितान ॥ चामर समीर निर्झर निसान ॥ ३ ॥ मानो
मधु माधव दोउ अनिप धीर॥ वर विपुल विटप बानैत

वीर ॥ मधुकर शुक कोकिलवंदि वृंद॥ वरणहिं विशुद्ध यश विविध छंद ॥ ४ ॥ महि परत सुमन रसफल पराग ॥ जनु देत इतर नृपकर विभाग ॥ कलि सचिव सहित नय निपुण मार ॥ कियो विश्व निवश चारिहु प्रकार ॥ ५ ॥ विरहिन पर नितनइ परै मारि ॥ डाटहीं सिद्ध साधक प्रचारि ॥ तिनकी न काम सकै चापि छाहँ ॥ तुलसी जे बसहिं रघुबीर वाहँ ॥ ६ ॥ ४९ ॥ ॥ १५९ ॥ (राग मलार) ॥ सबदिन चित्रकूट नीको लागत ॥ बरषाऋतु प्रवेश विशेषि गिरि देखन मन अनुरागत ॥ १ ॥ चहुँदिशि वन संपन्न विहँग मृग बोलत शोभा पावत ॥ जनु सुनरेश देश पुर प्रमुदित प्रजा सकल सुख छावत ॥ २ ॥ सोहत श्याम जलद मृदु घोरत धातुरंगमगे शृंगनि ॥ मनहुँ आदि अंभोज विराजत सेवित सुर मुनि भृंगनि ॥ ३ ॥ शिखर परसि धन घटहिं मिलत वग पाँतिसो छबि कवि वरणी ॥आदि बराह विहरि वारिधि मनो उठ्यो है दशन धरि धरणी ॥ ४ ॥ जल युत विमल शिलनि झलकत नभ वन प्रतिबिंब तरंग ॥ मानहुँ जग रचना विचित्र बिलसत विराट अँग अंग ॥५॥ मंदाकिनिहि मिलत झरना झरि झरि भरि जल आछे ॥ तुलसी सकल सुकृत सुख लागे मानौ राम भक्तिके पाछे ॥ ६ ॥ ५० ॥ १६० ॥ (राग सोरठा) ॥

आजको भोर और सो माई ॥ सुनो न द्वार वेद बंदी धुनि गुणिगण गिरा सोहाई ॥ १ ॥ निज निज पति सुंदर सदननिते रूप शील छबि छाई ॥ लेन अशीश सीय आगे करि मोपै सुत वधू न आई ॥ २ ॥ बूझी हौं न विहँसि मेरे रघुवर कहाँ री सुमित्रा माता ॥ तुलसी मनहुँ महासुख मेरो देखि न सकेउ विधाता ॥ ३ ॥ ५१ ॥ १६१ ॥ जननी निरखति बाण धनु-हियाँ ॥ बार बार उर नैननि लावति प्रभुजीकी ललित पनहियाँ ॥ १ ॥ कवहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति कहि प्रिय वचन सवारे ॥ उठहु तात बलि मातु वदन पर अनुज सखा सब द्वारे ॥ २ ॥ कबहुँ कहति यों बडी बार भइ जाहु भूप पहँ भइया ॥ बंधु बोलि जेंइय जो भावै गई नेवछावरि मइया ॥ ३ ॥ कबहुँ समुझि वन गवन रामको रहि चकि चित्र लिखीसी ॥ तुलसिदास वह समय कहेते लागत प्रीति सिखीसी ॥ ४ ॥ ५२ ॥ ॥ १६२ ॥ माई री मोहिं न कोउ समुझावै ॥ राम गवन साँचो किधौं सपनो मन परतीति न आवै ॥ १ ॥ लगेइ रहत मेरे नैननि आगे राम लषण अरु सीता ॥ तदपि न मिटत दाह या उरको विधि जो भयो विपरीता ॥ २ ॥ दुख न रहै रघुपतिहि विलोकत तनु न रहै विनु देखे ॥ करत न प्राण पयान सुनहुँ सखि अरुझि परी यहि लेखे ॥ ३ ॥ कौशल्याके विरह वचन सुनि रोइ उठीं

सब रानी ॥ तुलसिदास रघुवीर विरहकी पीर न जाति
बखानी ॥ ४ ॥ ५३ ॥ १६३॥ जब जब भवन विलो-
कति सूनो ॥ तब तब विकल होति कौशल्या दिन दिन
प्रति दुख दूनो ॥ १ ॥ सुमिरत बाल विनोद रामके
सुंदर मुनि मनहारी ॥ होत हृदय अति शूल समुझि
पद पंकज अजिर विहारी ॥ २॥ को अब प्रात कलेऊ
माँगत रूठि चलैगो माई ॥ श्याम तामरस नैन स्रवत
जल काहि लेउँ उर लाई ॥ ३ ॥ जीवों तौ विपति सहौं
निशिवासर मरौं तौ मन पछितायो ॥ चलत विपिन
भरि नयन रामको वदन न देखन पायो ॥ ४ ॥ तुल-
सिदास यह दुसह दशा अति दारुण विरह घनेरो ॥
दूरि करै को भूरि कृपा विनु शोकजनित रुज मेरो
॥ ५ ॥ ५४ ॥ १६४ ॥ मेरो यह अभिलाष विधाता
॥ कब पुरवै सखि सानुकूल ह्वै हरि सेवक सुखदाता
॥ १ ॥ सीता सहित कुशल कोशलपुर आवत हैं सुत
दोऊ ॥ श्रवण सुधा सम वचन सखी कब आइ कहैगो
कोऊ ॥ २ ॥ सुनि संदेश प्रेम परिपूरण संभ्रम
उठि धावोंगी ॥ वदन विलोकि रोकि लोचन जल हरषि
हिये लावोंगी ॥ ३ ॥ जनकसुता कब सासु कहैं मोहि
राम लषण कहैं मैया ॥ बाहु जोरि कब अजिर चल-
हिंगे श्याम गौर दोउ भैया ॥ ४ ॥ तुलसिदास यहि

भाँति मनोरथ करत प्रीति अति बाढी ॥ थकित भई उर आनि राम छबि मनहुँ चित्र लिखि काढी ॥५॥ ॥ ९५ ॥१६५॥ सुन्यौ जब फिरि सुमंत पुर आयो ॥ कहिहै कहा प्राणपतिकी गति नृपति बिकल उठि धायो ॥ १ ॥ पाँय परत मंत्री अति व्याकुल नृप उठाइ उर लायो ॥ दशरथ दशा देखि न कह्यो कछु हरि जो सँदेश पठायो ॥२॥ बूझि न सकत कुशल प्रीतमकी हृदय यहै पछितायो ॥ साँचेहु सुत वियोग सुनिबे कहँ धिग विधि मोहिं जिआयो ॥ ३ ॥ तुलसिदास प्रभु जानि निठुर हौं न्याय नाथ बिसरायो ॥ हा ! रघुपति कहि पर्यौ अवनि जनु जलते मीन बिलगायो ॥ ४ ॥९६॥ १६६ ॥ मुएहु न मिटैगो मेरो मानसिक पछिताउ ॥ नारि वश न विचारि कीन्हों काज सोचत राउ ॥ १ ॥ तिलकको बोलो दियो वन चौगुनो चित चाउ ॥ हृदय दाडिम ज्यों न बिदर्यो समुझि शील सुभाउ ॥ २ ॥ सीय रघुवर लषण बिनु भए भभरि भग्यौ न आउ ॥ मोहिं बूझि न परत याते कौन कठिन कुघाउ ॥ ३ ॥ सुनि सुमंतकी आनि सुंदर सुमन सहित जिआउ ॥ दास तुलसी नतरु मोको मरण अमिय पियाउ ॥ ४ ॥ ९७ ॥ १६७ ॥ अवध बिलोकिहौं जीवत रामभद्रविहीन ॥ कहा कारि हैं आइसानुज

भरत धर्म धुरीन ॥ १ ॥ राम शोक सनेह संकुल तनु विकल मनु लीन॥टूटि तारो गगन मग ज्यों होत छिन छिन छीन ॥ २ ॥ हृदय समुझि सनेह सादर प्रेम पावन मीन ॥ करी तुलसीदास दशरथ प्रीति परमिति पीः ॥ ३ ॥ ५८ ॥ १६८ ॥ (राग गौरी) करत राज मनमों अनुमान ॥ शोक विकल मुख वचन न आवै बिछुरे कृपानिधान ॥ १ ॥ राज देन कहँ बोलि नारि-वश मैं जो कह्यौं बन जान ॥ आयसु शिर धरि चले हरषि हिय कानन भवन समान ॥ २ ॥ ऐसे सुतके विरह अवधिलौं जो राखौं यह प्रान ॥ तौ मिटि जाइ प्रीतिकी परमिति अयश सुनौं निजकान ॥ ३ ॥ राम गये अजहूँ हौं जीवत समुझतही अकुलान॥तुलसिदास तनु तजि रघुपति हित कियो प्रेम परवान ॥४॥५९॥ ॥ १६९॥ ऐसे तैं क्यों कटुवचन कह्यो री ॥ राम जाहु कानन कठोर तेरो कैसे धौं हृदय रह्यो री ॥ १॥ दिन-कर वंश पिता दशरथसे राम लषणसे भाई ॥ जननी तू जननी तौ कहा कहौं विधि केहि खोरि न लाई॥२ ॥ हौं लहिहौं सुखराज मातु ह्वै सुत शिर छत्र धरैगो ॥ कुलकलंक मल मूल मनोरथ तो विनु कौन करैगो ॥ ॥ ३ ॥ ऐहैं राम सुखी सब ह्वैहैं ईश अयश मेरो हरि हैं ॥ तुलसिदास मोको बडो सोच है तू जन्म कवनि विधि भरि है ॥ ४॥६०॥ १७० ॥ ताते हौं देत न दूषण

तो हूँ ॥ रामविरोधी उर कठोरते प्रगट कियो है विधि मोहूँ ॥ १ ॥ सुंदर सुखद सुशील सुधानिधि जरनि जाइ जिहि जोये ॥ विष वारुणी बंधु कहियत विधु नातो मिटत न धोये ॥ २ ॥ होते जौन सुजान शिरोमणि राम सबके मन माहीं ॥ तौ तेरि करतूति मातु सुनि प्रीति प्रतीति कहाहीं ॥ ३ ॥ मृदु मंजुल सोची सनेह शुचि सुनत भरत परवानी ॥ तुलसी साधु साधु सुर नर मुनि कहत प्रेम पहिचानी ॥ ४ ॥ ६१ ॥ ॥ १७१ ॥ जोपै हौं मातुमतेमहँ ह्वै हों ॥ तौ जननी जगमें या मुखकी कहाँ कालिमा ध्वैहों ॥ १ ॥ क्यों हों आजु होत शुचि शपथनि को न मानि है साँची॥ महिमा मृगी कौन सुकृतीकी खल वचन विशिषतें बाँची ॥२ ॥ गहि न जाति रसना काहूकी कहो जाहि जोइ सूझै ॥ दीनवंधुकारुण्य सिंधु विनु कौन हियेकी बूझै ॥ ३ ॥ तुलसी राम वियोग विषम विष विकल नारि नर भारी ॥ भरत सनेह सुधा सींचे सब भए तेहिसमै सुखारी ॥ ४ ॥ ६२ ॥ १७२ ॥ काहेको खोरि कैकयिहि लावों ॥ धरहु धीर बलिजाउँ तात मोको आज विधाता बावों ॥१॥ सुनिबे योग वियोग रामको हों न होउसें प्यारे ॥ सो मेरे नयननि आगेते रघुपति वनहिं सिधारे ॥ २ ॥ तुलसिदास समुझाई भरत कहँ आँसु पोंछि उर लाये ॥ उपजी प्रीति जानि प्रभुके हित

मनहुँ राम फिरि आए ॥ ३ ॥ ६३ ॥ १७३ ॥ मेरो अवधों कहहु कहाँ है ॥ करहु राज रघुराज चरण तजि लै लटि लोगु रहा है ॥१॥ धन्य मातु हौं धन्य लागि जेहि राज समाज ढहा है ॥ तापर मोसों प्रभु करि चाहत सब विनु दहन दहा है ॥ २ ॥ राम शपथ कोउ कछू कहै जिनि मैं दुख दुसह सहा है ॥ चित्रकूट चलिए सब मिलि बलि क्षमिए मोहिं हहा है ॥ ३ ॥ यों कहि भोर भरत गिरिवरको मारग बूझि गहा है ॥ सकल सराहत एक भरत जग जन्मि सुलाहु लहा है॥ ॥४॥ जानहिं सिय रघुनाथ भरतको शील सनेह महा है ॥ कै तुलसी जाको राम नामसों प्रेम नेम निबहा है ॥ ५ ॥ ६४ ॥ १७४ ॥ भाई हौं अवध कहा रहि लैहौं ॥ राम लषण सिय चरण विलोकन काल्हि कान-नहिं जैहौं ॥ १ ॥ यद्यपि मोते कै कुमातुते ह्वै आई अति पोची ॥ सन्मुख गए शरण राखहिंगे रघुपति परम सकोची ॥ २ ॥ तुलसी यों कहि चले भोरहीं लोग सकल सँग लागे ॥ जनु बन जरत देखि दारुण दव निकसि विहँग मृग भागे ॥ ३ ॥ ६५ ॥ १७५ ॥ शुकसों गहवरि हिये कहै सारो ॥ वीर कीर सिय राम लषण विनु लागत जग अँधियारो ॥ १ ॥ पापिनि चेरि अयानि रानि नृप हित अनहित न विचारो ॥ कुलगुरु सचिव साधु सोचत विधि कौन बसाइ

उजारो ॥ २ ॥ अवलोके न चलत भरि लोचन नगर कोलाहल भारो ॥ सुने न वचन करुणा करके जब पुर परिवार सँभारो ॥ ३ ॥ भैया भरत भावतेके सँग वन सब लोग सिधारो ॥ हम पर पाँइ पींजरनि तरसत अधिक अभाग हमारो ॥ ४ ॥ सुनि खग कहत अंब उमँगी रहि समुझि प्रेमपथ न्यारो ॥ गए ते प्रभुहि पहुँचाइ फिरे पुनि करत करम गुण गारो ॥ ५ ॥ जीवन जग जानकी लषणको मरण महीप सँवारो ॥ तुलसी और प्रीतिकी चरचा करत कहा कछुँ चारो ॥ ६ ॥ ६६ ॥ १७६ ॥ कहै शुक सुनहिं सिखावन सारो ॥ विधि-करतब विपरीत वाम-गति रामप्रेम पथ न्यारो ॥ १ ॥ को नर नारि अवध खग मृग जेहि जीवन रामते प्यारो ॥ विद्यमान सबके गवने वन वदन करमको कारो ॥ २ ॥ अंब अनुज प्रियसखा सुसेवक देखि विषाद बिसारो ॥ पक्षी पर-वश परे पींजरनि लेखो कौनु हमारो ॥ ३ ॥ रही नृप-की बिगरी है सबकी अव एक सँवारनिहारो ॥ तुलसी प्रभुनिज चरण पीठ सिस भरत प्राण रखवारो ॥ ४॥ ॥ ६७ ॥ १७७ ॥ तादिन शृंगबेरपुर आए ॥ राम सखाते समाचार सुनि वारि विलोचन छाए ॥ कुश साथरी देखि रघुपतिकी हेतु अपनपौ जानी ॥ कहत कथा सिय राम लषणकी बैठहि रैनि विहानी ॥ भोर

हि भरद्वाज आश्रम ह्वै करि निषादपति आगे ॥ चले जनु तक्यो तडाग तृषित गज घोर घामके लागे ॥ बूझत चित्रकूट कहँ जेहि तेहि मुनि बालकनि बतायो ॥ तुलसी मनहुँ फणिक मणि ढूँढत निरखि हरषि हिय धायो ॥ १ ॥ ६८ ॥ १७८ ॥ (राग केदार)॥विलोके दूरिते दोउ वीर ॥ उर आयत आजान सुभग भुज श्यामल गौर शरीर ॥ १ ॥ शीश जटा सरसीरुह लोचन बने परिधन मुनिचीर॥ निकट निषंग संग सिय शोभित करनि धुनत धनु तीर ॥ २ ॥ मन अगहुँड तनु पुलकि शिथिल भयो नलिन नयन भरे नीर ॥ गडत गोड मनो सकुच पंकमहँ कढत प्रेम बलधीर॥३॥ तुलसीदास दशा देखि भरतकी उठि धाये अतिहिं अधीर॥ लिये उठाइ उर लाइ कृपानिधि विरह जनित हरिपीर ॥ ४ ॥ ६९ ॥ १७९ ॥ भरत भए ठाढे कर जोरि ॥ ह्वै न सकत साम्हे सकुचवश समुझि मातुकृत खोरि॥ १ ॥ फिरिहैं किधौं फिरन कहि हैं प्रभु कलपि कुटिलता मोरि ॥ हृदय सोच जल भरे विलोचन नेह देह भइ भोरि ॥ २ ॥ वनवासी पुरलोग महामुनि किए हैं काठकेसे कोरि ॥ दै दै श्रवण सुनिबेको जहँ तहँ रहे प्रेम मन बोरि ॥ ३ ॥ तुलसी राम सुभाव सुमिरि उर धरि धीरजहि बहोरि ॥ बोले वचन विनीत उचित हित करुणा रसहि निचोरि ॥ ४ ॥ ७० ॥ १८० ॥ जानत

हौं सबहीके मनकी ॥ तदपि कृपालु करौं विनती सोइ सादर सुनहु दीन हित जनकी ॥ १ ॥ ए सेवक संतत अनन्य अति ज्यों चातकहि एकगति घनकी ॥ यह विचारि गवनहु पुनीत पुर हरहु दुसह आरत परिजनकी ॥ २ ॥ मेरो पुनि जीवन जानिए ऐसोइ जिय जैसो अहि जासु गई मणि फनकी ॥ मेटहु कुलकलंक कौशलपति आज्ञा देहु नाथ मोहिं वनकी॥ ३ ॥मोको जोइ २ लाइये लागै सोइ सोइ जो उतपाति कुमातुते या तनकी ॥ तुलसिदास सब दोप दूरि करि प्रभु अब लाज करहु निज पनकी ॥ ४ ॥ ७१ ॥ १८१ ॥ तात विचारोधौं हौं क्यौं आवौं ॥ तुम्ह शुचि सुहृद सुजान सकल विधि वहुत कहा कहि कहि समुझावौं ॥ १ ॥ निचकर खाल खैंचि या तनुते जो पितु पग पानहीं करावौं ॥ होउँ न उऋण पिता दशरथते कैसे ताको वचन मेटि पतियावौं ॥ २ ॥ तुलसिदास जाको सुयश तिहूँ पुर क्यौं तेहि कुलहि कालिमाँ लावौं ॥ प्रभु रुख निरखि निरास भरत भए जान्यो है सबहि भाँति विधि वावौं ॥ ३ ॥ ७२ ॥ १८२ ॥ बहुरो भरत कह्यो कछु चाहैं ॥ सकुच सिंधु वोहित विवेक करि वुधि बल वचन निबाहैं ॥ १ ॥ छोटे हुते छोह करि आए मैं सामुहे न हेरो ॥ एकहि बार आजु विधि मेरो शील सनेह निबेरो॥ २ ॥तुलसी जो फिरिबो न बनै प्रभुको

तौ हौं आयसु पावौं ॥ घर फेरिए लषण लरिका हैं नाथ साथ हौं आवौं ॥ ३ ॥ ७३ ॥ १८३ ॥ रघुपति मोहिं संग किन लीजै ॥ बारबार पुर जाहु नाथ केहि कारण आयसु दीजै ॥ १ ॥ यद्यपि हौं अति अधम कुटिल मति अपराधिनिको जायो॥प्रणतपाल कोमल सुभाव जिय जानि शरण तकि आयो ॥ २ ॥ जो मेरे तजि चरण आन गति कहौं हृदय कछु राखी ॥ तौ परिहरहु दयालु दीनहित प्रभु अभिअंतरसाखी ॥३॥ ताते नाथ कहौं मैं पुनिपुनि प्रभु पितु मातु गोसाईं ॥ भजन हीन नरदेह वृथा खर श्वान फेरुकी नाईं ॥ ४ ॥ बंधु वचन सुनि श्रवण नयन राजीव नीर भरि आए ॥ तुलसिदास प्रभु परम कृपा गहि बाँह भरत उर लाए ॥ ५ ॥ ७४ ॥ १८४ ॥ काहेको मानत हानि हिएहो॥ प्रीति नीति गुण शील धर्म कहँ तुम अवलंब दिए हो ॥ १ ॥ तात जात जानिबे न ए दिन करि प्रमाण पितु बानी ॥ ऐहौं वेगि धरहु धीरज उर कठिन कालगति जानी ॥ २ ॥ तुलसिदास अनुजहिं प्रबोधि प्रभु चरण पीठ निज दीन्हें ॥ मनहुँ सबनिके प्राण पाहरू भरत शीश धरि लीन्हें ॥ ३ ॥ ७५ ॥ १८५ ॥ विनती भरत करत कर जोरे ॥ दीनबंधु दीनता दीनकी कबहुँ परे जिनि भोरे ॥ १ ॥ तुम्हसे तुम्हहिं नाथ मोको मोसे जन तुमको बहुतेरे ॥ इहै जानि पहिचानि प्रीति

क्षमिबे अघ औगुण मेरे ॥ २ ॥ यों कहि सीय राम पाँयनि परि लषण लाइ उर लीन्हें ॥ पुलक शरीर नीर भरि लोचन कहत प्रेम प्रण कीन्हें ॥ ३ ॥ तुलसी बीते अवधि प्रथम दिन जो रघुवीर न ऐहो ॥ तो प्रभु चरण सरोज शपथ जीवत परिजनहि न पैहो ॥ ४ ॥ ॥ ७६ ॥ १८६ ॥ अवशी ह्वौं आयसु पाइ रहौंगो ॥ जनमि कैकयी कोखि कृपानिधि क्यों कछु चपरि कहौंगो ॥ १ ॥ भरत भूप सिय राम लपण वन सुनि सानंद सहौंगो ॥ पुर परिजन अवलोकि मातु सब सुख संतोष लहौंगो ॥ प्रभु जानत जेहि भाँति अवधिलौं वचन पालि निबहौंगो ॥ आगे की विनती तुलसी तब जब फिरि चरण गहौंगो ॥३॥ ॥ ७७ ॥ १८७ ॥ प्रभुसों मैं ढीठो बहुत दई है ॥ कीनी क्षमा नाथ आरतिते कही कुजुगुति नई है ॥१॥ यों कहि बार बार पायन परि पाँवरि पुलकि लई है ॥ अपनो अदिन देखि हौं डरपत जेहि विष वेलि बई है ॥ २ ॥ आये सदा सुधारि गोसाँई जनते बिगरि गई है ॥ थके वचन पैरत सनेह सर परयो मानो घोर घई है ॥ ३ ॥ चित्रकूट तेहि समै सबनिकी बुद्धि विपाद हई है ॥ तुलसी राम भरतके बिछुरत शिला सप्रेम भई है ॥ ४ ॥ ७८ ॥ १८८ ॥ जबते चित्र-कूटते आए ॥ नंदिग्राम खनि अवनि डासि कुश पर्ण

कुटी करि छाये ॥ १ ॥अजिन वसन फल असन जटा धरे रहत अवधि चित दीन्हे ॥ प्रभुपद प्रेमनेम व्रत निरखत मुनिन्ह नमित मुख कीन्हे ॥ २ ॥ सिंहासन पर पूजि पादुका बारहिंबार जोहारे ॥ प्रभु अनुराग माँगि आयसु पुर जन सब काज सँवारे ॥ तुलसी ज्यों ज्यों घटत तेज तनु त्यौं त्यौं प्रीति अधिकाई ॥ भए न हैं न होहिंगे कबहूं भुवन भरतसे भाई ॥ ४ ॥७९॥ ॥ १८९ ॥ (राग रामकली) ॥ राखी भक्ति भली भलाई भली भली भाँति भरत ॥ स्वारथ परमारथ पथी जय जय जग करत ॥ १ ॥ जो व्रत मुनिवरनि कठिन मानस आचरत ॥ सो व्रत लिए चातक ज्यों सुनत पाप हरत ॥ २ ॥ सिंहासन सुभग राम चरण पीठ धरत चालत ॥ सब राज काज आयसु अनुसरत ॥ ३ ॥ आपु अवधविपिन बंधु सोच जरनि जरत ॥ तुलसी सम विषम सुगम अगम लखि न परत ॥ ४ ॥ ॥ ८० ॥ १९० ॥ मोहि भावत कहि आवत नहिं भरत जूकी रहनि ॥ सजल नयन शिथिल वयन प्रभु गुण गण कहनि ॥ १ ॥ अशन वसन अयन शयन धरम गरुअ गहनि ॥ दिनदिन प्रण प्रेम नेम निरुपाधि निरवहनि ॥ २ ॥ सीता रघुनाथ लषण विरह परिसहनि॥ तुलसी तजि उभय लोक रामचरण चहनि ॥ ३ ॥ ॥ ८१ ॥ १९१ ॥ जानी है शंकर हनुमान लषण

भरत राम भगति ॥ कहत सुगम करत अगम सुनत मीठी लगति ॥ १ ॥ लहत सकृत चहत सकल युग युग जगमगति ॥ राम प्रेम पथते कबहुँ डोलति नहिं डगति ॥ २ ॥ रिधि सिधि विधि चारि सुगति जा विनु गति अगति ॥ तुलसी तेहि सन्मुख बिनु विषय ठगिनि ठगति ॥ ३ ॥ ८२ ॥ १९२ ॥ (राग गौरी) कैकयी पति पठए सुर भौन ॥ कहा भलो धौं भयो भरतको लगे तरुण तन दौन ॥ पुरवासिन्हके नयन नीर विनु कबहुँ तो देखति हौंन ॥ २ ॥ कौशल्या दिन राति बिसूरति बैठि मन मौन ॥ तुलसी उचित न होइ रोइबो प्राण गए सग जौन॥३॥८३॥१९३॥हाथ मीजबो हाथ रह्यो ॥ लगी न संग चित्रकूटहुते ह्याँ जात बह्यो ॥ ॥१॥ पति सुरपुर सिय राम लषण वन मुनिव्रत भरत गह्यो ॥ हौं रहि घर मशान पावक ज्यों मरिबोई मृतक दह्यो ॥ २ ॥ मेरोई हियो कठोर करिबे कहँ विधि कहुँ कुलिश लह्यो ॥ तुलसी वन पहुँचाइ फिरी सुत क्यों कछु परत कह्यो ॥ ३ ॥ ८४ ॥ १९४ ॥ (राग सोरठ) हौं तो समुझि रहि सपनोसो ॥ राम लषण सियको सुखमो कहँ भयो सखी अपनोसो ॥१॥ जिन्हके विरह विषाद बढा उन्ह खग मृग जीव दुखारी ॥ मोहिं कहा सजनी समुझावति हौं तिन्हकी महतारी ॥ २ ॥ भरत दशा सुनि सुमिरि भूपगति देखि दीन पुरवासी ॥

तुलसी राम कहत हों सकुचति ह्वैहै जग उपहाँसी ॥ ॥ ३ ॥ ८५ ॥ १९५ ॥ तली हों इन्हहिं बुझावों कैसे॥ लेत हिये भरि भरि पतिके हित मातु हेतु सुत जैसे॥ ॥ १ ॥ बारबार हिहिनात हेरि उत जो बोलै कोउ द्वारे ॥ अंग लगाइ लिए बारेते करुणामय सुत प्यारे॥ ॥ २ ॥ लोचन सजल सदा सोवतसे खान पान बिस-राये ॥ चितवत चौंकि नाम सुनि सोचत राम सुरति उर आये ॥३॥ तुलसी प्रभुके विरह अधिक हठि राज-हंससे जोरे ॥ ऐसेहुँ दुखित देखिहों जीवति राम लष-णके घोरे ॥ ४ ॥ ८६ ॥ १९६ ॥ राघो एक बार फिरि आवो ॥ ए वर बाजि विलोकि आपने बहुरो वनहिं सिधावो ॥१॥ जे पय प्याइ पोखिकर पंकज बारवार चुचुकारे ॥ क्यों जीवहिं मेरे राम लाडिले ते अब निपट बिसारे ॥२॥ भरत सौगुनी सार कहत हैं अति प्रिय जानि तिहारे ॥ तदपि दिनहुँ दिन होम झाँवरे मनहुँ कमल हिम मारे ॥ ३ ॥ सुनहु पथिक जो राम मिलहिं वन कहियो मातु सँदेशो ॥ तुलसी मोहिं और सबहिंनते इन्हको वडो अँदेशो ॥ ४ ॥ ८७ ॥ १९७ ॥ (राग केदारा) ॥ काहूसों काहू समाचार ऐसे पाए॥ चित्रकूटते राम लषण सिय सुनियत अनत सिधाये ॥ ॥१॥ शैल सरित निर्झर वन मुनिथल देखि देखि सब आये ॥ कहत सुनत सुमिरत सुखदायक मानस सुगम

सुहाये ॥२॥ बडि अवलंब वाम विधि विघटित विषम विषाद बढाये ॥ सिरस सुमन सुकुमार मनोहर बालक विंधि चढाये ॥ ३ ॥ अवध सकल नर नारि विकल अति अकनि वचन अनभाये ॥ तुलसी राम वियोग शोक वश समुझत नहिं समुझाये ॥ ४ ॥ ८८ ॥१९८॥

सुनी मैं सखि मंगल चाह सुहाई ॥ शुभपत्रिका निषादराजकी आजु भरत पहँ आई ॥१॥ कुँवरसो कुशल क्षेम अलि तेहि पल कुलगुरु कहँ पहुँचाई ॥ गुरु कृपालु संभ्रम पुर घरघरसादर सबहि सुनाई ॥२॥ वधि विराध सुर साधु सुखी करि ऋषि शिख आशिष पाई॥ कुंभज शिष्य समेत संग सिय मुदित चले दोउ भाई॥ ॥ ३ ॥ रेखा विंधि बीच सुपास थल बसे हैं पर्ण गृह छाई ॥ पंथ कथा रघुनाथ पथिककी तुलसिदास सुनि गाई ॥ ४ ॥ ८९ ॥ १९९ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां अयोध्याकांड समाप्त ॥

अथ आरण्यकाण्डप्रारम्भः ॥ ३ ॥

(राग मलार) ॥ देखे राम पथिक नाचत मुदित मोर ॥ मानत मनहु सतडित ललितघन धनु सुर धनु गरजनि टंको ॥ १ ॥ कंपै कलप वर वरहि फिरावत गावत कल कोकिल किशोर॥जहँजहँप्रभु विरचत तहँ तहँ सुख दंडकवन कौतुक न थोर ॥ सघन छाँह तम रुचिर

रजनि श्रम वदन चंद चितवत चकोर ॥ तुलसी मुनि खग मृगनि सराहत भये हैं सुकृत सब इन्हकी ओर ॥ २ ॥ २०० ॥ (राग कल्यान) ॥ सुभग शरासन शायक जोरे ॥ खेलत राम फिरत मृगया वन वसति सो मृदु मूरति मन मोरे ॥ पीत वसन कटि चारु चारि शर चलत कोटि नटसों तृण तोरे ॥ श्यामल तनु श्रम कण राजत ज्यों नव घन सुधा-सरोवर खोरे ॥ ललित कंध वर भुज विशाल उर लेहिं कंठ रेखें चित चोरे ॥ अवलोकत मुख देत परमसुख लेत शरद शशिकी छबि छोरे ॥ जटा मुकुट शिर सारस नयननि गोहैं तकत सुभौंह सकोरे ॥ शोभा अमित समाति न कानन उमँगि चली चहुँ दिसि मिति फोरे ॥ चितवत चकित कुरंग कुरंगिनि सब भये मगन मदनके भोरे ॥ तुलसिदास प्रभु बाण न मोचत सहज सुभाय प्रेमवश थोरे ॥ २ ॥ २०१ ॥ (राग सोरठ) बैठे हैं राम लषण अरु सीता ॥ पंचवटीवर पर्णकुटीतर कहे कछु कथा पुनीता ॥ कपट कुरंग कनकमणिमय लखि प्रियसों कहति हँसि बाला ॥ पाए पालिबे योग मंजु मृग मारेहुँ मंजुल छाला ॥ प्रिया वचन सुनि बिहँसि प्रेमवश गवहिं चाप शर लीन्हें ॥ चल्यो सो भाजि फिरि फिरि हेरत मुनि मख रखवारे चीन्हे ॥ सोहति मधुर मनोहर मूरति हेम हरिणके पाछे ॥ धवनि नवनि

विलोकनि विथकनि वसै तुलसि उर आछे॥३॥२०२॥ (राग कल्याण) ॥ कर शर धनु कटि रुचिर निषंग प्रिया प्रीति प्रेरित वन वीथिन्ह विचरत कपट कनक मृग संग ॥ भुज विशाल कमनीय कंध उर श्रम सीकर सोहैं साँवरे अंग ॥ मन मुकुतामणि मरकत गिरिपर लसत ललित रवि किरणि प्रसंग ॥ नलिन नयन शिर जटा मुकुट बिच सुमन माल मानौ शिव शिर गंग ॥ तुलसिदास ऐसी मूरतिकी बलि छबी विलोकि लाजैं अमित अनंग ॥ ४ ॥ २०३॥ (राग केदारा) राघव भावति मोहिं विपिनकी वीथिन्ह धावनि ॥ अरुण कंज वरण चरण शोक हरण अंकुश कुलिश केतु अंकित अवनि ॥ सुंदर श्यामल अंग बसन पीत सुरंग कटि निषंग परिकरमिरवनि ॥ कनक कुरंग संग साजे कर शर चाप राजिवनयन इत उत चितवनि॥सोहत शिर मुकुटटजटा पटल निकर सुमन लता सहित रची बनवनि ॥ तैसेई श्रम सीकर रुचिर राजत मुख तैसिए ललित भ्रुकुटिन्हकी नवनि ॥ देखत खग निकर मृग रवनिन्ह युत थकित बिसारि जहाँ तहाँकी भवनि ॥ हरि दर्शन फल पायो है ज्ञान विमल याचत भगति मुनि चाहत जवनि ॥ जिन्हके मन मगन भये हैं रस सगुण तिन्हके लेखे अगुण मुकुति कवनि ॥ श्रवण सुखकरनि भवसरिता तरनि गावत तुलसिदास

कीरति पावनि ॥ ५ ॥२०४॥ (राग सोरठ) ॥ रघु-
वर दूरि जाइ मृग मारयो ॥ लषण पुकारि राम हरुयें
कहि मरतहुँ वैर सँभारयो ॥ सुनहु तात कोउ तुम्हहिं
पुकारत प्राणनाथकी नाईं ॥ कह्यो लषण हत्यो हरिण
कोपि सिय हठि पठये बरिआईं ॥ बंधु विलोकि कहत
तुलसी प्रभु भाई भली न कीन्हीं ॥ मरे जान जानकी
काहू खल छलकारि हरि लीन्हीं ॥ ६ ॥ २०५ ॥
आरत वचन कहति वैदेही ॥ विलपति भूरि विसूरि
दूरि गए मृग सँग परमसनेही ॥ कहे कटु वचन रेख
नाँघी मैं तात क्षमा जो कीजै ॥ देखि वधिक वश राज
मरालिनि लषण लाल छिनि लीजै॥ वनदेवनि सिय
कहनि कहति यों छल करि नीच हरीहौं ॥ गो मरकर
सुरधेनुनाथ ज्यौं त्यौं पर हाथ परीहौं ॥ तुलसिदास
रघुनाथ नाम धुनि अकनि गीध धुकि धायो ॥ पुत्रि
पुत्रि जिनि डरहि न जैहै नीचु मीचु हौं आयो ॥७॥
॥ २०६ ॥ फिरत न बारहिं बार प्रचारयौ ॥ चपरि
चोंच चंगुल हय हति रथ खंड खंड करि डारयो ॥
विरथ विकल कियो छीन लीन्हि सिय वन घायनि
अकुलान्यौ ॥ तब असि काढि काटि पर पाँवर लै
प्रभु प्रिया परान्यौ ॥ रामकाज खगराज आजु लरयो
जियत न जानकि त्यागी ॥ तुलसिदास सुर सिद्ध सरा-
हत धन्य विहँग बडभागी ॥ ८ ॥ २०७ ॥ (राग

गौरी)॥ हेमको हरिण हनि फिरे रघुकुल मणि लषण ललित कर लिए मृगछाल॥आश्रम आवत चले शकुन न भये भले फरकैं वाम बाहु लोचन विशाल॥ १ ॥ सरित जल मलिन सरनि सूखे नलिन अलिन गुंजत कल कूजैं न मराल॥ कोलिनि कोल किरात जहाँ तहाँ विलखात वन न विलोकि जात खग मृगमाल ॥२॥ तरु जे जानकी लाये ज्याये हरि करि कपि हरैं न हुँकारि झरैं फल न रसाल.॥ जे शुक शारिका पाले मातु ज्यौं ललकि लाले तेउ न पढत न पढावैं मुनि वाल ॥३॥ समुझि सहमे सुठि प्रिया तो न आई उठि तुलसी विवरण परण तृणशाल॥और सो सब समाजु कुशल न देखौं आजु गहब हिय कहै कोशल-पाल॥ ४ ॥ ९ ॥ २०८ ॥ आश्रम निरखि भूले द्रुम न फले न फूले अलि खग मृग मानो कबहुँ नहे ॥ मुनि न मुनिवधूटी उजरी परकुटी पंचवटी पहिचानि ठाढेइ रहे ॥ उठि न सलिल लिए प्रेम मुदित हिए प्रिया न पुलकि प्रिय वचन कहे ॥ पल्लव सालन हेरी प्राणवल्लभा न टेरी विरह विथकि लखि लषण गहे ॥ देखे रघुपति गति विबुध विकल अति तुलसी गहन विनु दहन दहे ॥ अनुज दियो भरोसो तौलों है सोचु खरोसो सिय समाचार प्रभु जौलों न लहे ॥१०॥२०९॥ (राग सोरठा) जबहिं

सिय सुधि सब सुरनि सुनाई ॥ भए सुनि सजगविरह सरि पैरत थके थाहसी पाई ॥ कसि तूणीर तीर धनु धर धुर धीर वीर दोउ भाई ॥ पंचवटी गोदहि प्रणाम करि कुटी दाहिनी लाई ॥ चले बूझत वन वेलि विटप खग मृग आल आवलि सुहाई॥ प्रभुकी दशा सो समो कहिबेको कवि उर आह न आई ॥ रटनि अकनि पहि-चानि गीध फिरे करुणामय रघुराई ॥ तुलसी रामहि प्रिया विसरि गई सुमिरि सनेह सगाई ॥ ११॥२१०॥

मेरे एको हाथ न लागी ॥ गयो बपु बीति वादि कानन ज्यों कलपलता दव दागी ॥ दशरथसों न प्रेम प्रति पाल्यौ हुतो जो सकल जग साखी ॥ वरबश हरत निशाचरपतिसों हठि न जानकी राखी ॥ मरत न मैं रघुवीर विलोके तापस वेष बनाए ॥ चाहत चलन प्राण पाँवर विनु सिय सुधि प्रभुहि सुनाए ॥ बारबार कर मींजी शीश धुनि गीधराज पछिताई ॥ तुलसी प्रभु कृपालु तेहि औसर आइ गए दोउ भाई ॥१२॥२११॥

राघो गीध गोद करि लीन्हों ॥ नयन सरोज सनेह सलिल शुचि मनहुँ अरघ जल दीन्हों ॥ सुनहु लषण खगपतिहि मिले वनमें पितु मरण न जान्यौ ॥ सहि न सक्यौ सो कठिन विधाता बडो पछु आजुहि भान्यौ ॥ बहुविधि राम कह्यो तनु राखन परमधीर नहिं डोल्यौ ॥ रोकि प्रेम अवलोकि वदनविधु वचन

मनोहर बोल्यौ ॥ तुलसी प्रभु झूंठे जीवन लगि समय न धोखो लैहों ॥ जाको नाम मरत मुनि दुर्लभ तुमहिं कहाँ पुनि पैहों ॥ १३ ॥ २१२ ॥ नीकेकै जानत राम हियोहों ॥ प्रणतपाल सेवक कृपालु चित पितु पट तरहि दियो हों॥त्रिजगयोनि गत गीध जनमभरि खाइ कुजंतु जियो हों ॥ महाराज सुकृती समाज सब ऊपर आजु कियो हों ॥ श्रवण वचन मुख नाम रूप चख राम उछंग लियौ हो ॥ तुलसी मो समान बडभागी को कहिसकै वियो हो ॥ १४ ॥ २१३ ॥ मेरे जान तात कछू दिन जीजे ॥ देखिए आपु सुवन सेवासुख मोहि पितुको सुख दीजे ॥ दिव्य देह इच्छा जीवन जग विधि मनाइ मँगिलीजै ॥ हरि-हर सुयश सुनाइ दरश दै लोग कृतारथ कीजे ॥ देखि वदन सुनि वचन अमिय तन राम नयन जल भीजे ॥ बोल्यो विहग विहँसि रघुवर ब्रलि कहो सुभाय पतीजे ॥ मेरे मरिबे सम न चारि फल होहिं तौ क्यों न कहीजे ॥ तुलसी प्रभु दियो उतरु मौनहीं परी मानो प्रेम सहीजे ॥ ॥ १५ ॥ २१४ ॥ मेरो सुनियो तात सँदेशो ॥ सीयहरण जनि कहेहु पितासो ह्वैहै अधिक अँदेशो ॥ रावरे पुण्यप्रताप अनल महँ अलप दिननिरिपु दहिहै ॥ कुल समेत सुरसभा दशानन समाचार सब कहिहै ॥ सुनि प्रभु वचन आनि उर सूरति चरणकमल

शिर नाई ॥ चल्यौ नभ सुनत राम कलकीरति अरु निजभाग बडाई ॥ पितु ज्यो गीध क्रिया करि रघुपति अपने धाम पठायो ॥ ऐसो प्रभु विसारि तुलसी शठ तू चाहत सुख पायो ॥ १६ ॥ २१५ ॥ (राग सूहो) शबरी सोइ उठी फरकत वाम विलोचन बाहु ॥ शकुन सुहावने सूचत मुनि मन अगम उछाहु ॥ छंद ॥ मुनि अगम उर आनंद लोचन सजल तनु पुलकावली ॥ तृण पर्णशाल बनाइ जल भरि कलस फल चाहन चली ॥ मंजुल मनोरथ करत सुमिरत विप्र वरवाणी भली ॥ जो कल्प वेलि सकेलि सुकृत सुफूल फूली सुख फली ॥१॥ प्राणप्रिय पाहुने ऐहैं राम लषण मेरे आजु ॥ जानत जन जियकी मृदु चित राम गरीबनिवाजु ॥ छंद ॥ मृदु चित गरीबनिवाज आजु विराजि हैं गृह आइके ॥ ब्रह्मादि शंकर गौरि पूजित पूजिहों अब जाइके ॥ लहि नाथ हों रघुनाथ वानो पतितपावन पाइके ॥ दुहुँ ओर लाहु अघाइ तुलसी तीसरेहु गुण गाइके ॥ २ ॥ दोना रुचिर रचे पूरण कंद मूल फल फूल ॥ अनुपम अमिय ते अंबक अवलोकत अनुकूल ॥ छंद ॥ अनुकूल अंबक अंब जो निज डिंब हित सब आनिके ॥ सुंदर सनेह सुधा सहस जनु सरस राखे सानिकै ॥ छन भवन छन बाहर विलोकति पंथ भूपर पानिकै ॥ दोउ भाइ आये शवरी काको प्रेम प्रण पहिचानिकै ॥ श्रवण सुनत

चली आवत देखि लषण रघुराउ ॥ शिथिल सनेह कहै है सपनो विधि कैधों सतिभाउ ॥ छंद ॥ सतिभाउकै सपनो निहारि कुमार कौशलयरायके ॥ गहे चरण जे अघहरण नत जन वचन मानस कायके ॥ लघु भाग भाजन उदधि उमँगे लाभ सुख चित चायके ॥ सो जननि ज्यों आदरी सानुज राम भूँखे भायके ॥ ४ ॥ प्रेम पट पाँवडे देत सु अरघ विलोचन वारि ॥ आश्रम लै लिये आसन पंकज पाँय पखारि ॥ छंद ॥ पद पंकजात पखारि पूजे पंथ श्रम विरहित भये ॥ फल फूल अंकुर मूल धरे सुधारि भरि दोना नये ॥ प्रभु खात पुलकित गात स्वाद सराहि आदर जनु जये ॥ फल चारिहू फल चारिदहि परचारि फल शबरी दये ॥ ५ ॥ सुमन वरषि हरषे सुर मुनि मुदित सराहि सिहात ॥ केहिरुचि केहि क्षुधा सानुज माँगि माँगि प्रभु खात ॥ छंद ॥ प्रभु खात माँगत देति शबरी राम भोगी जागके ॥ पुलकत प्रशंसत सिद्ध शिव सनकादि भाजन भागके ॥ बालक सुमित्रा कौशिलाके पाहुने फल सागके ॥ सुनु समुझि तुलसी जानु रामहिं वश अमल अनुरागके ॥६॥ रघुवर अँचइ उठे शबरी करि प्रणाम कर जोरि ॥ हों बलि बलि गई पुरई मंजु मनोरथ मोरि ॥ छन्द ॥ पुरई मनोरथ स्वारथहु परमारथहु पूरण करी ॥ अघ अवगुणन्हिकी कोठरी करि

कृपा मुदमंगल भरी ॥ तापस किरातिन कोल मृदु मूरति मनोहर मन धरी॥ शिर नाइ आयसु पाइ गवने परमनिधि पालेपरी॥७॥सिय सुधि सब कही नख शिख निरखि निरखि दोउ भाइ ॥ दैदै प्रदक्षिणा करत प्रणाम न प्रेम अघाइ॥ छंद ॥ अति प्रीति मानस राखि रामहिं राम धामहिं सो गई॥तेहि मातु ज्यों रघुनाथ अपने हाथ जल अंजलि दई ॥ तुलसी भणित शबरी प्रणति रघुवर प्रकृति करुणामई ॥ गावत सुनत समुझत भगति हिए होय प्रभुपद नित नई ॥ ८॥ १७॥ २१६॥

इति श्रीरामगीतावल्यां आरण्यकांडः समाप्तः।

अथ किष्किन्धाकाण्डप्रारंभः।

(राग केदारा)॥ भूषण वसन विलोकत सियके ॥ प्रेम विवश मनमें पुलकित तनु नीरजनयन नीर भरे पियके ॥ १॥ सकुचत कहत सुमिरि उर उमगत शील नेह सुगुणगण तियके ॥ स्वामिदशा लखि लषण सखा कपि पघिले हैं आँच माठ मानो घियके ॥ २ ॥ सावेत हानि मान मन गुणि गुणि गये निघटि फल सकल सुकियके ॥ वरणे जाम्बवंत तेहि अवसर वचन विवेक वीररस वियके ॥ ३ ॥ धीर वीर सुनि समुझि परसपर बल उपाय उढकत निज हियके॥ तुलसिदास यह समउ कहेते कवि लागत निपट निठुर जडजि-

यके॥४॥१॥२१७॥ प्रभु कपि नायक बोली कह्यो है॥ वरषा गई शरद आई अब नहिं सिय शोधु लह्यो है॥ जा कारण तजि लोकलाज तनु राखि वियोग सह्यो है॥ ताको तो कपिराज आज लग कछु न काज निबह्यो है ॥ २ ॥ सुनि सुग्रीव सभीत नमित मुख उतरु न देन चह्यो है ॥ आइ गये हरि यूथ देखि उर पूर प्रमोद रह्यो है ॥ पठये वदि वदि अवधि दशहुँ दिशि चले बलु सबनि गह्यो है ॥ तुलसी सिय लगि भव दधि निधि मानो फिरि हरि चहत मह्यो है ॥ २ ॥ २१८॥

इति श्रीरामगीतावल्यां किष्किंधाकांडः समाप्तः।

अथ सुन्दरकाण्डप्रारंभः।

(राग केदारा) ॥ रजायसु रामको जब पायो ॥ गाल मेलि मुद्रिका मुदित मन पवनपूत शिर नायो ॥ भालुनाथ नल नील साथ चले बली बालिको जायो॥ फरकि सुअंग भये शकुन कहत मानो मग मुद संगल छायो ॥ देखि विवरु सुधि पाइ गीधसों सबनी अपनो बलु मायो ॥ सुमिरि राम तकि तरकि तोयनिधि लंक लूकसों आयो ॥ खोजत घर घर जनु दरिद्र मन फिरत लागि धन धायो ॥ तुलसी सिय विलोकि पुलक्यौ तनु भूरिभाग्य भयो भायो॥ १ ॥ २१९ ॥ देखी

जानकी जब जाइ ॥ परमधीर समीरसुतके प्रेम उर न समाइ ॥ कृश शरीर सुभाय शोभित लगी उडि उडि धूलि ॥ मनहुँ मनसिश मोहनी मणि गयो भोरे भूलि॥ रटति निशि वासर निरंतर राम राजिवनैन ॥ जात निकट ना विरहिनी अरि अकनि ताते बैन ॥ नाथके गुणगाथ कहि कपि दई मुदरी डारि ॥ कथा सुनि उठि लई कर वर रुचिर नाम निहारि ॥ हृदय हरप विषाद अति पति मुद्रिका पहिचानि ॥ दास तुलसी दशा सो केहिभाँति कहै वखानि ॥ २ ॥ २२० ॥ (राग सोरठ)॥ बोलि वलि मूदरी सानुज कुशल कोशलपालु ॥ अमिय वचन सुनाइ मेटहि विरह ज्वाला जालु ॥ कहत हित अपमान मैं कियो होत हिय सोइ सालु ॥ रोष क्षमि सुधि करत कवहूँ ललित लछिमन लालु ॥ परस्पर पति देवरहि का होति चरचा चालु ॥ देवि कहु केहि हेत बोले विपुल वानर भालु ॥ शीलनिधि समरथ सुसाहिब दीन वंधु दयालु ॥ दास तुलसी प्रभुहि काहु न कह्यो मेरो हालु ॥ ३ ॥ २२१ ॥ सदल सलषण हैं कुशल कृपालु कोशल राउ ॥ शील सदन सनेह सागर सहज सरल सुभाउ ॥ नीद भूषण देवरहि परिहरेको पछिताउ ॥ धीरधुर रघुवीरको नहिं सपनेहूँ चितचाउ ॥ सोधु विनु अनरोधु ऋतुको वोध विहित उपाउ ॥ करत हैं सोइ समय साधन फलति

बनत बनाउ ॥ पठ कपि दिशि दशहुँ जे प्रभुकाज कुटिल न काउ ॥ बोलि लियो हनुमान करि सनमान जानि समाउ ॥ दई हों संकेत कहि कुशलात सियहि सुनाउ ॥ देखि दुर्ग विशेषि जानकि जानि रिपु गति आउ॥कियो सीय प्रबोध मुदरी दियो कपिहि लखाउ॥ पाइ अवसर नाइ शिर तुलसी सगुण गण गाउ ॥ ४ ॥

॥ २२२ ॥ सुवन समीरको धीर धुरीन वीर बडोइ ॥ देखि गति सिय मुद्रिकाकी बाल ज्यौं दियो रोइ ॥ अकनि कटुबाणी कुटिलकी क्रोध विंधि बढोइ ॥ सकुचि सम भयो ईश आयसु कलस भव जिय जोइ॥ बुद्धि बल साहस पराक्रम अछत राखे होइ॥सकल साज समाज साधक समउ कहै सब कोइ॥उतरि तरुते नमत पद सकुचात सोचत सोइ ॥ चुके अवसर मनहुँ सुजनहि सुजन सनमुख होइ ॥ कहे बचन विनीत प्रीति प्रतीति नीति निचोइ ॥ सीय सुनि हनुमान जान्यौ भली भाँति भलोइ ॥ देवि विनु करतूति कहिबो जानि है लघु लोइ॥कहोंगो मुखकी समरसरि कालि कारिख धोइ॥करत कछू न बनत हरिहिय हरष शोक समोइ ॥ कहत मन तुलसी सलंका करों सघन घमोइ ॥ ५ ॥

॥ २२३ ॥ (राग केदारा)॥ हों रघुवशंमणिको दूत॥ मातु मातु प्रतीति जानकि जानि मारुतपूत ॥ मैं सुनी वातैं असैली जे कहीं निशिचर नीच ॥ क्यों न मारौ

गाल बैठो काल डाढनि बीच ॥ निदरि अरि रघुवीर बल लैजाउँ जो हठि आज ॥ डरौं आयसु भंगते अरु बिगार है सुरकाज ॥ बाँधि वारिधि साधि रिपु दिन चारिमें दोउ वीर ॥ मिलहिंगे कपि भालु दल सँग जननि उर धरु धीर ॥ चित्रकूट कथा कुशल कहि शीश नायो कीश ॥ सुहृद सेवक नाथको लखि दई अचल अशीश ॥ भये शीतल श्रवण तन मन सुने वचन पियूष ॥ दास तुलसी रही नयननि दरश-हीकी भूख ॥ ६ ॥ २२४ ॥ तात तोहूँसों कहत हिति हिये गलानि ॥ सनको प्रथम प्रण समुझि अछत तनु लखि नइ मति भई गति मलानि ॥ पियको वचन परि-हरयो जियके भरोसे संग चली वन बडो लाभ जानि ॥ पीतम विरह तौ सनेह सरबसु सुत औसरको चूकिबो सरिस न हानि ॥ आरजसुवनके तौ दया दुअनहुँ पर मोहिं सोच मोते सब विधि नसानि ॥ आपनी भलाई भलो कियो नाथ सबहीको मेरे हिय दिन वश विसरी वानि ॥ नेम तौ पपीहाहीके प्रेम प्यारो मीनहीके तुलसी कही है नीके हृदय आनि ॥ इतनी कही सो कही सीय ज्योंहीं त्योंहीं रही प्रीति परी सही विधिसों न वसानि ॥ ७ ॥ २२५ ॥ मातु काहेको कहति अति वचन दीन ॥ तबकी तुहीं जानति अबकि हौहीं कहत लबके जियकी जानत प्रभु प्रवीन ॥ ऐसे तो सोचहिं

न्याय निठुर नायक रत सुलभ खग कुरंग कमलमीन॥ करुणानिधानको तो ज्यों ज्यों तनु छीन भयो त्यों त्यों मनु भयो तेरे प्रेम पीन॥ सियको सनेह रघुवर की दशा सुमिरि पवनपूत देख्यो प्रीति लीन॥ तुलसी जनको जननिहिं प्रबोध कियो समुझि तात जग विधि अधीन॥ ८॥ २२६॥ (राग जयतश्री)॥ कहो कपि कब रघुनाथ कृपा करि हरि हैं निज वियोग संभव दुख॥ राजिवनयन मयन अनेक छबि रविकुल कुमुद सुखद मयंक मुख॥ विरह अनल सहाय समीर निज तनु जरिबे कहँ रहि न कछू शक॥ अति बल जल बरषत दोउ लोचन दिन अरु रैन रहत एकहिंतक॥ सुदृढ ज्ञान अवलंबी सुनहु सुत राखति प्राण विचारि दहन मत॥ सगुण रूप लीला विलास सुख सुमिरत करत रहत अंतरगत॥ सुनु हनुमंत अनंत बंधु करुणा सुभाउ सुशील कोमल अति॥ तुलसिदास यहि त्रास जानि जिय बरु दुख सहौं प्रगट कहि न सकति॥९॥ ॥ २२७॥ (राग केदारा) कबहुँ कपि राघव आवहिंगे॥ मेरे नयन चकोर प्रीतिवश राकाशशि मुख दिखरावहिंगे॥ मधुप मराल मोर चातक हैं लोचन बहु प्रकार धावहिंगे॥ अंग अंग छबि भिन्न भिन्न सुख निरखि निरखि तहँ तहँ छावहिंगे॥ विरह अगिनिजरि रही लता ज्यों कृपा दृष्टि जल पलुहावहिंगे॥ निज

वियोगदुख जानि दयानिधि मधुर वचन कहि समुझा-वहिंगे ॥ लोकपाल सुरनाग मनुज सब परे बंदि कब मुकतावहिंगे ॥ रावणवध रघुनाथ विमलयश नारदादि मुनिजन गावहिंगे ॥ यह अभिलाष रैनदिन मेरे राज्य विभीषण कब पावहिंगे ॥ तुलसिदास प्रभु मोहजनित भ्रम भेद बुद्धि कब बिसरावहिंगे ॥ १० ॥ २२८ ॥

सत्य वचन सुनु मातु जानकी ॥ जनके दुख रघुनाथ दुखित अति सहज प्रकृति करुणानिधानकी॥ तुव वि-योग संभव दारुण दुख बिसरि गई महिमा सुत्रानकी ॥ नत कहुँ कहँ रघुपति शायक रवि तम अनीक कहँ यातुधानकी ॥ २ ॥ कहँ हम पशु शाखामृग चंचल बात कहौं मैं विद्यमानकी ॥ कहँ हरि शिव अज पूज्य ज्ञानघन नहिं विसरति वह लगनि का-नकी ॥ ३ ॥ तुव दरशन सँदेह सुनि हरिको बहुत भई अवलंब प्राणकी ॥ तुलसिदास गुण सुमिरि रामके प्रेम मगन नहिं सुधि अपानकी ॥ ४ ॥ ११ ॥ २२९ ॥

(राग कान्हरा) ॥ रावण जोपै राम रण रोपे ॥ को कहिसकै सुरासुर समर विशिष काल सदननिते चोपे ॥ ॥ १ ॥ तप वल भुजबलकै सनेह बल शिव विरंचि नीकी विधि तोषे ॥ सो फल राजसमाज भुवनजन आपुन नाश आपने पोषे ॥ २ ॥ तुला पिनाक साहु नृप त्रिभुवन भट बटोरि सबके बल जोखे ॥ परशुरा-

मसे शूर शिरोमणि पलमें भये खेतके धोषे ॥ ३ ॥ कालिकी वात वालिकी सुधि करि समुझिहि ताहित खोलि झरोषे ॥ कह्यो कुमंत्रिनको न मानिए बडी हानि जिय जानि त्रिदोषे ॥ ४ ॥ जासु प्रसाद जनमि जग पुरषनि सागर सृजे खने अरु सोखे ॥ तुलसिदास सो स्वामिन सूझ्यो नयन बीस मंदिरकेसे मोखे ॥ ५ ॥ ॥ १२ ॥ २२० ॥ (राग मारू) ॥ जो हों प्रभु आयसु लै चलतों ॥ तौ यहि रिस तोहिं सहित दशानन यातुधान दल दलतौं ॥ १ ॥ रावण सो रसराज सुभट रस सहित लंक खल खलतो ॥ करि पुटपाक नाकनायकहित घने घने घर घलतो ॥ बडे समाज लाज भाजन भयो वडो काज विनु छलतो ॥ लंकनाथ रघुनाथ वैरु तरु आजु फैलि फूलि फलतो ॥ ३ ॥ कालकरम दिगपाल सकल जग जाल जासु करतलतो ॥ ता रिपुसों पर भूमि रारि रण जीवन मरण सुथलतो ॥ ॥ ४ ॥ देखी मैं दशकंठ सभा सब मोते कोउ न सबलतो ॥ तुलसी अरि उर आनि एक अब एती गलानि न गलतो ॥ ५ ॥ १३ ॥ २२१ ॥ तौलौं मातु आपु नीके रहिवो ॥ जौलों हों ल्यावों रघुवीरहिं दिन दश और दुसह दुख सहिबो ॥ १ ॥ सोखिकै खेतकै बाँधि सेतु करि उतरिबो उदधि न वोहित चहिबो ॥ प्रबल दनुज दल दलि पल आधमें जीवत दुरित दश-

नन गहिबो ॥ २ ॥ वैरिवृंद विधवा वनितनिको देखिबो वारि विलोचन बहिबो ॥ सानुज सैन समेत स्वामिपद निरखि परम मुद मंगल लहिबो ॥ ३ ॥ लंक दाह उर आनि मानिबो साँचु राम सेवकको कहिबो ॥ तुलसी प्रभुको सुर सुयश गाइ है मिटि जैहै सबको सोचु दौ दहिबो ॥ ४ ॥ १४ ॥ २३२ ॥ कपिके चलत सियको मनु गहबरि आयो ॥ पुलक शिथिल भयो शरीर नीर नयनन्हि छायो ॥ १ ॥ कहन चह्यो संदेश नहिं कह्यो पियके जियकी जानि हृदय दुसह दुख दुरायो ॥ देखि दशा व्याकुल हरीश ग्रीषमके पथिक ज्यों धरणि तरणि तायो ॥ २ ॥ मीचते नीच लगी अमरता छलको न बलको थल निरखि परुप प्रेम पायो ॥ कै प्रबोध मातु प्रीतिसों मन अशीश दीन्हीं ह्वैहै तिहारोइ भायो ॥ ३ ॥ करुणा कोप लाज भय भरचो कियो गौन मौनहीं चरण कमल शीश नायो॥ यह सनेह सरबस समौ तुलसी रसना रूखी ताहीते परत गायो ॥ ४ ॥ १५ ॥ २३३ ॥ (राग वसंत) रघुपति देखो आयो आयो हनुमंत ॥ लंकेश नगर खेल्यो वसंत ॥ श्रीराम काजहित सुदिन सोधि॥ साथी प्रबोधि लांघ्यो पयोधि ॥ १ ॥ सिय पाँय पूजि आशिषा पाइ ॥ फल अमिय सरिस खायो अघाइ ॥ कानन दलि होरी रचि बनाइ ॥ हठि तिल बसन बालधि बंधाइ ॥ २ ॥ दिये

ढोल चले सग लोग लागि ॥ बरजोर दई चहुँ ओर आगी ॥ आखत आहुति किये यातुधान॥लखि लपट झभरि भागे विमान॥३॥नभतल कौतुक लंका विलाप॥ परिणाम पचहि पातकी पाप ॥ हनुमान हाँक सुनि बरषि फूल ॥ सुर बारबार वरणहिं लँगूल ॥ ४ ॥ भरि भुवन सकल कल्याण धूम ॥ पुर जारि वारिनिधि बोरि लूम ॥ जानकी तोषि पोषेउ प्रताप ॥ जय पवन सुवन दलि दुअन दाप ॥ ५ ॥ नाचहिं कूदहिं कपि करि विनोद॥ पीवत मधु मधुवन मगन मोद॥ यों कहत लषण गहे पाँय आइ॥मुनि सहित मुदित भेंट्यो उठाइ ॥६॥ लगे सजन सेन भयो हिये हुलास ॥ जय जय यश गावत तुलसिदास ॥ ७ ॥ १६ ॥ २३४ ॥

(राग जयतश्री)॥ सुनहु राम विश्रामधाम हरि जन-कसुता अति विपति जैसे सहति ॥ हे सौमित्र बंधु करुणानिधि मनमहँ रटति प्रगट नहिं कहति ॥ १ ॥ निजपद जलज विलोक शोकरत नयननि वारि रहत न एक क्षण ॥ मनहुँ नील नीरज शशि संभव रवि वियोग दोउ श्रवत सुधाकण ॥ २ ॥ बहु राक्षसी सहित तरुके तर तुम्हरे विरह निज जनम विगोवति॥ मनहुँ दुष्ट इंद्रिय संकट महँ बुद्धि विवेक उदय मग जोवति ॥ ३ ॥ सुनि कपिवचन विचारि हृदय हरि अनपायनी सदा सो एक मन॥ तुलसिदास दुख सुखा-

तीत हरि सोच करत मानहुँ प्राकृत जन ॥ ४ ॥ १७ ॥
॥ २३५ ॥ (राग केदारा) ॥ रघुकुल तिलक वियोग
तिहारे ॥ मैं देखी जब जाइ जानकी मनहुँ विरह मूरति
मन मारे ॥ १ ॥ चित्रसे नयन अरु गढेसे चरण कर
मढेसे श्रवण नहिं सुनति पुकारे ॥ रसना रटति नाम
कर शिर चिर रहै नित निज पदकमल निहारे ॥ २ ॥
दरशन आश लालसा मनमहँ राखे प्रभु ध्यान प्राण
रखवारे ॥ तुलसिदास पूजति त्रिजटानीके रावरे गुण
गण सुमन सँवारे ॥ ३ ॥ १८ ॥ २३६ ॥ अतिहि
अधिक दरशनकी आरति ॥ राम वियोग अशोक विटप
तर सीय निमेष कलपसम टारति ॥ १ ॥ बार बार
वर वारिजलोचन भरि भरि वरत वारि उर ढारति ॥
मनहुँ विरहके सद्य घाय हिये लखि तकि तकि धरि
धीरत तारति ॥ २ ॥ तुलसिदास यद्यपि निशि वासर
छिन छिन प्रभु मूरतिहि निहारति ॥ मिटति न दुसह
ताप तउ तनुकी यह विचारि अंतर्गत हारति ॥ ३ ॥
॥ १९ ॥ २३७ ॥ तुम्हरे विरह भई गति जौन ॥ चित
दै सुनहु राम करुणानिधि जानो कछु पै सकौं कहि हौं
न ॥ लोचन नीर कृपणके धन ज्यों रहत निरन्तर
लोचन कौन ॥ हा धुनि खगी लाज पिंजरी-
महँ राखि हिये बडे वधिक हठ मौन ॥ जेहि वाटिका
वसति तहँ खग मृग तजि भजें पुरातन भौन ॥ श्वास

समीर भेंट भइ भोरेहुँ तेहि मग पगु न धरचो तिहुँ पौन ॥ तुलसिदास प्रभु दशा सीयकी मुख करि कहत होति अति गौन॥ दीजै दरश दूरि कीजै दुख हौ तुम्ह आरत आरति दौन ॥ २० ॥ २३८ ॥ कपिके सुनि कल कोमल बैन ॥ प्रेम पुलकि सब गात शिथिल भये भरे सलिल सरसीरुह नैन ॥ सिय वियोग सागर नागर मनु बूडन लग्यो सहित चित चैन॥ लही नाव पवनज प्रसन्नता वरवश तहूँ गह्यो गुण मैन ॥ सकत न बूझि कुशल बूझे विन गिरा विपुल व्याकुल उरऐन॥ ज्यों कुलीन शुचि सुमति वियोगिनि सन्मुख सहै विरह शर पैन ॥ धरि धरि धीर वीर कोशलपति किये जतन सके उतरु न दैन ॥ तुलसिदास प्रभु सखा अनुजसों सैनहिं कह्यो चलहु सजि सैन ॥ २१ ॥ ॥ २३९ ॥ (राग मारू) ॥ जब रघुवीर पयानो कीन्हों ॥ क्षुभित सिंधु डगमगत महीधर सजि शारंग कर लीन्हो ॥ सुनि कठोर टंकोर घोर अति चौंके विधि त्रिपुरारि ॥ जटापटलते चली सुरसरी सकत न शंभु सँभारि ॥ भये विकल दिगपाल सकल भय भरे भुवन दश चारि ॥ खरभर लंक सशंक दशानन गर्भ श्रवहिं अरि नारि ॥ कटकटात भट भालु बिकट मर्कट करि केहरि नाद ॥ कूदत करि रघुनाथ शपथ उपरी उपरा वदि वाद ॥ गिरि तरुवर नख मुख कराल रद

कालहु करत विषाद ॥ चले दश दिशि रिसभरि धरु धरु कहिकोवराक मनुजाद ॥ पवन पंगु पावक पतंग शशि दुरिगए थके विमान ॥ याचत सुर निमेष सुरनायक नयन बार अकुलान ॥ गए पूरि सर धूरि भूरि भय अगथल जलधि समान॥नभ निसान हनुमान हाँक सुनि समुझत कोउ अपान ॥ दिग्गज कमठ कोल सहसानन धरत धरणि धरि धीर॥बारहिं वार अमरपत करषत करकै परी शरीर॥चली चमू चहुँ ओर शोर कछु बनै न वर्णत भीर ॥ किलकिलात कसमसत कोलाहल होत नीरनिधि तीर ॥ यातुधानपति जानि कालवश मिले विभीषण आइ॥शरणागत पालक कृपालु कियो तिलक लियो अपनाइ॥ कौतुकहीं वारिधि वँधाइ उतरे सुवेल तट जाइ ॥ तुलसिदास गढ देखि फिरे कपि प्रभु आगमन सुनाइ ॥२२ ॥ २४० ॥(राग आसावरी) आये दाख दूत सुनि सोच शठ मनमें ॥ वाहर बजावैं गाल भालु कपि कालवश मोसे वीरसों चहत जीत्यो रारि रणमें ॥ रामछाम लरिका लपण वालि बालकहि घालिको गनत रीछ जल ज्यौं न घनमें ॥ काज को न कपिराज कायर कपि समाज मेरे अनुमान हनुमान हरिगनमें॥ समय सयानी रानी मृदुवानी कहै पिय पावक न होइ यातुधान वेनु वनमें॥तुलसी जानकी दिये स्वामीसों सनेह किये कुशल नतरु सब हैहै

छार छनमैं ॥ २३ ॥ २४१ ॥ आपनी आपनी भाँति सब काहू कही है ॥ मंदोदरी महोदर मालवान महा-मति राजनीति पाहुँच जहाँलौं जाकी रही है ॥ महा-मद अंध दशकंध न करत कान मीचुवश नीच हठि कुगहनि गही है॥हँसि कहै सचिव सयाने मोसों कहत चहत मेरु उडन बडी बयारि बही है ॥ भालु नर वानर अहार निशिचरनिको सोऊ नृप बालकनि माँगी धारि लही है ॥ देखो काल कौतुक पिपीलिकनि पंख लागो भाग्य मेरे लोगनिके भई चित चही है ॥ तोसों न तिलोक आजु साहस समाज साजु महाराज आयसु भो जोई सोई सही है ॥ तुलसी प्रणामके विभीषण विनती करै ख्याल वेधेताल कपिकेलि लंका दही है॥ ॥ २४ ॥ २४२ ॥ दूसरो न दूखतु साहिब सम रामै॥ वेदऊ पुराण कवि कोविद विरत रत जाको यश सुनत गावत गण ग्रामै ॥ माया जीव जग जाल सुभाउ करमकाल काल सबको शासकु सब मैं सब जामै ॥ विधिसे करनिहार हरिसे पालनिहार हरसे हरनिहार जपै जाके नामैं ॥ सोई नरवेष जानि जनकी विनती मानि मतो नाथ सोई जातें भलो परिनामैं ॥ सुभट शिरोमणि कुठारपाणि सारिखेहुँ लखी औ लखाई इहाँ किये शुभसामैं ॥ वचन विभूषण विभीषण वचन सुनि लागे दुख दूषणसे दाहिनेउ वामैं ॥ तुलसी हुमुकि

हिये हन्यो लात भले तात चल्यो सुरतरु ताकि ताज घोर घामें ॥ २५ ॥ २४३ ॥ जाय माय पाँय परि कथासो सुनाई है ॥ समाधान करति विभीषणको वार वार कहा भयो तात लात मारे वडो भाई है ॥ साहिब पितु समान यातुधानको तिलक ताके अपमान तेरी बडि ए बडाई है॥ गरत गलानि जानि मनमानि सिख देति रोष किये दोष सहे समुझे भलाई है ॥ इहाँते विमुख भये रामकी शरण गये भलोनकु लोक राखे निपट निकाई है ॥ मातु पग शीश नाइ तुलसी अशीश पाइ चले भले शकुन कहत मन भाई है ॥ २६ ॥ ॥२४४॥ भाईको सो करों डरों कठिन कुफेरे ॥ सुकृत संकट पऱ्यो जातु गलानिन्ह गऱ्यो कृपानिधिको मिलो पै मिलिकै कुबेरे ॥ जाइ गहे पाँय धाइ धनद उठाइ भेंट्यो समाचार पाइ पोच सोचत सुमेरे ॥ तहँई मिले महेश दियो हित उपदेश रामकी शरण जाहि सुदिनु न हेरे ॥ जाको नाम कुंभज कलेश सिंधु सोखिवेको मेरो कह्यो मानि तात बाँधे जिनिबेरे ॥ तुलसी मुदित चले पाये हैं शकुन भले रंक लूटिवेको मानो मणिगण ढेरे ॥ २७ ॥ २४५ (राग केदारा) ॥ शंकर सिख आशिष पाइकै ॥ चले मनहिं मन कहत विभीषण शीश महेशहि नाइकै ॥ गये सोच भय शकुन सुमंगल दश दिशि देत देखाइकै ॥ सजल नयन सानंद

हृदय तनु प्रेम पुलक अधिकाइकै ॥ अनहु भाव भलो भाईको कियो अनभलो मनाइकै ॥ भय कुबेरकी लात विधाता राखी बात बनाइकै ॥ नाहित क्यों कुबेर घर मिलि हर हितु कहते चितलाइकै ॥ जो सुनि शरण राम ताके में निज वामता विहाइकै ॥ अनायास अनुकूल शूलधर मगसुद मूल जनाइकै ॥ कृपासिन्धु सनमानि जानि जन दीन लयो अपनाइकै॥ स्वारथ परमारथ करतलगत श्रम पथ गयो सिराइकै॥ सपने कै सौतुक सुख शशि सुर सींचत देत निराइकै ॥ गुरु गौरीश साँइ सीतापति हित हनुमानहिं जाइकै ॥ मिलिहो मोहिं कहा कीबे अब अभिमत अवधि अघाइकै ॥ मरतो कहाँ जाइ को जानै लटि लालची ललाइकै ॥ तुलसिदास भजिहों रघुवीरहि अभय निसान वजाइकै ॥ २८ ॥ २४६ ॥ पदपद्म गरीबनिवाजके ॥ देखिहों जाइ पाइ लोचन फल हित सुर साधु समाजके ॥ गई बहोर ओर निरबाहक साजक बिगरे साजके ॥ शवरी सुखद गीध गतिदायक शमनशोक कपिराजके॥आरतिहरण शरण समरथ सब दिन अपनेकी लाजके ॥ तुलसी पाही कहत नत पालक मोहुँसे निपट निकाजके ॥ २९ ॥ २४७ ॥ महाराज रामपहँ जाउँगो ॥ सुख स्वारथ परिहरि करिहों सोइ ज्यों साहिबहि सुहाउँगो ॥ शरणागत सुनि वेगि बोलि हैं हों

निपटहि सकुचाउँगो ॥ राम गरीबनिवाज निवाजि हैं जानि हैं ठाकुर ठाउँगो ॥ धरि हैं नाथ हाथ माथे एहिते केहि लाभ अघाउँगो ॥ सपनो सो अपनो न कछू लखि लघु लालच न लोभाउँगो ॥ कहिहौं वलि रोटिहारा वरो बिनु मोलहि विकाउँगो ॥ तुलसी पट ऊतरे ओढिहौं उबरी जूठनि खाउँगो ॥ ३० ॥ २४८ ॥ आइ सचिव विभीषणके कही ॥ कृपासिंधु दशकंधबंधु लघु चरण शरण आयो सही ॥ विषम विषाद वारि-निधिं बूडत थाह कपीश कथा लही ॥ गये दुख दोष देखि पदपंकज अब न साध एको रही ॥ शिथिलस-नेह सराहत नख सिख नीक निकाई निरवही ॥ तुलसी मुदित दूत भयो मानहुँ अमियलाहु माँगत मही ॥ ॥ ३१ ॥ २४९ ॥ विनती सुनि प्रभु प्रमुदित भये ॥ रीछराज कपिराज नील नल बालि वालिनंदन लये ॥ बूझियें कहा रजाइपाइनय धरम सहित ऊतर दये ॥ बलीबंधु ताको जेहि विमोह वश वैर बीज बरवश बये ॥ बाँह पगार द्वार तेरेतैं सभयन कबहूँ फिरि गये॥ तुलसी अशरण शरण स्वामिके विरद विराजत नित नये॥३२॥२५०॥हिय विहँसि कहत हनुमानसों॥ सुम-ति साधु शुचि सुहृद विभीषण बूझि परत अनुमानसों॥ हौं बलि जाउँ और को जानै कहि कपि कृपानिधा-नसों॥ छली न होइ स्वामि सनमुख ज्यों तिमि रसा-

तहव जानसों ॥ खोटो खरो सभीत पालिये सो सनेह सनमानसों ॥ तुलसी प्रभुको वो जो भलो सोइ बूझि शरासन बानसों ॥ ३३ ॥ २५१ ॥ साँचेहु विभीषण आय है ॥ बूझत बिहँसि कृपालु लषण सुनि कहत सकुचि शिर नाय है ॥ ऐहै कहा नाथ आयो ह्याँ क्यों कहि जाति बनाय है ॥ रावण रिपुहि राखि रघुवर विनु को त्रिभुवनपति पाय है॥प्रभु प्रसन्न सब सभा सराहति दूत वचन मन भाय है॥ तुलसी बोलिये वेगि लषणसों भइ महाराज रजाय है ॥ ३४ ॥२५२॥ चले लेन लषण हनुमान हैं॥ मिले मुदित बूझि कुशल परस्पर सकुचत करि सनमान हैं ॥ भयो रजायसु पाँउ धारिये बोलत कृपानिधान हैं ॥ दूरिते दीनबंधु देखे जनुदेत अभय वरदान हैं ॥ शील सहस हिम भानुतेज शत कोटि भानुहूँके भानु हैं ॥ भगतनिको हित कोटि मातु पितु अरिन्हको कोटि कृशानु हैं ॥ जन गुण रजगिरि गणि सकुचत निज गुण गिरितर वर वानु है॥ बाँह पगारु बोलको अविचल वेद करत गुण गान हैं॥ चारु चाप तूणीर तामरस करनि सुधारत बान हैं ॥ चरचा चलति विभीषणकी सोइ सुनत सुचित दै कान हैं॥हरषत सुर वरषत प्रसून शुभ शकुन कहत कल्याण हैं॥तुलसी ते कृतकृत्य जे सुमिरत समय सुहावनो ध्यान हैं३५॥२५३॥ रामहि करत प्रणाम निहारिकै उठे उमँगि

आनंद प्रेम परिपूरण विरद विचारिकै॥भयो विदेह विपण इत इत प्रभु अपन पौ बिसारिकै ॥ भली भाँति भावते भरत ज्यों भेंट्यौ भुजा पसारिकै॥सादरसबहिं मिलाय समाजहिं निपट निकट बैठारिकै ॥ बूझत कुशल क्षेम सप्रेम अपनाइ भरोसे भारिकैं॥ नाथ कुशल कल्याण सुमंगल विधि सुख सकल सुधारिकै॥ देत लेत जे नाम रावरो विनय करत मुख चारिकै ॥ जो मूरति सपने नविलोकत मुनि महेश मन मारिकै ॥ तुलसी तहि हों लियो अंक भरि कहत कछू न सँवारिकै ॥२६॥२५४॥ करुणाकरकी करुणा भई ॥ मीचु लहि लंक शंक गइ काहूसों न खुनिस भई॥दशमुख तज्यो दूध माखी ज्यों आपु काढि साढी लई॥भव भूपण सोइ कियो विभीषण मुद मंगल महिमा भई ॥ विधि हरि हर मुनि सिद्ध सराहत मुदित देव दुंदुभी दई ॥ बारहिंबार सुमन बरषत हिय हरषत कहि जैजै जई ॥ कौशिक शिला जनक संकट हरि भृगुपतिकी टारी टई ॥ खग मृग सबर निशाचर सबकी पूजि विनु बाढी सई ॥ युग युग कोटि कोटि करतब करणी न कछु बरणी नई ॥ राम भजन महिमा तुलसी हिय तुलसीहूकी बनि गई ॥२७॥ ॥ २५५ ॥ मंजुल मूरति मंगलमई ॥ भयो विशोक विलोकि विभीषण नेह देह सुधिसी गई॥उठि दाहिनी ओरते सन्मुख सुखद मागि बैठक लई ॥ नख शिख निरखि २ सुख पावत भावत कछू कछुए भई ॥ वार

कोटि गिर काटि साटि लटि रावण शंकरपै लई ॥ सोइ लंका लखि अतिथि अनवसर रामतृणासन ज्यों दई ॥ प्रीति प्रतीति रीति शोभासरि थाहत जहँ जहँ तहँ घई ॥ बाहु बली बानैत बोलको बीरविश्व विजयी नई ॥ को दयालु दूसरो दुनी जेहि जरनि दीन हियकी हई ॥ तुलसी काको नाम जपत जग जगती जामति विनु वई ॥ ३८ ॥ २५६ ॥ सभाँति विभीषणकी बनी ॥ कियो कृपालु अभय कालहुते गई संव सृति भासति घनी॥सखा लषण हनुमान शंभु गुरु धनी राम कोशलधनी ॥ हियही और और कीन्ही विधि रामकृपा औरै ठनी ॥ कलुष कलंक कलेश कोश भयो जो पद पाय रावण रनी ॥ सोइ पद पाय विभीषण भो भव भूषण दलि दूषण अनी॥बाँह पगार उदार शिरोमणि नत पालक पावन पनी ॥ सुमन वरषि रघुवर गुण वर्णत हरषि देव दुंदुभी हनी ॥ रंक निवाज रंक राजा किये गए गरब गारि गारि गनी ॥ राम प्रणाम महा महिमा खनि सकल सुमंगलननि जनी ॥ होय भलो ऐसेही अजहुँ गये राम शरण परिहरि मनी ॥ भुजा उठाइ साखि शंकर करि कसम खाइ तुलसी भनी ॥ ३९ ॥ २५७ ॥ कहो क्यों न बिभीषणकी बनै ॥ गयो छाँडि छल शरण रामकी जो फल चारि चारचौं जनै ॥ मंगलमूल प्रणाम जासु जग मूल अमंगलके खनै ॥ तेहि रघुनाथ हाथ माथे दियो को ताकी महिमा

भनै॥नाम प्रताप पतित पावन किये जे न अघाने अघ अनै॥कोउ उलटो कोउ सूधो जपिभये राजहंस वायस तनै ॥ हुतो ललात कृशगात खात खारि मोद पाइ कोदो कनै॥सो तुलसी चातक भयो याचत राम श्याम सुंदर घनै ॥ ४० ॥ २५८ ॥ अतिभाग बिभीषणके भले ॥ एक प्रणाम प्रसन्न राम भये दुरित दोष दारिद दले ॥ रावण कुंभकर्ण वर माँगत शिव विरंचि वाचा छले॥राम दरश पायो अविचल पद सुदिन शकुन नीके चले ॥ मिलनि विलोकि स्वामि सेवककी उकठे तरु फूले फले॥तुलसी सुनि सनमान बंधुको दशकंधर हँसि हिये जले॥ ४१ ॥ २५९ ॥ गये राम शरण सबको भलो॥गनी गरीब बडो छोटो बुध मूढ हीनबल अति बलो ॥ पंगु अंध निर्गुणी निसंबल जो न लहै जाँचे जलो ॥ सो निबह्यो नीके जो जनमि जग राम राज मारग चलो ॥ नाम प्रताप दिवाकर कर खर गरत तुहिन ज्यौं कलिमलो ॥ सुत हित नाम लेत भव-निधि तरिगयो अजामिलसों खलो ॥ प्रभुपद प्रेम प्रणाम कामतरु सद्य बिभीषणको फलो॥तुलसी सुमि-रत नाम सबनिको मंगलमय नभ जल थलो ॥ ४२ ॥ ॥ २६० ॥ सुयश सुनि श्रवण हों नाथ आयों शरन॥ उपल केवट गीध शबरी संसृत शमन शोक श्रमसीव सुग्रीव आरतिहरन॥ रामराजीवलोचन विमोचन विपति

श्याम नवतामरस दाम वारि वरन ॥ लसत जट जूट शिर चारु मुनि चीर कटि धीर रघुवीर तूणीर शर धनु धरन ॥ यातुधानेश भ्राता बिभीषण नाम बंधु अपमान गुरु गलानि चाहत गरन॥पतितपावन प्रणतपाल करुणासिंधु राखिये मोहिं सौमित्रि सेवित चरन ॥ दीनता प्रीति संकलित मृदुवचन सुनि पुलकि तन प्रेम जल नयन लागे भरन॥बोलि लंकेश कहि अंक भरि भेंटि प्रभु तिलक दियो दीन दुख दोष दारिद दरन ॥ रातिचरजाति आराति सब भाँति गत कियो सो कल्याण भाजन सुमंगल करन ॥ दास तुलसी सदय हृदय रघुवंशमणि पाहि कहे काहि कीन्हों न तारन तरन ॥ ४३ ॥ २६१ ॥ दीनहित विरद पुराणनि गायो ॥ आरत बंधु कृपालु मृदुल चित जानि शरण हों आयो ॥ तुम्हरे रिपुको हों अनुज विभीषण वंश निशाचर जायो ॥ सुनि गुण शील स्वभाव नाथको मैं चरणनि चितु लायो ॥ जानत प्रभु दुख सुख दासनिको ताते कहि न सुनायो ॥ करुणा भरि नयन विलोकहु तउ जान्यो अपनायो ॥ वचन बिनीत सुनत रघुनायक हँसि करि निकट बुलायो ॥ भेंटउ हरिभरि अंक भरत ज्यों लंकापति मन भायो ॥ कर पंकज शिर परसि अभय कियो जनपुर हेतु दिखायो ॥ तुलसिदास रघुवीर भजन करि को न परम पद पायो

॥ ४४ ॥ २६२ ॥ राग धनाश्री ॥ सत्य कहौं मेरो सहज स्वभाउ ॥ सुनहु सखा कपि पति लंका-पति तुम्हमन कौन दुराउ ॥ सब विधि हीन दीन अति जडमति जाको कतहुँ न ठाउ ॥ आये शरण भजो न तजो तिहि यह जानत ऋषिराउ ॥ जिन्हके हौं हित सब प्रकार चित नाहिं न और उपाउ ॥ तिनहिं लागि धरि देह करौं सब डरो न सुयश नशाउ॥ पुनि पुनि भुजा उठाइ कहतहौं सकल सभापति आउ ॥ नहिं कोऊ प्रिय मोहिं दास सम कपट प्रीति बहिजाउ॥ सुनि रघुपतिके वचन विभीषण प्रेम मगन मन चाउ ॥ तुलसिदास तजि आश त्रास सब ऐसे प्रभु कहँ गाउ ॥ ४५ ॥ २६३ ॥ नाहिन भजिबे योग बियो ॥ श्रीरघुवीर समान आन को पूरण कृपा हियो ॥ कहहु कौन सुर शिला तारि पुनि केवट मीत कियो ॥ कौने गीध अधमको पितु ज्यों निजकर पिंड दियो ॥ कौन देव शबरीके फलकरि भोजन सलिल पियो ॥ बालि त्रास वारिधि बूडत कपि केहि गहि बाहँ लियो॥भजन प्रभाउ विभीषण भाष्यौ सुनि कपि कटक जियो ॥ तुलसिदासको प्रभु कोशलपति सब प्रकार बरियो ॥ ॥ ४६ ॥ २६४ ॥ राग जयतश्री ॥ कब देखोंगी नयन वह मधुर मूरति ॥ राजिवदल नयन कोमल कृपाअयन मयननि वह छबि अंगनिदूरति ॥ शिरसि जटा कलाप

पाणि शायक चाप उरसि रुचिर वनमाल लूरति ॥ तुलसिदास रघुवीरकी शोभा सुमिरि भई है मगन नहिं तनकी सूरति ॥ ४७ ॥ २६५ ॥ (राग केदारा) कहु कबहुँ देखिहों आय सुवन ॥ सानुज सुभग तनु जबते बिछुरे वन तबते दवसी लगी तीनिहूँ भुवन ॥ सूरति सूरति किये प्रगट प्रीतम हिये मनके करन चाहैं चरण छुवन ॥ चित चढिगो वियोग दशा न कहिबे योग॥ पुलकगात लागे लोचन चुवन ॥ तुलसी त्रिजटा जानी सिय अति अकुलानी मृदुबानी कह्यो ऐहैं दवन दुवन॥ तमीचर तमहारी सुरकंज सुविकारी रविकुल रवि अब चाहत उवन ॥ ४८ ॥ २६६ ॥ अबलों मैं तोसों न कहे री ॥ सुनत त्रिजटा प्रिय प्राणनाथ विनु वासर निशि दुख दुसह सहे री ॥ विरह विषम विष वेलि बढी उरत सकल सुभाय दहे री ॥ सोइ सीचिवे लागि मनसिजके रहट नयन नित रहत नहे री॥ सर शरीर सूखे प्राण वारिचर जीवन आश तजि चलनु चहे री ॥ तैं प्रभु सुयश सुधा शीतलकरि राखे तदपि न तृप्ति लहे री ॥ रिपु रिस घोर नदी विवेक बल धीर सहितहुते जात बहे री ॥ दै मुद्रिका टेक तेहि औसर शुचि समीर सुतपैरि गहे री ॥ तुलसिदास सब सोच पोच मृगमन कानन भरि पूरि रहे री॥अब सखि सिय संदेह परिहरु हिय आइ गए दोउ वीर अहेरी ॥४९॥

॥ २६७ ॥ (राग बिलावल) सो दिन सोनेको कहु कब ऐहै ॥ जादिन बँध्यो सिंधु त्रिजटा सुनु तू संभ्रम आनि मोहिं सुनैहै ॥ विश्वदवन सुर साधु सतावन रावन कियो आपनो पैहै ॥ कनक पुरी भयो भूप विभीषण विबुध समाज विलोकन धैहै ॥ दिव्य दुंदुभी प्रशंसिहैं मुनिगण नभतल विमल विमानन छैहै ॥ बरषिहैं कुसुम भानुकुल मणि पर तब मोको पवनपूत लै जैहै ॥ अनुज सहित सोभिहैं कपिनमहँ तनु छबि कोटि मनोज हितैहै ॥ इन नयनन्हि यहि भाँति प्राणपति निरखि हृदय आनँद न समैहै ॥ बहुरो सदल सनाथ सलछिमन कुशल कुशल विधि अवध देखैहै ॥ गुरु पुर लोग सासु दोउ देवर मिलत दुसह उर तपति बुतैहै ॥ मंगल कलश बधावने घर घर पैहै माँगने जो जेहि भैहै ॥ विजयराम राजाधिराजको तुलसिदास पावन यश गैहै ॥ ५० ॥

॥ २६८ ॥ सिय धीरज धरिये राघो अब ऐहैं ॥ पवनपूत पै पाइ तिहारी सुधि सहज कृपालु बिलंब न लैहैं ॥ सैन साजि कपि भालु कालसम कौतुकही पाथोधि बँधैहैं ॥ घेरेइपै देखिबो लंकगढ विकल यातुधानी पछितैहैं ॥ निशिचर शलभ कृशानु रामशर उडि उडि परत जरत जड जैहैं ॥ रावण करि परिवार अगमनो यमपुर जात बहुत सकुचैहैं ॥ तिलक सारि अपनाय विभीषण अभय बाँह दै अमर बसैहैं ॥ जयधुनि मुनि बरषि हैं

सुमन सुर व्योम विमान निसान बजैहैं ॥ बंधु समेत प्राणवल्लभपद परसि सकल परिताप नशैहैं ॥ राम वाम दिशि देखि तुमहिं सब नयनवंत लोचन फल पैहैं ॥ तुम अति हित चितैहौ नाथ तनु बारबार प्रभु तुमहिं चितैहैं ॥ यह शोभा सुख समय विलोकत काहूतो पलकै न हितैहैं ॥ कपिकुल लषण सुयश जय जानकि सहित कुशल निजनगर सिधैहैं ॥ प्रेम पुलकि आनंद मुदित मन तुलसिदास कलकीरति गैहैं ॥ ५१ ॥ २६९ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां सुंदरकांडः समाप्तः ॥

अथ लंकाकाण्ड ।

(राग मारू) मानु अजहूँ शिष परिहरि क्रोधु ॥ पिय पूरो आयो अब काहि कहु करि रघुवीर विरोधु ॥ जेहि ताडका सुबाहु मारि मख राखि जनायो आपु ॥ कौतुकहि मारीच नीचमिस प्रगटचौ विशिष प्रतापु ॥ सकल भूप बलगर्व सहित तोरचौ कठोर शिवचापु॥ ब्याही जेहि जानकी जीति जग हरचौ परशुधर दापु ॥ कपट काक शासति प्रसादकरि विनु श्रम वध्यो विराधु ॥खर दूषण त्रिशिरा कबंध हति कियो सुखी सुर साधु॥एकहि बाण बालि मारचो जेहि जो बल उदधि अगाधु॥ कहुधों कंत कुशल बीती केहि किये राम अपराधु॥ लांघि नासके लोक विजयी तुम जासु अनुज कृत रेषु ॥ उतरि सिंधु

जारचो प्रचारि पुर जाको दूत विशेषु ॥ कृपासिंधु खलवन कृशानु सम यश गावत श्रुति शेषु ॥ सोइ बिरदैत वीरकोशलपति नाथ समुझि जिय देषु ॥ सुनि पुलस्त्यके यशमयंकमहँ कत कलंक हठि होहि ॥ और प्रकार उबार नहीं कहुँ मैं देख्यों जगु जोहि॥चलु मिलु वेगि कुशल सादर सिय सहित अग्र करि मोहिं॥ तुलसिदास प्रभु शरण शबद सुनि अभय करेंगे तोहि ॥ १ ॥ २७० ॥ (राग कान्हरा) ॥ तू दशकंठ भले कुल जायो ॥ तामहँ शिव सेवा विरंचिवर भुज बल बिपुल जगत यश पायो ॥ खर दूषण त्रिशिरा कबंध रिपु जेहि वाली यमलोक पठायो ॥ ताको दूत पुनीत चरित हरि शुभसंदेश कहनहों आयो ॥ श्रीमदनृप अभिमान मोहवश जानत अन जनत हरिलायो ॥तजि व्यलीक भजु कारुणीक प्रभु दै जानकिहि सुनहिं समुझायो॥याते तव हित होइ कुशल कुल अचलराज चलिहै न चलायो ॥ नाहित रामप्रताप अनलमहँ ह्वै पतंग परिहै शठ धायो ॥ यद्यपि अंगद नीतिपरसहित कह्यो तथापि न कछु मनभायो ॥ तुलसिदास सुनि वचन क्रोध अति पावक जरत मनहुँ घृत नायो ॥२॥२७१॥ तैं मेरो मरम कछु नहिं पायो ॥ रे कपि कुटिल ढीठ पशु पाँवर मोहिं दास ज्यों डाटन आयो ॥ भ्राता कुंभकरण रिपुघातक सुत सुरपतिहि बंदि कर ल्यायो॥

निज भुजबल अति अतुल कहौं क्यों कंदुक लौं कैलास उठायो ॥ सुर नर असुर नाग खग किन्नर सकल करत मेरे मन भायो ॥ निशिचर रुचिर अहार मनुज तनु ताको यश खल मोहिं सुनायो॥कहा भयो वानर सहाय मिलि करि उपाय जो सिंधु बँधायो ॥ जो तरिहै भुज वीस घोरनिधि ऐसों को त्रिभुवनमें जायो।सुनि दशशीश वचन कपि कुंजर विहँसि ईशमायहि शिर नायो ॥ तुलसिदास लंकेश कालवश गनत न कोटि यतन समुझायो ॥ ३ ॥ २७२ ॥ सुनु खल मैं तोहिं बहुत बुझायो ॥ एते मान शठ भयो मोहवश जानतहूँ चाहत विष खायो ॥ जगत विदित अति वीर वालि बल जानत हौ किधौं अब बिसरायो ॥ विनु प्रयास सोउ हत्यौ एक शर शरणागतपर प्रेम देखायो ॥ पावहुँगे निजकरम जनित फल भले ठौर हठि वैर बढायो ॥ वानर भालु चपेट लपेटनि मारत तब ह्वैहै पछितायो॥ होहीं दशन तोरिबेलायक कहा करौं जो न आयसु पायो॥ अब रघुवीर बाण विदलित उर सोवहिगो रणभूमि सुहा-यो॥ अविचल राज्य विभीषणको सब जेहि रघुनाथ चरण चितलायो ॥ तुलसिदास यहि वचन कहि गर्जत चल्यो बालि नृपजायो ॥ ४ ॥ २७३ ॥ (राग केदारा) ॥ राम लषण उर लाय लये हैं ॥ भरे नीर राजीव नयन सब अँग परिताप तये हैं॥ कहत सशोक

बिलोकि बंधु मुख वचन प्रीति गथये हैं ॥ सेवक सखा भगति भायप गुण चाहत अब अथये हैं॥निज कीरति करतूति तात तुम सुकृती सकल जये हैं ॥ मैं तुम्ह बिनु तनु राखि लोक अपने अपलोक लये हैं ॥ मेरे पणकी लाज इहाँ लौं हठि प्रियप्राण दये हैं ॥ लागत साँगि बिभीषण ही परसी पर आपु भये हैं ॥ सुनि प्रभु वचन भालु कपिगण सुर सोच सुखाइ गये हैं ॥ तुलसी आइ पवनसुत बिधि मानो फिरि निरमये नये हैं ॥ ५ ॥ २७४ ॥ (राग सोरठ) ॥ मोपैं तौ न कछू ह्वै आई ॥ और निबाहि भलीविधि भायप चल्यौ लषण सो भाई ॥ पुर पितु मातु सकल सुख परिहरि जेहि वन बिपति बटाई॥ता सँगहों सुरलोक शोक तजि सक्यौं न प्राण पठाई ॥ जानत हों या उर कठोरते कुलिश कठिनता पाई ॥ सुमिरि सनेह सुमित्रासुतको दरकि दरार न जाई ॥ तात मरण तिय हरण गीध वध भुज दाहिनी गँवाई ॥ तुलसी मैं सब भाँति आपने कुलहि कालिमा लाई ॥ ६ ॥ २७५ ॥ मेरो सब पुरुषारथ थाको ॥ बिपति बटावन बंधु बाहु बिनु करौं भरोसो काको॥सुनु सुग्रीव साँचेहूँ मोपर फेर्यो वदन बिधाता॥ ऐसे समय समर संकट हों तज्यों लषणसो भ्राता ॥ गिरि कानन जैहैं शाखामृग हों पुनि अनुज सँघाती ॥ ह्वैहै कहा बिभीषणकी गति रही सोच भरि छाती ॥

तुलसी सुनि प्रभु वचन भालु कपि सकल विकल हिय हारे ॥ जाम्बवंत हनुमंत बोलि तब औसर जानि प्रचारे ॥ ७ ॥ २७६ ॥ (राग मारू) ॥ जो हौं अब अनुशासन पावौं ॥ तौ चंद्रमहिं निचोरि चैल ज्यों आनि सुधा शिर नावौं ॥ कै पातालदलौं व्यालावलि अमृत कुंड महि लावौं ॥ भेदि भुवन करि भानु बाहिरो तुरत राहु दै तावों ॥ विबुध वैद बरबश आनों धरि तौ प्रभु अनुग कहावौं॥ पटको मीच नीच मूषकज्यों सबहिको पापु बहावौं ॥ तुम्हरिहि कृपा प्रताप तिहारेहि नेकु विलंब न लावौं ॥ दीजे सोइ आयसु तुलसी प्रभु जेहि तुम्हरे मन भावौं ॥ ८ ॥ २७७ ॥ सुनि हनुमंत वचन रघुवीर ॥ सत्य समीर सुवन सब लायक कह्यो राम धरि धीर ॥ चाहिये वैद ईश आयसु धरि शीश कीश बलऐन॥आन्यो सदन सहित सोवत ही जौलों पलक परै न ॥ जियै कुँवर निशि मिलै मूलिका कीन्हीं विनय सुषेन॥उठ्यो कपीश सुमिरि सीतापति चल्यो सजीवनि लेन ॥कालनेमि दलि वेगि विलोक्यौं द्रोणाचल जिय जानि ॥ देखी दिव्यौषधी जहाँ तहँ जरी न परि पहिचानि ॥ लियो उठाय कुधर कंदुकज्यों वेग न जाइ बखानि॥ज्यों धाये गजराज उधारन सपदि सुदर्शनपानि॥आनि पहार जोहारे प्रभु कियो वैदराज उपचार॥करुणासिंधु बंधु भेंट्यो मिटि गयो सकल दुख-

भार ॥ मुदित भालु कपि कटक लह्यो जनु समर पयोनिधि पार ॥ बहुरि ठौरही राखि महीधर आयो पवनकुमार ॥ सेन सहित सेवकहि सराहत पुनि पुनि राम सुजान ॥ वरषि सुमन हिय परषि प्रशंसत विबुध बजाइ निसान ॥ तुलसिदास सुधि पाइ निशाचर भये मनहुँ बिनु प्रान ॥ परी भोरही रोर लंक गढ दई हाँक हनुमान ॥ ९ ॥ २७८ ॥ (राग केदारा) ॥ कौतुकही कपि कुधर लियो है ॥ चल्यो नभ नाइ माथ रघुनाथहि सरिस न वेग बियो है ॥ देख्यो जात जानि निशिचर बिनु फरसर हयो हियो है ॥ पर्यो कहि राम पवन राख्यो गिरि पुर तेहि तेज पियो है ॥ जाइ भरत भरि अंक भेंटि निज जीवन दान दियो है ॥ दुख लघु लषण मरम घायल सुनि सुख वडो कीश जियो है ॥ आयसु इतहि स्वामि संकट उत परत न कछू कियो है ॥ तुलसिदास विहर्यो अकास सो कैसेके जात सियो है ॥१०॥२७९॥ भरत शत्रुसुदन विलोकि कपि चकित भयो है ॥ राम लषण रण जीति अवध आये कैधों मोहिं भ्रम कैधों काहू कपट ठयो है ॥ प्रेम पुलकि पहिचानिकै पदपदुम नयो है ॥ कह्यो न परत जेहि भाँति दुहूँ भाइन सनेहसों सो उर लाय लयो है॥ समाचार कहि गहरु भो तेहि ताप तयो है ॥ कुधर सहित चढो विशिष वेगि पठवों सुनि हरिहि अगरब

गूढ उपयो है ॥ तीरते उतरि यश कह्यौ चहै गुणग-
णनि जयो है॥धन्य भरत धन्य भरत करत भयो मगन
मौन रह्यो मन अनुराग रयो है ॥ यह जलनिधि
खन्यो मथ्यो लँघ्यो बाँध्यौ अचयो है ॥ तुलसिदास
रघुवीर वंधु महिमाको सिंधु तरि को कवि पार गयो
है ॥ ११ ॥ २८० ॥ होतो नहिं जो जग जनम भर-
तको ॥ तौ कपि कहत कृपान धार मग चलि आच-
रत वरत को ॥ धीरज धरम धरणिधर धुरहुते गुरु धुर
धरणि धरत को ॥ सब सद्गुण सनमानि आनि उर
अघ औगुण निदरत को ॥ शिवहु न सुगम सनेह राम-
पद सुजननि सुलभ करत को ॥ सृजि निज यश सुर-
तरु तुलसी कहँ अभिमत फरनि फरत को ॥ १२ ॥
॥ २८१ ॥ सुनि रण घायल लषण परे हैं ॥ स्वामि-
काज संग्राम सुभटसों लोहे ललकारि लरे हैं ॥ सुवन
शोक संतोष सुमित्रहि रघुपति भगति वरे हैं ॥ छिन
छिन मात सुखात छिनहि छिन हुलसत होत हरे हैं॥
कपिसों कहति सुभाय अंबके अंबक अंबु भरे हैं ॥
रघुनंदन विनु बंधु कुअवसर यद्यपि धनु दुसरे हैं ॥
तात जाहु कपि सँग रिपुसूदन उठि कर जोरि खरे हैं ॥
प्रमुदित पुलकि पैत पूरे जनु विधिवश सुढर ढरे हैं ॥
अंब अनुज गति लखि पवनज भरतादि गलानि गरे
हैं ॥ तुलसी सब समुझाइ मातु तेहि समय सचेत करे

हैं ॥१३ ॥२८२॥ विनय सुनाइवी परिपाय ॥ कहौं कहा कपीश तुम्ह शुचि सुमति सुहृद सुमाय॥स्वामि संकट हेतुहौं जड जननि जनम्यो जाय ॥ समो पाइ कहाइ सेवक घट्यो तौन सहाय ॥ कहत शिथिल सनेह भो जनु धीर घायल घाय ॥ भरत गति लखि मातु सब रहि ज्यों गुडी विनु वाय ॥ भेंट कहि कहिवे कह्यो यो कठिन मानस माय ॥ लाल लोने लषण सहित सुल-लित लागत नाय॥देखि बंधु सनेह अब सुभाउ लषण कुठाय ॥ तपत तुलसी तरनि त्रासकु येहि नये तिहुँ ताय ॥ १४ ॥ २८३ ॥ हृदय घाउ मेरे पीर रघुवीरै ॥ पाइ सजीवन जागि कहत यों प्रेम पुलकि बिसरे शरीरै ॥ मोहिकहा बूझत पुनि पुनि जैसे पाठ अरथ चरचा कीरै ॥ शोभा सुख क्षति लाहु भूपकहँ केवल कांति मोल हीरै तुलसी सुनि सौमित्र वचन सब धरि न सकत धरो धीरै ॥ उपमा राम लषणकी प्रीतिकी क्यों दीजै पीरै नीरै ॥ १५ ॥२८४॥ (राग कान्हरा) ॥ राजत राम काम शत सुंदर ॥ रिपु रण जीति अनुज सँग शोभित फेरत चाप विशिषवन रुह कर ॥ श्याम शरीर रुचिर श्रमसीकर शोणित कण विच बीच मनोहर ॥ जनु खद्योत निकर हरहित गण भ्राजत मर्कत शैल शिखर पर ॥ घायल वीर विराजत चहुँ दिशि हरषित सकल ऋच्छ अरु वन

चर ॥ कुसुमित किंशुक तरु समूह महँ तरुण तमाल बिशाल विटपवर ॥ राजिवनयन बिलोकि कृपा करि किये अभय मुनि नाग बिबुध नर ॥ तुलसिदास यह रूप अनूपम हृदि सरोज बसि दुसह विपतिहर॥१६॥ ॥ २८५ ॥ (राग आसावरी) ॥ अवधि आजु किधौं औरो दिन ह्वैहैं ॥ चढि धवरहर विलोकि दक्षिण दिशि बूझधौं पथिक कहाँते आये वै हैं ॥ बहुरि विचारि हारि हिय सोचत पुलकि गात लागे लोचन च्वै हैं ॥ निजबासरनि बरष पुरवैगो विधि मेरे तहाँ करम कठिन कृत कैहैं ॥ बन रघुबीर मातु गृह जीवति निलज प्राण सुनि सुनि सुख स्वैहैं ॥ तुलसिदास मोसी कठोर चित कुलिश शालभंजिको न ह्वैहैं ॥ १७ ॥ २८६ ॥ आली अब राम लषण कित ह्वैहैं ॥ चित्रकूट तज्यो तबते न लही सुधि बधू समेत कुशल सुत द्वैहैं ॥ बारि बयारि विषम हिम आतप सहि बिनु बसन भूमितल स्वैहैं ॥ कंद मूल फल फूल अशनबन भोजन समय मिलत कैसे खैहैं ॥ जिन्हहिं विलोकि सोचि हैं लता द्रुम खगमृग मुनि लोचन जल च्वैहैं ॥ तुलसिदास तिन्हकी जननी हों मोसी निठुर चित औरो कहुँ ह्वैहैं ॥ १८ ॥२८७॥ (राग सोरठा) बैठी शकुन मनावती माता ॥ कब ऐहैं मेरे बाल कुशल घर कहहु काग फुरि बाता ॥ दूधभा-तकी दोनी देहों सोने चोंच मढैहों ॥ जब सिय सहित

विलोकि नयन भरि राम लषण उर लैहौं ॥ अवधि समीप जानि जननी जिय अति आतुर अकुलानी ॥ गणक बोलाइ पाँय परि पूछति प्रेम मगन मृदुबानी ॥ तेहि अवसर कोउ भरत निकटते समाचार लै आयो॥ प्रभु आगमन सुनत तुलसी मनो मीन मरत जल पायो ॥ १९ ॥ २८८ ॥ (राग गौरी) ॥ क्षेमकरी बलि बोलि सुबानी ॥ कुशल क्षेम सिय राम लषण कब ऐहैं अंब अवध रजधानी ॥ शशिमुखि कुंकुम वरणि सुलोचनि मोचनि सोचतु वेद बखानी ॥ देवि दया करि देहि दरशफल जोरि पानि विनवहिं सब रानी ॥ सुनि सनेहमय वचन निकट ह्वै मंजुल मंडलकै मडरानी ॥ शुभ मंगल आनंद गगन धुनि अकनि अकनि उर जरनि जुडानी ॥ फरकन लगे सुअंग विदिशि दिशि मन प्रसन्न दुख दशा सिरानी ॥ करहिं प्रणाम सप्रेम पुलकि तनु मानि विविध बलि शकुन सयानी ॥ तेहि अवसर हनुमान भरतसों कही सकल कल्याण कहानी ॥ तुलसिदास सोइ चाह सजीवनि विषम वियोग व्यथा बडि भानी ॥२०॥२८९॥ (राग धनाश्री) ॥ सुनियत सागरसेतु बँधायो॥कौशलपतिकी कुशल सकल सुधि कोउ इक दूत भरतपहँ ल्यायो॥बध्यो विराध त्रिशिर खर दूषण शूर्पणखाको रूप नशायो ॥ हति कबंध बल अंध वालि दलि कृपा-

सिंधु सुग्रीव बसायो ॥ शरणागत अपनाइ विभीषण रावण सकुल समूल बहायो ॥ विबुध समाज निवाजि बाँह दै बंदिछोरि वर विरद कहायो ॥ एक एकसों समाचार सुनि नगरलोग जहँ तहँ सब धायो ॥ घन धुनि अकनि मुदित मयूर ज्यों बूडत जलधि पार सो पायो॥ अवधि आजु ये कहत परस्पर वेगि विमान निकट पुर आयो॥उतरि अनुज अनुगनि समेत प्रभु गुरु द्विज गण चरणनि शिर नायो॥जो जेहि योग राम तेहि विधि मिलि सबके मन अतिमोद बढायो ॥ भटी मातु भरत भरतानुज क्या कहों प्रेम अमित अनुमायो ॥ तेहि दिन मुनिवृंद अनंदित तुरत तिलकको साज सजायो ॥ महाराज रघुवंश नाथको सादर तुलसिदास गुण गायो ॥ २१ ॥ २९० ॥ (राग जयतश्री) रण जीति राम राउ आये ॥ सानुज सदल ससीय कुशल आजु अवध आनंद बधाये ॥ अरिपुर जारि उजारि मारि रिपु विबुध सुवास बसाये ॥ धरणि धेनु महिदेव साधु सबके सब सींच नशाये ॥ दई लंक थिर थपे बिभीषण वचन पियूष पिआये ॥ सुधा सींचि कपि कृपा नगर नर नारि निहारि जिआये ॥ मिलि गुरु बंधु मातु जन परिजन भये सकल मन भाये ॥ दरश हरष दशचारि वरषके दुख पलमें बिसराये॥बोलि सचिव शुचि सोधि सुदिन मुनि मंगल साज सजाये ॥ महाराज अभिषेकवरषि सुर

सुमन निसान बजाये ॥ लैलै भेंट नृप अहिप लोकपति अति सनेह शिर नाये ॥ पूजि प्रीति पहिचानि राम आदरे अधिक अपनाये ॥ दान मान सनमानि जानि रुचि याचक जन पहिराये ॥ गये शोक सर सूखि मोद सरिता समुद्र महिराये ॥ प्रभु प्रताप रवि अहित अमंगल अघ उलूक तम ताये ॥ किये विशोक हित कोक कोकनद लोक सुयश शुभ छाये ॥ रामराज कुलिकाज सुमंगल सबनि सबै सुख पाये ॥ देहिं अशीश भूमिसुर प्रमुदित प्रजा प्रमोद बढाये । आश्रम धरम विभाग वेदपथ पावन लोग चलाये ॥ धर्म निरत सिय राम चरण रत मनहुँ राम सिय जाये ॥ कामधेनु महि विटप कामतरु कोउ विधि वाम न लाये ॥ ते ते अब तुलसी तेउ जिन्ह हित सहित राम गुण गाये ॥ २२ ॥ २९१ ॥ (राग टोडी) आजु अवध आनंद बधावन रिपु रण जीति राम आये ॥ सजि सुविमान निशान बजावत मुदित देव देखन धाये ॥ घर घर चारु चौक चंदन मणि मंगल कलश सबनि साजे ॥ ध्वज पताक तोरण वितान वर विविध भाँति बाजन बाजे । राम तिलक सुनि द्वीप द्वीपके नृप आए उपहार लिये ॥ सीय सहित आसीन सिंहासन निरखि जोहारत हरष हिये ॥ मंगल गान वेद धुनि जयधुनि मुनि अशीश धुनि भुवन भरे ॥ बरषि सुमन सुर सिद्धि

प्रशंसत सबके सब संताप हरे ॥ राम राज भइ काम-
धेनु महि सुख संपदा लोक छाये॥जनम जनम जानकी-
नाथके गुणगण तुलसिदास गाये ॥ २३ ॥ २९२ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां लंकाकांडः समाप्तः।

अथ उत्तरकाण्डप्रारंभः।

(राग सोरठा) ॥ बनते आइके राजाराम भये
भुवाल ॥ मुदित चौदह भुवन सब सुख सुखी सब
सबकाल ॥ मिटे कलुष कलेश कुलषन कपट कुपथ
कुचाल ॥ गये दारिद दोष दारुण दंभ दुरित दुकाल ॥
काम धुक महि काम तरु तरु उपल मणिगण लाल ॥
नारि नर तेहि समय सुकृती भरे भाग सुभाल ॥ वर्ण
आश्रम धरमरत मन वचन वेष मराल ॥ राम सिय
सेवक सनेही साधु सुमुख रसाल ॥ राम राज समाज
वर्णत सिद्ध सुर दिगपाल ॥ सुमिरि सो तुलसी अजहुँ
हिय हरषत होत विशाल ॥१॥२९३॥ (राग ललित)
भोर जानकीजीवन जागे॥सूत मागध प्रवीण वेणु वीणा
धुनि द्वारे गायक सरसराग रागे ॥ श्यामल सलोने
गात आलशवश जभाँत प्रिया प्रेमरस पागे ॥ उनींदे
लोचन चारु मुख सुखमा शृँगार हेरि हारे मार भूरि
भागे ॥ सहस सुहाइ छवि उपमा न लहै कवि मुदित
विलोकन लागे ॥ तुलसीदास निशि वासर अनूप रूप

रहत प्रेम अनुरागे ॥ २ ॥ २९४ ॥ (राग कल्याण)॥ रघुपति राजीवनयन शोभा तनु कोटिमयन करुणारस अयन चयन रूप भूप माई ॥ देखो सखि अतुलित छबि संत कज कानन रवि गावत सकल कीरति कवि कोविद समुदाई ॥ मज्जन करि सरयूतीर ठाढे रघुवंश-वीर सेवत पद कमल धीर निरमल चित लाई ॥ ब्रह्म-मंडली मुनींद्र वृंद मध्य इंदुवदन राजत सुखसदन लोक लोचन सुखदाई ॥ बिथुरित शिररुह वरूथ कुंचित विच सुमन यूथ मणियुत शिशुफणि अनीक शशि समीप आई ॥ जनु सभीत दै अकोर राखे युग रुचिर मोर कुंडल छबि निरखि चोर सकुचत अधिकाई ॥ ललित भ्रुकुटि तिलक भाल चिबुक अधर द्विज रसाल हास चारु तर कपाल नासिका सुहाई॥मधुकर युग पंकज विच शुकविलोकि नीरजपर लरत मधुप अवली मानो बीच कियो जाई॥सुंदर पटपीत विशद भ्राजत वनमाल उरसि तुलसिका प्रसून रचित विविध विधि बनाई ॥ तरु तमाल अधबिच जनु त्रिविध कीरपाँति रुचिर हेमजाल अंतर परि ताते न उडाई ॥ शंकर हृदि पुण्डरीक निव-सत हरि चंचरीक निर्व्यलीक मानस गृह संतत रहे छाई॥ अतिशय आनंदमूल तुलसिदास सानुकूल हरण सकल शूल अवध मंडन रघुराई ॥३ ॥२९५ ॥ राजत रघुवीर धीरं भंजन भव भीर पीर हरण सकल सरयुतीर निरखहु

लखि सोहैं॥संग अनुज मनुज निकर दनुज बल विभंग करन अंग अंग छबि अनंग अगणित मोहैं ॥ सुखमा सुख शील अयन नयन निरखि निरखि नील कुंचिल कच कुंडल कल नासिक चित पोहैं ॥ मनहुँ इंदु बिंब मध्य कंजमीन खंजनलखि मधुप मकर कीर आए तकि निज गोहैं ॥ ललित गंड मंडल सुविशाल भाल तिलक झलक मंजुवर मयंक अंक रुचिर बंक भौंहैं ॥ अरुण अधर मधुर बोल दशन दमक दामिनि द्युति हुलसति हिय हँसनि चारु चितवनि तिरछौंहैं ॥ कंबु कंठभुज विशाल उरसि तरुण तुलसिमाल मंजुल मुकुतावलि युत जागति जिय जोहैं ॥ जनु कलिंदनंदिनि मणि इंद्रनील शिखर परसि धसति लसति हंससे निसंकुल अधिको हैं ॥ दिव्य तर दुकूल भव्य नव्य रुचिर चंपक चयचंचला कलाप कनक निकरअलि किधौंहैं ॥ सज्जन चख झख निकेत भूषण मणि गण समेत रूप जलधि वपुष लेत मन गयंद बोहैं ॥ अकनि वचन चातुरी तुरीय पेखि प्रेम मगन पगन परत इत उत सब चकित तेहि समोहैं ॥ तुलसिदास यह सुधि नहिं कौनकी कहाँते आई कौन काज काके ढिग कौन ठाउँ कोहैं ॥४॥२९६॥ देखु सखि आजु रघुनाथ शोभा बनी ॥ नील नीरद वरण वपुष भवना भरण पीत अंबर धरण द्युति दामिनी ॥ सरयु मज्जन किये संग

सज्जन लिये हेतु जनपर हिये कृपा कोमल घनी॥सजनि आवत भवन मत्त गजवर गवन नृपति मृगपति ठवनि कवन कौशलधनी॥ सघन चिक्कन कुटिल चिकुर विलु-लित मृदुल करनि विवरत चतुर सरस सुखमा जनी॥ ललित अहि शिशु निकर मनहुँ शशिसन समर लरे धरहरि करत रुचिर जनु युग फनी ॥ भाल भ्राजत तिलक जलज लोचन पलक चारु भ्रू नासिका सुभग शुक आननी ॥ चिबुक सुंदर अधर अरुण द्विज द्युति सुघर वचन गंभीर मृदुहास भव भाननी ॥श्रवण कुंडल विमल गंड मंडित चपल कलित कल कांति अति भाँति कछु तिन्हतनी ॥ युगल कुचन मकर मनहुँ विधुकर मधुर पियत पहिचानि करि सिंधुकीरति भनी॥ उरसि राजत पदिक ज्योति रचना अधिक माल सुविशाल चहुँ पास बनि गज मनी॥श्याम नव जलद पर निरखि दिनकर कला कौतुकी मनहुँ रही घेरि उडूगण अनी ॥ मंदिरनि पर खरी नारि आनँद भरी निरखि वरषहिं विपुल कुसुम कुंकुम कनी ॥ दास तु-लसी राम परम करुणाधाम काम शतकोटि मद हरत छबि आपनी ॥ ५ ॥ २९७ ॥ आजु रघुवीर छबिजानि नहिं कछु कही ॥ सुभग सिंहासनासीन सीतारमण भुवन अभिराम बहु काम शोभा सही ॥ चारु चामर व्यजन छत्र मणि गण विपुल दाम मुकुतावली जोति

जगमग रही ॥ मनहुँ राकेश संग हंस उडुगण वरहि मिलन आये हृदय जानि निज नाथही ॥ मुकुट सुंदर सिरसि भाल वर तिलक भ्रुकुटिल कच कुंडलनि परम आभा लही ॥ मनहुँ हर डर युगुल मार ध्वजके मकर लागि श्रवणनि करत मेरुकी बतकही ॥ अरुण राजीव दल नयन करुणाअयन वदन सुखमासदन हास त्रय तापही॥ विविध कंकण हार गजमणि माल मनहुँ बग-पाँति युग मिलि चली जल दही॥ पीत निर्मल चैल मनहुँ मरकत शैल पृथुल दामिनी रही छाइ तजि सहजही ॥ ललित शायक चाप पीन भुज बल अतुल मनुज तनु दनुजबनु दहन मंडन मही ॥ जासु गुण रूप नहिं कलित निर्गुण सगुण शंभु सनकादि शुक भक्ति दृढ करि गही ॥ दास तुलसी राम चरण पंकज सदा वचन मन कर्म चहै प्रीति नित निर्वही ॥ ६ ॥२९८ राम राज राजि मौलि मुनिवर मनु हरण शरण ला-यक सुखदायक रघुनायक देखो री ॥ लोक लोचना-भिराम नील मणि तमाल श्याम रूप शीलधाम अंग-छवि अनंगकोरी ॥ भ्राजत शिर मुकुट पुरट निर्मित मणि रचित चारु कुंचित कच रुचिर परम शोभा नहिं थोरी ॥ मनहुँ चंचरीक पुंज कंज वृन्द प्रीति लागि गुंजत कलगान तान दिनमणि रिझयोरी॥ अरुण कंज दल विशाल लोचन भ्रू तिलक भाल मंडित

श्रुति कुंडल वर सुंदर तर जोरी॥ मनहुँ संबरारि मारि ललित मकर युग विचारि दीन्हे शशि कहँ पुरारि भ्राजत दुहुँ ओरी ॥ सुंदर नासा कपोल चिबुक अधर अरुण बोल मधुर दशन राजत जब चितवत मुखमोरी॥ कंज कोश भीतर जनु कंज राग शिखर निकर रुचिर रचित विधि विचित्र तडित रंग बोरी ॥ कंबु कंठ उर विशाल तुलसीका नवीन माल मधुकर वर वास बिंब उपमा सुनु सोरी ॥ जनु कलिंदजात नील शैलते धसी समीप कंद वृंद वरषत छबि मधुर घोरि घोरी॥निर्मल अति पीत चैल दामिनि जनु जलद नील राखी निज शोभाहित विपुल विधि निहोरी ॥ नयनन्हिको फल विशेषि ब्रह्म अगुण सगुण वेष निरखहु तजि पलक सफल जीवन लै खोरी ॥ सुंदर सीता समेत शोभित करुणानिकेत सेवक सुख देत लेत चितवत चित चोरी॥ वर्णत यह अमित रूप थकित निगम नाग भूप तुल-सिदास छबि विलोकि शारद भइ भोरी ॥७॥२११॥

(राग केदारा) ॥ सखि रघुनाथ रूप निहारु ॥ शरद विधु रवि सुवन मनसिज मान भंजनिहारु॥श्याम सुभग शरीर जनु मन काम पूर निहारु ॥ चारु चंदन मनहुँ मरकत शिखर लसत निहारु॥रुचिर उर उपवीत राजत पदिक गज मणि हारु ॥ मनहुँ सुरधेनु नखतगण बिच

तिमिर गंजनिहारु॥ विमल पीत दुकूल दामिनि द्युति विनिंदनिहारु॥वदन सुखमासदन शोभित सदन मोहनिहारु॥ सकल अंग अनूप नहिं कोउ सुकवि वरणनिहारु ॥ दास तुलसी निरखतहि सुख लहत निरखनि-हारु॥ ८॥ ३००॥ सखि रघुबीर मुख छबि देखु॥ चित्त भीत सुप्रीति रंग सुरूपता अवरेखु॥ नयन सुखमा निरखि नागरि सफल जीवन लेखु॥ मनहुँ विधि युग जलज विरचे शशिसुपूरण मेखु ॥ भ्रुकुटि भाल विशाल राजत रुचिरकुंकुम रेखु॥ भ्रमर द्वै रवि किरणि ल्याये करन जनु उनमेखु॥सुमुखि केश सुदेश सुंदर सुमन संयुत पेखु॥मनहुँ उडुगण वाह आए मिलन तम तजि द्वेषु॥ श्रवण कुंडल मनहुँ गुरु कवि करत वाद विशेषु ॥ नासिका द्विज अधर दनु रह्यो मदनु करि बहु वेषु॥ रूप वरणि न सकत नारद शंभु शारद शेषु॥ कहै तुलसीदास क्यों मतिमंद सकल नरेशु ॥ ९॥ ३०१॥ (राग जयतश्री) देखो राघो वदन विराजत चारु॥ जात न वरणि विलोकतहि सुख मुख किधौं छवि वर नारि शृंगारु॥रुचिर चिबुक रद ज्योति अनूपम अधर अरुण सितहास निहारु॥ मनो शशि-कर बसेउ चहत कमल महँ प्रगटत दुरत न बनत विचारु॥ नासिक सुभग मनहुँ शुक सुंदर चितवत चकित अचरज अपारु॥कल कपोल मृदु बोल मनो-

हर रीझिचित चतुर अपनपौ वारु॥नयनसरोज कुटिल कच कुंडल भ्रुकुटि सुभाल तिलक शोभा सारु॥ मनहुँ केतुके मकर चाप शर गयो बिसारि भयो मोहित मारु ॥निगम शेष शारद शुक शंकर वर्णत रूप न पावत पारु ॥ तुलसिदास कहै कहौधौं कौन विधि अति लघुमति जड कूर गँवारु ॥ १० ॥ ३०२ ॥ (राग ललित) आज रघुपति मुख देखत लागत सुख सेवक सुरूष शोभा शरद शशि सिहाई ॥ दशन वसन लाल विशद हास रसालमानो हिमकर कर राखे राजीव मनाई ॥ अरुण नैन विशाल ललित भ्रुकुटि भाल तिलक चारु कपोल चिबुक नासा सुहाई॥बिथुरे कुटिल कच मानहुँ मधु लालच अलिनलिन युगल ऊपर रहे लोभाई॥ श्रवण सुंदर सम कुंडल कल युगम तुलसिदास अनूप उपमा कही न जाई॥मानो मरकत सीप सुंदर शशि समीप कनक मकरयुत विधि विरची बनाई ॥ ११ ॥ ३०३ ॥ (राग भैरव) प्रातकाल रघुवीर वदन छबि चितै चतुर चित मेरे ॥ होहिं विवेक विलोचन निर्मल सुफल सुशीतल तेरे॥भाल विशाल त्रिकट भ्रुकुटी बिच तिलक रेख रुचिराजै ॥ मनहुँ मर्दन तम तकि मरकत धनु युगल कनक शर साजै॥रुचिर पलक लोचन युग तारक श्याम अरुण अति कोये ॥ जनु अलिनलिन कोश महँ बंधुक सुमन सयन सजि सोये॥

विलुलित ललित कपोलनिपर कच मेचक कुटिल सुहाये ॥ मनो विधु महँ वनरुह विलोकि अलि विपुल सकौतुक आये॥शोभित श्रवण कनक कुंडल कल लंबित विधि भुज मूले॥मनहुँ केकि तकि गहन चहत युग उरग इंदु प्रतिकूले॥ अधर अरुण तर दशन पाँति वर मधुर मनोहरहासा॥ मनहुँ सोन सरसिज महँ कुलिशनि तडित सहित कृत वासा॥चारु चिबुक शुकतुंड विनिंदक सुभग सुउन्नत नासा ॥ तुलसिदास छबिधाम राममुख सुखद शमन भवत्रासा ॥१२॥२०४॥ (राग केदारा)॥ सुमिरत श्रीरघुवीरकी बाहैं ॥ होत सुगम भव उदधि अगम अति कोउ लाँघत कोउ उतरत थाहैं ॥ सुंदर श्याम शरीर शैलते धसि जनु युग यमुना अवगाहैं ॥ असित अमल जल बल परिपूरण जनु जनमी शृँगार सविता हैं ॥ धारैं बाण कूल धनु भूषण जलचर भँवर सुभग सब घाहैं ॥ विलसति वीचि विजय विरदावलि कर सरोज सोहत सुखमाहैं ॥ सकल भुवन मंगल मंदिरके द्वार विशाल सुहाई सोहैं ॥ जे पूजी कौशिक मख ऋषयनि जनक गणप शंकर गिरिजाहैं॥ भव धनु दलि जानकी विवाही भये विहाल नृपाल त्रपाहैं ॥ परशु पाणि जिन्ह किये महा मुनि जे चितये कबहूँ न कृपाहैं ॥ यातुधान तिय जानि वियोगिनि दुखइ सीय सुनाइ कुचाहैं ॥

जिन्ह रिपु मारि सुरारि नारि तेइ शीश उघारि दिवाईधाहैं ॥ दशमुख विवश त्रिलोक लोकपति विकल बिना ये नाक चनाहे॥सुवशबसे गावत जिन्हके यश अमर नाग नर सुमुखि सनाहैं॥ जे भुज वेदपुराण शेष सुख शारद सहित सनेह सराहैं ॥ कल्पलताहुकि कल्पलतावर कामदुहाहुकि काम दुहाहैं॥ शरणागत आरत प्रणतनिको दैदै अभयपद और निबाहैं॥ करि आई करिहैं करतीहैं तुलसिदास दासनिपर छाहैं॥१३॥ ॥ ३०५ ॥ (राग भैरव)रामचंद्र करकंज कामतरु वामदेव हितकारी ॥ सियसनेह बर बेलि बलित वर प्रेमबंधु बरवारी ॥ मंजुल मंगल मूल मूल तनु करज मनोहर शाखा॥रोमपरण नख सुमन सुफल सब काल सुजन अभिलाषा॥अविचल अमल अनामय अविरल ललित रहित छल छाया॥शमन सकल संताप पापरुज मोह मान मद माया॥ सेवहिं शुचि मुनि भृंगविहगमन मुदित मनोरथ पाये ॥ सुमिरत हिय हुलसति तुलसी अनुराग उमँगि गुणगाये ॥ १४ ॥३०६ ॥ राम चरण अभिरामकामप्रद तीरथ राज विराजै ॥ शंकर हृदय भक्ति भूतलपर प्रेम अक्षयवट भ्राजै ॥ श्यामवरण पद पीठ अरुण तल लसति विशद नख श्रेणी ॥ जनु रविसुता शारदा सुरसरि मिलि चलि ललित त्रिवेणी॥ अंकुश कुलिश कमलध्वज सुंदर भवँर तरंग विलासा॥

मज्जहिं सुर सज्जन मुनिजन मन मुदित मनोहर बाधा॥ बिनु विराग जप याग योग व्रत बिनु तप बिनु तनु त्यागे॥ सब सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभु पद प्रयाग अनुरागे ॥ ॥१६॥३०७॥ (राग बिलावल) रघुबर रूप विलोकु नेकु मन॥सकल लोक लोचन सुखदायक नखशिख सुभग श्याम सुन्दर तन ॥ चारु चरण तल चिह्न चारि फल चारि देत पर चारि जानि जन ॥ राजत नख जनु कमल दलनिपर अरुण प्रभा रंजित तुषार कन ॥ जंघा जानु जानु केदलि उर कटि किंकिणि पटपीत सुहा- वन ॥ रुचिर निषंग नाभि रोमावलि त्रिवलि वलित उपमा कछु आवन ॥ भृगुपद चिह्न पदिक उर शोभित मुकुतमाल कुंकुम अनुलेपन ॥ मनहुँ परस्पर मिलि पंकज रवि प्रगट्यो निज अनुराग सुयश घन ॥ बाहु विशाल ललित शायक धनु कर कंकण केयूर महा- धन ॥ विमल दुकूल दलन दामिनि द्युति यज्ञोपवीत लसत अति पावन ॥ कंबुग्रीव छवि सींव चिबुक द्विज अधर कपोल बोल भय मोचन ॥ नासिक सुभग कृपा- परिपूरण तरुण अरुण राजीव विलोचन॥कुटिल भ्रुकुटि- वर भाल तिलक रुचि शुक सुंदरता श्रवण विभूषण ॥ मनहुँ मारि मनसिज पुरारि दिय शशिहि चाप शर मकर अनूपम ॥ कुंचित कच कंचन किरीट शिर जटित ज्योतिमय बहु विधि मणिगण ॥ तुलसिदास रविकुल

रवि छबि कवि कहि न सकत शुक शंभु सहसफण ॥ ॥ १६ ॥ २०८ ॥ (राग कान्हरा) देखो रघुपति छवि अतुलित अति ॥ जनु तिलोक सुखमा सकेलि विधि राखि रुचिर अँग अंगनि प्रति ॥ पद्मराग रुचि मृदुपद तल ध्वज अंकुश कुलिश कमल यहि सूरति॥ रही आनि चहुँ विधि भगनिकी जनु अनुराग भरी अंतरगति ॥ सकल सुचिह्न सुजन सुखदायक ऊरधरेख विशेष बिराजति ॥ मनहुँ भानु मंडलहि सवाँरत धरचो सूतविधि सुत विचित्र मति ॥ सुभग अंगुष्ठ अंगुली अविरल कछुक अरुणनख ज्योति जगमगति ॥ चरण पीठ उन्नत नत पालक गूढ गुलफ जंघा कदली जति॥ काम तूण तल सरिस जानु युग उरु करि कर करभहि विलखावति ॥ रसना रचित रतन चामीकर पीत वसन कटिकसे सरवसति ॥ नाभि सरसि त्रिवली निसेनिका रोमराजि सैवल छबि पावति ॥ उर मुक्तामणि माल मनोहर मनहुँ हंस अवली उडि आवति ॥ हृदय पदिक भृगुचरण चिह्न वर बाहु विशाल जानु लगि पहुँचति॥ कल केयूर पूर कंचन मणि पहुँची मंजु कंजकर सोहति॥ सुजव सुरेख सुनख अंगुलियुत सुंदर पाणि मुद्रिका राजति ॥ अँगुलि त्राण कमान बानछबि सुरनि सुखद असुरनि उर शालति ॥ श्याम शरीर सुचंदन चर्चित पीत दुकूल अधिक छबि छाजति ॥ नील जलद पर

निरखि चंद्रिका डुरनि त्यागि दामिनि जनु दमकति॥ यज्ञापवीत पुनीत विराजत गूढजत्रुवनि पीन असंतति॥ सुगढ पृष्ठ उन्नत कि काठिका कंबु कंठ शोभा मन मानति ॥ शरद समय सरसीरुह निंदक मुख सुखमा कछु कहत नहिं बनति ॥ निरखतहीं नयननि निरुपम सुख रवि सुत मदन सोम डुति निदरति ॥ अरुण अधर दुजपाँति अनूपम ललित हँसनि जनु मन आकरपति ॥ विद्रुम रचित विमान मध्य जनु सुरमंडली सुमन चय वरषति ॥ मंजुल चिबुक मनोरम हनुथल कल कपोल नासा मन मोहति ॥ पंकज मान विमोचन लोचन चितवनि चारु अमृत जल सींचति ॥ केश सुदेशगँभीर वचनपर श्रुति कुंडल डोलनि जिय जागति ॥ लखि नव नील पयोद रसित सुनि रुचिर मोर जोरी जनु नाचति ॥ भौंहैं बंक मयंक अंक रुचि कुंकुमरेख भाल भलि भ्राजति ॥ सिरसि हेम हीरक माणिकमय मुकुट प्रभा सब भुवन प्रकाशति ॥ वरणत रूप पार नहिं पावत निगम शेष शुक शंकर भारति॥तुलसिदास केहि विधि बखानि कहै यह मन वचन अगोचर मूरति ॥ ॥ १७ ॥ २०३॥ (राग मलार) आली री राघोके रुचिर हिंडोलना झूलन जैये ॥ टेक ॥ फटिक भीति सुचारु चहुँ दिशि मंजु मणिमय पौरि ॥ गच काच लखि मनु नाच सखि जनु पाँचसर सुफसौरि॥ तोरण

वितान पताक चामर ध्वज सुमन फल घोरि ॥ प्रति छाँह छवि कवि साखि दै प्रति शोकहै शुर होरि ॥१॥ सदन जयके खंभसे रचे खंभ सरल विशाल ॥ पाटीर पँटि विचित्र भँवरा वलित वेलना लाल ॥ डांडीकनक कुंकुम तिलक रेखैंसि मनसिज भाल ॥ पटुली पदि करति हृदय जनु कलधौंत कोमल माल ॥ २ ॥ उनये सघन घनघोर मृदु झारि सुखद सावन लाग ॥ वग-पाँति सुर धनु दमकदामिनि हरित भूमि विभाग ॥ दादुर मुदित भरे सरिस सरमहि उमंग जनु अनुराग॥ पिक मोर मधुप चकोर चातक सोर उपवन वाग ॥ ॥ ३ ॥ सो समौ देखि सुहावनो नवसत सँवारि सँवारि ॥ गुण रूप यौवन सींव सुंदरि चलीं झुंडनि झारि ॥ हिंडोल साल विलोकि अंचल पसारि पसारि ॥ लागीं अशीशन राम सीतहि सुख समाजु निहारि ॥ ४ ॥ झूलहिं झुलावहिं ओसरिन्ह गावहिं सुहव गौड मलार॥ मंजीर नूपुर वलय धुनि जनु काम करतल तार ॥ अति मचत श्रम कण मुखनि विथुरे चिकुर विलुलित हार ॥ तम तडित उडुगण अरुण विधु जनु करत व्योम विहार ॥५॥ हिय हरपि वरपि प्रसून निरखति विबुध तिय तृण तूरि ॥ आनंद जललोचन मुदित मन पुल-कतनु भरिपूरि ॥ सब कहहिं अविचल राज नित क-ल्याण मंगल भूरि ॥चिरजियो जानकिनाथ जग तुलसी

सजीवनमूरि ॥ १८ ॥ ३१० ॥ (राग सूहो) कोशल पुरी सुहावनि मारि सरयूके तीर ॥ भूपावलि मुकुटमणि नृपति जहाँ रघुवीर ॥ पुरनर नारि चतुर अति धरम निपुण रत नीति ॥ सहज सुभाय सकल उर श्रीरघुवर पद प्रीति ॥ (छंद) श्रीरामपद जलजात सबके प्रीति अविरल पावनी ॥ जो चहत शुक सनकादिक शंभु विरंचि मुनि मन भावनी ॥ सबहीके सुंदर मंदिराजिर राउ रंक न लखि परै ॥ नाकेश दुर्लभ भोगलोग करहिं न मन विषयनि हरे ॥ १ ॥ सब ऋतु सुखप्रद सोपुरी पावस अति कमनीय ॥ निरखत मनहिं हरत हठि हरित अवनि रमनीय॥बीर बहूटि विराजहिं दादुर धुनि चहुँ ओर ॥ मधुर गरजि घन वरषहिं सुनि सुनि बोलत मोर ॥ (छन्द) बोलत जो चातक मोर कोकिल कीर पारावत घने ॥ खग विपुल पाले बालकनि कूजत उडात सुहावने ॥ बक राजि राजति गगन हरि धनु तडित दिशि दिशि सोहहीं॥नभ नगरकी शोभा अतुल अवलोकि मुनिमन मोहहीं॥२॥ गृह गृह रचे हिंडोलना महि गच काच सुढार॥ चित्र विचित्र चहूँ दिशि परदा फटिक पगार ॥ सरल विशाल विराजहिं विद्रुम खंं सुजोर ॥ चारु पाटिपटि पुरटकी झरकत मरकत मोर॥(छंद) मरकत भँवर डाँडी कनक मणि जटित द्युति जगमग रही ॥ पटुली मनहुँ विधि निपुणता

निज प्रगट करि राखी सही ॥ बहुरंग लसत वितान मुक्ता दाम सहित मनोहरा ॥ नव सुमन माल सुगंध लोभे मंजु गुंजत मधुकरा ॥ ३ ॥ झुंड झुंड झूलत चलीं गजगामिनि बर नारि॥कुसुँभि चीर तनु सोहहिं भूषण विविध सँवारि॥ पिकबयनी मृगलोचनी शारद शशि सम तुंड ॥ राम सुयस सब गावहिं सुस्वर सुसारंग गुंड ॥ (छंद) सारंग गुंड मलार सोरठ सुहव सुघर निवाजहीं ॥ बहु भाँति तान तरंग सुनि गंधर्व किन्नर लाजहीं ॥ अति मचत छूटत कुटिल कच छबि अधिक सुंदरि पावहीं॥पट उडत भूषण खसत हँसि हँसि अपर सखी झुलावहीं ॥ ४ ॥ फिरि फिरि झूलहिं भामिनि अपनी अपनी वार ॥ विबुध विमान थकित भये देखत चरित अपार ॥ बरपि सुमन हरपहिं उर वरणहिं हरि गुण गाथ॥ पुनि पुनि प्रभुहि प्रशंसहिं जय जय जानकिनाथ ॥ (छंद) जय जानकीपति विशद कीरति सकल लोक मलापहा ॥ सुरवधू देहिं अशीश चिरजीवहु राम सुख संपति महा ॥ पावस समय कछु अवध वर्णत सुनि अघौघ नशावहीं॥रघुवीरके गुण गण नवल नित दास तुलसी गावहीं ॥ ५ ॥ १९ ॥ २११ ॥ (राग आसावरी)॥ साँझ समै रघुवीर पुरीकी शोभा आजुबनी ॥ ललित दीपमालिका विलोकहिं हितकरि अवध धनी ॥ फटिक भीत शिखरनपर राजति कंचन

दीप अनी॥ जनु अहिनाथ मिलन आयो मणि शोभित सहस फनी॥ प्रतिमंदिर कलशनि पर भ्राजहिं मणि गण द्युति अपनी॥ मानहुँ प्रगटि विपुल लोहित पुर पठइ दिये अवनी॥ घर घर मंगलचार एक रस हरषित रंक गनी॥ तुलसिदास कल कीरति गावहिं जो कलिमल शमनी॥ २०॥ ३१२॥ (राग गौरी) अवध नगर अति सुंदर वर सरिताके तीर॥ नीति निपुण नर निवसहिं धरम धुरंधर धीर॥ सकल ऋतुन्ह सुखदायक तामहँ अधिक वसंत॥ भूप मौलि मणि जहँ वस नृपति जानकीकंत॥ वन उपवन नव किशलय कुसुमित नाना रंग॥ बोलत मधुर मुखर खग पिकवर गुंजत भृंग॥ समय विचारि कृपानिधि देखि द्वार अति भीर॥ खेलहु मुदित नारि नर विहँसि कहेउ रघुबीर॥ नगर नारि नर हरषित सब चले खेलन फागु॥ देखि राम छबि अतुलित उमँगत उर अनुरागु॥ श्याम तमाल जलदतनु निर्मल पीत दुकूल॥ अरुण कंज दल लोचन सदा दास अनुकूल॥ शिर किरीट श्रुति कुंडल तिलक मनोहर भाल॥ कुंचित केश कुटिल भ्रू चितवनि भगत कृपाल॥ कल कपोल शुक नाशिक ललित अधर द्विज जाति॥ अरुण कंजमहँ जनु युगपाँति रुचिर गज मोति॥ वरदग्रीव अमित बल बाहु सुपीन विशाल॥ कंकण हार मनोहर उरसि लसति वनमाल॥ उर

भृगु चरण विराजत द्विज प्रिय चरित पुनीत ॥ भगत हेतु नर विग्रह सुरवर गुण गोतीत ॥ उदर त्रिरेख मनोहर सुंदर नाभि गँभीर ॥ हाटक घटिक जटित मणि कटितट रट मंजीर ॥ उरू अरु जानु पीन मृदु मरकत खंभ समान ॥ नूपुर मुनि मन मोहन करत सुकोमल गान ॥ अरुण वरण पदपंकज नख द्युति इंदु प्रकाश ॥ जनक सुताकर पल्लव ललित विपुल विलास॥ कंज कुलिश ध्वज अंकुश रेख चरण शुभचारि ॥ जनु मन मीन हरण कहँ बनसी रची सँवारि ॥ अंग अंग प्रति अतुलित सुखमा वरणि न जाइ ॥ एहि सुख मगन होइ मन फिरि नहिं अनत लोभाइ ॥ खेलत फागु अवधपति अनुज सखा सब संग ॥ वरषि सुमन सुर निरखहिं शोभा अमित अनंग ॥ ताल मृदंग झाँझ डफ बाजहिं पणव निसान ॥ सुघर सरस सहनाइन्ह गावहिं समय समान ॥ बीणा वेणु मधुर धुनि सुनि किन्नर गंधर्व॥ निज गुण गरुअ अरुअ अति मानहिं मन तजि गर्व ॥ निज निज अटनि मनोहर गान करहिं पिकबैनि ॥ मनहुँ हिमालय शिखरनि लसहिं अमर मृगनैनि॥ धवल धामते निकसहिं जहँ तहँ नारि बरूथ॥ मानहुँ मथत पयोनिधि विपुल अपसरा यूथ ॥ किंशुक वरण सु अंशुक सुखमा सुखनि समेत॥ जनु विधु निवहरहे करि दामिनि निकर निकेत॥ कुंकुम सुरस अबीरनि

भरहिं चतुर वर नारि ॥ ऋतु सुभाय सुठि शोभित देहिं विविध विधि गारि ॥ जो सुख योग याग जप तपतीरथते दूरि॥ राम कृपाते सोइ सुख अवध गलिन्ह रह्यो पूरि ॥ खेलि वसंत कियो प्रभु मज्जन सरयू नीर ॥ विविध भाँति याचक जन पाये भूषण चीर ॥ तुलसिदास तेहि अवसर माँगी भगति अनूप ॥ मृदु मुसुकाइ दीन्हि तव कृपादृष्टि रघु भूप ॥ २१ ॥ ३१३॥ (राग वसंत) खेलत वसंत राजाधिराज॥ देखत नभ कौतुक सुर समाज सोहैं सखा अनुज रघुनाथ साथ ॥ झोलिन्ह अबीर पिचकारि हाथ ॥ बाजहिं मृदंग डफ ताल वेणु ॥ छिरकैं सुगंध भरे मलयरेणु ॥ उत युवति यूथ जानकी संग ॥ भूषण पट समय सरिस सुरंग ॥ लिये छरी वेत सोधे विभाग॥चाचरि झूमक कहैं सरसराग नूपुर किंकिणि धुनि अति सोहाइ॥ ललना गण जब जेहि धरइँ धाइ ॥ लोचन आँजहिं फगुआ मनाइ ॥ छाडहिं नचाइ हाहा कराइ ॥ चढे खरनि विदूषक स्वांग साजि ॥ करैं कूटि निपट गइ लाज भाजि ॥ नरनारि परस्पर गारि देत ॥ सुनि हँसत राम भाइन समेत ॥ वरषत प्रसून वर विबुध वृंद ॥ जय जय दिनकर कुल कुमुद चंद ॥ ब्रह्मादि प्रशंसत अवध वास॥ गावत कल कीरति तुलसिदास ॥ २२ ॥ ३१४ ॥ (राग केदारा) देखत अवधको आनंद ॥ हरषि वरषत सुमन दिनदिन

देवतनिको वृंद ॥ नगर रचना सिखनको विधि तकत बहु विधिबंद ॥ निपट लागत अगम ज्यों जलचरहि गमन सुछंद॥ मुदित पुर लोगनि सराहत निरखि सुखमाकंद ॥ जिन्हके सुअलि चख पियत राम मुखारविंद मकरंद ॥ मध्य व्योम विलंबि चलत दिनेश उडुगण चंद ॥ रामपुरी विलोकि तुलसी मिटत सब दुख द्वंद ॥ २३ ॥ ३१५ ॥ (राग सोरठा) पालत राज्य यों राजाराम धरम धुरीन ॥ सावधान सुजान सब दिन रहत नय लयलीन॥ श्वान खग यति न्याउ देख्यो आपु बैठि प्रवीन ॥ नीचु हति महिदेव बालक कियो मीचुविहीन ॥ भरत ज्यों अनुकूल जग निरुपाधि नेह नवीन ॥ सकल चाहत रामही ज्यों जल अगाधहि मीन ॥ गाइ राज समाज याचत दास तुलसी दीन ॥ लेहु निज करि देहु निज पदप्रेम पावन पीन ॥ २४ ॥ ३१६ ॥ संकट सुकृतको सोचत जानि जिय रघुराउ ॥ सहस द्वादश पंचशतमें कछुक है अब आउ ॥ भोग पुनि पितु आपको सोउ किए बनै बनाउ॥ परिहरे विनु जानकी नहिं और अनघ उपाउ ॥ पालिबे असिधार व्रत प्रिय प्रेम पाल सुभाउ ॥ होइ हित केहिभाँति नित सुविचारु नहिं चितचाउ ॥ निपट असमंजसहु विलसति मुख मनोहर ताउ ॥ परम धीर धुरीन हृदय कि हरष विसमय काउ ॥ अनुज सेवक

सचिव हैं सब सुमति साधु सखाउ ॥ जान कोउ न जानकी बिनु अगम अलख लखाउ ॥ राम जोगवत सीय मनु प्रिय मनहि प्राण पियाउ ॥ परम पावन प्रेम परमिति समुझि तुलसी गाउ ॥ २५ ॥ ३१७ ॥
राम विचारिकै राखी ठीक दै मन माहिं ॥ लोक वेद सनेह पालत पल कृपालहि जाहिं ॥ प्रियतमा पति देवता जिहि उमा रमा सिहाहिं॥गुरुविनी सुकुमारि सिय तिय मणि समुझि सकुचाहिं॥मेरेही सुख सुखी सुख अपनो सपनेहूँ नाहिं॥गेहिनी गुण सुमिरि सोच समाहिं॥ राम सीय सनेह वरणत अगम सुकवि सकाहिं ॥ रामसीय रहस्य तुलसी कहत राम कृपाहिं ॥२६॥३१८॥
चरचा चरनिसों चरची जानमणि रघुराइ॥दूत मुख सुनि लोक धुनि घर घरनि बूझि आइ ॥ प्रिया निज अभिलाष रुचि कहि कहति सिय सकुचाइ ॥ तीय तनय समेत तापस पूजिहौं वन जाइ ॥ जानि करुणासिंधु भावी विवश सकल सहाइ ॥ धीर धरि रघुवीर भोरहि लिये लषण बोलाइ ॥ तात तुरतहि साजि स्यंदन सीय लेहु चढाइ ॥ बालमीकि मुनीश आश्रम आइयहु पहुँचाइ ॥ भले हि नाथ सुहाथ माथे राखि राम रजाइ॥ चले तुलसी पालि सेवक धरम अवधि अघाइ॥२७॥ ॥ ३१९ ॥ आये लषण लै सौंपी सिय मुनीशहि आनि॥नाइ शिर रहे पाइ आशिष जोरि पंकजपानि॥

वालमीकि विलोकि व्याकुल लषण गरत गलानि ॥ सर्वविद बूझत न विधिकी वामता पहिचानि ॥ जानि जिय अनुमानही सिय सहस विधि सनमानि ॥ राम सद्गुण धाम परमिति भई कछुक मलानि ॥ दीनबंधु दयालु देवर देखि अति अकुलानि ॥ कहति वचन उदास तुलसीदास त्रिभुवन रानि ॥२८॥३२० ॥ तौलों वलि आपुही कीवी विनय समुझि सुधारि॥जौंलोंहों सिख लेउँ वनऋषि रीति वसिदिन चारि॥तापसी कहि कहा पठवति नृपनिको मनुहारि॥ बहुरि तिहि विधि आइ कहिहै साधु कोउ हितकारि॥लषण लाल कृपाल निपटहि डारिवी न विसारि ॥ पालवी सब तापसनि ज्यों राजधरम वि-चारि ॥ सुनत सीता वचन मोचत सकल लोचन वारि॥ वालमीकि न सके तुलसी सो सनेह सँभारि ॥ २९ ॥ ॥३२१॥ सुनि व्याकुल भये उतरु कछु कह्यो न जाइ॥ जानि जिय विधि बाम दीन्हों मोहिं सरुष सजाइ ॥ कहत यहि मेरी कठिनई लखि गई प्रीति लजाइ॥ आजु अवसर ऐसे हूँ जौं न चले प्राण बजाइ ॥ इतहि सीय सनेह संकट उतहि राम रजाइ ॥ मौनहीं गहि चरण गौने सिख सुआशिष पाइ ॥ प्रेम निधि पितुको कहे मैं परुष वचन अघाइ॥ पाप तेहि परिताप तुलसी उचित सहे सिराइ ॥ ३० ॥ ३२२ ॥ गौने मौनही बारहि बार परि परिपायँ ॥ जात जनु रथ रचीकर

लछिमन मगन पछितायँ ॥ अशन विनु वन वरमविनु रन बच्यौ कठिन कुघायँ ॥ दुसह सासति सहनको हनुमान ज्यायो जाय॥हेतु हौं सियहरणको तब अबहुँ भयो सहाय॥होतहठि मोहिं दाहिनो दिन दैवदारुणदाय॥ तज्यो तनु संग्राम जेहि लगि गीधयशी जटाय॥ताहि हो पहुँचाइ कानन चल्यों अवध सुभाय॥घोर हृदय कुठार करतब सृज्योहों विधिवाय॥दास तुलसी जानि राख्यो कृपानिधि रघुराय ॥ ३१ ॥ ३२३ ॥ पुत्रि न सोचिये आइहो जनक गृहजिय जानि॥कालिही कल्याण कौतुक कुशल तव कल्याणि ॥ राजऋषि पितु श्वशुर प्रभु पति तू सुमंगलखानि ॥ ऐसेहू थलवामता॥बडि वामविधिकी बानि ॥ बोलि मुनिकन्या सिखाई प्रीति गति पहिचानि ॥ आलसिन्हकी देवसरिसिय सेयहु मनसानि॥न्हाइ प्रातहि पूजिबो वट विटप अभिमत दानि॥ सुवन लाहु उछाहु दिन दिन देवि अनहित हानि ॥ पाप ताप विमोचनी कहि कथा सरस पुरानि॥ वालमीकि प्रबोधि तुलसी गई गरुइ गलानि ॥ ३२ ॥ ॥ ३२४ ॥ जबते जानकी रही रुचिर आश्रम आइ ॥ गगन जल थल विमल तबते सकल मंगलदाइ॥निरस भूरुह सरस फूलतफलत अति अधिकाइ॥कंदमूल अनेक अंकुर स्वाद सुधा लजाइ ॥ मलय मरुत मराल मधुकर मोर पिक समुदाइ॥ मुदित मन मृग विहँग विह-

रत विषम वैर विहाइ ॥ रहत रवि अनुकूल दिन शशि रजनि सजनि सुहाइ॥सीय सुनि सादर सराहति सखिन्ह भलो मनाइ॥मोद विपिन विनोद चितवत लेत चितहि चोराइ ॥ राम विनु सिय सुखद वन तुलसी कहै किमि गाइ ॥ ३३ ॥ ३२५ ॥ शुभ दिन शुभ घरी नीको नखत लगन सुहाइ ॥ पूत जाये जानकी द्वै मुनिबधू उठि गाइ ॥ हरषि वरषत सुमन सुर गह गहे बधाये बजाइ ॥ भुवन कानन आश्रमनि रहे मोद मंगल छाइ ॥ तेहि निशातहँ शत्रुसूदन रहे विधि वश आइ ॥ माँगि मुनिसों विदा गवने भोर सो सुख पाइ ॥ मातु मौसी बहिनिहूँते सासुते अधिकाइ ॥ करहिं तापस तीय तनया सीयहित चितलाइ ॥ किये विधि व्यवहार मुनिवर विप्रवृंद बोलाइ ॥ कहत सब ऋषि कृपाको फल भयो आजु अघाइ ॥ सुरुष ऋषिसुख सुतनिको सिय सुखद सकल सहाइ ॥ शूल राम सनेहकी तुलसी न जियते जाइ ॥ ॥ ३४ ॥ ३२६ ॥ मुनिवर करि छठी कीन्हीं बार-हेकी रीति ॥ वन बसन पहिराइ तापस तोषि पोषे प्रीति ॥ नामकरण सुवन्नप्रासन वेदबाँधी नीति ॥ समय सब ऋषिराज करत समाज साज समीति ॥ बाल लालहिं कहहिं करिहैं राज सब जग जीति ॥ राम सिय सुत गुरु अनुग्रह उचित अचल प्रतीति ॥

निरखि बाल विनोद तुलसी जात बासर बीति ॥ पिय चरित सिय चित चितेरो लिखत नित हित भीति ॥ ॥ ३५ ॥ ३२७ ॥ बालक सीयके विहरत मुदित मन दोउ भाइ ॥ नाम लव कुश राम सिय अनुहरत सुंदरताइ ॥ देत मुनि मुनि शिशु खेलौना ते लै धरत दुराइ ॥ खेल खेलत नृप शिशुन्हके बालवृंद बोलाइ ॥ भूप भूषण बसन बाहन राज साज सजाइ ॥ वरम चर्म कृपाण शर धनु तूण लेत बनाइ ॥ दुखी सिय पिय विरह तुलसी सुखी सुत सुख पाइ ॥ आँच पय उफनात सींचत सलिल ज्यों सकुचाइ ॥ ३६ ॥ ३२८ ॥ केकयी जौलों जियत रही ॥ तौलों बात मातुसों मुहँ भरि भरत न भूलि कही ॥ मानी राम अधिक जननीते जननिहु गसन गही ॥ सीय लषण रिपुदवन राम रुख लखि सबकी निबही ॥ लोक वेद मरजाद दोष गुण गति चित चखन चही॥तुलसी भरत समुझि सुनि राखी राम सनेह सही ॥ ३७ ॥ ३२९ ॥ (राग रामकली) रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर गावहिं सकल अवधवासी ॥ अतिउदार अवतार मनुज वपु धरे ब्रह्म अज अविनासी ॥ १ ॥ प्रथम ताडका हति सुबाहु वधि मग राख्यो द्विज हितकारी ॥ देखि दुखी अति शिला शापवश रघुपति विप्रनारि तारी ॥ सब भूपनको गरब हरयो हरि भंज्यो शंभु चाप भारी ॥ जनक सुतासमेत

आवत गृह परशुराम अति मदहारी ॥ तात वचन तजि राजकाज सुर चित्रकूट मुनिवेष धरयो ॥ एक नयन कीन्हों सुरपतिसुत वधि विराध ऋषि शोक हरयो ॥ पंचवटी पावन राघव करि शूर्पणखा कुरूप कीन्हीं ॥ खर दूषण संहारि कपट मृग गीधराज कहँ गति दीन्हीं ॥ हति कबंध सुग्रीव सखा करि वेधे ताल वालि मारयो ॥ वानर रीछ सहाय अनुज सँग सिंधु बाँधि यश विस्तारयो ॥ सकुल पुत्र दल सहित दशानन मारि अखिल सुर दुख टारयो ॥ परमसाधु जिय जानि विभीषण लंकापुरी तिलक सारयो ॥ सीता अरु लछिमन सँग लीन्हें औरहु जिते दास आए ॥ नगर निकट विमान आये सब नर नारी देखन धाए ॥ शिव विरंचि शुक नारदादि मुनि स्तुति करत विमल वानी॥ चौदह भुवन चराचर हरषित आये राम राजधानी ॥ मिले भरत जननी गुरु परिजन चाहत परम अनंद भरे ॥ दुसह वियोग जनित दारुण दुख रामचरण देखत विसरे ॥ वेद पुराण विचारि लगन शुभ महाराज अभिषेक कियो ॥ तुलसिदास जिय जानि सुअवसर भगति दान तब माँगि लियो ॥ ३८ ॥ ३३० ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां उत्तरकांडः समाप्तः।

इति गीतावली समाप्ता।

॥ श्रीः ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-

श्रीकृष्णगीतावली ।



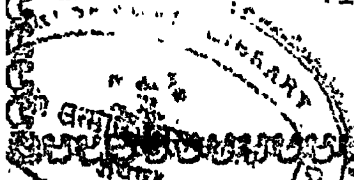
श्रीकृष्णचरित्र परम पवित्र अनेक
प्रकारके मनोहर मनहरन पद
राग रागिनियोंमें कलिमल
विनाशनार्थ वर्णित हैं ।



खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.

संवत् १९८८, शकाब्दाः १८५३.

॥ राधाकृष्णाभ्यां नमः ॥



श्रीगणेशाय नमः।
श्रीजानकीवल्लभो विजयते।

श्रीकृष्णगीतावली।

राग बिलावल।

माता लै उछंग गोविं मुख बार बार निरखै। पुलकित तनु आनंदघन छन छन मन हरषै॥ पूछत तोत रात बात मातहि यदुराई। अतिशय सुख जाते तोहिं मोहिं कहु समुझाई। देखत तव वदन कमल मनअनंद होई॥ कहै कौन रसन मौन जानै कोइ कोई। सुंदर मुख मोहिं देखाउ इच्छा अति मोरे। मम समान पुण्य पुंज बालक नहिं तोरे। तुलसी प्रभु प्रेमवश्य मनुज रूप धारी। बालकेलि लीलारस ब्रजजन हितकारी॥ ॥१॥ (राग ललित) छोटी मोटी मीसी रोटीचिकनी चुपरिकै तू देरी मैया लै कन्हैया सो कब अबहिं तात॥ सिगरियैहौंहीं खैहौं बलदाऊको न दैहौं सो क्यौं मट्टू तेरो कहा कहि इत उत जात। बालबोलि डहकि बिरावत चरित लखि गोपीगण महरि मुदित पुलकित गात॥ नूपुरकी धुनि किंकिणीकी कलरव सुनि कूदि कूदि किलकि किलकि ठाढे ठाढे खात। तनियाँ ललित कटि विचित्र टेपारो शीश मुनि मन हरत वचन कहै

तोतरात।तुलसी निरखि हरषत बरषत फूल भूरि भागी ब्रजवासी विबुध सिद्धसिहात ॥ २ ॥ (राग आसावरी) तोहिं श्यामकी सपथ यशोदा आइ देखु गृह मेरे ॥ जैसी हाल करी यहि धोटा छोटे निपट अनेरे। गोरस हानि सहौं न कहौं कछु यह ब्रजवास बसेरे। दिनप्रति भाजन कौन बेसाहै घरनिधि काहूकेरे। किये निहोरो हँसत खिझैते डांटत नयन तरेरे। अबहींते ये सीख कहांधौं चरित ललित सुत तेरे। बैठे सकुचि साधुभयो चाहत मातुवदन तन हेरे। तुलसिदास प्रभु कहौं तें बातैं जे कहि भजे सबेरे ॥ ३॥ मोकहँ झूठेहु दोषलगा- वहिं। मैया इन्हहिं वानि परगृहकी नाना युगुति बना- वहिं। इन्हके लिये खेलिबो छाँड्यों तऊ न उबरन पा- वहिं।भाजन फोरि बोरिकर गोरस देन उरहनो आवहिं॥ कबहुँक बाल रोवाइ पाणि गहि मिसकरि उठि उठि धावहिं। करहिं आपु शिर धरहिं आनके वचन विरंचि हरावहिं॥ मेरी टेव बूझि हलधरको संतत संग खेला- वहिं। जे अन्याउ करहिं काहूको ते शिशु मोहिं न भावहिं। सुनि सुनि वचन चातुरी ग्वालिनि हँसि हँसि वदन दुरावहिं। बाल गोपाल केलि कलकीरति तुल- सिदास मुनि गावहिं॥४॥कबहूँ जात पराये धामहिं ॥ खेलतही देखों निज आँगन सदा सहित बलरामहिं। मेरे कहा थाकु गोरसको नवनिधि मंदिर यामहिं। ठाली

ग्वालि ओरहनेके मिस आइब कहि बेकामहिं। हों बलि जाउँ जाहु कितहूँ जनि मातु सिखावति श्यामहिं। विनु कारण हठि दोष लगावति तात गए गृहतामहिं। हरि-मुख निरखि परुषबानी सुनि अधिक अधिक अभि-रामहिं। तुलसिदास प्रभु देख्योइ चाहति श्रीउरललित ललामहि ॥५॥ अब सब साँची कान्ह तिहारी। जो हम तजे पाइ गौं मोहन गृह आए दैगारी। सुसुकि सभीत सकुचि रूखेमुख बातैं सकल सवाँरी। साधुजानि हँसि हृदय लगाए परमप्रीति हम-तारी॥ कोटिजतन करि शपथ कहैं हम मानै कौन हमारी॥ तुमहिं विलोकि आनकी ऐसी क्यौं कहि है वरगारी। जैसे हौ तैसे सुखदायक ब्रजनायक बलिहारी॥ तुलसिदास प्रभु मुखछबि निरखत मन सब जुगुति बिसा-री॥६॥ (राग केदारा) महरि तिहारे पाँयपरौं अपनो व्रज लीजे। सहि देख्यो तुम्हसों कह्यो, अब नाकहि आई कौन दिनहु दिन छीजे॥ ग्वालिनि तौ गोरस सुखी ताविनु क्यों जीजे॥ सुत समेत पाउँ धारिये आपुहि भवन मेरे देखिये जो न पतीजे। अतिअनीति नीकी नहीं अजहूं सिख दीजे। तुलसिदास प्रभुसों कहै उरलाइ यशोमति ऐसी बलि कबहूं नहिं कीजे॥ ॥७॥ अबहिं ओरहनो दैगई बहुरो फिरि आई। सुनु मैया तेरीसौं करौं याकी टेंव लरनकी सकुच बेंचिसी

खाई ॥ या ब्रजमें लरिका घने होहिं अन्याई ॥ मुँहलाये मूडहिं चढी अंतहु अहिरिनि तू सूधी करि पाई । सुनि सुतकी अतिचातुरी यशुमति मुसुकाई । तुलसिदास ग्वालि नी ठगी आयो न उतर कछु कान्ह ठगौरी लाई ॥ ८ ॥ (राग गौरी) अब ब्रजबास महरि किमि कीबो ॥ दूध दहिउ माखन ढारतहैं हुतो पोसात दान दिन दीबो । अब तो कठिन कान्हके करतब तुम्हको हँसति कहा कहि लीबो। लीजै गाँउ नाउँ लै रावरो है जग ठाउँ कहूँ ह्वै जीबो । ग्वालिवचन सुनि कहति यशोमति भलो न भूमि पर बादर छीबो ॥ दैअहि लागि कहो तुलसी प्रभु अजहुँ न तजत पयोधर पीबो॥९॥ जानीहै ग्वालि परी फिरि फीके ॥ मातुकाज लागी लखि डाटत है बायनो दियो घरनीके। अब कहिदेउँ कहति किन यों कहि माँगत दहिउ धरचो जो है छीके॥तुलसी प्रभुमुख निरखि रही चकि रह्यो न सयानप तन मन तीके ॥ १० ॥ जौलों हौं कान्हरहों गुण गोए । तौलों तुम्हहिं पत्यात लोग सब सुसुकि सभीत साँचुसो रोए। हो भले नग फँग परे गढीवै अब ए गढत महरि मुख जोए । चुपकी न रहत कह्यो कछु चाहत ह्वैहै कीच कोठिला धोए । गरजति कहा तरज जिन्ह तरजत बरजत सयन नयनके कोए॥तुलसी मुदित मातु सुत गति लखि विथकी है ग्वालि मैन मन मोए

॥ ११ ॥ भूलि न जात हौं काहूके काऊ। साखि सखा सब सुबल सुदामा देखिधौं बूझि बोलि बलदाऊ। यह तो मोहिं खिझाइ कोटि विधि उलटि विवादन आइ अगाऊ। याहि कहा मैया मुँह लावति गनति कि एक लँगरि झगराऊ। कहति परस्पर वचन यशोमति सखि नहिं सकति कपट सतिभाऊ। तुलसिदास ग्वालिनि अति नागरि नट नागरमणि नंदललाऊ ॥१२॥ छाँडो मेरे ललित ललन लरिकाई ॥ ऐहैं सुत देखुवार कालि तेरे बवैं ब्याहकी बात चलाई। डरि हैं सासु ससुर चोरी सुनि हँसि है नई दुलहिया सुहाई। उवटों न्हाहु गुहौं चोटिया बलि देखि भलो वर करिहिं वडाई। मातु कह्यो करि कहत बोलिहै भइ वडि बार कालितो न आई। जब सोइबो तात यों हाँकहि नयन मींचि रहे पौढि कन्हाई। उठि कह्यो भोर भयो झँगुली दई मुदित महरि लखि आतुरताई ॥ बिहँसी ग्वालि जानि तुलसी प्रभु सकुचि लगे जननि उर धाई ॥ १३ ॥ (राग केदारा) हरिको ललित वदन निहारु ॥ निपटहि डाटति निठुर जौं लकुट करते डारु॥ मंजु-अंजन सहित जल कण चुवत लोचनचारु। श्याम सारस मग मनो शशि स्रवत सुधा शृंगारु। सुभग उर दधि बुंद सुन्दर लखि अपनपौ वारु। मनहु मरकत

मृदु शिखर पर लसत विशद तुषारु । कान्हहू परसतर भौहैं महरि मनहि विचारु । दास तुलसी रहति क्यों रिस निरखि नंदकुमारु ॥ १४ ॥ लेत भरि भरि नीर कान्ह कमलनैन । फरक अधर डर निरखि लकुट कर कहि न सकत कछु वैन। दुसह दावरी छोरि थोरी खोरि कहा कीन्हों चीन्हों री । सुभाय तेरो आजु लगे माई गैन । तुलसिदास नंदललन ललित लखि रिस क्यों रहति उर ऐन ॥१५॥ हाहारि महरी वारो कहा रिसवश भई कोखिके जाए सो रोषु केतो वडो कियो है। ढीली करि दावरी बावरी साँवरेह देखि सकुचि सहमि शिशु भारी भय भियो है। दूध दधि माखन भी लाखन गोधन धन जबते जमन हलधर हरि लियो है । खायो के खवायो कै बिगारचो ढारचो लरिका री ऐसे सुतपर कोहु कैसो तेरो हियो है।मुनि कहैं सुकृती न नंदयशो· मति सम न भयो न भावी नहिं विद्यमान वियो है ॥ कौन जान कौन तप कौने योग जाग जप कान्हसों सुवन तोको महादेव दियो है।इन्हहींके आयेते वधाये व्रज नित नये नांदत बाढत सब सब सुख जियो है । नंदलाल बालजस संत सुर सरबस गाइ सो अमिय रस तुलसिदु पियो है॥१६॥ ललित लाल निहारि महरि मन विचारि डारि दे घर वसी लकुट वेगि करते । कछु न कहिसकत सुसुकत सकुचत डरहूँको डर कान्ह डरैं तेरे डरते ॥

कह्यौ मेरो मानि हित जानि तू सयानी बडी बडे भाग्य पायो पूत विधि हरि हरते ॥ ताहि बांधिबेको धाई ग्वालिनी गोरस हाँई लै लै आई बावरी दावरी घर घरते ॥ कुलगुरु तियके वचन कमनीय सुनि सुधि भये वचन जे सुनि मुनि वरते । छोरि लिये लाये उर बरषैं सुमन सुर मंगल है तिहूँ पुर हरि हलधरते । आनंद बधावनो मुदित गोप गोपीगण आजु परि कुशल कठिन करवरते। तुलसी जे तोरे तरु किये देव दिये वरुके न लह्यौ कौन फल देव दामोदरते ॥ १७ ॥ (राग मलार) ब्रजपर घन घमण्ड करि आये ॥ अति अपमान विचारि आपनो कोपि सुरेश पठाए।दमकति दुसह दशहुँ दिशि दामिनि भयो तम गगन गँभीर । गरजत घोर वारिधर धावत प्रेरित प्रबल समीर ॥ बार बार पविपात उपल घन वरषत बूंद विशाल । सीत सभीत पुकारत आरत गो गोसुत गोपी ग्वाल। राखहु राम कान्ह यहि अवसर दुसह दशा भइ आइ ॥ नंद विरोध कियो सुर-पतिसों सो तुम्हरो बल पाइ । सुनि हँसि उठ्यो नंद-को नाहरु लियो कर कुधर उठाइ ॥ तुलसिदास मघवा अपनमो करिगयो गर्ब गँवाइ ॥ १८ ॥ (राग गौरी) टेरि कान्ह गोवर्धन चढि गैया ॥ मथि मथि पियो वारि चारिकमें भूषण ज्योति अघाति न घैया ॥

शैल शिखर चढि चितै चकित चित अति हित वचन कह्यौ बलभैया ॥ बाँधि लकुट पट फेरि बोलाई सुनि कलवेणु धेनु धुकि धैया । बलदाऊ देखियत दूरिते आवति छाक पठाई मेरी मैया॥किलकि सखा सब नचत मोर ज्यों कूदत कपि कुरंगकी नैया । खेलत खात परस्पर डहँकत छीनत कहा करत रोग दैया। तुलसी बाल केलि सुख निरखत वरषत सुमन सहित सुरसैया ॥ ॥ १९ ॥ (राग नट) गावत गोपाल लाल नीके राग नट हैं। चलि री आली देखन लोयन लाहु पेखन ठाढे सुरतरु तर तटिनीके तट हैं । मोरचंदा चारु शिर मंजु गुंजा पुंज धरे बनि वन धातु तनु ओढे पीत पट हैं । मुरली तान तरंग मोहे कुरंग विहंग जो हैं मूरति त्रिभंग निपट निकट हैं । अंबर अमर हरपत वरषत फूलसनेह सिथिल गोप गाइन्हके ठट हैं । तुलसी प्रभु निहारि जहाँ तहाँ ब्रजनारि ठगी ठाढी मग लिये रीते भरे घट हैं॥ २० ॥ (राग बिलावल) देखु सखी हरिवदन इंदु पर ॥ चिक्कन कुटिल अलक अवली छवि कहि न जाइ शोभा अनूप वर । बाल भुअंगिनि निकर मनहुँ मिलि रहीं घेरि रस जानि सुधाकर । तजि न सकहिं नहिं करहिं पान कहो कारण कौन विचारि डरहिं डर । अरुण वनज लोचन कपोल शुभ श्रुति मंडित कुंडल अतिसुंदर । मनहुँ सिंधु निज सुतहि मनावन पठए युगुल

वसीठ वारिचर ॥ नँदनंदन मुखकी सुंदरता कहि न सकत श्रुति शेष उमावर। तुलसिदास त्रैलोक्य विमोहन रूप कपट नर त्रिविध शूलहर ॥ २१ ॥ आजु उनींदे आये मुरारी ॥ आलसवंत सुभग लोचन सखि छिन मूँदत छिन देत उघारी। मनहुँ इंदु पर खंजरीट दोउ कछुक अरुण विधि रचे सँवारी। कुटिल अलक जनु मार फंद कर गहे संजग ह्वै रह्यो सँभारी। मनहुँ उडन चाहत अति चंचल पलक पंख छिन देत पसारी ॥ नासिक कीर वचन पिक सुनिकरि संगति मनु गुनि रहति बिचारी ॥ रुचिर कपोल चारु कुंडल वर भ्रुकुटि शरासनकी अनुहारी। परमचपल तेहि त्रास मनहुँ खग प्रगटत दुरत न मानत हारी। यदुपति मुखछवि कलप कोटि लगि कहि न जाइ जाके मुख चारी॥ तुलसिदास जेहि निरखि ग्वालिनी भजीं तात पति तनय बिसारी ॥ २२ ॥ (राग गौरी) गोपाल गोकुल वल्लवी प्रिय गोप गोसुत वल्लभं। चरणारविंदमहं भजे भजनीयं सुर मुनि दुर्लभं। घनश्याम काम अनेक छवि लोकाभिराम मनोहरं। किंजल्क वसन किशोर मूरति भूरि गुण करुणाकरं ॥ शिर केकिपक्ष विलोल कुंडल अरुण वनरुह लोचनं। गुंजावतंश विचित्र सब अंग धातु भवभयमोचनं। कच कुटिल सुंदर तिलक भ्रू राका मयंक समाननं। अपहरण तुलसीदास त्रास

विहार वृंदाकाननं ॥ २३ ॥ (राग बिलावल) बिछुरत श्रीब्रजराज आजु इन नयनकी परतीति गई॥ उडि न लगे हरि संग सहज तजि ह्वै न गए सखि श्याममई।रूपरसिक लालची कहावत सो करनी कछु तो न भई।साँचेहु कूर कुटिल सित मेचक वृथा मीनछवि छीनिलई। अब काहे सोचत मोचत जल समय गए चित शूल नई। तुलसिदास तब अजहुँसे भए जड जब पलकनि हठि दगादई ॥ २४ ॥ (राग कान्हरा) नहिं कछु दोप श्यामको माई। जो दुख मैं पायों सुन सजनी सोतो सबै मनकी चतुराई ॥ निजहित लागि तबहिं ए वंचक सब अंगनि वसि प्रीति बढाई। लियो जो सकल सुख हरि अंग संगको जहँ जिहि विधि तहँ सोइ बनाई। अब नंदलाल गवन सुनि मधुबन तनहिं तजत नहिं बार लगाई। रुचिर रूप जल मोर शेश ह्वै मिलि न फिरनकी बात चलाई। एहि शरीर वसि सखि वा सठकहु कहि न जाइ जो निधि फवि आई। तदपि कछू उपकार न कीन्हों निज मिलन्यो नहिं मोहिं सिखाई। आपु मिल्यो वहि भाँति जाति तजि तन मिल्यो जल पयकी नाई। ह्वै मराल आयो सुफलकसुत लैगयो क्षीर नीर बिलगाई। मन हौं तजी कान्ह हौं त्यागी प्राणौ चलि हैं परमिति पाई। तुलसिदास रीतेहु तनु ऊपर नयननकी ममता अधिकाई ॥ २५ ॥ (राग

धनाश्री) करि है हरि बालकक्कीसी केलि। हरष न रचत विषाद न विचरत डगरि चले हँसि खेलि। बई बनाइ वारि वृंदावन प्रीति सजीवनि बेलि। सींचि सनेहसुधा खनि काढी लोक वेद पर हेलि। तृण ज्यों तजी पालितनु ज्यों हम विधि वासव बल पेलि। एतेहुँ पर भावत तुलसी प्रभु गये मोहनी मेलि ॥ २६ ॥ आली अब अहो निज नेह निहारि। समुझे सहे हमारो है हित विधि वामता विचारि ॥ सत्यसनेह शील शोभा सुख सब गुण उदधि अघारि। देख्यो सुन्यो न कबहुँ काहु कहु मीन वियोगी वारि। कहियत काकु कूबरीहूँको सो कुवाणि वश नारि। विषते विषम विनय अनहितकी सुधासनेही गारि। मन फेरियत कुतर्क कोटि करि कुबल भरोसे भारि ॥ तुलसी जग दूजो न देखियत कान्हकुवँर अनुहारि ॥ २७ ॥ लागिये रहति नयननि आगेते न टरति मोहनमूरति ॥ नीलनलिन श्याम शोभा अगणित काम पावन हृदय जेहि उर फूरति ॥ शारद अमित शेप नहिं कहि सकत अंग अंग सूरति॥ तुलसिदास बडे भाग्य मन लोगहुते सबसुख पूरति ॥ ॥ २८ ॥ जबते ब्रज तजिगये कन्हाई। तबते विरह रवि उदित एकरस सखि बिछुरनि वृषपाई ॥ घटत न तेज चलत नाहन रथ रह्यौ उर नभ पर छाई ॥ इंद्रिय रूपराशि सोचहिं सुठि सुधि सबकी बिसराई। भए

विशोक शोक कोक कोकनद भ्रम भ्रमरनि सुखदाई ।
चित चकोर मनमोर कुमुद मुद सकल विकल अधि-
काई ॥ तनु तडाग बलवारि सूखन लाग्यो परि कुरू-
पताकाई ॥ प्राणमीन दिनदीन दूबरे दशा दुसह अब
आई ॥ तुलसीदास मनोरथ मनमृग मरत जहाँ तहँ
धाई । रामश्याम सावन भादौं विनु जयकी जरनि न
जाई ॥ २९ ॥ शशिते शीतल मोकूं लागै माई री
तरनि ॥ याके उए बरति अधिक अँग अँग
दावाके उए मिटति रजनि जनित जरनि ॥
सब विपरीत भये माधौ विनु हित जो करत अनहित
सतकी करनि ॥ तुलसिदास श्याम सुंदर विरहकी
दुसह दशा सो मोपै परति नहीं वरनि ॥ ३० ॥ संतत
दुखद सखी रजनीकर ॥ स्वारथरत तव अवहुँ एकरस
मोको अब कबहुँ न भयो तापहर ॥ निज अंशिक सुख
लागि चतुर अति कीन्ही है प्रथम निशा शुभ सुंदर ॥
अब विनु मन तन दहत दया तजि राखत रवि द्वै
नयन वारिधर ॥ यद्यपि है दारुण वडवानल राख्यो
है जलधि गँभीर धीरतर ॥ ताहूते परम कठिन जान्यो
शशि तज्यो पिता तब भयो व्योमचर ॥ सकल
विकार कोस विरहिनि रिपु काहेते याहि सराहत
सुर नर ॥ तुलसिदास त्रैलोक्य मान्य भयो कारण
इहै गह्यौ गिरिजावर ॥ ३१ ॥ (राग मलार) कोउ

सखि नई चाह सुनि आई ॥ यह ब्रजभूमि सकल सुरपतिसों मदन मिलिक करि पाई ॥ घन धावन वगपाँति पटोसिर वैरख तडित सोहाई ॥ बोलत पिक नकीब गरजनि मिस मानहुँ फिरति दोहाई ॥ चातक मोर चकोर मधुप शुक सुमन समीर सहाई ॥ चाहत कियो वास वृंदावन विधिसों कछु न बसाई ॥ सींव न चाँपि सकी काहू तब जब हुते राम कन्हाई ॥ अब तुलसी गिरिधर बिनु गोकुल कौनु करिहि ठकुराई ॥ ॥ ३२ ॥ (राग सोरठ) ऊधो या ब्रजकी दशा विचारो॥ ता पाछे यह सिद्धि आपनी योगकथा विस्तारो ॥ जा कारन पठए तुम माधव सो सोचहु मनमाहीं ॥ केतिक बीच विरह परमारथ जानतहौ किधौं नाहीं । परमच- तुर निजदास श्यामके संतत निकट रहतहौ॥जलबूड़त अवलंब फेनको फिरि फिरि कहा कहतहौ ॥ वह अति ललित मनोहर आनन कौने जतन बिसारौं।योग जुगुति अरु मुकुति विविध विधि वा मुरलीपर वारों । जेहि उर वसत श्याम सुंदरघन तेहि निर्गुण कस आवै । तुलसिदास सो भजन बहावो जाहि दूसरो भावै ॥३३॥ मधुकर कहहु कहन जो पारो ॥ नाहिंन बलि अपराध रावरो सकुचि साध जनि मारो॥ नहिं तुम ब्रजवसि नंद- लालको बालविनोद निहारो॥नाहिंन रासरसिक रस चा- ख्यो ताते डलसो डारो॥तुलसी जो न गये प्रीतमसँग

प्राणत्यागि तनु न्यारो ॥ तौ सुनिबो देखिबो बहुत अब कहा कर्मसों चारो ॥ ३४ ॥ ऊधोजू कह्यो तिहारोइ कीबो । नीके जियकी जानि अपनपो समुझि सिखावन दीबो । श्यामवियोगी ब्रजके लोगनि योग योग्य जो जानो।तौ सकोच परिहरि पालागौं परमारथहि बखानो॥ गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब रहत रूप अनुरागे । दीन मलीन छीन तनु डोलत मीन मँजासो लागे ॥ तुलसी है सनेह दुखदायक नहिं जानत ऐसो को है । तऊ न होत कान्हको सो मन सबै साहिबहि सोहै ॥ ३५ ॥ (राग बिलावल) सो कहो मधुप जो मोहन कहि पठई। तुम सकुचत हौहीं नीके जानति नँदनंदन हो निपट करी शठई । हुतो न साँचो सनेह मिट्यो मनको सँदेह हरि परे उघरि संदेशहु ठठई । तुलसिदासको न आश मिलनकी कहि गये सो तौ कछु एको न चित ठई ॥ ॥३६॥ मेरे जान और कछु न मन गुनिए। कूबरीरवन कान्ह कही जो मधुपसों सोई सिख सजनी सुचित दै सुनिए । काहेको करति रोष देहैं धौं कौनको दोष निज नयननिको बयो सब लुनिए । दारु शरीर कीट पहिले सुख सुमिरि सुमिरि बासर निशि धुनिये ॥ ये सनेह शुचि अधिक अधिक रुचि बरज्यो न करत कितो शिर धुनिये ॥ तुलसिदास अब नंदसुवनहित विषम वियोग अनल तनु हुनिये ॥ ३७ ॥ भली कही

आली हमहुँ पहिचाने। हरि निर्गुण निर्लेप निरापने निपट निठुर निज काज सयाने। ब्रजको विरह अरु संग महरको कुबरिहि वरत न नेकु लजाने। समुझि सो प्रीतिकि रीति श्यामकी सोइ बावरि जो परेखो उर आने। सुनत न सिख लालची विलोचन एतेहुपर रुचि रूप लोभाने॥ तुलसिदास इहै अधिक कान्हपहिं नीकेई लागत मन रहत समाने॥ ३८॥ (रागमलार) जोपै अलि अंत इहै करिबेहो॥ तौ अतुलित अहीर अबलनिको हठि न हियो हरिबेहो। जो प्रपंच परिणाम प्रेम फिरि अनुचित आचरिबेहो। तौ मथुरहि महामहिमा लहि सकल ढरनि ढरिबेहो। दै कुबरिहि रूप ब्रजसुधि भये लौकिक डर डरिबेहो। ज्ञानविरागकालकृत करतब हमरेहि शिर धरिबेहो। उन्हहिं राग रवि नीरद जल ज्यों प्रभु परमित परिबेहो। हमहुँ निठुर निरुपाधि नेहनिधि निज भुजबल तरिबेहो। भलो भयो सब भाँति हमारो एकबार मरिबेहो॥ तुलसी कान्हविरह नित नवजर जरि जीवन भरिबेहो॥ ३९॥ ऊधो यह ह्यां न कछू कहिबेही॥ ज्ञानगिरा कूबरीरवनकी सुनि विचारि गहिबेही॥ पाइ रजाइ नाइ शिर गृह है गति परमिति लहिबेही। मति मटुकी मृगजल भरि घृतहित मनहीं मन महिबेही। गाड़े भली उखारे अनुचित बनिआये बहिबेही। तुलसी प्रभुहिं तुम्हहिं हमहूँ

हिय शासति सी सहिवेही ॥४०॥ मधुकर कान्ह कहीते न होंहीं । कै ये नई सिखी सिखई हरि निज अनुराग बिछोहीं । राखी,रुचि कूबरी पीठपर ये बातैं सकुचोहीं । श्यामसों गाहक पाइ सयानी खोलि देखाइहै गोही ॥ नागरमणि शोभासागर जेहि जग युवती हँसि मोही । लियो रूप दै ज्ञान गांठरी भलो ठग्यो ठगु वोही ॥ है निर्गुन सारी वारिकबालि घरी करो हम जोही । तुलसी ये नागरिन्ह योगपट जिन्हहिं आजु सब सोही ॥४१॥ मधुप तुम्ह कान्हहीं की कही क्यों न कही है ॥ यह बतकही चपल चेरीकी निपट चरेरी औरही है ॥ कब ब्रज तज्यौ ज्ञान कब उपज्यौ कब विदेहता लही है ॥ गये बिसारि रीति गोकुलकी अब निर्गुन गति गहीहै॥ आयसु देहु करहिं सोइ शिर धरि प्रीति परमिति निरबही है॥ तुलसी परमेश्वर न सहेगो हम अबलनि सब सही है ॥ ४२ ॥ दीन्हीं है मधुप सबहिं सिख नीकी॥ सोइ आदरो आश जाके जिय वारि विलोवत घीकी। बूझी बात कान्ह कुबरीकी मधुकरहू जनि पूछो। ठाली ग्वालि जानि पठये अलि कह्यो है पछोरन छूछो ॥ हमहूँ कछुक लखीही तबकी औरेवै नंदललाकी । ये अबलहिं चतुर चेरिपै चोखी चालि चलाकी ॥ गये करते घरते आँगनते ब्रजहूते ब्रजनाथ ॥ तुलसी प्रभु गयो चहत मनहूंते

सोतो है हमारे हाथ ॥ ४३ ॥ ताकी सिख ब्रज न सुनैगो कोउ भोरे ॥ जाकी कहनि रहनि अनमिल अलि सुनत समुझियत थोरे ॥ आपु कंजमकरंदसुधाह्रद हृदय रहत नित बोरे ॥ हमसों कहत विरह श्रम जैहै गगन कूप खनि खोरे । धानको गाँव पयार जानियत ज्ञान विषय मन मोरे ॥ तुलसी अधिक किये न रहैगो रस-गुलरिकोसों फल फोरे ॥४४॥ आली अति अनुचित उतरु न दीजे ॥ सेवक सखा सनेही हरिके जो कुछ कहैं सो कीजे ॥ देशकाल उपदेश सँदेसो सादर सब सुनि लीजै ॥ कै समुझिबो किये समुझैहै हारेहु मानि सहीजे ॥ सखि सरोष प्रियदोष विचारत प्रेमपीनपन छीजै ॥ खग मृग मीन सलभ सरसिज गति सुनि पाहनौ पसीजै ॥ ऊधो परमहितू हित सिखवत पर-मिति पहुँचि पतीजै ॥ तुलसिदास अपराध आपनो नंदलाल बिनु जीजै ॥ ४५ ॥ ऊधो हैं बड़े कहैं सोइ कीजे ॥ अलि पहिचानि प्रेमकी परमिति उतरु फेरि नहिं दीजे ॥ जननी जनक जरठ जानै जन परिजन लोगु न छीजै ॥ दै पठयो पहिलो विढतो ब्रज सादर शिर धरिलीजै ॥ कंस मारि यदुवंश सुखी कियो श्रवण सुयश सुनि जीजै॥ तुलसी त्यों त्यों होइगी गरुई ज्यों ज्यों कामरि भीजै ॥४६ ॥ कान्ह अलि भये नये गुरु ज्ञानी ॥ तुम्हरे कहत आपने समुझत बात सही उर

आनी ॥ लिये अपनाइ लाइ चंदनतन कछु कटु चाह उड़ानी ॥ जरीं सुघाइ कुबरी कौतुक करि योगीवधा जुड़ानी ॥ ब्रज बसि रासविलास मधुपुरी चेरीसों रति मानी ॥ योग योग ग्वालिनी वियोगिनि जान शिरोमणि जानी ॥ कहिबे कछू कछू कहि जैहै रहो आलि अरगानी ॥ तुलसी हाथ पराये प्रीतम तुम्ह प्रियहाथ बिकानी ॥ ४७ ॥ सबमिलि साहस करिय सयानी ॥ ब्रज आनियहि मनाइ पाँय परि कान्ह कूबरी रानी ॥ बसै सुवास सुपास होहि सब फिरि गोकुल रजधानी॥ महरि महर जीवहिं सुख जीवन खुलहि मोदमणिखानी ॥ तजि अभिमान अनख अपनो हित कीजिय मुनिवरबानी ॥ देखिबो दरश दूसरेहु चौथेहु बड़ो लाभ लघु हानी ॥ पावक परत निषिद्ध लाकरी होत अनल जग जानी॥ तुलसी सो तिहुँभुवन गाइबो नंदसुवन सनमानी ॥ ४८ ॥ कही है भली बात सबके मनमानी ॥ प्रियसम प्रियसनेह भाजन सखि प्रीति रीति जग जानी॥ भूषण भूति गरल परिहरिकै हरमूरति उर आनी ॥ मज्जनपान कियो कै सुरसरि कर्मनाश जल छानी ॥ पूंछसों प्रेम विरोध सींगसों यहि विचारि हित हानी॥कीजै श्याम कूबरीसों नित नेह करम मन वानी ॥ तुलसी तजिय कुचालि आलि अब सुधरै सबइ नसानी॥ आगे करि मधुकर मथुराकहँ सोधिय सुदिन

सयानी ॥ ४९ ॥ (राग कान्हरा) हे हम समाचार सब पाए ॥ अब विशेष देखे तुम्ह देखेहैं कुबरी कहाँसे लाए ॥ मथुरा बडो नगर नागर जन जिन्ह जातहि यदुनाथ पठाए ॥ समुझि रहनि सुनि कहनि बिरह व्रण अनष अमिय औषध सरुहाए ॥ मधुकर रसिक शिरोमणि कहियत कौने यह रसरीति सिखाये॥बिनु आषरको गीत गाइगाइ चाहत ग्वालिनी ग्वाल रिझाए॥ फल पहिले ही लह्यो ब्रजवासिन्ह अब साधन उपेदशन आए ॥ तुलसी अलि अजहूँ नहिं बूझत कौनहेतु नँदलाल पठाए ॥ ५० ॥ कौन सुनै अलिकी चतुराई । अपनिहि मति बिलास अकाशमहँ चाहत सियनि चलाई॥ सरल सुलभ हरिभक्ति सुधाकर निगम पुराणनि गाई ॥ तजि सोइ सुधा मनोरथ करि करि को मरिहै री माई ॥ यद्यपि ताके सोइ मारगप्रिय जाहि जहाँ बनिआई ॥ मैनके दशन कुलिशके मोदक कहत सुनत बौराई ॥ सगुन क्षीरनिधि तीर वसत ब्रज तिहुँपर विदित बड़ाई॥आकदुहन तुम्ह कह्यो सो परिहरि हम यह मति नहिं पाई ॥ जानत हैं यदुनाथ सबनकी बुधिविवेक जड़ताई । तुलसिदास जनि बकहिं मधुप शठ हठ निशिदिन अवराई ॥ ५१ ॥ (राग केदारा) गोकुल प्रीति नित नई जानि । जाइ अनत सुनाइ मधुकर ज्ञानगिरा

तुलसिदास व्रजबनितनको व्रत समरथको करि जतन निवारे ॥ ९७ ॥ मधुप समुझि देखहु मनमाहीं । प्रेमपियूषरूप उडुपति बिनु कैसे हौं अलि पैयत रवि पाहीं ॥ यद्यपि तुमहित लागि कहत सुनि श्रवण वचन नहिं हृदय समाहीं ॥ मिलहिं न पावकमहँ तुपारकण जो खोजत शतकल्प सिराहीं ॥ तुम कहि रहे हमहुँ पचिहारी लोचनहठी तजत हठ नाहीं ॥ तुलसिदास सोइ जतन करहु कछु वारक श्याम इहाँ फिरि जाहीं॥ ॥ ९८ ॥ मोको अब नयन भये रिपु माई ॥ हरिवि-योग तनु तजेहि परमसुख ए राखहिं सोइहे वरियाई॥ बरु मन कियो वहुत हित मेरो वारहिंवार कामदेव लाई ॥ वरपि नीर ए तबहिं बुझावहिं स्वारथ निपुण अधिक चतुराई ॥ ज्ञान परशु दे मधुप पठायो विरह वेलि कैसेहु कहिजाई ॥ सो थाक्यो वरह्यो एकहि तक देखत इन्हकी सहज सिंचाई ॥ हारतहू न हारि मानत सखि शठ सुभाव कंदुककी नाई ॥ चातक जलज मिनहुँते भीरे समुझत नहिं उन्हकी निठुराई ॥ ए हठ निरत दरश लालचवश परे जहाँ बुधिवल न बसाई ॥ तुलसिदास इन्हपर जो द्रवहिं हरि तौ पुनि मिलौं बयरु बिसराई ॥ ९९ ॥ (राग आसावरी

कहा भयो कपटजुआँ जोहौं हारी। समरधीर महा-
वीर पाँचपति क्यों देहैं मोहिं होन उघारी॥ राजस-
माज सभासद समरथ भीषम द्रोण धर्मधुरधारी॥
अबला अनघ अनवसर अनुचित होति हेरि करिहैं
रखवारी॥ यों मन गुनति दुशासन दुरजन तमक्यो
तकि गहि दुहुँकर सारी॥ सकुचि गात गोवति कमठी
ज्यौं हहरी हृदय विकल भइ भारी॥अपनेनिको अपनो
विलोकि बल सकल आस विश्वास बिसारी॥ हाथ
उठाइ अनाथ नाथसों पाहि पाहि प्रभु पाहि पुकारी॥
तुलसी परखि प्रतीत प्रीतिगति आरतपाल कृपालु
मुरारी॥ वसनवेष राखी विशेषलखि विरदावलि मूरति
नरनारी॥ ६०॥ गहगह गगन दुंदुभी बाजी॥ वरषि
सुमन सुरगण गावत यश हरष मगन मुनि सुजन
समाजी॥ सानुज सगण ससचिव सुयोधन मुख मलि
भए खाइ खल खाजी॥ लाज गाज उनवनि कुचा-
लिकलि परि वजाइ कहूँकहूँ गाजी॥ प्रीति प्रतीति
द्रुपदतनयाकी भली भूरि भय भभरि न भाजी॥ कहि
पारथ सारथिहि सराहत गई बहोरि गरीबनिवाजी॥
शिथिल सनेह मुदित मनहींमन वसन बीचबिच वधू
विराजी॥ सभासिंधु यदुपति जयमय जनु रमा प्रगटि

त्रिभुवनभरि भ्राजी ॥ युग युग जग साके केशवके शमन कलेश कुसाज सुसाजी ॥ तुलसीको न होइ सुनि कीरति कृष्णकृपालु भगतिपथ राजी ॥ ६१ ॥

इति श्रीगुसाईंतुलसीदासजीविरचिताकृष्णगीतावलीसंपूर्णा।

॥ शुभमस्तु ॥



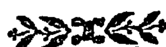
॥ श्रीः ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत–

रामाज्ञा प्रश्न.



श्रीहरिपदपद्मपरागलुब्धक भगवतविश्वासी संत महंत गृहस्थ तथा सभी हरिभक्त जनोंका अपना २ शुभाशुभ फल जाननेके लिये आईना (दर्पण) है ।



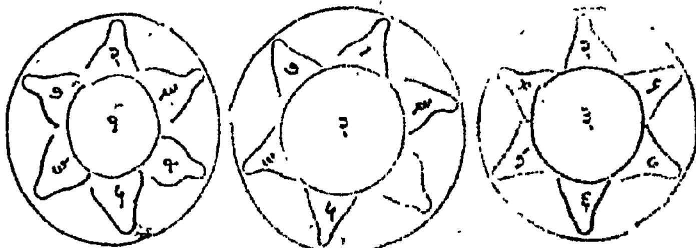
खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् १९८८, शकाब्दाः १८५३.

॥ श्रीसीतारामजी



१	२	३	४	५	६	७
२४	२५	२६	२७	२८	२९	८
२३	४०	४१	४२	४३	३०	९
२२	३९	४८	४९	४४	३१	१०
२१	३८	४७	४६	४५	३२	११
२०	३७	३६	३५	३४	३३	१२
१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३

सूचना।

इस प्रश्नके जाननेकी यह रीति है कि प्रथम ऊपर (अध्याय) के अंकचक्रमें किसी अंकपर अंगुली रक्खो पश्चात् नीचे (दोहा) के अंकचक्रमें किसी अंकपर अँगुली रक्खो तत्पश्चात् जिस अध्यायका जो दोहा हो उसका फल बाँच-कर (अपना) हानि लाभ समझ लो।

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते।

रामाज्ञा प्रश्न।

दोहा।

बाणि विनायक अंब रवि, गुरु हर रमा रमेश॥
सुमिरि करहु सब काज शुभ, मंगल देश विदेश॥१॥
गुरु सरसइ सिंधुरवदन, शशि सुरसरि सुर गाइ॥
सुमिरि चलहु मग मुदित मन, होइहि सुकृत सहाइ॥२॥
गिरा गौरि गुरु गणप हर, मंगल मंगल-मूल॥
सुमिरत करतल सिद्धि सब, होइ ईश अनुकूल॥३॥
भरत भारती रिपुदवन, गुरु गणेश बुधवार॥
सुमिरत सुलभ सुधर्म फल, विद्या विनय विचार॥४॥
सुरगुरु गुरु सिय रामगण, राउ गिरा उर आनि॥
जो कछु करिय सो होइ शुभ, खुलहिं सुमंगल खानि॥५॥
शुक्र सुमिरि गुरु शारदा, गणप लषण हनुमान॥
करिय काज सब साज भल, निपटहि नीक निदान॥६॥
तुलसी तुलसीराम सिय, सुमिरि लषण हनुमान॥
काज विचारेहु सो करहु, दिन दिन बड कल्याण॥७॥
दशरथराज न ईति भय, नहिं दुख दुरित दुकाल॥
प्रमुदित प्रजा प्रसन्न सब, सब सुख सदा सुकाल॥८॥

कौशल्यापद नाइ शिर, सुमिरि सुमित्रा पाँय ॥
करहु काज मंगल कुशल, विधि हरि शंभु सहाय॥९॥
विधिवश वन मृगया फिरत, दीन्ह अंध मुनि शाप ॥
सो सुनि विपति विषाद बड़,प्रजहि शोक संताप॥१०॥
सुत हित विनती कीन्हि नृप, कुलगुरु कहा उपाउ ॥
होइहि भल संतान सुनि, प्रमुदित कोशलराउ॥११॥
पुत्रयज्ञ करवाइ ऋषि, राजहि दीन्ह प्रसाद ॥
सकल सुमंगल मूलजग, भूसुर आशिरवाद ॥ १२ ॥
राम जन्म घर घर अवध, मंगल गान निसान ॥
शकुन सुहावन होइ सुत, मंगल मोद निधान ॥ १३ ॥
राम भरत सानुज लषण, दशरथ बालक चारि ॥
तुलसी सुमिरत शकुन शुभ, मंगल कहब प्रचारि॥१४॥
भूप भवन भाइन्ह सहित, रघुवर बाल विनोद ॥
सुमिरत सब कल्याण जग, पगपग मंगल मोद॥१५॥
करनवेध चूडाकरन, श्रीरघुवर उपवीत ॥
समय सकल कल्याणमय, मंजुल मंगल गान ॥ १६ ॥
भरत शत्रुसूदन लषण, सहित सुमिरि रघुनाथ ॥
करहु काज शुभ साज सब,मिलहि सुमंगल साथ॥१७॥
राम लषण कौशिक सहित, सुमिरहु करहु पयान॥
लक्ष्मिलाभ जय जगत यश, मंगल शकुन प्रमान॥१८॥
मुनि मखपाल कृपालु प्रभु, चरणकमल उर आनु ॥
तजहु सोच संकट मिटिहि,सत्य शकुन जियजानु॥१९॥

हानि मीचु दारिद दुरित, आदि अंत गति बीच ॥
राम विमुख अघ आपने, गए निशाचर नीच ॥२०॥
शिला शाप मोचन चरण, सुमिरहु तुलसीदास ॥
तजहु सोच संकट मिटिहि, पूजिहि मनकै आस ॥२१॥
सीय स्वयंवर समउ भल, शकुन साध सब काज ॥
कीरति विजय विवाह विधि, सकल सुमंगल साज॥२२॥
राजत राजसमाजमहँ, राम भंजि भवचाप ॥
शकुन सुहावन लाभ बड़, जय पर सभा प्रताप ॥२३॥
लाभ मोद मंगल अवधि, सिय रघुवीर विवाहु ॥
सकल सिद्धिदायक समउ,शुभ सब काज उछाहु॥२४॥
कोशलपालक बाल उर, सियमेली जयमाल ॥
समउ सुहावन शकुन भल, मुद मंगल सब काल॥२५॥
हरषि विबुध वरषहिं सुमन, मंगल गान निसान ॥
जय जय रविकुल कमल रवि,मंगल मोद निधान॥२६॥
सतानंद पठये जनक, दशरथ सहित समाज ॥
आये तिरहुति शकुन शुभ,भये सिद्ध सब काज ॥२७॥
दशरथ पूरण परव विधु, उदित समय संयोग ॥
जनकनगर सर कुमुद गण,तुलसी प्रमुदित लोग॥२८॥
मन मलीन मानी महिप, कोककोकनद वृंद ॥
सुहृद समाज चकोर चित,प्रमुदित परमानंद ॥ २९ ॥
तेहि अवसर रावण नगर, अशकुन अशुभ अपार ॥
होहिं हानि भय मरन दुख, सूचक बारहिं बार ॥ ३० ॥

मधु माधव दशरथ जनक, मिलब राज ऋतुराज ॥
शकुन सुवन नव दल सुतरु, फूलत फलत सुकाज॥२१॥
विनय पराग सुप्रेम रस, सुमन सुभग संवाद ॥
कुसुमित काज रसाल तरु, शकुन सुकोकिल नाद॥२२॥
उदित भानुकुल भानु लखि, लुके उलूक नरेश ॥
गये गँवाइ गरूरपति, धनु मिस हये महेश ॥ २३ ॥
चारि चारु दशरथकुँवर, निरखि मुदित पुर लोग ॥
कोशलेश मिथिलेशको, समउ सराहन योग ॥ २४ ॥
एक वितान विवाहि सब, सुवन सुमंगल रूप ॥
तुलसी सहित समाज सुख, सुकृत सिंधु दोउ भूप॥२५॥
दाइज भयउ अनेक विधि, सुनि सिहाहिं दिशिपाल ॥
सुख संपति संतोषमय, शकुन सुमंगल माल ॥ २६ ॥
वर दुलहिनि सब परस्पर, मुदित पाइ मन काम ॥
चारु चारि जोरी निरखि, दुहुँ समाज अभिराम ॥२७॥
चारिउ कुँवर विवाहि पुर, गवने दशरथ राउ ॥
भये मंजु मंगल शकुन, गुरु सुर शंभु पसाउ ॥ २८ ॥
पंथ परशुधर आगमन, समय सोच सवकाहु ॥
राज समाज विषाद बड़, भयवश मिठा उछाहु ॥ २९ ॥
रोष कलुष लोचन भ्रुकुटि, पाणि परशु धनु बान ॥
कालकराल विलोकि मुनि, सब समाज बिलखान॥४०॥
प्रभुहिं सौंपि शारंग मुनि, दीन्ह सुआशिरवाद ॥
जय मंगल सूचक शकुन, राम राम संवाद ॥ ४१ ॥

अवध अनंद बधावनो, मंगल गान निसान ॥
तुलसी तोरन कलश पुर, चँवर पताक वितान ॥४२॥
साजि सुमंगल आरती, रहस विवस रनिवास ॥
मुदित मातु परिछन चलीं; उमँगत हृदय हुलास ४३ ॥
करहिं निछावरि आरती, उमँगि उमँगि अनुराग ॥
वर दुलहिनि अनुरूप लखि,सखी सराहहिं भाग४४॥
मुदित नगर नर नारि सब, शकुन सुमंगल मूल ॥
जय धुनि मुनि सुर दुंदुभी,बाजहिं वरषहिं फूल॥४५॥
आये कोशलपाल पुर, कुशल समाज समेत ॥
समउ सुनत सुमिरत सुखद, सकल सिद्धि शुभ देत ४६
रूपशील वय वंश गुण, सम विवाह भये चारि ॥
मुदित राउ रानी सकल, कानुकूल त्रिपुरारि ॥ ४७ ॥
विधि हरि हर अनुकूल अति,दशरथ राजहि आजु ॥
देखि सराहत सिद्ध सुर,संपति समउ समाजु ॥ ४८॥
शकुन प्रथम उनचास शुभ, तुलसी अति अभिराम॥
सब प्रसन्न सुर भूमिसुर, गोगण गंगाराम ॥ ४९ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

समउ राम युवराज कर, मंगल मोद निकेतु ॥
शकुन सुहावन संपदा, सिद्ध सुमंगल हेतु ॥ १ ॥
सुरमायावश कैकयी, कुसमय कीन्हि कुचालि ॥
कुटिल नारि मिस होइ छल,अनभल आजु कि कालि२॥

कुसमय कुशकुन कोटि सम, राम सीय वनवास ॥
अनरथ अनभल अवधि जग,जानब सरवस नास॥३॥
शोचत पुर परिजन सकल, विकल राउ रनिवास ॥
छल मलीन मन तीयमिस, विपति विषाद विनाश॥४॥
लषण राम सिय वनगमन, सकल अमंगल मूल ॥
सोच पोच संताप वश, कुसमय संशय शूल ॥ ५ ॥
प्रथम वास सुरसरि निकट, सेवा कीन्हि निषाद ॥
कहब शुभाशुभ शकुन फल,विसमय हरष विषाद॥६॥
चले नहाइ प्रयाग प्रभु, लषण सीय रघुराज ॥
तुलसी जानब शकुन फल, होइहि साधु समाज ॥७॥
सीय राम लोने लषण, तापस वेष अनूप ॥
तप तीरथ जप जोग हित, शकु सुमंगल रूप ॥ ८ ॥
सीता लषण समेत प्रभु, यमुना उतरि नहाइ ॥
चले सकल संकट शमन, शकुन सुमंगल पाइ ॥ ९ ॥
अवध शोक संताप वश, विकल सकल नर नारि ॥
वाम विधाता राम विनु, माँगत मीचु पुकारि ॥ १० ॥
लषण सीय रघुवंश मणि, पथिक पाय उर आनि ॥
चलहु अगम मग सुगम शुभ,शकुन सुमंगल खानि११
ग्राम नारि नर मुदित मन, लषण राम सिय देखि ॥
होइ प्रीति पहिचान बिनु, मान विदेश विशेषि ॥१२॥
वन मुनि गण रामहिं मिलहिं,मुदित सुकृत फल पाइ॥
शकुन सिद्ध साधक दरश, अभिमत होइ अघाइ॥१३॥

चित्रकूट पयतीर प्रभु, वसे भानुकुल भानु ॥
तुलसी तप जप योगहित, शकुन सुमंगल जानु ॥१४॥
हंसवंश अवतंस जब, कीन्ह वास पयपास ॥
तापस साधक सिद्ध मुनि, सबकहँ शकुन सुपास॥१५॥
विटप वेलि फूलहिं फलहिं, जल थल विमल विशेषि ॥
मुदित किरात विहंग मृग, मंगल मूरति देखि ॥ १६ ॥
सींचत सीय सरोज कर, बये विटपवट वेलि ॥
समउ सुकालु किसानहित,शकुन सुमंगल केलि॥१७॥
हय हाँके दक्षिण दिशा, हेरिहेरि हिहिनात ॥
भये निषाद विषाद वश, अवध सुमंतहि जात ॥१८॥
सचिव सोच व्याकुल सुनत, अशकुन अवध प्रवेश ॥
समाचार सुनि शोकवश, माँगी मीचु नरेश ॥ १९ ॥
राम राम कहि राम सिय, रामशरन भये राउ ॥
सुमिरहु सीता राम अब, नाहिंन आन उपाउ॥ २० ॥
राम विरह दशरथ मरन, मुनि मन अगम सुमीचु ॥
तुलसी मंगल मरण तरु, शुचि सनेह जल सींचु॥२१॥
धीर वीर रघुवीर प्रिय, सुमिरि समीर कुमारु ॥
अगम सुगम सब काज करु,करतल सिद्ध विचारु२२॥
सुमिरि शत्रुसुदन चरण, शकुन सुमंगल मानि ॥
पर पुर वाद विवाद जय, जुझ जुआ जय जानि ॥२३॥
सेवक सखा सुबंधु हित, शकुन विचारु विशेषि ॥
भरत नाम गुणगण विमल,सुमिरि सत्य सब लेषि२४॥

साहिब समरथ शीलनिधि, सेवत सुलभ सुजान ॥
राम सुमिरि सेइय सुप्रभु,शकुन कहब कल्यान ॥ २५ ॥
सुकृत शील शोभा अवधि, सीय सुमंगल खानि ॥
सुमिरि शकुन तिय धरम हित,कहब सुमंगल जानि२६
ललित लषण मूरति हृदय, आनि धरे धनुबान ॥
करहु काज शुभ शकुन सब, मुद मंगल कल्यान॥२७॥
राम नाम पर रामते, प्रीति प्रतीति भरोस ॥
सो तुलसी सुमिरत सकल,शकुन सुमंगल कोस ॥२८॥
गुरु आयसु आये भरत, निरखि नगर नर नारि ॥
सानुज सोचत पोच विधि,लोचन मोचत वारि॥ २९ ॥
भूप मरन प्रभु वनगवन, सबविधि अवध अनाथ ॥
रोवत समुझि कुमातु कृत, मींजि हाथ धुनिमाथ॥३०॥
वेद विहित पितु करम करि, लिये संग सब लोग ॥
चले चित्रकूटहिं भरत, व्याकुल राम वियोग ॥ ३१ ॥
राम दरश हिय हर्ष बड़, भूपति मरन विषाद ॥
सोचत सकल समाज सुनि, राम भरत संवाद ॥ ३२ ॥
सुनि शिष आशिष पावरी, पाइ नाइ पद माथ ॥
चले अवध संताप वश, विकल लोग सब साथ ॥३३॥
भरत नेम व्रत धर्म शुभ, रामचरण अनुराग ॥
शकुन समुझि साहस करिय,सिद्ध होइ जप जाग॥३४॥
चित्रकूट सब दिन वसत, प्रभु सिय लषण समेत ॥
राम नाम जप जापकहि, तुलसी अभिमत देत ॥३५॥

पय पावनि वन भूमि भलि, शैल सुहावन पीठ ॥
रागहि सीठविशेष थलु, विषय विरागिहि मीठ॥३६॥
फटिकशिला मंदाकिनी, सिय रघुवीर विहार ॥
राम भगत हित शकुन शुभ, भूलत भगति भँडार ॥३७॥
शकुन सकल संकट शमन, चित्रकूट चलि जाहु ॥
सीताराम प्रसाद शुभ, लघु साधन बड लाहु ॥ ३८ ॥
दिये अत्रितिय जानकिहि, वसन विभूषण भूरि ॥
रामकृपा संतोप सुख, होहिं सकल दुख दूरि ॥ ३९ ॥
काक कुचालि विराध वध, देह तजी शरभंग ॥
हानि मरन सूचक शकुन, अनरथ अशुभ प्रसंग ॥ ४० ॥
राम लपण मुनि गण मिलन, मंजुल मंगल मूल॥
सत समाज तब होइ जब, रमा राम अनुकूल ॥ ४१ ॥
मिले कुंभसंभव मुनिहि, लषण सीय रघुराज ॥
तुलसी साधु समाज सुख,सिद्ध दरश शुभ काज॥४२॥
सुनि मुनि आयसु प्रभु कियो, पंचवटी वसि वास॥
भइ महि पावनि परसि पद,भा सबभाँति सुपास॥४३॥
सरित सरोवर सजल सब, जलज विपुल बहुरंग॥
समट सुहावन शकुन शुभ, राजा प्रजा प्रसंग ॥ ४४ ॥
विटप वेलि फूलहिं फलहिं,शीतल सुखद समीर॥
मुदित विहँग मृग मधुप गण,वनपालक दोउ वीर॥४५॥
मोदाकर गोदावरी, विपिन सुखन सबकाल ॥
निर्भय मुनि जप तप करहिं,पालक राम कृपाल॥४६॥

भेंट गीध रघुराजसन, दुहुँ दिशि हृदय हुलास ॥
सेवक पाइ सुसाहिबहिं, साहिब पाइ सुदास ॥ ४७ ॥
पढहिं पढावहिं मुनितनय, आगम निगम पुरान ॥
शकुन सुविद्या लाभहित, जानब समय समान ॥ ४८ ॥
निजकर सींचति जानकी, तुलसी लाइ रसाल ॥
शुक दूती उनचास भलि, वरषा कृषी सुकाल ॥ ४९ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दंडकवन पावन करन, चरण सरोज प्रभाउ ॥
ऊषर जामहिं खल तरहिं, होइँ रंकते राउ ॥ १ ॥
कपटरूप मन मलिन गइ, शूर्पनखा प्रभुपास ॥
कुशकुन कठिन कुनारि कृत, कलह कलुष उपहास ॥२॥
नाक कान बिनु विकल भइ, विकट कराल कुरूप॥
कुशकुन पाउ न देव मग, पग पग कंटक कूप ॥ ३ ॥
खर दूषण देखी दुखित, चले साजि सब साज ॥
अनरथ अशकुन अघ अशुभ, अनलभ अखिल अकाज४
कटु कुठाय करटा रटहिं, फेकरहिं फेरु कुभाँति ॥
नीच निशाचर मीचु कस, अनी मोह मद मानि॥५॥
राम रोष पावक प्रबल, निशिचर शलभ समान ॥
लरत परत जारि जारि मरत, भये भसम जग जान॥६॥
सीता लषणसमेत प्रभु, सोहत तुलसीदास ॥
हरषत सुर वरषत सुमन, शकुन सुमंगल वास ॥ ७ ॥

सुभट सहस चौदह सहित,भाइ कालवश जानि ॥
शूर्पणखा लंकहिं चली,अशुभ अमंगल खानि ॥ ८ ॥
वसन सकल शोणित समल,विकट वदन गत गात ।
रोवति रावणकी सभा, तात मात हा ! भ्रात ॥ ९ ॥
कालकि मूरति कालिका, कालराति विकराल ॥
बिन पहिचाने लंकपति,सभा समय तेहिकाल ॥ १० ॥
शूर्पनखा सब भाँति गत, अशुभ अमंगल मूल ॥
समय साढसाती सरिस,नृपहि प्रजहि प्रतिकूल ॥११ ॥
वरवश गवनत रावणहिं, अशकुन भये अपार ॥
नीच गनत नहिं मीचुवश, मिलि मारीच विचार१२॥
इत रावण उत रामकर, मीचु जानि मारीच ॥
कपट कनक मृग वेष तब, कीन्ह निशाचर नीच १३॥
पंचवटी वट विटपतर, सीता लषण समेत ॥
सोहत तुलसीदास प्रभु, सकल सुमंगल देत ॥ १४ ॥
माया मृग पहिचानि प्रभु, चले सीयरुचि जानि ॥
वंचक चोर प्रपंचकृत, शकुन कहब हित हानि ॥१५॥
सीयहरण अवसर शकुन, भय संशय संताप ॥
नारि काजहित निपट गत,प्रगट पराभव पाप ॥ १६ ॥
गीधराज रावण समर, घायल वीर विराज ॥
सूर सुयश संग्राम महि, मरण सुसाहिब काज ॥१७॥
राम लषण वनवन विकल,फिरत सीय सुधि लेत ॥
सूचत शकुन विषाद बड,अशुभ अरिष्ट अचेत ॥१८॥

रघुवर विकल विहंग लखि,सो विलोकि दोउ वीर॥
सिय सुधि कहि सिय रामकहि,तजी देह मतिधीर॥१९॥
दशरथते दशगुण भगति, सहित तासु करिकाज ॥
सोचत बंधुसमेत प्रभु, कृपासिंधु रघुराज ॥ २० ॥
तुलसी सहित सनेह नित, सुमिरहु सीताराम ॥
शकुन सुमंगल शुभ सदा,आदि मध्य परिणाम ॥२१॥
सकल काज शुभसमउ भल,शकुनसुमंगल जानु ॥
कीरति विजय विभूति भलि,हिय हनुमानहिंआनु॥२२॥
सुमिरि शत्रुसूदन चरण, चलहु करहु सब काज ॥
शत्रुपराजय निज विजय,शकुन सुमंगल साज ॥ २३ ॥
भरत नाम सुमिरत मिटहिं,कपट कलेश कुचालि ॥
नीति प्रीति परतीतिहित, शकुन सुमंल शालि ॥२४॥
राम नाम कलि कामतरु, सकल सुमंगल कंद ॥
सुमिरत करतल सिद्धि जग,पग पग परमानंद॥ २५ ॥
सीताचरण प्रणाम करि, सुमिरि सुनाम सनेम ॥
सुतिय होहिं पतिदेवता, प्राणनाथ प्रिय प्रेम॥ २६ ॥
लषण ललित मूरति मधुर,सुमिरहु सहित सनेह ॥
सुखसंपति कीरति विजय,शकुन सुमंगल गेह ॥ २७ ॥
तुलसी तुलसी मंजरी,मंगल मंजुल मूल ॥
देखत सुमिरत शकुन शुभ,कल्पलता फल फूल॥ २८ ॥
खल बल अंध कबंध वश, परे सुबंधु समेत ॥
शकुन सोच संकट कहब,भूत प्रेत दुख देत ॥ २९ ॥

पाई नीच सुमीचु भलि, मिटा महामुनि शाप ॥
विहँग मरण सिय सोच मन, शकुन समय संताप ३०॥
कहि शबरी सब सीय सुधि, प्रभु सराहि फल खात ॥
सोच समय संतोष सुनि, शकुन सुमंगल बात ॥ ३१ ॥
पवनसुवनसन भेंट भइ, भूमिसुता सुधि पाइ ॥
सोच विमोचन शकुन शुभ, मिला सुसेवक आइ ॥३२॥
राम लषण हनुमान मन, दुहुँ दिशि परम उछाहु ॥
मिला सुसाहिब सेवकहि, प्रभुहि सुसेवक लाहु ॥३३॥
कीन्ह सखा सुग्रीव प्रभु, दीन्हि बाहँ रघुवीर ॥
शुभ सनेह हित शकुन फल, मिटइ सोच भयभीर ३४॥
बली वालि बलशालि दलि, सखा कीन्ह कपिराज ॥
तुलसी रामकृपालुको, विरद गरीब नेवाज ॥ ३५ ॥
बंधु विरोध न कुशल कुल, कुशन कोटि कुचालि ॥
रावण रविको राहुसो, भयो कालवश वालि ॥ ३६ ॥
कीन्ह वास वरषा निरखि, गिरिवर सानुज राम ॥
काज विलंबित शकुन फल, होइहि भल परिणाम३७॥
सीय सोध कपि भालु सब, बिदा किये कपिनाथ ॥
जतन करहु आलस तजहु, नाइ रामपद माथ ॥ ३८ ॥
हनूमान हियहरषि तब, राम जोहारे जाइ ॥
मंगल मूरति मारुतिहि, सादर लीन्ह बुलाइ ॥ ३९ ॥
डाटे वानर भालु सब, अवधिगये बिन काज ॥
जो आइहि सो कालवश, कोपि कहा कपिराज ॥४०

ज्ञान शिरोमणि जानि जिय, कपि बल बुद्धिनिधान॥
दीन्हि मुद्रिका मुदित प्रभु, पाइ मुदित हनुमान॥४१॥
तुलसी करतल सिद्धि सब, शकुन सुमंगल साज॥
करि प्रणाम रामहिं चलहु, साहस सिद्ध सुकाज ४२॥
नाथु हाथ माथे धरेउ, प्रभु मुँदरी मुहँ मेलि॥
चलेउ सुमिरि शारंगधर,आनिहि सिद्धि सकेलि ४३॥
संग नील नल कुमुद गद,जाम्बवंत युवराज॥
चले रामपद नाइ शिर, शकुन सुमंगल साज॥ ४४॥
पैठि बिवर मिलि तापसिहि, अचइ पानि फल खाइ॥
शकुन सिद्ध साधक दरश, अभिमत होइ अघाइ ४५॥
वनचर विकल विषाद वश, देखि उदधि अवगाह॥
असमंजस बड़ शकुन गत, विधिवश होइ निबाह४६॥
सब सभीत संपाति लखि, ठहरे हृदय हरास॥
कहत परस्पर गीध गति, परिहरि जीवन आस ४७॥
नव तनु पाइ देखाइ प्रभु, महिमा कथा सुनाइ॥
धरहु धीर साहस करहु, मुदित सीय सुधि पाइ ४८॥
तुलसीराम प्रभाउ कहि, मुदित चले संपाति॥
शुभ तीसर उनचास भल, शकुन सुमंगल पाँति ४९॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः॥ ४ ॥

राम जनम शुभ शकुन भल, सकल सुकृत सुखसार॥
पुत्र लाभ कल्याण बड़, मंगलचार विचार॥ १॥

दसरथ कुलगुरुकी कृपा, सुतहित यज्ञ कराइ ॥
पायस पाइ विभाग करि, रानिन्ह दीन्ह बुलाइ ॥२॥
सब सगरभ सोहहिं सदन, सकल सुमंगलखानि ॥
तेज प्रताप प्रसन्नता, रूप न जाहिं बखानि ॥ ३ ॥
देखि सुहावन स्वप्न शुभ, शकुन सुमंगल पाइ ॥
कहहिं भूपसन मुदित मन, हर्ष न हृदय समाइ ॥ ४ ॥
स्वप्न शकुन सुनि राउ कह, कुल गुरु आशिर्वाद ॥
पूजिहि सब मनकामना, शंकर गौरि प्रसाद ॥ ५ ॥
मास पाख तिथि योग शुभ, नखत लगन ग्रह वार ॥
सकल सुमंगल मूल जग, राम लीन्ह अवतार ॥ ६ ॥
भरत लषण रिपुदवन सब, सुवन सुमंगल मूल ॥
टग भये नृप सुकृत फल,तुलसी विधि अनुकूल ॥७॥
घर घर अवध बधावने, मुदित नगर नर नारि ॥
वरषि सुमन हरषहिं विबुध, विधि त्रिपुरारि मुरारि॥८॥
मंगल गान निसान नभ, नगर मुदित नर नारि ॥
भूप सुकृत सुरतरु निरखि, फरे चारुफल चारि ॥९॥
पुत्र काज कल्याण नृप, दिये दान बहु भाँति ॥
रहस विवश रनिवास सब, मुद मंगल दिन राति॥१०॥
अनु दिन अवध बधावने, नित नव मंगलमोद ॥
मुदित मातु पितु लोग लखि,रघुवर बालविनोद॥११॥
कर्णवेध चूडाकरन, लौकिक वैदिक काज ॥
गुरु आयसु भूपति करत, मंगल साज समाज ॥ १२ ॥

राजअजिर राजत रुचिर, कोशलपालकबाल ॥
जानु पानि चर चरित वर, शकुन सुमंगल माल॥१३॥
लहे मातु पितु भागवश, सुत जग जलधि ललाम ॥
पुत्रलाभ हित शकुन शुभ, तुलसी सुमिरहु राम॥१४॥
बाल विभूषण वसन धर, धूरि धूसरित अंग ॥
बालकेलि रघुवर करत, बाल बंधु सब संग ॥ १५ ॥
राम भरत लछिमन ललित, शत्रुशमन शुभ नाम ॥
सुमिरत दशरथसुवन सब, पूजिहि सब मनकाम॥१६॥
नाम ललित लीला ललित, ललित रूप रघुनाथ॥
ललित वसन भूषण ललित, ललित अनुज शिशु साथ१७
सुदिन साधि मंगल किये, दिये भूप व्रतबंध ॥
अवध बधाव विलोकि सुर, वरषत सुमन सुगंध ॥१८॥
भूपति भूसुर भाट नट, याचक पुर नर नारि ॥
दिये दान सनमानि सब, पूजे कुल अनुहारि ॥ १९ ॥
सखी सुआसिनि विप्रतिय, सनमानी सब राय ॥
ईश मनाय अशीश शुभ, देहि सनेह सुभाय ॥ २० ॥
राम काज कल्याण सब, शकुन सुमंगल मूल ॥
चिरजीवहु तुलसीश सब, कहि सुर वरषहिं फूल॥२१॥
रामजनम शुभकाज सब, कहत देवऋषि आइ ॥
सुनि धुनि मन हनुमानके, प्रेम उमँग न अमाइ ॥२२॥
भरत श्याम तन राम सम, सबगुण रूपनिधान ॥
सेवक सुखदायक सुलभ, सुमिरत सब कल्यान॥२३॥

ललित लाहु लोने लषण, लोयन लाहु निहारि ॥
सुत ललाम लालहु ललित, लेहु ललकि फल चारि२४
मंगलमूरति मोदनिधि, मधुर मनोहर वेष ॥
राम अनुग्रह पुत्रफल, होइहि शकुन विशेष ॥ २५ ॥
सोधत मख महि जनकपुर, सीय सुमंगलखानि ॥
भूपति पुण्य पयोधि जनु, रमा प्रगट भइ आनि ॥२६॥
नाम शत्रुसूदन सुभग, सुखमा शील निकेत ॥
सेवत सुमिरत सुलभ सुख, सकल सुमंगल देत॥ २७ ॥
बालक कोशलपालके, सेवकपाल कृपाल ॥
तुलसी मन मानस बसत, मंगल मंजु मराल ॥ २८ ॥
जनकनंदिनी जनकपुर, जबते प्रगटीं आइ ॥
तबते सबसुख संपदा, अधिक अधिक अधिकाइ ॥ २९॥
सीय स्वयंवर जनकपुर, सुनि सुनि सकल नरेश ॥
आये साज समाज सजि, भूषण बसन सुदेश ॥ ३० ॥
चले मुदित कौशिक अवध, शकुन सुमंगल साथ ॥
आये सुनि सनमानि गृह, आने कोशलनाथ ॥ ३१ ॥
सादर सोरह भाँति नृप, पूजि पहुनई कीन्हि ॥
विनय बड़ाई देखि मुनि, अभिमत आशिष दीन्हि॥३२॥
मुनि माँगे दशरथ दिये, राम लषण दोउ भाइ ॥
पाइ शकुन फल सुकृत फल, प्रमुदित चले लेवाइ ॥३३॥
श्यामल गौर किशोर वर, धरे तूण धनु बान ॥
सोहत कौशिक सहित मग, मुद मंगल कल्यान ॥३४॥

शैल सरित सर बाग वन, मृग विहंग बहुरंग ॥
तुलसी देखत जात प्रभु,मुदित गाधिसुत संग ॥ ३५ ॥
लेत विलोचन लाभ सब, बड़भागी मगलोग ॥
रामकृपा दरशन सुगम,अगम जाग जप योग ॥ ३६ ॥
जलद छाँह मृदु मग अवनि, सुखद पवन अनुकूल ॥
हरषइ विबुध विलोकि प्रभु,वरषत सुरतरु फूल॥ ३७ ॥
दले मलिन खल राखि मख, मुनि शिष आशिष दीन्हि॥
विद्या विश्वामित्र सब, सुथल समरपित कीन्हि ॥३८॥
अभय किये मुनि राखि मख, धरे बाण धनु भाथ ॥
धनु मख कौतुक जनकपुर,चले गाधिसुत साथ॥ ३९ ॥
गौतमतिय तारन चरण, कमल आनि उर देषु ॥
सकल सुमंगल सिद्धि सब,करतल शकुन विशेषु॥४०॥
जनक पाइ प्रिय पाहुने, पूजे पूजन योग ॥
बालक कोशलपालके, देखि मगन पुरलोग ॥ ४१ ॥
सनमाने आने सदन, पूजे अति अनुराग ॥
तुलसी मंगल शकुन शुभ, भूरि भलाई भाग ॥ ४२ ॥
कौशिक देखन धनुष मख, चले संग दोउ भाइ ॥
कुँवर निरखि पुर नारि नर,मुदित नयनफल पाइ॥४३॥
भूप सभा भवचाप दलि, राजत राजकिशोर ॥
सिद्धि सुमंगल शकुन शुभ,जय जय जय सब ओर४४
जय मय मंजुल माल उर, मंगल मूरति देषि ॥
गान निसान प्रसून झरि, मंगल मोद विशेषि ॥ ४५ ॥

समाचार सुनि अवधपति, आये सहित समाज ॥
प्रीति परस्पर मिलत मुद, शकुन सुमंगल साज ॥४६॥
गान निसान वितान वर, विरचे विविध विधान ॥
चारि विवाह उछाह बड़, कुशल काज कल्यान ॥४७॥
दाइज पाइ अनेक विधि, सुत सुतवधुन समेत ॥
अवधनाथ आये अवध, सकल सुमंगल लेत ॥ ४८ ॥
चौथ चारु उनचास पुर, घर घर मंगलचार ॥
तुलसिहि सबदिन दाहिने, दसरथ राजकुमार ॥ ४९ ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

रामनाम कलि कामतरु, रामभगति सुरधेनु ॥
शकुन सुमंगल मूलजग, गुरुपदपंकज रेनु ॥ १ ॥
जलधि पार मानस अगम, रावण पालित लंक ॥
सोच विकल कपि भालु सब, दुहुँ दिशि संकटसंक ॥२॥
जाम्ववंत हनुमंत वल, कहा प्रचारि प्रचारि ॥
राम सुमिरि साहस करिय, मानिय हिये न हारि ॥३॥
रामकाज लगि जनम जग, सुनि हरषे हनुमान ॥
होइ पुत्र फल शकुन शुभ, राम भगत बलवान ॥ ४ ॥
कहत उछाहु वड़ाइ कपि, साथी सकल प्रबोध ॥
लागत रामप्रसाद मोहिं, गोपद सरिस पयोधि ॥ ५ ॥
राखि तोपि सब साथ शुभ, शकुन सुमंगल पाइ ॥
कूदि कुधर चढ़ि आनि उर, सीयसहित दोउ भाइ ॥६॥

हरषि सुमन बरषत विबुध, शकुन सुमंगल होत ॥
तुलसी प्रभु लंघेउ जलधि, प्रभु प्रताप करि पोत॥ ७ ॥
राहु मातु माया मलिन, मारी मारुतपूत ॥
समय शकुन मारग मिलहिं,छल मलीन खल धूत॥८॥
पूजा पाइ मिनाकपहँ, सुरसा कपि संवाद ॥
मारग अगम सहाय शुभ, होइहि रामप्रसाद ॥ ९ ॥
लंका लोलुप लंकिनी, काली काल कराल ॥
काल करालहिं दीन्हि वलि,कालरूप कपिकाल ॥१०॥
मशकरूप दशकंध पुर,निशि कपि घर घर देषि ॥
सीय विलोकि अशोकतर,हरष विषाद विशेषि ॥ ११ ॥
फरकत मंगल अंग सिय, वाम विलोचन वाहु ॥
त्रिजटा सुनि कह शकुन फल,प्रिय सँदेश बडलाहु॥ १२॥
शकुन समुझि त्रिजटाकहति,सुनु सिय अबहींआज ॥
मिलिहि रामसेवक कहिहि,कुशल लषण रघुराज॥ १३॥
तुलसी प्रभु गुणगण वरणि, आपनि वात जनाइ ॥
कुशल क्षेम सुग्रीवपुर, रामलषण दोउ भाइ ॥ १४ ॥
सुरुष जानकी जानि कपि, कहे सकल संकेत ॥
दीन्हि मुद्रिका लीन्हि सिय, प्रीति प्रतीति समेत॥१५॥
पाइ नाथकर मुद्रिका, सियहिय हरप विषाद ॥
प्राणनाथ प्रियसेवकहि, दीन्ह सुआशिरवाद ॥ १६ ॥
नाथ शपथ पण रोपि कपि,कहत चरण शिर नाइ ॥
नहिं विलंब जगदंब अब, आइगये दोउ भाइ ॥ १७ ॥

समाचार कहि सुनत प्रभु, सानुज सहित सहाय ॥
आये अब रघुवंशमणि, सोच परिहरिय माय ॥ १८ ॥
गये शोच संकट सकल, भय सुदिन जिय जान ॥
कौतुक सागर सेतु करि, आये कृपानिधान ॥ १९ ॥
सकल सदल यमराजपुर, चलन चहत दशकंध ॥
काल न देखत कालवश, बीस विलोचन अंध ॥२०॥
आशिष आयसु पाइ कपि, सीय-चरण शिर नाइ ॥
तुलसी रावण बाग फल, खात बराइ बराइ ॥ २१ ॥
शूर शिरोमणि साहसी, सुमति समीर कुमार ॥
सुमिरत सब सुख संपदा, मुद मंगल दातार ॥ २२ ॥
शत्रुशमन पद पंकरुह, सुमिरि करहु सब काज ॥
कुशल क्षेम कल्याण शुभ, शकुन सुमंगल साज २३॥
भरत भलाईकी अवधि, शील सनेह निधान ॥
धरमभगति भायप समय, शकुन कहब कल्यान॥२४॥
सेवकपाल कृपालुचित, रविकुल कैरवचंद ॥
सुमिरि करहु सब काज शुभ, पगपग परमानंद ॥२५॥
सियपद सुमिरि सुतीयहित, शकुन सुमंगल जान ॥
स्वामि सोहागिल भाग बड़, पुत्रकाज कल्यान ॥२६॥
लछिमन पदपंकज सुमिरि, शकुन सुमंगल पाइ ॥
जय विभूति कीरति कुशल, अभिमत लाभ अघाइ२७॥
तुलसी कानन कमलवन, सकल सुमंगल वास ॥
राम भगतिहित शकुन शुभ, सुमिरत तुलसीदास२८॥

रूख निपातत खात फल, रक्षक अक्ष निपात ॥
कालरूप विकराल कपि, सभय निशाचर जात॥२९॥
वन उजारि जारेऊ नगर, कूदि कूदि कपिनाथ ॥
हाहाकार पुकार सब, आरत मारत माथ ॥ ३० ॥
पूछ बुताइ प्रबोधि सिय, आइ गहे प्रभु पांय ॥
क्षेम कुशल जय जानकी, जय जय जय रघुराय॥३१॥
सुनि प्रमुदित रघुवंशमणि, सानुज सेन समेत ॥
चले सकल मंगल शकुन, विजय सिद्धि कहि देत ३२॥
राम पयान निसान नभ, वाजहिं गाजहिं वीर ॥
शकुन सुमंगल समर जय, कीरति कुशल शरीर ३३॥
कृपासिंधु प्रभु सिंधुसन, माँगेउ पंथ न देत ॥
विनय न मानहि जीव जड़, डाटे नवहि अचेत ॥३४॥
लाभ लाभ लोवा कहत, क्षेम करी कह क्षेम ॥
चलत विभीषण शकुन सुनि, तुलसी पुलकित प्रेम ३५॥
पाहि पाहि अशरण शरण, प्रणतपाल रघुराज ॥
दियो तिलक लंकेश कहि, राम गरीबनेवाज ॥ ३६ ॥
लंक अशुभ चरचा चलति, हाट वाट घर घाट ॥
रावण सहित समाज अब, जाइहि बारहबाट ॥ ३७ ॥
ऊकपात दिकदाह दिन, फेकरहिं श्वान सियार ॥
उदित केतु गत हेतु महि, कंपति बारहिं वार ॥३८॥
रामकृपा कपि भालु करि, कौतुक सागर सेतु ॥
चले पार वरषत विबुध, सुमन सुमंगल हेतु ॥ ३९ ॥

नीच निशाचर मीचु वश, चले साजि चतुरंग ॥
प्रभु प्रताप पावक प्रबल, उड़ि उड़ि परत पतंग ॥४०॥
साजि साजि बाहन चलहिं, यातुधान बलवान ॥
अशकुन अशुभन गनहिं गत, आइ काल नियरान॥४१॥
लरत भालु कपि सुभट सब, निदरि निशाचर घोर॥
शिरपर समरथ रामसों, साहिब तुलसी तोर ॥ ४२ ॥
मेघनाथ अतिकाय भट, परे महोदर खेत ॥
रावण भाइ जगाइ तब, कहा प्रसंग अचेत ॥ ४३ ॥
उठि विशाल विकराल बड़, कुंभकरण जमुहान ॥
लखि सुदेश कपि भालु दल, जनु दुकाल समुहान॥४४॥
राम श्याम वारिद सघन, वसन सुदामिनि माल॥
बरषत शर हरषत विबुध, दला दुकालुदयाल ॥४५॥
राम रावणहिं परस्पर, होति रारि रणघोर ॥
लरत प्रचारि प्रचारि भट, समर शोर दुहुँओर ॥४६॥
बीस बांहु दश शीश दलि, खंड खंड तनु कीन्ह ॥
सुभट शिरोमणि लंकपति, पाछे पाँउ न दीन्ह ॥४७॥
विबुध बजावत दुंदुभी, हरषत बरषत फूल ॥
राम विराजत जीति रण, सुर सेवक अनुकूल ॥ ४८ ॥
लंका थापि विभीषणहिं, विबुध बसाइ सुवास ॥
तुलसी जय मंगल कुशल, शुभ पंचम उनचास॥४९॥

षष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥

रघुवर आयसु अमरपति, अमिय सींचि कपि भालु ॥
सकल जिआये शकुन शुभ, सुमिरहु राम कृपालु॥१॥

सादर आनी जानकी, हनूमान प्रभुपास ॥
प्रीति परस्पर समउ शुभ, शकुन सुमंगल वास ॥ २ ॥
सीता शपथ प्रसंग शुभ, शीतल भयउ कृशानु ॥
नेम प्रेम व्रत धरम हित, शकुन सुहावन जानु ॥ ३ ॥
सनमाने कपि भालु सब, सादर साजि विमानु ॥
सीय सहित सानुज सदल, चले भानुकुल भानु॥४॥
हरषत सुर वरषत सुमन, शकुन सुमंगल गान ॥
अवधनाथ गवने अवध, क्षेम कुशल कल्यान ॥ ५ ॥
सिंधु सरोवर सरित गिरि, कानन भूमि विभाग ॥
रामदिखावत जानकिहि, उमँगि उमँगि अनुराग ॥ ६ ॥
तुलसी मंगल शकुन शुभ, कहत जोरि युग हाथ ॥
हंस वंश अवतंस जय, जय जय जानकिनाथ ॥ ७ ॥
अवध अनंदित लोग सब, व्योम विलोकि विमानु ॥
मनहुँ कोकनद कोकमन, मुदित उदित लखि भानु॥८॥
मिले गुरुहि जन परिजनहिं, भेंटत भरत सप्रीति॥
लषण राम सिय कुशल पुर, आये रिपु रणजीति॥९॥
उदवश अवध अनाथ सब, अंबदशा दुख देखि ॥
राम लषण सीता सकल, विकल विषाद विसेखि॥१०॥
मिलीं मातु हित मीत गुरु, सनमाने सब लोग ॥
शकुन समय विसमय हरप, प्रिय संयोग वियोग॥११॥
अमर अनंदित मुनि मुदित, मुदितभुवन दशचारि ॥
घर घर अवध बधावने, मुदित नगर नर नारि ॥१२॥

सुदिन सोधि गुरु वेद विधि, कियो राज अभिषेक ॥
शकुन सुमंगल सिद्धि सब, दायक दोहा एक ॥ १३ ॥
भाँति भाँति उपहार लइ, मिलत जुहारत भूप ॥
पहिराये सनमानि सब, तुलसी शकुन अनूप ॥१४॥
जयधुनि गान निसान सुर, बरषत सुरतरु फूल ॥
भये राम राजा अवध, शकुन सुमंगल मूल ॥ १५ ॥
भालु विभीषण कीशपति, पूजे सहित समाज ॥
भली भाँति सनमानि सब,बिदा किये रघुराज ॥ १६ ॥
राम राज संतोष सुख, घर बन सकल सुपास ॥
तरु सुरतरु सुरधेनु महि, अभिमत भोग विलास॥१७॥
रामराज सबकाज कहँ, नीक एक ही आँक ॥
सकुल शकुन मंगल कुशल,होइहि बारु न बाँक॥१८॥
कुंभकरण रावण सरिस, मेघनादसे वीर ॥
ढहे समूल विशाल तरु, काल नदीके तीर ॥ १९ ॥
सकल सदल रावण सरिस, कवलित काल कराल ॥
सोच पोच अशकुन अशुभ, जाय जीव जंजाल ॥२०॥
अविचल राज विभीषणहिं, दीन्हि राज रघुराज ॥
अजहुँ विराजत लंकपर, तुलसी सहित समाज ॥२१॥
मंजुल मंगल मोद मय; मूरति मारुतपूत ॥
सकल सिद्धिकर कमल तल, सुमिरत रघुवर दूत ॥२२॥
शकुन समय सुमिरत सुखद, भरत आचरण चारु ॥
स्वामि धरम व्रत प्रेम हित, नेम निबाहनिहारु ॥ २३॥

ललित लषण लघु बंधु पद, सुखद शकुन सबकाहु ॥
सुमिरत शुभ कीरति विजय,भूमि ग्राम गृह लाहु॥२४॥
रामचंद्रमुख चंद्रमो, चित चकोर जब होइ ॥
रामराज सब काज शुभ, समउ सुहावन सोइ ॥ २५ ॥
भूमिनंदिनी पदपदुम, सुमिरत शुभ सब काज ॥
बरषा सलिखेती सुफल, प्रमुदित प्रजा सुराज ॥ २६ ॥
सेवक सखा सुबंधु हित, नाइ लषणपद माथ ॥
कीजिय प्रीति प्रतीति शुभ,शकुन सुमंगल साथ ॥२७॥
रामनाम रति नामगति, राम नाम विश्वास ॥
सुमिरत शुभ मंगल कुशल,तुलसी तुलसीदास ॥२८॥
विप्र एक बालक मृतक, राखेउ रामदुआर ॥
दंपति विलपत शोकअति,आरत करत पुकार ॥ २९ ॥
राम सोच संकोच सब, सचिव विकल संताप ॥
बालक मीचु अकाल भइ, रामराज केहि पाप ॥ ३० ॥
विबुध विमल वाणी गगन, हेतु प्रजा अपचारु ॥
रामराज परिणाम भल, कीजिय वेगि विचारु ॥३१॥
कोशलपाल कृपालु चित, बालक दीन्ह जिआइ ॥
शकुन कुशल कल्याण शुभ, रोगी उठै नहाइ ॥३२॥
बालक जिया विलोकि सब, कहत उठा जनु सोइ ॥
शोचविमोचन शकुन शुभ, राम-कृपा भल होइ॥३३॥
शिला सुतिय भइ गिरि तरे, मृतक जिये जगजान ॥
रामअनुग्रह शकुन शुभ, सुलभ सकल कल्यान ॥३४ ॥

केवट निशिचर विहँग मृग, किये साधु सनमानि ॥
तुलसी रघुवरकी कृपा, शकुन सुमंगलखानि ॥ ३५ ॥
रामराज राजत सकल, धरम निरत नर नारि ॥
राग न रोष न द्वेष दुख, सुलभ पदारथ चारि ॥३६॥
वक उलूक झगरत गये, अवध जहाँ रघुराउ ॥
नीक शकुन विवरिहि झगर, होइहि धरम निआउ॥३७॥
यती श्वान संवाद सुनि, शकुन कहब जिय जानि ॥
हंस वंश अवतंस पुर, बिलग होत पय पानि ॥ ३८ ॥
राम कुचरचा करहिं सब, सीतहि लाइ कलंक ॥
सदा अभागी लोग जग, कहत सकोच न शंक ॥ ३९ ॥
सती शिरोमणि सीय तजि, राखि लोग रुचि राम ॥
सहे दुसह दुख सकुन गत, प्रिय वियोग परिणाम॥४०॥
वरणधर्म आश्रम-धरम, निरत सुखी सब लोग ॥
रामराज मंगल शकुन, सुफल जाग जप योग ॥ ४१ ॥
वाजिमेध अगणित किये; दिये दान बहुभाँति ॥
तुलसी राजाराम जग शकुन, सुमंगल पाँति ॥ ४२ ॥
असमंजस बड़ शकुन, गत, सीता राम वियोग ॥
गवन विदेश कलेश कलि, हानि पराभव रोग ॥ ४३ ॥
तिय मणि सिय अपराध विनु, प्रभु परि हरिपछितात॥
सोच समाज न राज सुख, मन मलीन कृषगात ॥४४॥
पुत्र लाभ लव कुश जनम, शकुन सुहावन होइ ॥
समाचार मंगल कुशल, सुखद सुनावै कोइ ॥ ४५ ॥

रामसभा लव कुश ललित, किये रामगुण गान ॥
राज समागम शकुन शुभ,सुयश लाभ सनमान॥ ४६ ॥
वालमीकि लव कुश सहित,आनी सिय मुनि राम ॥
हृदय हरष जानब प्रथम, शकुन शोक परिणाम॥४७॥
अनरथ अशकुन अति अशुभ, सीता अवनि प्रवेश ॥
समय शोक संताप भय, कलह कलंक कलेश ॥ ४८ ॥
सुभग शकुन उनचास रस, रामचरितमय चारु ॥
राम भगत हित सफल सब,तुलसी विमल विचारु॥४९॥

अथ सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

राम लषण सानुज भरत, सुमिरत शुभ सब काज ॥
सहित प्रीति परतीति हित,शकुन सकल कुभकाज॥१॥
सुख मुद मंगल कुमुद विधु,शकुन सरोरुह भानु ॥
करहु काज सब सिद्धि शुभ,आनि हिये हनुमानु ॥ २ ॥
राज काज मणि हेम हय, राम रूप रविवार ॥
कहब नीक जय लाभ शुभ, शकुन समय अनुहार॥३॥
रस गोरस खेती सकल, विप्र काज शुभसाज ॥
राम अनुग्रह सोमदिन, प्रमुदित प्रजा सुराज ॥ ४ ॥
मंगल मंगल भूमिहित, नृपहित जय संग्राम ॥
शकुन विचारब समय सम,करि गुरुचरण प्रणाम ॥५॥
विपुल वनिज विद्या वसन,बुध विशेषि गृहकाज॥
शकुन सुमंगल कहब शुभ,सुमिरि सीय रघुराज ॥ ६ ॥

गुरु प्रसाद मंगल सकल, रामराज सब काज ॥
यज्ञ विवाह उछाह व्रत, शुभ तुलसी सब साज ॥७॥
शुक्र सुमंगल काज सब, कहब शकुन शुभ देखि ॥
यंत्र मंत्र मणि औषधी, साहस सिद्धि विशेषि ॥ ८ ॥
रामकृपा थिर काज शुभ, शनि वासर विश्राम ॥
लोह महिष गज वनिज भल, सुख सुपास गृहग्राम ॥९॥
राहु केतु उलटे चलहिं, अशुभ असंगल मूल ॥
रुंड मुंड पाषंड प्रिय, असुर अमर प्रतिकूल ॥ १० ॥
समउ राहु रवि गहब्रु गत, राजहिं प्रजहिं कलेश ॥
शकुन सोच संकट विकट, कलह कलुष दुख देश ११॥
राहु सोम संगम विषम, अशकुन उदधि अगाधु ॥
ईति भीति खल दल प्रबल, सीदहिं भूसुर साधु १२॥
सात पाँच ग्रह एक थल, चलहि वाम गति वाम ॥
राज विराजी समउ गत, शुभहित सुमिरहु राम॥१३॥
खेती वनि विद्या वनिज, सेवा शिलप सुकाज ॥
तुलसी सुरतरु सरिस सब, सुफल रामके राज ॥१४॥
सुधा साधु सुरतरु सुमन, सुफल सुहावनि बात ॥
तुलसी सीतापति भगति, शकुन सुमंगल सात ॥१५॥
सिद्ध समागम संपदा, सदन शरीर सुपास ॥
सीतानाथ प्रसाद शुभ, शकुन सुमंगल वास ॥ १६ ॥
कौशल्या कल्याण मय, मूरति करति करत प्रणाम
शकुन सुमंगल काज शुभ, कृपाकरहिं सियराम॥१७॥

सुमिरि सुमित्रा नाम जग, जे तिय लेहिं सुनेम ॥
सुवन लषण रिपुदवनसे, पावहिं पतिपद प्रेम ॥ १८॥
दशरथ नाम सुकामतरु, फलइ सकल कल्यान ॥
धरणि धाम धन धरन सुख,सुत गुण रूप निधान॥१९॥
कलह कपट कलिकैकयी, सुमिरत काज नशाइ ॥
हानि मीचु दारिद दुरित,अशकुन अशुभ अघाइ॥२०॥
राम वाम दिशि जानकी, लषण दाहिनी ओर ॥
ध्यान सकल कल्याणमय,सुरतरु तुलसी तोर ॥२१॥
मध्यम दिन मध्यम दशा, मध्यम सकल समाज ॥
नाइ माथ रघुनाथ पद, जानब मध्यम काज ॥ २२ ॥
हितपर बढै विरोध जब, अनहित पर अनुराग ॥
राम विमुख;विधि वाम गत,शकुन अघाइ अभाग॥२३॥
कृपण देइ पाइह परेउ, बिन साधन सिधि होइ ॥
सीतापति सनमुख समुझि, जो कीजिय शुभ सोइ२४॥
पहिले हित परिणाम गत, बीच बीच भल पोच ॥
शकुन कहब अस राम गति, कहहि समेत सकोच२५
रमा रमापति गौरि हर, सीताराम सनेह ॥
दंपति हित संपति सकल, शकुन सुमंगल गेह ॥२६॥
प्रीति प्रतीति न रामपद, बडी आश बड लोभ ॥
नहिं सपनेहुँ संतोष सुख, जहँ तहँ मन छोभ॥२७॥
पय नहाइ फल खाइ जपु, रामनाम षट मास ॥
शकुन सुमंगल सिद्धि सब, करतल तुलसीदास॥२८॥

बड़ कलेश कारज अलप, बड़ी आश लहु लाहु ॥
उदासीन सीतारमण, समय सरिस निरबाहु ॥ २९ ॥
दशदिशि दुख दारिद दुरित, दुसह दशा दिन दोष॥
फेरे लोचन राम अब, सब सुख साज सरोष॥ ३० ॥
खेती बनिज न भीख भलि, अफल उपाय कदंब ॥
कुसमय जानब वाम विधि, रामनाम अवलंब ॥३१॥
पुरुषारथ स्वारथ सकल, परमारथ परिणाम ॥
सुलभ सिद्धि सब शकुन शुभ,सुमिरत सीताराम॥३२॥
भाग भाग तजि भालतलु, आलस असे उपाय ॥
अशुभ अमंगल शकुन सुनि, शरण रामके पाय॥३३॥
गइ वरषा करषक विकल, सूखत सालि सुनाज ॥
कुसमय कुशकुन कलहकलि,प्रजहि कलेश कुराज॥३४॥
तुलसी तुलसीराम सिय, सुमिरहु लषण समेत ॥
दिन दिन उदय अनंद अब,शकुन सुमंगल देत॥३५॥
उदवस अवधनरेश विनु, देश दुखी नर नारि ॥
राज भंग कुसमाज बड़,गत ग्रह चालि विचारि॥३६॥
अवध प्रवेश अनंद बड़; शकुन सुमंगल माल ॥
राम तिलक अवसर कहब, सुख संतोष सुकाल॥३७॥
राम राज बाधक विबुध, कहब शकुन सतिभाउ ॥
देखि दैवकृत दोष दुख, कीजिय उचित उपाउ ॥३८॥
मंद मंथरा मोहवश, कुटिल कैकई कीन्ह ॥
व्याधि विपति सब देव कृत,समय शकुन कहि दीन्ह३९

राम विरह दशरथ दुखित, कहति कैकई काक ॥
कुसमय जाय उपाय सब, केवल करम विपाक॥४०॥
लषण राम सिय वसत वन, विरह विकलपुर लोग ॥
समय शकुन कह करमवश,दुख सुख योग वियोग॥४१॥
तुलसी लाइ रसाल तरु, निजकर सींचति सीय ॥
कृषी सफल भल शकुन शुभ,समउ कहब कमनीय॥४२॥
सुदिन साँझ पोथी नेवति, पूजि प्रभात सप्रेम ॥
शकुन विचारब चारु मति,सादर सत्य सनेम ॥ ४३ ॥
मुनि गनि दिन गनि धातु गनि,दोहा देखि विचारि॥
देश करम करता वचन, शकुन समय अनुहारि ॥४४॥
शकुन सत्य शशि नयन गुण,अवधि अधिक नयवान॥
होइ सफल शुभ जासु जसि,प्रीति प्रतीति प्रमान॥४५॥
गुरु गणेश हर गौरि सिय, राम लषण हनुमान ॥
तुलसी सादर सुमिरि सब,शकुन विचार विधान॥४६॥
हनूमान सानुज भरत, राम सीय उर आनि ॥
लषण सुमिरि तुलसी कहत,शकुन विचार बखानि॥४७॥
जो जेहि काजहि अनुहरै, सो दोहा जब होइ ॥
शकुन समय सब सत्य सब,कहब राम गति गोइ॥४८॥
गुण विश्वास विचित्र मणि, शकुन मनोहर हार ॥
तुलसी रघुवर भगत उर,विलसत विमल विचार॥४९॥
हस्ताक्षर श्रीगुसाइंजी सं० १६५५ रविवार ज्येष्ठशुक्ल १०

इति श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत रामाज्ञाप्रश्न समाप्त ।

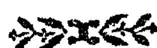
॥ श्रीः ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-

दोहावली ।



अत्युत्तम सामयिक, राजनीतिके दोहा हैं.



खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् १९८८, शकाब्दाः १८५३.

॥ श्रीरामपंचायतन ॥



श्रीवेंकटेशाय नमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजीकृत

दोहावली ।



दोहा ।

रामवामदिशि जानकी, लषण दाहिनी ओर ॥ ध्यान सकल कल्याणमय, सुरतरु तुलसी तोर ॥ १ ॥ सीता लषण समेत प्रभु, सोहत तुलसीदास ॥ हर्षत सुर वर्षत सुमन; सगुण सुमंलवास ॥ २ ॥ पंचवटी वट विटप तरु, सीता लषण समेत ॥ सोहत तुलसीदास प्रभु, सकल सुमंगल देत ॥ ३ ॥ चित्रकूट सब दिन बसत, प्रभु सिय लषण समेत ॥ रामनाम जप जापकहि, तुलसी अभिमत देत ॥४॥ पय अहार फल खाइ जो, रामनाम षटमास ॥ सकल सुमंगल सिद्धि सब, कर-तल तुलसीदास ॥ ५ ॥ रामनाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार ॥ तुलसी भीतर बाहिरहु, जो चाहसि उजियार ॥ ६ ॥ हिय निर्गुण नयनन सगुण, रसना राम सुनाम ॥ मनहुँ पुरट संपुट लसत, तुलसी ललित ललाम ॥ ७ ॥ सगुणवान रुचि सरस नहिं, निर्गुण

मनते दूरि ॥ तुलसी सुमिरहु रामको, नाम सजीवनमूरि ॥ ८ ॥ एक छत्र इक मुकुटमणि,सब वर्णन पर जोइ॥ तुलसी रघुवर नामके,वरण विराजत दोइ ॥ ९ ॥ राम नामको अंक है, सब साधन है सून ॥ अंक गये कछु हाथ नहिं, अंक रहे दशगून ॥ १० ॥ नाम रामको कल्पतरु, कलि कल्याण निवास ॥ जो सुमिरत भयो भागते, तुलसी तुलसीदास ॥ ११ ॥ रामनाम जपि जीहजन, भये सुकृत सुख शालि ॥ तुलसी यहाँ जो आलसी, गयो आजुकी कालि ॥ १२ ॥ नाम गरीब-निवाजको, राज देत जन जोन ॥ तुलसी मन परिहरत नहिं, धुर बिनिआकी वोन ॥ १३ ॥ काशी विधि बसि तनु तजै, हठ तन तजै प्रयाग ॥ तुलसी जो फल सो सुलभ, राम नाम अनुराग ॥ १४ ॥ मीठो अरु कठुवति भरो, रौताई अरु प्रेम ॥ स्वारथ परमारथ सुलभ, राम नामके प्रेम ॥ १५ ॥ रामनाम सुमिरत सुयश, भाजन भयो कुजात ॥ कुतरुक सुरपुर राज-मग, लहत भुवन विख्यात ॥१६॥ स्वारथ सुख सप-नेहुँ अगम, परमारथ परवेश॥ रामनाम सुमिरत मिटहिं, तुलसी कठिन कलेश ॥ १७ ॥ मोर मोर सब कह कहसि, तू को कहु निजनाम ॥ कै चुप साधहि सुन समुझि, कै तुलसी जपु राम ॥ १८ ॥ तुम लखु हमहिं हमार लखु, हम हमारके बीच ॥ तुलसी अलखहि का

लखहि, रामनाम जप नीच ॥ १९ ॥ रामनाम अव-लंब बिनु,परमारथकी आश ॥ बर्षत वारिद बूँद गहि, चाहत चढन अकाश ॥ २० ॥ तुलसी हठि हठि कहत नित, चित सुन हितकर मान ॥ लाभ राम सुमिरन बड़ो, बड़ी बिसारे हान ॥ २१ ॥ बिगरी जन्म अनेककी, सुधरै अवहीं आजु ॥ होहि रामको राम जपु, तुलसी तजि कुसमाजु ॥ २२ ॥ प्रीति प्रतीति सुरीतिसों, रामनाम जपु राम ॥ तुलसी तेरो है भलो, आदि मध्य परिणाम ॥ २३ ॥ दंपति रस रसना दशन, परिजन वदन सगेह ॥ तुलसी हर-हित वरण शिशु, संपति सहज सनेह ॥ २४ ॥ वर्षा-ऋतु रघुपति भगति, तुलसी शालि सुदास ॥ रामनाम वर वरण जग, सावन भादौं मास ॥ २५ ॥ रामनाम नरकेशरी, कनककशिपु कलिकाल ॥ जापक जन प्रह्लाद जिमि, पालहिं दलि सुरसाल ॥२६ ॥ रामनाम कलि कामतरु, सकल सुमंगल कंद ॥ सुमिरत करतल सिद्धि सब, पग पग परमानंद ॥ २७ ॥ रामनाम कलि काम-तरु, रामभक्ति सुरधेनु ॥ सकल सुमंगल मूल जग, गुरुपद पंकज रेनु ॥ २८ ॥ यथा भूमिवश बीजमें, नखत निवास अकाश ॥ रामनाम सब धरमप्रय, जानत तुलसीदास ॥ २९ ॥ सकल कामना हीन जे, रामभक्त रसलीन ॥ नामप्रेम पीयूष हृद, तिनहुँ किये

मनमीन ॥ ३० ॥ ब्रह्मरामते नाम बड, वरदायक वर-
दान ॥ रामचरित शतकोटिमहँ, लिय महेश जिय-
जान ॥ ३१ ॥ शबरी गीध सुसेवकन, सुगति दीन्ह
रघुनाथ ॥ नाम उधारे अमित खल, वेद विदित गुण-
नाथ ॥३२॥ रामनाम परतापते, प्रीति प्रतीति भरोस॥
सो तुलसी सुमिरत सकल, सगुण सुमंगल कोस ॥
॥ ३३ ॥ लंक विभीषण राजकपि, पति मारुत खग
मीच ॥ लही राम सो नामरति, चाहत तुलसी नीच॥
॥ ३४ ॥ हरन असंगल अघ अखिल, करन सकल
कल्याण ॥ रामनाम नित कहत हर, गावत वेद पुराण॥
॥३५॥ तुलसी प्रीति प्रतीतिसों, रामनाम जप जागु॥
किये होय विधि दाहिनी, देइ अगेही भागु ॥ ३६ ॥
जल थल नभ गति असित अति, अग जग जीव
अनेक ॥ तुलसी तोहिंसे दीनको, रामनाम गति एक॥
॥ ३७ ॥ रामभरोसो रामबल, रामनाम विश्वास ॥
सुमिरि नाम मंगल कुशल, माँगत तुलसीदास॥३८॥
रामनाम रति राम गति, रामनाम विश्वास ॥ सुमिरत
शुभ मंगल कुशल, चहुँदिशि तुलसीदास॥३९॥रसना
साँपिनि बदन बिल, जे न जपहिं हरिनाम ॥ तुलसी
प्रेम न रामसों, ताहि विधाता बाम ॥ ४० ॥
हिय फाटहु फूटहु नयन, जरउ ते तन केहि काम ॥
द्रवहिं श्रवण पुलकहिं नहीं,तुलसी सुमिरत राम॥४१॥

रामहिं सुमिरत रण भिरत, देत परत गुरुपाय ॥ तुलसी जिनहिं न पुलक तनु, ते जगजीवत जाय ॥ ॥ ४२ ॥ (सोरठा) हृदय सो कुलिश समान, जो न द्रवहि हरिगुण सुनत ॥ कर न रामगुण गान, जीह सो दादुर जीह सम ॥४३॥ श्रवै न सलिल सनेहु, तुलसी सुनि रघुवीर यश ॥ ते नयना जनि देहु, राम करहु बरु आंधरे ॥ ४४ ॥ रहै न जल भरिपूरि, राम सुयश सुन रावरी ॥ तिन आंखिनमें धूरि, भरभर मूठी मेलिये ॥ ४५ ॥ बारक सुमिरत तोहिं, होहिं तिनहिं सन्मुख सदा ॥ क्यों न सम्हारहि मोहिं, दयासिंधु समरत्थके ॥ ४६ ॥ साहिब होत सरोष, सेव-कको अपराध सुनि ॥ अपने देखे दोष, राम न कबहूँ उर धरे ॥४७॥ (दोहा) तुलसी रामहिं आपुते, सेवककी रुचि मीठ॥सीतापतिसे साहिबहि, कैसे दीजै पीठ ॥ ४८ ॥ तुलसी जाके होयगी, अंतर बाहर दीठ ॥ सो क्यों कृपालुहि देइगो, केवट पालहि पीठ॥ ॥ ४९ ॥ प्रभु तरुतर कपि डार पर, ते किये आपु समान ॥ तुलसी कहूं न रामसों, साहिब शील-निधान ॥ ५० ॥ रे मन सबसों निरसकै,सरस रामसों होहि ॥ भलो सिखावन देत है, निशि दिन तुलसी तोहि ॥ ५१ ॥ हरो चरहिं तापहिं बरत, फरे पसारहिं हाथ॥तुलसी स्वारथ मीत सब,परमारथ रघुनाथ॥५२॥

स्वारथ सीतारामसों, परमारथ सियराम ॥ तुलसी तेरो दूसरे, द्वार कहाँ कहु काम ॥ ५३ ॥ स्वारथ परमारथ सकल, सुलभ एकही ओर ॥ द्वार दूसरे दीनता, उचित न तुलसी तोर ॥ ५४ ॥ तुलसी स्वारथ रामहित, परमारथ रघुवीर ॥ सेवक जाके लषणसे, पवनतनय रणधीर ॥ ५५ ॥ ज्यों जग वैरी मीनको, आपु सहित परिवार ॥ त्यों तुलसी रघुबीर बिनु, गति आपनी विचार ॥ ५६ ॥ रामप्रेम बिन दूसरो, रामप्रेमही पीन ॥ रघुवर कबहूँ करहिंगे, तुलसी ज्यों जलमीन ॥ ५७ ॥ राम सनेही रामगति, राम चरण रतिजाहि ॥ तुलसी फल जग जन्मको, दियो विधाता ताहि ॥ ५८ ॥ आपु आपने ते अधिक,जेहि प्रिय सीताराम॥ तेहिके पगकी पानहीं, तुलसी तनुको चाम ॥ ५९ ॥ स्वारथ परमारथ रहित, सीताराम सनेह ॥ तुलसी सो फल चारिको, फल हमार मत एह ॥६०॥ जे जन रूखे विषय रस,चिकने राम सनेह॥ तुलसी ते प्रिय रामको, कानन बसहिं कि गेह ॥ ६१ ॥ यथा लाभ संतोष सुख, रघुवर चरण सनेह ॥ तुलसी ज्यों मन मूढसों, जस कानन तस गेह ॥ ६२ ॥ तुलसी जोपै रामसों, नाहिंन सहज सनेह ॥ मूड मुडायो बादिही, भांड भयो तजि गेह ॥ ६३ ॥ तुलसी श्रीरघुवीर तजि, करै भरोसो और॥सुखसंपति-

की काचली, नरकहु नाहीं ठौर ॥ ६४ ॥ तुलसी परिहरि हरि हरहि, पाँवर पूजहिं भूत ॥ अंत फजीहत होहिंगे, ज्यों गणिकाके पूत ॥ ६५ ॥ सेये सीताराम नहिं, भजे न शंकर गौरि ॥ जन्म गँवायो बादिही, रटत पराई पौंरि ॥ ६६ ॥ तुलसी हरि अपमानते, होइ अकाज समाज ॥ राज करत रज मिलगये, सदल सकुल कुरुराज ॥६७॥ तुलसी रामहिं परिहरे, निपट हानि सुनिवेउ॥ सुरसरिगत सोई सलिल, सुरा सरिस गंगेउ ॥ ६८ ॥ राम दूरि माया बढति; घटति जान मनमाँह ॥ धूरि होति रवि दूरि लखि, शिरपर पगतर छाँह ॥ ६९ ॥ साहिब सीतानाथसों, जब घटिहै अनुराग॥ तुलसी तबहीं भालते, भभरि भागिहै भाग ॥७०॥करिहौ कोशलनाथ तजि, जबहीं दूसरि आस॥ जहाँ तहाँ दुख पाइहौ, तबहीं तुलसीदास ॥ ७१ ॥ बिंधन ईंधन पाइये, सागर जुरै न नीर ॥ पडे उपास कुबेर घर, जो विपक्ष रघुवीर ॥ ७२ ॥ वर्षाको गोबर भयो, तौ चहै को करै प्रीति॥तुलसी तू अनुभवहि अब, राम विमुखकी रीति ॥ ७३ ॥ सबहि समाथहि सुखद प्रिय, अच्छम प्रिय हितकारि॥ कबहुँ न काहहि रामपै, तुलसी कहाँ विचारि ॥७४॥ तुलसी उद्यम करमयुग, तब जहँ राम सुडीठ ॥ होइ सफल सोइ ताहि सब, सन्मुख प्रभु तन पीठ ॥७५॥ प्रेमकाम तरु परिहरत,

सेवत कलि तरु ठूंठ ॥ स्वारथ परमाथ चहत, सकल मनोरथ झूठ ॥७६॥ निज दूषण गुण रामके, समुझे तुलसीदास॥होय भलो कलिकालहू, उभय लोक अनयास ॥ ७७ ॥ कै तोहिं लागे रामप्रिय, कै तू प्रभु प्रिय होहि ॥ द्वैमहँ रुचे जो सुगम सो, कीवै तुलसी तोहि ॥ ७८ ॥ तुलसी द्वै महँ एकही,खेल छाँडि छल खेलु॥कै करु ममता रामसों, कै ममता परहेलु ॥७९॥ निगम अगम साहेब सुगम, राम साँचिली चाह ॥ अंबु अशन अवलोकियत, सुलभ सबै जग माँह ॥ ८० ॥ सन्मुख आवत पथिक ज्यों, दिये दाहिना बाम ॥ तैसोइ होत सुआपकी, त्योंहीं तुलसी राम ॥८१॥ राम प्रेम पथ पेषिये, दिये विषय तनुपीठ ॥ तुलसी केंचुलि परिहरे, होत साँपहू डीठ ॥८२॥ तुलसी जौलों विषयकी, सुधा माधुरी मीठ ॥ तौलों सुधासहस्रसम,राम भगत सुठ सीठ ॥ ८३ ॥ जैसो तैसो रावरो, केवल कोशलपाल ॥ तौ तुलसीको है भलो, तिहूँ लोक तिहुँकाल ॥ ८४ ॥ है तुलसीके एक गुण, अवगुणनिधि कहैं लोग ॥ भलो भरोसो रावरो, राम रीझिबे योग ॥ ८५ ॥ प्रीति राममो नीतिपथ, चलिय राग रिस जीत ॥ तुलसी संतनके मते, इहै भक्तिकी रीत॥८६॥ सत्य वचन मानस विमल, कपटरहित करतूति ॥ तुलसी रघुबर सेवकहि, सकै न कलियुग धूति॥८७॥

तुलसी सुख जो रामसों, दुखी सो निज करतूति ॥ करम वचन मन ठीक जेहि, तेहि न सकै कलि धूति ॥ ८८ ॥ नाते नातो रामके, राम सनेह सनेहु॥ तुलसी माँगत जोरि कर, जन्म जन्म शुचि देहु ॥ ८९ ॥ सब साधनको एक फल, जेहि जानै सोइ जान ॥ ज्यों त्यों मन मंदिर बसहिं, राम धरे धनु बान ॥ ९० ॥ जो जगदीश तौ अति भलो, जो महीश तौ भाग॥ तुलसी चाहत जन्मभरि, रामचरण अनुराग ॥ ९१ ॥ परहु नरक फल चार शिशु, मीच डाँकिनी खाउ ॥ तुलसी राम सनेहको, जो फल सो जरि जाउ ॥९२॥ हितसों हित रति रामसों, रिपुसों वैर तिहाउ॥ उदासीन सबसों सरल, तुलसी सहज स्वभाउ ॥ ९३ ॥ तुलसी ममता रामसों, समता सब संसार ॥ राग न रोप न द्वेष दुख, दास भये भवपार ॥ ९४ ॥ रामहिं डरु करु रामसो, ममता प्रीति प्रतीत ॥ तुलसी निरुपधि रामको, भये हारिहू जीत ॥ ९५ ॥ तुलसी राम कृपालुसों, कहि सुनाउ गुण दोष ॥ होय दूबरी दीनता, परम पीन संतोष ॥ ९६ ॥ सुमिरण सेवा रामसों, साहबसों पहि-चान ॥ ऐसेहु लाभ न ललक जो, तुलसी नित हित हान ॥ ९७ ॥ जाने जानत जोतये, बिनु जाने को जान ॥ तुलसी यह सुनि समुझि हिय, आनि धरे धनुवान ॥ ९८ ॥ करमठ कठमलिया कहै, ज्ञानी

ज्ञान विहीन ॥ तुलसी त्रिपथ विहायगो, रामदुआरे दीन ॥ ९९ ॥ बाधक सब सबके भये, साधक भये न कोइ ॥ तुलसी राम कृपालुते, भली होय सो होइ ॥ १०० ॥ शंकरप्रिय ममद्रोही, शिवद्रोही मम दास ॥ ते नरकरहिं कल्पभरि, घोर नरकमहँ बास ॥ ॥ १०१ ॥ विलग विलग सुख संग दुख, जियन मरण सोइ रीति ॥ रहे ते राखे रामके, भये ते उचित अनीति ॥ १०२ ॥ जाय कहब करतूति विनु, जाय योग बिनु क्षेम ॥ तुलसी जाइ उपाय सब, विना राम-पद प्रेम ॥१०३॥ लोग मगनु सब योगही,योग जाय विनु क्षेम ॥ त्यों तुलसीके भावगत, रामप्रेम विनु नेम ॥१०४॥ रामनिकाई रावरी, है सबहीकी नीक ॥ जो यह साँची है सदा, तौ नीको तुलसीक ॥ १०५ ॥ तुलसी राम जो आदरो, खोटो खरो खरोइ ॥ दीपक काजर शिर धरो, धरो सुधरो धरोइ ॥ १०६ ॥ तनु विचित्र कायर वचन, अहि अहार मन घोर ॥ तुलसी हरि भये पक्ष धर, ताते कह सब मोर ॥ १०७ ॥ लहै न फूटी कौडिहू, को चाहै क्यहि काज ॥ सो तुलसी महँगो कियो, राम गरीब निवाज ॥ १०८ ॥ घर घर माँगे टूक पुनि, भूपति पूजे पायँ॥ते तुलसी सब राम विनु, ते अब राम सहायँ ॥ १०९ ॥ तुलसी राम सुदीठते, निबल होत बलवान् ॥ बालि बैर सुग्रीवके

कहा कियो हनुमान ॥११०॥ तुलसी रामहुते अधिक, रामभक्त जिय जान ॥ ऋणियाँ राजा रामसों, धनी भये हनुमान ॥ १११ ॥ कियो सो सेवक धर्म कपि, प्रभु कृतज्ञ जिय जान ॥ जोरि हाथ ठाढे भये, वरदायक वरदान ॥ ११२ ॥ भक्तहेतु भगवान प्रभु, राम धरो तनुभूप ॥ किय चरित्र पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप ॥११३॥ ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया गुण गोपार ॥ सोइ सच्चिदानंद घन, करत चरित्र उदार ॥ ११४ ॥ हिरण्याक्ष भ्राता सहित, मधुकैटभ बलवान ॥ जेहि मारे सो अवतर्यो, कृपासिन्धु भगवान ॥ ११५ ॥ शुद्ध सच्चिदानंद मय, कंद भानु कुलकेत ॥ चरित करत नर अनुहरत, संसृत सागरसेतु ॥ ॥ ११६ ॥ बाल बिभूषण बसनबर, धूरि धूसरित अँग ॥ बालकेलि रघुवर करत, बाल बंधु सब संग ॥ ॥ ११७ ॥ अनुदिन अवध बधावने, नित नव मंगल मोद ॥ मुदित मातु पितु लोग लखि, रघुवर बाल विनोद ॥ ११८ ॥ राज अँजिर राजत रुचिर, कोशलपालक बाल ॥ जानुपाणि चर चरित बर, सगुण सुमंगल माल॥११९॥नाम ललित लीला ललित, ललित रूप रघुनाथ ॥ ललित बसन भूषण ललित, ललित अनुज शिशुसाथ ॥१२०॥ राम भरत लक्ष्मण ललित, शत्रुशमन शुभनाम ॥ सुमिरत दशरथ सुवन सब,

पूजहिं सब मनकाम ॥ १२१ ॥ बालक कोशलपालके, सेवक बाल कृपाल ॥ तुलसी मन मानस बसत, मंगल मंजु मराल ॥ १२२ ॥ भक्त भूमि भूसुर सुरभि, सुर-हित लागि कृपाल ॥ करत चरित धरि मनुज तनु, सुनत मिटहिं जञ्जाल ॥ १२३ ॥ निज इच्छा प्रभु अवतरैं, सुर गो द्विज हितलागि ॥ सगुण उपासक संग तहँ, रहे मोक्ष सब त्यागि ॥ १२४ ॥ परमानंद कृपायतन, मन परिपूरण काम ॥ प्रेमभक्ति अनपावनी, हमहिं देहु श्रीराम ॥ १२५ ॥ वारि मथे घृत होय बरु, सिकताते बरु तेल ॥ विनु हरि भजन न भव तरै, यह सिद्धान्त अपेल ॥ १२६ ॥ हरिमाया कृत दोष गुण, बिनु हरि भजन न जाहिं॥ भजिय राम सब काम तजि, अस विचारि मनमाहिं ॥ १२७ ॥ जो चेतन कहँ जड करै, जडै करहि चैतन्य ॥ अस समर्थ रघुनायकहि, भजहिं जीव ते धन्य ॥१२८॥ श्रीरघुवीर प्रतापते, सिन्धु तरे पाषान ॥ ते मति मंद जे राम तजि, भजहिं जाय प्रभु आन ॥१२९॥ लवणमेष पर-मान युग, वर्षकल्प शरचण्ड ॥ भजहि न मन त्यहि राम कहँ, काल जासु कोदण्ड ॥ १३० ॥ तब लगि कुशल न जीवकहँ, सपन्यहुँ मन विश्राम ॥ जब लगि भजत न रामपद, शोकधाम तजि काम ॥ १३१ ॥ बिनु संतसंग न हरि कथा, त्यहि बिनु मोह न भाग॥

मोहगये बिनु रामपद, होय न दृढ अनुराग ॥ १३२॥
बिनु विश्वासे भक्ति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम ॥
रामकृपा बिनु सपन्यहुँ, जीव न लह विश्राम ॥१३३॥
(सोरठा) अस विचारि मन धीर, तजि कुतर्क संश॥
सकल ॥ भजहु राम रघुवीर, करुणाकर सुन्दर सुखद
॥ १३४ ॥ भाव वश्य भगवान, सुखनिधान करुणा-
भवन ॥ तजि ममता मदमान, भजिय सदा सीतारमन
॥ १३५ ॥ कहहिं विमल मति सन्त, वेद पुराण वि-
चारि सब ॥ द्रवैं जानकी कन्त, तब छूटै संसार दुख॥
॥१३६॥ बिनु गुरु होइ न ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग
बिनु ॥ गावहिं वेद पुरान, सुख कि लहिय हरिभक्ति
बिनु ॥ १३७ ॥ (दोहा) रामचंद्रके भजन बिनु, जो
चह पद निर्वान ॥ ज्ञानवंत अपि सोइ नर, पशु बिन
पूछ बखान ॥ १३८ ॥ जरो सो संपति सदन सुख,
सुहृद मातु पितु भाइ ॥ विमुख होत जो रामपद,
करै न सहज सहाइ॥१३९॥सोइ साधु मुनि समुझि कर,
रामभक्ति थिरताई ॥ लरिकाईको पैरिबे, तुलसी बिसरि
न जाइ ॥ १४० ॥ सबै कहावत रामके, सबहि रामकी
आस ॥ राम कहै जेहि आपनो, तेहि भजु तुलसीदास
॥ १४१ ॥ ज्यहि शरीर रति रामसों, सोइ आदरै सु-
जान ॥ रुद्रदेह तजि नेह वश, वानर भे हनुमान ॥
॥ १४२ ॥ जानि रामसेवा सरस, समुझि करब

अनुमान ॥ पुरखाते सेवक भये, हरते भये हनु-
मान ॥ १४३ ॥ तुलसी रघुबर सेवकहि, खल डाँटस
मन माख ॥ बाजराजके बालकहि, लवा दिखावत
आँख ॥ १४४ ॥ रावण रिपुके दाससों, कायर करहिं
कुचालि ॥ खर दूषण मारीच ज्यों,नीच जाहिंगे कालि
॥ १४५ ॥ पुण्य पाप यश अयशके, भावी भाजन
भूरि ॥ संकट तुलसीदासको, राम करहिंगे दूरि॥१४६॥
खेलत बालक व्यालसँग, मेलत पावक हाथ ॥ तुलसी
शिशु पितु मातु ज्यों, राखत सिय रघुनाथ ॥१४७॥
तुलसी दिनभल शाहकहँ, भली चोर कहँ राति॥निशि
बासर ताकहँ भलो, मानै रामइ ताति ॥ १४८ ॥
तुलसी जनि सुनि समुझिये, कृपासिंधु रघुराज॥ महँगे
मणि कंचन किये, सोधो जग जल नाज ॥ १४९ ॥
सेवा शील सनेह वश,करि परिहरि प्रियलोग॥ तुलसी
ते सब रामसों, सुखद सुयोग वियोग ॥ १५० ॥
चारि चहत मनसा अगम, चनक चारिको लाहु ॥
चारि परिहरे चारिको, दानि चारि चख चाहु ॥
॥ १५१ ॥ सूधे मन सूधे वचन, सूधी सब
करतूति ॥ तुलसी सूधी सकल विधि, रघुबर प्रेम
प्रतीति ॥ १५२ ॥ वेषविशद बोलनि मधुर, मन कटु
हृदय मलीन ॥ तुलसी राम न पाइये, भये विषय

जल मीन॥१५३॥वचन वेषते जो बनै,सो बिगरै परि-
णाम ॥ तुलसी मन ते जो बनै, बनी बनाई राम ॥
॥१५४॥ नीच मीचु लै जाइ जो, रामरजायसु पाइ ॥
तो तुलसी तेरो भलो, नत अनभलो अघाइ ॥१५५॥
जातिहीन अघ जन्म महि, मुक्ति कीनि अस नारि ॥
महामन्द मन सुख चहहिं,ऐसे प्रभुहिं बिसारि॥१५६॥
बंधु वधू रत क्यहि कियो, वचन निरुत्तर बालि ॥
तुलसी प्रभु सुग्रीवकी, चितै न कछू कुचालि ॥१५७॥
वाली बलि बलशालि दल, सखा कीन्ह कपिराज ॥
तुलसी राम कृपालु को, विरद गरीबनिवाज ॥१५८॥
कहा विभीषण लै मिलो, कहा बिगारो बालि॥ तुलसी
प्रभु शरणागतहि, सब दिन आयो पालि ॥ १५९ ॥
तुलसी कोशलपालसों, को शरणागत पाल ॥ भञ्यो
विभीषण बन्धु भय, भंञ्यो दारिद काल ॥ १६० ॥
कुलिशहु चाहि कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि ॥
चित खगेश अस रामकर, समुझि परै कहु काहि ॥
॥ १६१ ॥ वल्कल भूषण फल अशन, बिन शय्या
द्रुम प्रीति ॥ तेहि समय लंका दई,यह रघुबरकी रीति
॥ १६२ ॥ जो संपति शिव रावणहिं, दीन दिये दश
माथ ॥ सोइ संपदा विभीषणहिं, सकुचि दीन रघुनाथ
॥ १६३ ॥ अविचल राज विभीषणहिं, दीन राम रघु-
राज ॥ अजहुँ विराजत लंकपर, तुलसी सहित

समाज ॥१६४॥ कहा बिभीषण ले मिल्यो,कहा दियो रघुनाथ॥तुलसी यह जाने बिना, मूढ मीजिहैं हाथ॥ ॥ १६५ ॥ वैरि बंधु निशिचर अधम, तजो न भरे कलंक ॥ झूंठे अघ सिय परिहरी,तुलसी सोय अशंक ॥ १६६ ॥ त्यहि समाज कियो कठिन पण, जेहि तौल्यो कैलास ॥ तुलसी प्रभु महिमा कहौं, सेवकको विश्वास ॥ १६७ ॥ सभा सभासद निरखि पट, पकरि उठाये हाथ ॥ तुलसी किये इगारहौं, वसन वेष यदु-नाथ ॥ १६८ ॥ त्राहि तीन कहि द्रौपदी,तुलसी राज-समाज ॥ प्रथम बढे पट चित विकल, चहत चकित निजकाज ॥ १६९ ॥ सुखजीवन सब कोउ चहत, सुखजीवन हरिहाथ ॥ तुलसी दाता माँगन्यो, अखि-यत अबुध अनाथ ॥ १७० ॥ कृपण देह पाँइय परो, बिनु साधन सिधि होय ॥ सीतापति संमुख समुझि, जो कीजै शुभ सोइ ॥ १७१ ॥ दंडकवन पावन करन, चरण सरोज प्रभाउ ॥ ऊषर जामहि खल तरहि, होइ रंकते राउ ॥ १७२ ॥ विनही ऋतु तरुवर फरहिः शिला द्रवहिं जलजोर ॥ राम लषण सिय करि कृपा, जब चितवहिं जेहि ओर ॥ १७३ ॥ शिला सो तिय भइ गिरि तरे, मृतक जिये जग जान ॥ राम अनुग्रह शकुन शुभ,सुलभ सकलकल्यान॥१७४॥ शिलाशाप मोचनचरण, सुमिरहु तुलसीदास ॥ तजहु शोच संकट

मिटहिं, पूजहि मनकी आस ॥ १७५ ॥ मरे जिआये भालु कपि, अवध विप्रको पूत ॥ सुमिरहु तुलसी ताहि तू, जाको मारुत दूत ॥ १७६ ॥ काल करम गुण दोष जग, जीव तिहारे हाथ ॥ तुलसी रघुवर राखरो, जान जानकीनाथ ॥ १७७ ॥ रोग निकर तनु जरठपन, तुलसी संगको लोग॥राम कृपालय पालिये, दीन पालिबे योग ॥ १७८ ॥ मोसम दीन न दीन-हित, तुम समान रघुवीर ॥ अस विचारि रघुंवशमणि, हरहु विषम भवभीर ॥ १७९ ॥ भव भुवंग तुलसी नकुल, डसत ज्ञान हरिलेत ॥ चित्रकूट इक औषधी, चितवत होत सचेत ॥ १८० ॥ हौंहुँ कहावत सब कहत, राम सहत उपहास॥ साहब सीताराम सो, सेवक तुलसीदास ॥ १८१ ॥ राम राज राजत सकल, धरम निरत नर नारि ॥ राग न रोष न द्वेष दुख, सुलभ पदारथ चारि ॥ १८२ ॥ रामराज संतोष सुख, घर वन सकल सुपास ॥ सुरतरु तरु सुरधेनु महि, अभि-मत भोग बिलास ॥ १८३ ॥ खेती बणि विद्या बणिज, सेवा शिलप सो काज ॥ तुलसी सुरतरु सहित सब, सफल रामके राज ॥ १८४ ॥ दंड यतिनकर भेद जहँ, नरतक नृत्य समाज ॥ जीतहु मनहि सुनिय अस, रामचंद्रके राज ॥ १८५ ॥ कोपे शोचत पोच-कर, करिय निहारन काज ॥ तुलसी परमित प्रीतिकी,

रीते रामके राज ॥ १८६ ॥ मुकुर निरखि मुख रामभ्रू, गनत गुणहिं दै दोष ॥ तुलसीसे शठ सेवकनि, लखि जिन परहि सरोष ॥ १८७ ॥ सहसनाम सुनि भनित सुनि, तुलसी वल्लभ नाम ॥ सकुचत हिय हँसि निरखि सिय, धरमधुरंधर राम ॥१८८॥ गौतम तिय गति सुरति करि, नहिं परसति पग पानि ॥ हिय हर्षे रघुवंशमणि, प्रीति अलौकिक जानि॥१८९॥ तुलसी विलसत नखत निशि, शरद सुधाकर साथ ॥ मुक्ता झालर झलक जनु,राम सुयश शिशुहाथ॥१९०॥ रघुपति कीरति कामिनी, क्यों कहै तुलसीदास ॥ शरद प्रकाश अकाश छबि, चारु चिबुक तिल जास ॥ १९१ ॥ प्रभु गुणगण भूषण वसन, विशद विशेष सुदेश ॥ राम सुकीरति कामिनी, तुलसी करतब केश॥ ॥ १९२ ॥ रामचरित राकेशकर, सरिस सुखद सब काहु ॥ सज्जन कुमुद चकोरचित, हित विशेष बड़ लाहु ॥१९३॥ रघुवरकीरति सज्जननि, शीतल खलन सुताति ॥ ज्यों चकोर चषचक्कवनि, तुलसी चाँदनि राति ॥ १९४ ॥ रामकथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु ॥ तुलसी सुभग सनेह वन, सिय रघुवीर बिहारु ॥ १९५ ॥ श्याम सुरभि पय विशद अति, गुणद करहिं तेहि पान ॥ गिराग्राम सियराम यश, गावहिं सुनहिं सुजान ॥१९६॥ हरि हर यश सुर नर गिरन,

वर्णहिं सुकवि समाज ॥ हाटी हाटक घटित चरु,राधे स्वाद सुनाज ॥ १९७ ॥ तिलपर राख्यो सकल जग, विदित विलोकत लोग ॥ तुलसी महिमा रामकी, कोउ न जानि वियोग ॥ १९८ ॥ (सोरठा) राम स्वरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धिपर ॥ अविगति अकथ अपार, नेति नेति नित निगम कह ॥ १९९ ॥ (दोहा) मायाजीव स्वभाव गुण, काल करम महदाद ॥ ईश अंकते बढ़त सब, ईशअंक विनु वाद ॥२००॥ हित उदास रघुवर विरह, विकल सकल नर नारि ॥ भरत लषण सियगति समुझि, प्रभु-चख सदा सुवारि ॥ २०१ ॥ सीय सुमित्रासुवन गति, भरत सनेह सुभाउ ॥ कहिबेको शारद सरिस, जनि वेको रघुराउ ॥ २०२ ॥ जानहिं राम न कहि सके, भरत लषण सियप्रीति ॥ सो सुनि समुझि तुलसी कहत, हठ शठताकी रीति ॥ २०३ ॥ सब विधि सम-रथ सकल कहि, सहि शासन दिन राति ॥ भलो निबाहो सुनि समुझि, स्वामिधर्म सब भाँति ॥२०४॥ भरतहि होइ न राजमद, विधि हरि हर पद पाइ ॥ कबहुँकि कांजी सीकरनि, क्षीरसिंधु विनशाय॥२०५॥ संपति चकई भरत चक, मुनि आयसु खिलवार ॥ तेहि निशि आश्रम पींजरा, राखे भा भिनुसार ॥ ॥२०६॥ सधन चोर सँग मुदित मन, धनी गहैं ज्यों

फेंट ॥ त्यों सुग्रीव विभीषणहिं, भई भरतकी भेंट ॥ ॥ २०७ ॥ राम सराहे भरत उठि, मिले राम सम जानि ॥ तदपि विभीषण कीशपति, तुलसी गरत गलानि ॥ २०८ ॥ भरत श्यामतन रामसम, सब गुण रूप निधान ॥ सेवक सुखदायक सुलभ, सुमिरत सब कल्यान ॥ २०९ ॥ लसत लषण मूरति मधुर, सुमिरहु सहित सनेह ॥ सुखसंपति कीरति विजय, शकुन सुमंगल गेह ॥ २१० ॥ नाम शत्रुसूदन सुभग, सुखमा शीलनिकेत ॥ सेवत सुमिरत सुलभ सुख, सकल सुमंगल देत ॥ २११ ॥ कौशल्या कल्याणमय, मूरति करति प्रणाम ॥ शकुन सुमंगल काज शुभ, कृपा करहिं सियराम ॥ २१२ ॥ सुमिरि सुमित्रानाम जग, जे तिय लेहिं सुनेम ॥ सुवन लषण रिपुदमनसे, पावहिं पति पद प्रेम ॥ २१३ ॥ सीताचरण प्रणाम करि, सुमिरि सुनाम सुनेम ॥ सो तिय होहिं पतिदेवता, प्राणनाथ प्रियप्रेम ॥ २१४ ॥ तुलसी केवल कामतरु, रामचरित्र अराम ॥ कलितरु कपि निशिचर कहत, हमहिं किये विधि वाम ॥२१५॥ मातु सकल सानुज भरत, गुरु पुरलोग सुभाउ ॥ देखत देखत कैकयिहि, लंकापति कपिराउ ॥२१६॥ सहज सरल रघुवर वचन, कुमति कुटिल करि जान ॥ चलै जोंक जल वक्रगति, यद्यपि सलिल समान ॥ २१७ ॥ दशरथ नाम सुका-

मतरु, फलै सकल कल्यान ॥ धरणि धाम धन धरम-
सुत, सद्गुण रूपनिधान॥२१८॥ तुलसी जान्यो दश-
रथहि, धर्म न सत्य समान ॥ राम तजे ज्यहि लागि
बन, आपु परिहरे प्रान ॥ २१९ ॥ रामविरह दशरथ
मरण, मुनिमन अगम सुमीचु॥तुलसी मंगल मरण तरु,
सुचि सनेह जल सींचु ॥ २२० ॥ (सोरठा) जीवन
मरण समान, जैसे दशरथरायको ॥ जियत खिलाये
राम, रामविरह तनु परिहरेउ ॥ २२१ ॥ (दोहा)
प्रभुहि विलोकत गीधगति, सिय हित घालव्र नीचु ॥
तुलसी पाई गीधपति, मुक्ति मनोहर मीचु ॥ २२२ ॥
विरत कर्मरत भरत मुनि, सिद्ध ऊंच अरु नीच ॥
तुलसी सकल सिहात सुनि, गीधराजकी मीच ॥
॥ २२३ ॥ मुये मरत मरिहै सकल, घरी पहरके
बीच ॥ लही न काहू आजुलौं, गीधराजकी मीच ॥
॥२२४॥ मुये मुक्त जीवत मुकत, मुकत मुकतहूं बीच॥
तुलसी सबहीते अधिक, गीधराजकी मीच ॥ २२५ ॥
रघुवर बिकल बिहंग लखि, सो बिलोकि दोउ बीर ॥
सिय सुधि कहि सियराम कहि, तजी देह मतिधीर
॥ २२६ ॥ दशरथते दशगुण भगति, सहित तासु कर
काजु ॥ शोचत बंधु समेत प्रभु, कृपासिंधु रघुराज
॥ २२७ ॥ केवट निशिचर बिहँग मृग, किये साधु
सनमानि ॥ तुलसी रघुवरकी कृपा, सकल सुमंगल

खानि ॥ ॥ २२८॥ मंजुल मंगल मोदमय, मूरति मारुतपूत ॥ सकल सिद्धिकर कमलतल, सुमिरत रघुवरदूत ॥ २२९ ॥ धारि बीर रघुवीर प्रिय, सुमिरि समीरकुमार ॥ अगम सुगम सब काजकर, करतल सिद्धि बिचार ॥ २३० ॥ सुख मुद मंगल कुमुद विधु, शकुन सरोरुह भानु ॥ करहु काज सब सिद्धि शुभ, आनि हिये हनुमान ॥२३१॥ सकल काज शुभ समउ भल, शकुन सुमंगल जानु ॥ कीरति विजय विभूति भलि, हिय हनुमानहि आनु ॥ २३२ ॥ शूर शिरोमणि साहसी, सुमति समीरकुमार ॥ सुमिरत सब सुख संपदा, मुदमंगल–दातार ॥ २३३ ॥ तुलसी तनु सर सुख जलज, भुज रुज गज बरजोर ॥ दलत दयानिधि देखिये, कपि केशरीकिशोर ॥ २३४ ॥ भुजतरु कोटर रोगु अहि, बरबश कियो प्रवेश ॥ बिहँगराज बाहन तुरत, काढ़िय मिटै कलेश ॥ २३५ ॥ बाहु विटप सुख विहँग थल, लगी कुपीर कुआगि ॥ रामकृपा जल सींचिये, वेगिहि दिनहितलागि॥२३६॥ (सोरठा) मुक्ति जन्म महि जानि, ज्ञानखानि अघ हानि कर॥जहँ बस शंभु भवानि, सो काशी सेइय कस न ॥ २३७ ॥ जरत सकल सुरवृंद, विषम गरल जेहि पान किय ॥ तेहि न भजसि मतिमंद, को कृपालु शंकर सरिस ॥ २३८ ॥ (दोहा) वासर ढासनिके

ढका, रजनी चहुँदिशि चोर ॥ शंकर निज पुर राखिये, चितै सुलोचन कोर ॥ २३९ ॥ अपनी बीसी आपुही, पुरिहि लगाये हाथ ॥ क्यहिविधि विनती विश्वकी, करौं विश्वके नाथ ॥ २४० ॥ और करै अपराध कोउ, और पाव फल भोग ॥ अति विचित्र भगवंत-गति, कोउ न जानिबे योग ॥ ॥ २४१ ॥ प्रेमसरी परपंच रुच, उपजी अधिक उपाधि ॥ तुलसी भलो सबै दई, बेगि बांधिये व्याधि ॥ २४२ ॥ हम हमार आचार बड़, भूरिभार धर शीश ॥ हठि शठ परवश परत जिमि, कीर कोश कृमि कीश ॥ २४३ ॥ क्यहि मग प्रविशत जाति केहि, ज्यों दर्पणमें छाँह॥तुलसी त्यों जगजीवगति, करी जीहके नांह ॥ २४४ ॥ सुख-सागर सुखनींदवश, सपने सब करतार ॥ माया माया नाथकी, को जग जाननहार ॥ २४५ ॥ जीव शीव सम सुख शयन, सपने कछु करतूति ॥ जागत दीन मलीन सोइ, विकल विषाद विभूति ॥ २४६ ॥ सपने होय भिखारि नृप, रंक नाकपति होय ॥ जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जिय जोय ॥ ॥ २४७ ॥ तुलसी देखत अनुभवत, सुनत न समुझत नीच ॥ चपरि चपेटे देत नित, केश गहे कर मीच ॥ २४८ ॥ करम खरी करमोह थल, अंक चराचर जाल ॥ हनत गुणत गनि गुणि हनत, जगत ज्योतिषी काल॥२४९॥

कहिबेकहँ रसना रची, सुनिबेकहँ किय कान ॥ धरिके चित हित सहित सुनि, परमारथहि सुजान ॥ ॥२५०॥ ज्ञान कहै अज्ञान बिन, तम बिनु कहैप्रकाश ॥ निरगुण कहै जो सगुण बिनु, सो गुरु तुलसीदास ॥ ॥ २५१ ॥ अंक अगुण आखर सगुण, समुझिय उभय अपार ॥ खोये राखे आप भल, तुलसी चारु विचार ॥ २५२ ॥ परमारथ पहिचानि मति, लसत विषय लपटानि ॥ निकसि चिताते अधजरति, मानहुँ सती परानि ॥ २५३ ॥ शीश उघारन किन कहेउ, बरजि रहे प्रिय लोग॥ घरही सती कहावती, जरती नाहवियोग ॥ २५४ ॥ खरि आखरी कपूर सब, उचित न पिय तिय त्याग ॥ केखरिया मोहिं मेलिकै, विमलविवेक विराग ॥ २५५ ॥ घर कीन्हे घर जात है, घर छांड़े घर जाइ ॥ तुलसी घर वन बीचही, राम प्रेमपुर छाइ ॥ २५६ ॥ दिये पीठ पाछे लगै, सन्मुख होत पराय ॥ तुलसी संपति छाँह ज्यों, लखि दिन बैठि गँवाय ॥ २५७ ॥ तुलसी अद्भुत देवता, आशादेवी नाम ॥ सेये शोक समर्पई, विमुख भये अभिराम ॥ ॥ २५८ ॥ सोई सेंबर तेइ सुवा, सेवत सदा बसंत ॥ तुलसी महिमा मोहकी, सुनत सराहत संत ॥ २५९ ॥ करत न समुझत झूठ गुण, सुनत होत मतिरंक ॥ पारद प्रकट प्रपंच मय, सिद्धिहि नाउ कलंक ॥ २६० ॥

ज्ञानी तापस शूर कवि, कोविद गुण आगार॥ केहिके लोभ विडंबना, कीन्ह न यहि संसार ॥ २६१ ॥ श्रीमद वक्र न कीन केहि, प्रभुता बधिर न काहि ॥ मृगनयनीके नयन शर,को अस लागु न जाहि ॥२६२॥ व्यापि रहेउ संसारमहँ, माया कटक प्रचंड ॥ सेनापति कामादि भट, दंभ कपट पाषंड ॥ २६३ ॥ तात तीनि अति प्रबल खल,काम क्रोध अरु लोभ ॥ मुनि विज्ञान सुधाम मन, करहिं निमिषमहँ क्षोभ ॥२६४॥ लोभके इच्छा दंभ बल, कामके केवल नारि ॥ क्रोधके परुष वचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि ॥ ॥ २६५ ॥ काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोहके धारि ॥ तिनमहँ अति दारुण दुखद, मायारूपी नारि ॥ २६६ ॥ का नहिं पावक जरि सकै, का न समुद्र समाइ ॥ का न करै अबला प्रबल, क्यहि जग काल न खाइ ॥ २६७ ॥ जन्मपत्रिका वर्तिके, देखहु मनहिं विचारि ॥ दारुण वैरी मीचुके, बीच विराजति नारि ॥ २६८ ॥ दीपशिखा सम युवतितन, मन जनि होसि पतंग ॥ भजहिं राम तजि काम मद, करहिं सदा सतसंग ॥ २६९ ॥ काम क्रोध मद लोभरत, गृहासक्त दुखरूप ॥ ते किमि जानहिं रघुपतिहि, मूढ परे भवकूप ॥ २७० ॥ ग्रह गृहीत पुनि वातवश, तेहि पुनि बीछी मार ॥ ताहि पियाई वारुणी, कहहु कौन उपचार ॥ ॥ २७१ ॥ ताहि कि संपति शकुन शुभ, सपनेहु मन

विश्राम ॥ भूतद्रोहरत मोहवश, राम विमुख रतिकाम ॥२७२॥ कहत कठिन समुझत कठिन, साधत कठिन विवेक ॥ होइ घुनाक्षर न्याय जो, पुनि प्रत्यूह अनेक॥ ॥ २७३ ॥ खल प्रबोध जगसोध मन, को निरोध कुल शोध ॥ करहिं ते फोकट पचि मरहिं, सपनेहु सुख न सुबोध ॥ २७४ ॥ (सोरठा) कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज संतोष विनु ॥ चले कि जल बिनु नाव, कोटि यतन पचि पचि मरिय ॥२७५॥ सुर नर मुनि कोउ नाहिं, जेहि न मोह माया प्रबल ॥ अस विचारि मनमाहिं, भजिय महामायापतिहि ॥२७६॥ (दोहा) एक भरोसो एक बल, एक आश विश्वास ॥ एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास ॥२७७॥ जो घन वरषै समय शिर, जो भरि जन्म उदास ॥ तुलसी याचित चातकहि, तऊ तिहारी आस ॥२७८॥ चातक तुलसीके मते, स्वातिहु पियै न पानि ॥ प्रेमतृषा बाढ़ति भली, घटे घटैगी कानि ॥ २८९ ॥ रटत रटत रसना लटी, तृषा सूखि गये अंग ॥ तुलसी चातक प्रेमको, नित नूतन रुचिरंग ॥ २८० ॥ चढ़त न चातक चित कबहुँ, प्रिय पयोदके दोष ॥ तुलसी प्रेम पयोधिकी, ताते नाप न जोष ॥२८१॥ बरषि परुष पाहन पयद, पंख करौ टुक टूक ॥ तुलसी परी न चाहिये, चतुर चातकहि चूक ॥ २८२ ॥ उपल बरषि गरजत तरजि,

डारत कुलिश कठोर॥चितौ कि चातक मेघ तजि,कबहुँ दूसरी ओर॥ २८३ ॥ पवि पाहन दामिनि गरज, झरि झकोर खरि खीझि॥ रोष न प्रीतम दोष लखि, तुलसी रागहि रीझि ॥२८४॥ मान राखिबो मांगिबो, पियसों नित नव नेहु ॥ तुलसी तीनिउ तब फबैं, जो चातक मत लेहु॥२८५॥ तुलसी चातकही फबैं, मान राखिबो प्रेम॥वक्र बूंद लखि स्वातिहू, निदरि निबाहत नेम॥२८६॥तुलसी चातक माँगने, एक२घनि दानि ॥ देत जो भूभाजन भरत, लेत जो घूंटक पानि॥२८७॥ तीनिलोक तिहुँ कालमें, चातकहीके माथ ॥ तुलसी जासु न दीनता, सुनी दूसरे नाथ ॥ २८८ ॥ प्रीति पपीहा पैदकी, प्रकट नई पहिंचानि ॥ याचक जगति कनाउड़ो,कियो कनौडो दानि ॥ २८९ ॥ नहिं याचत नहिं संग्रही, शीश नाइ नहिं लेइ ॥ ऐसे मानिहि मांगनेहि, को वारिद बिन देइ ॥ ९६० ॥ किन किन ज्यायो जगतमें, जीवत दायकदानि ॥ भयो कनौडो याचकहि पयद प्रेम पहिचानि ॥ २९१ ॥ साधन सांसत सब सहत, सबहिं सुखद फल लाहु ॥ तुलसी चातक जलदकी, रीति बूझि बुधकाहु ॥२९२॥ चातक जीवन दायकहि,जीवन समय सुरीति ॥ तुलसी अलख न लखिपरे, चातक प्रीति प्रतीति ॥ २९३ ॥ जीव चराचर जहँ लगे, है सबको हित मेह॥ तुलसी चातक

मन बस्यो, घनसों सहज सनेह ॥२९४॥ डोलत विपुल विहंग वन, पियत पोपरिन वारि ॥ सुयश धवल चातक नवल, तुही भुवन दश चारि ॥ २९५ ॥ मुख मीठे मानस मलिन, कोकिल मोर चकोर ॥ सुयश धवल चातक नवल, रह्यो भुवन भरि तोर ॥ २९६ ॥ वास वेष बोलनि चलनि, मानस मंजु मराल ॥ तुलसी चातक प्रेमकी, कीरति विशद विशाल ॥ २९७ ॥ प्रेम न परखिय पुरुष पन, पयद सिखावन एह ॥ जग कह चातक पातकी, ऊसर वरषै मेह ॥२९८॥ होइ न चातक पातकी, जीवन दानि न मूढ॥ तुलसी गति प्रह्लादकी, समुझि प्रेमपयगूढ ॥ २९९ ॥ गरज आपनी सबनको, गरज करत उर आनि॥ तुलसी चातक चतुर भो, याचक जानि सुदानि ॥ ३०० ॥ चरग चंगु गत चातकहि, नेम प्रेमकि पीर॥ तुलसी परवश हाडपर, परिहै पुहुमी नीर ॥ ३०१ ॥ वध्यो वधिक परचो पुण्यजल, उलटि उठाई चोंच ॥ तुलसी चातक प्रेम पट, मरतहु लगी न खोंच ॥ ३०२ ॥ अंड फोरि कियो चेटुवा, तुष परो नीर निहारि ॥ गहि चंगुल चातक चतुर, डारचो बाहिर वारि ॥ ३०३ ॥ तुलसी चातक देख शिख, सुतहि बारही बार ॥ तात न तर्पण कीजिये, विना वारिधर-धार ॥ ३०४ ॥ (सोरठा) जियत न नाई नारि, चातक घन तजि दूसरहि ॥ सुरसरिहूंकी वारि, मरत

न माँगेउ अरघ जल ॥२०५॥ सुन रे तुलसीदास, प्यास पपीहहि प्रेमकी ॥ परिहरि चारिउ मास, जो अँचवै जल स्वातिको ॥ २०६ ॥ याचै बारहमास, पियै पपीहा स्वातिजल॥ जान्यो तुलसीदास, जोगवत नेही नेह मन ॥ २०७ ॥ तुलसीके मत चातकहि, केवल प्रेमपियास॥पियत स्वातिजल जान जग, याचक बारहमास ॥ २०८ ॥ आलबार मुक्ताइलनि, हिय सनेह तरु मूल॥होइ हेतु चित चातकहि,स्वाति सलिल अनुकूल ॥ ॥ २०९ ॥ बिबिरसना तनु श्याम हैं, वंक चलनि विषखानि ॥ तुलसी यश श्रवणनि सुन्यो, शीश समरप्यो आनि ॥ २१० ॥ उष्णकाल अरु देह पित, मगपंथी तन ऊख ॥ चातक बतियाँ नारुची, अन जल सींचे रूख ॥२११॥ अन जल सींचे रूखकी, छायाते वरु घाम॥ तुलसी चातक बहुत है, यह प्रवीनको काम ॥ २१२॥ एक अंग जो सनेहता, निशि दिन चातकनेह ॥ तुलसी जासों हित लगै, वहिअहार वो देह ॥ २१३ ॥ आपु व्याधको रूप धरि, कुहौ कुरंगहि राग॥ तुलसी जो मृगमन मुरै, परै प्रेम पट दाग॥ २१४ ॥ तुलसी मणिनिज द्युति फणिहि, व्याधहि देउ दिखाय ॥ बिछुरत होइ न आँधरो, ताते प्रेम न जाय ॥ २१५ ॥ जरत तुहिन लखि वनजवन, रवि दै पीठि पराउ ॥ उदय विकश अथवत सकुच,

मिटै न सहज सुभाउ ॥ ३१६ ॥ देउ आपने हाथ जल, मीनहि माहुर घोरि ॥ तुलसी जिय जो वारि बिनु, तौ तु देहि कवि खोरि ॥ ३१७ ॥ मकर उरग दादुर कमठ, जलजीवन जलगेह ॥ तुलसी एकै मीनको, है साँचिलो सनेह ॥ ३१८ ॥ तुलसी मिटै न मरिमिटेहु, साँचो सहज सनेह ॥ मोर शिखाविनु मूरिहू, गरजत पलुहत मेह ॥ ३१९ ॥ सुलभ प्रीति प्रीतम सबै, कहत करत सब कोइ ॥ तुलसी मीन पुनीतते, त्रिभुवन बड़ो न कोइ ॥ ३२० ॥ तुलसी जप तप नेम व्रत, सब सब हीते होइ ॥ लहै बड़ाई देवता, इष्ट देव जब होइ ॥ ३२१ ॥ कुदिन हितूसों हित सुदिन, हित अनहित किन होइ ॥ शशि छबि हर रविसदन तउ, मित्र कहत सब कोइ ॥ ३२२ ॥ कै लघुकै बड़मीत भल, सम सनेह दुख सोइ ॥ तुलसी ज्यों घृत मधु सरिस, मिले महाविष होइ ॥ ३२३ ॥ मान्यमीतसों सुख चहै, सो न छुये छलछाँह ॥ शशि त्रिशंकु कैकयी गति, लखि तुलसी मनमाँह ॥ ॥ ३२४ ॥ कहीं कठिन कृत कोमलहुँ, हित हठि सोइ सहाइ ॥ पलक पानि पर ओडिअत, समुझि कुघाइ सुघाइ ॥ ३२५ ॥ तुलसी वैर सनेह दोउ, रहितविलोचन चारि ॥ सुरहि सेवरा आदरहिं, निंदहिं सुरसरि वारि ॥ ३२६ ॥ रुचै मांगनेहि मांगिबो, तुलसी दानिहि

दाहु ॥ आलस अनख न आचरज, प्रेम पिहानी जाहु ॥ ३२७ ॥ अमिय गारि गारेउ गरल, मारि करे करतार ॥ प्रेम वैरकी जननि युग, जानहि बधन गँवार ॥ ॥ ३२८ ॥ सदा न जे सुमिरत रहहिं, मिलि न कहैं प्रियबैन ॥ तेपै तिन्हके जाय घर, जिनके हिये न नैन ॥ ३२९ ॥ हितु पुनीत सब स्वारथहि, अरि अशुद्ध बिनु चांड ॥ निजमुख माणिक सम दशन, भूमि परेते हांड ॥ ३३० ॥ माखी काक उलूक बक, दादुरसे भये लोग ॥ भले ते शुक पिक मोरसे, कोउ न प्रेम पथ योग ॥ ३३१ ॥ हृदय कपट वर वेष धरि, वचन कहैं गढि छोलि ॥ अबके लोग मयूर ज्यों, क्यों मिलिये मन खोलि ॥ ३३२ ॥ चरण चोंच लोचन रँगो, चलो मराली चाल॥क्षीर नीर विवरन समै, बक उघरत तेहि काल॥३३३॥मिलै जो सरलहि सरल ह्वै, कुटिल न सहज विहाइ ॥ शीत हेतु ज्यों वक्रगति, व्यालन विलै समाइ ॥ ३४४ ॥ कृषधन सखहि न देव दुख, मुयहु न मांगब मीच ॥ तुलसी सज्जनकी रहनि, पावक पानी बीच ॥ ३३५ ॥ संग सरल कुटिलहि भये, हरि हर कराहिं निबाहु ॥ ग्रह गनती गनि चतुर विधि, कियो उदर बिनु राहु ॥ ३३६ ॥ नीच निचाई नाहिं तजै, सज्जनहूके संग ॥ तुलसी चंदन विटप बसि,

बिनु विष भये न भुअंग ॥ ३३७ ॥ भलो भलाई पै लहै, लहै निचाई नीच ॥ सुधा सराही अमरता, गरल सराही मीच ॥ ३३८ ॥ मिथ्या माहुर सज्जनहिं, खलहि गरल सम सांच ॥ तुलसी छुवत पराइ ज्यों, पारद पावक आंच ॥ ३३९ ॥ संतसंग अपवर्ग कर, कामी भवकर पंथ ॥ कहहिं साधु कवि कोविद, श्रुति पुराण सदग्रंथ ॥ १४० ॥ सुकृत न सुकृती परिहरै, कपट न कपटी नीच ॥ मरत सिखावन सो दियो, गीधराज मारीच ॥ ३४१ ॥ सुतरु सुजन वन ऊष सम, खल टंकिका रुखान ॥ परहित अनहित लागि सब, सासति सहत समान ॥ ३४२ ॥ पिअहिं सुमन रस अलि विटप, काटि कोलि फल खात ॥ तुलसी तरु जीवै युगल, सुमति कुमतिकी बात ॥३४३॥ अवसर कौड़ी जो चुकै, बहुरि दिये का लाख ॥ दुइज न चंदा देखिये, उदय कहा भरि पाख ॥ ३४४ ॥ ज्ञान अनभलेको सबहि, भलो भलेहू काउ ॥ सींग शूंड रद लूम नख, करत जीब जड़ घाउ ॥ ३४५ ॥ तुलसी जगजीवन अहित, कतहूं कोउ हित जानि ॥ शोषक भानु कृशानु महि, पवन एक घनदानि ॥ ॥ ३४६ ॥ सुनिय सुधा देखिय गरल, सब करतूति कराल ॥ जहँ तहँ काक उलूक बक, मानस सुकृत मराल ॥३४७॥ जलचर थलचर गगनचर, देव दनुज

नर नाग ॥ उत्तम मध्यम अधम खल, दश गुण बढ़त विभाग ॥ ३४८ ॥ बलि मिस देखे देवता, करमिस मानव देव ॥ मुये मार अविचार हत, स्वारथ साधन एव ॥ ३४९ ॥ सुजन कहत भल पोच पथ, पाप न परखे भेद ॥ कर्मनाश सुरसरित मिस, विधि निषेध वद वेद ॥३५०॥ मणि भाजन मधु पारई, पूरण अमी निहारि ॥ का छांड़िय का संग्रही, कहहु विवेक विचारि ॥ ३५१ ॥ उत्तम मध्यम नीचगति, पाहन शिकता पानि ॥ प्रीति परीक्षा तिहुँनकी, वैर वितिक्रम जानि॥ ॥३५२॥पुण्य प्रीति पति प्रापतिउ,परमारथ पथ पांच॥ लहहिं सुजन परिहरहिं खल, सुनहु सिखावन सांच ॥ ॥ ३५३ ॥ नीच-निरादर ही सुखद, आदर सुखद विशाल ॥ कदली बदली विटप गति, पेखहु पनस रसाल ॥ ३५४ ॥ तुलसी अपनो आचरण, भलो न लागत कासु ॥ तेहि न बसात जो खात नित, लहसु-नहूको बासु ॥ ३५५ ॥ बुधसों विवेकी विमलमति, जिनके रोष न राग ॥ सुहृद सराहत साधु जेहि, तुलसी ताको भाग ॥ ३५६ ॥ आपु आपुकहँ सब भलो, आपनकहँ कोइ कोइ ॥ तुलसी सबकहँ जो भलो, सुजन सराहिय सोइ ॥ ३५७ ॥ तुलसी भलो सुसंगते, पोच कुसंगति होइ॥ नाउ किन्नरी तीर असि, लोह बिलोकहु लोइ ॥ ३५८ ॥ गुणसंगति गुरु होइ

सो, लघु संगति लघु नाम ॥ चार पदारथमें गनै, नेकहारहूं काम ॥ ३५९ ॥ तुलसी गुरु लघुता लहत, लघु संगति परिनाम ॥ देवी देव पुकारियत, नीच नारि नर नाम ॥ ३६० ॥ तुलसी किये कुसंगथिति, होइ दाहिनो बाम ॥ कहि सुनि सकुचिय सूम खल, गत हरि शंकर नाम ॥ ३६१ ॥ बसि कुसंग चह सुजनता, ताकी आश निरास ॥ तीरथहूको नाम भो, गया मगहके पास ॥३६२॥ रामकृपा तुलसी सुलभ, गंग सुसंग समान ॥ जो जन जल परै जो मिलै, कीजै आपु समान ॥३६३॥ ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुयोग सुयोग ॥ होइ कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलक्षण लोग ॥ ३६४ ॥ जन्म योगमें जानियत, जग विचित्र गति देखि ॥ तुलसी आखर अंकरस, रंग विभेद विशेखि ॥ ३६५ ॥ आखर जोरि विचार करु, सुमति अंक लिखि लेखु ॥ योग कुयोग सुयोग मय, जगगति समुझि विशेखु ॥ ३६६ ॥ करु विचार चलु सुपथ भल, आदि मध्य परिनाम ॥ उलटे जपै मरा जरा, सूधे राजा राम ॥ ३६७ ॥ होइ भलेको अनभलो, होइ दानिके सूम ॥ होइ कुपूत सुपूतके, ज्यों पावकमें धूम ॥ ॥ ३६८ ॥ जड़ चेतन गुण दोष मय, विश्व कीन्ह करतार ॥ संतहंस गुण गहहिं पै, परिहरि वारि विकार ॥ ॥ ३६९ ॥ (सोरठा) पाट कीटते होइ, ताते पाटंबर

रुचिर ॥ कृमि पालै सबकोइ, परम अपावन प्राणसम॥ ॥ ३७० ॥ (दोहा) जो जो जेहि जेहि रसमगन, तहँ सो मुदित मन मानि ॥ रसगुण दोष विचारिबो, रसिकरीति पहिंचानि ॥ ३७१ ॥ सम प्रकाश तम पाख दुहुँ, नाम भेद विधि कीन्ह ॥ शशिपोषक शोषक समुझि, जग-यश अपयश दीन्ह ॥ ३७२ ॥ लोक वेदहू लोदगी, नाम भलेको पोच ॥ धर्मराज यमराज पवि, कहत सकोच न शोच॥३७३॥ बिरुचि परखियहि सुजनजन, राखि परखि यह मंद ॥ बड़वानल शोषत उदधि, हर्ष बढ़ावत चंद ॥ ३७४ ॥ प्रभु सम्मुख भय नीच नर, निपट तोत विकराल ॥ रवि रुख लखि दर्पण फटिक, उगिलत ज्वालाजाल॥ ३७५ ॥प्रभु समीप गत सुजन जन, होत सुखद सुविचारि ॥ लवण जलधि जीवन जलद, वर्षत सुधा सुवारि ॥ ३७६ ॥ नीच निवारहिं निरस तरु, तुलसी सींचहि ऊख॥पोषत पयद समान सब, विष पियूषके रूख ॥ ३७७ ॥ बर्षि विश्व हर्षित करत, हरत ताप अघ प्यास ॥ तुलसी दोष न जल-दको, जो जल जरै जवास॥३७८॥ अमरदानि याचक मरहिं, मरि मरि फिरि फिरि लेहिं ॥ तुलसी याचक पातकी,दातहि दूषण देहिं॥३७९॥लखि गयंद लैं चलहिं भजि, श्वान सुखानो हाड॥ गज गुण मोल अहार बल, महिमा जानकि राड ॥ ३८० ॥ कै निदरहु कै आद-

रहु, सिंहहि श्वान सियार ॥ हर्ष विषाद न केशरिहि, कुंजर गंजनिहार ॥३८१॥ ठाढ़ो द्वार न देसकै, तुलसी जे नर नीच ॥ निंदहिं बलि हरिचंदको, का कियो करण दधीच ॥ ३८२ ॥ ईश शीश विलसत बिमल, तुलसी तरल तरंग ॥ श्वान सरावगके कहे, लघुता लहै न गंग ॥ ३८३ ॥ तुलसी देवल देवकी, लागे लाख करोरि ॥ काक अभागे हगि भरचो, महिमा भई कि थोरि ॥ ३८४ ॥ निजगुण घटत न नागनग, परखि परिहरत कोल ॥ तुलसी प्रभु भूषण किये, गुंजा बढ़ै न मोल ॥ ३८५ ॥ राकापति षोडश उवहिं, तारागण समुदाइ ॥ सकल गिरिन दव लाइये, बिनु रवि राति न जाइ ॥ ३८६ ॥ भलो कहै बिन जानेहिं, बिनु जाने अपवाद॥ ते नर गादुर जानि जिय, करिय न हर्ष विषाद ॥३८७॥परसुख संपति देखि सुख, जरहि जे जड़ बिनु आगि ॥ तुलसी तिनके भागते, चलै भलाई भागि ॥३८८॥तुलसी जे कीरति चहहिं,परकी कीरति खोइ॥ तिनके मुँह मसि लागिहै,मिटिहि न मरिहैं धोय॥३८९॥ तनु गुण धन महिमा धरम,जेहि बिनु जो अभिमान॥ तुलसी जियत विडंबना, परिणामहि गत जान ॥ ३९० ॥ सासु श्वशुर गुरु मातु पितु,प्रभु भयो चहै सबकोइ ॥ होनो दूजी ओरको, सुजन सराहिय सोइ ॥ ३९१ ॥ शठ सहि सांसति पति लहत,सुजन कलेश

न काय ॥ गढ़ि गुढ़ि पाहन पूजिये, गंडकि शिला सुभाय ॥२९२॥ बड़े विबुध दरबारते, भूमि भूप दरबार॥ जापक पूजक पेखियत, सहत निरादर भार ॥ २९३ ॥ बिनु प्रपंच छल भीख भलि, लहिय न किये कलेश॥ बावन बलिसों छल किये, दियो उचित उपदेश॥२९४॥ भलो भलेसों छल कियो, जन्म कनोडो होइ ॥ श्रीपति शिर तुलसो लसति, बलि बावनगति सोइ ॥ २९५ ॥ विबुध काज बावन बलिहि, छलो भलो जिय जानि ॥ प्रभुता तजि वश भे तदपि, मनकी गई न ग्लानि ॥ २९६ ॥ सरल वक्रगति पंचग्रह, चपरि न चितवत काहु ॥ तुलसी सूधे शूर शशि, समय विडंबित राहु ॥ २९७ ॥ खल उपकार विकार फल, तुलसी जान जहान ॥ मेंढुक मर्कट बनिक बक, कथा सत्य उपखान ॥ २९८ ॥ तुलसी खल वाणी मधुर, सुनि समुझिय हिय होरि ॥ रामराज बाधक भई, मूढ मंथरा चेरि ॥ २९९ ॥ जोंक सूधि मन कुटिलगति, खल विपरीति विचारि ॥ अनहित सो नित सोषसो, सोहित शोषनहारु ॥ ४०० ॥ नींच गुणो ज्यों जानिबो, सुनि लखि तुलसीदास ॥ ढीलि दिये गिरिपरत महि, खैंचत चढ़त अकाश ॥ ४०१॥ भरदर वर्षत कोशशत, बचै जे बूंद बराइ ॥ तुलसी त्यों खल वचन शर, हिये गये न पराइ ॥ ४०२ ॥

पेरत कोल्हू मेलि तिल, तिली सनेही जानि ॥ देखि प्रीतिकी रीति यह, अब देखिवी रिसानि ॥ ४०३ ॥ सहबासी काचो गिलहि,पुरजन पाक प्रवीन ॥ काल-क्षेप केहि मिल करहिं, तुलसी खग मृग मीन॥४०४॥ जासु भरोसे सोइये, राखि गोदपर शीश ॥ तुलसी तासु कुचालते, रखवारो जगदीश ॥ ४०५ ॥ मारि खोजलहि सोहकरि, करिमत लाज न त्रास ॥ मुये नीचते मीच बिनु, जे इनके विश्वास ॥ ४०६ ॥ पर-द्रोही परदार रत, परधन पर अपवाद ॥ ते नर पांवर पापमय, देह धरे मनुजाद ॥ ४०७ ॥ वचन वेष क्यों जानिये, मन मलीन नर नारि ॥ शूर्पणखा मृग पूतना, दशमुख प्रमुख विचारि ॥ ४०८ ॥ हँसनि मिलनि बोलनि मधुर, कटु करतब मनमाँह ॥ छुवत जो सकुचै सुमति सो, तुलसी तिन्हकी छाँह ॥ ॥४०९॥ कपटसार सूची सहस,बाधि वचन परवास ॥ कियो दुराउ चहैं चातुरी, सो शठ तुलसीदास ॥४१०॥ वचन विचार अचार तन, मन करतब छल छूति ॥ तुलसी क्यों सुख पाइये, अंतर्य्यामिहि धूति ॥४११॥ शारदूलको स्वांगकर, कूकरकी करतूति ॥ तुलसी तापर चाहिये, कीरति विजय विभूति ॥ ४१२ ॥ बड़े पाप बाढ़े किये, छोटे किये लजात ॥ तुलसी तापर सुख चहत, विधिसों बहुत रिसात ॥ ४१३ ॥ देश काल

करता करम, वचन विचारि विहीन ॥ ते सुरतरु तर दारिदी, सुरसरि तीर मलीन ॥ ४१४ ॥ साहसहीके कोपवश, किये कठिन परिपाक ॥ शठ संकट भाजन भये, हठि कुजाति कपि काक ॥ ४१५ ॥ राज करत बिनु काज ही, करे कुचालि कुसाज॥ तुलसी ते दश-कंध ज्यों, जैहैं सहित समाज ॥ ४१६ ॥ राज करत बिनु काजही, ठटहिं जे कूर कुठाट ॥ तुलसी ते कुरु-राज ज्यों, जैहैं बारहबाट ॥ ४१७ ॥ सभा सुयोधन-की शकुनि, सुमति सराहन योग ॥ द्रोण विदुरभीषम हरिहि, कहै प्रपंची लोग ॥ ४१८ ॥ पांडुसुवनकी सदसित, नीको पुर हित जानि ॥ हरि हर सम सब मानियत, मोह ज्ञानिकी बानि ॥ ४१९ ॥ हितपर बढ़ै विरोध जब, अनहित पर अनुराग ॥ राम विमुख विधि वामगति, सगुण अघाय अभाग॥ ४२० ॥ सहज सुहृद गुरु स्वामि शिख, जो न करै शिरमानि॥ सो पछताय अघाय उर, अवशि होइ हित हानि ॥ ॥ ४२१ ॥ भरुहाये नट भाटके, चपरि चढ़े संग्राम॥ कै वै भाजे आय हैं, कै बांधे परिणाम ॥४२२॥ लोक रीति फूटी सहे, आंजी सहै न कोइ॥ तुलसी जो आंजी सहै, सो आंधरो न होइ ॥ ४२३ ॥ भागे भल आड़हु भलो, भलो न घाले घाउ ॥ तुलसी सबके शीशपर, रखवारो रघुराउ॥४२४॥ सुमति विचारहिं परिहरहिं, दल

सुमनहुँ संग्राम ॥ सकुल गये तनु बिनु भये, साखी यादौ काम ॥ ४२५ ॥ कलह न जानब छोट करि, कलह कठिन परिणाम ॥ लगति अगिन लघु नीच गृह, जरत धनिक धन धाम ॥ ४२६ ॥ रोप क्षमाके दोप गुण, सुनि मनु मानहिं शीख ॥ अविचल श्रीपति हरि भये, भूसुर लहे न भीख ॥ ४२७ ॥ कौरव पांडव जानिये, क्रोध क्षमाके सीम ॥ पांचहि मारि न सौ सके, सबो सँहारे भीम ॥ ४२८ ॥ बोल न मोटे मारिये, मोटी रोटी मारु ॥ जीति सहस समहारिबो, जीते हारि निहारु ॥ ४२९ ॥ जो परिपायँ मनाइये, तासों रूठि विचारि ॥ तुलसी तहाँ न जीतिये, जहँ जीतेहू हारि ॥ ॥ ४३० ॥ जूझेते भल बूझिबो, भली जीतिते हारि॥ डहकेते डहकाइबो, भलो जो करिय विचारि ॥४३१॥ जा रिपुसों हारेहु हँसी, जिते पाय परितापु ॥ तासों रारि विचारिये, समय सम्हारै आपु ॥४३२॥ जो मधु मारे मारिये, माहुर देइ जु काउ॥ जगजित हारे परशु-धर, हारि जिते रघुराउ॥४३३॥बैर मूल हरहित वचन, प्रेममूल उपकार ॥ दोहा शुभ संदोहमो, तुलसी किये विचार ॥४३४॥ रोप न रसना खोलिये, बरु खोलिय तरवारि ॥ सुनत मधुर परिणाम हित, बोलिय वचन विचारि ॥४३५॥ मधुर वचन कटु बोलिबो, बिनु श्रम भाग अभाग ॥ कुहू कुहू कलकंठ रव, काका कररत

राग ॥४३६॥ पेट न फूलत बिनु कहे, कहत न लागै ढेरु॥सुमति विचारे बोलिये,समुझि कुफेर सुफेरु॥४३७॥
छिद्यो न तरुणि कटाक्ष शर, करेउ न कठिन सनेहु ॥ तुलसी तिनकी देहकी, जगत कवच करि लेहु ॥४३८॥
शूर समर करणी करहिं, कहि न जनावहिं आपु ॥ विद्यमान रण पाय रिपु, कायर करहिं प्रलापु॥४३९॥
वचन कहे अभिमानके, पारथ पेषत सेतु ॥ प्रभु तिय लूटत नीच नर, जय न मीचु तेहि हेतु ॥ ४४० ॥
राम लषण विजयी भये, वनहु गरीब निवाज ॥ मुखर वालि रावण गये, घरही सहित समाज ॥ ४४१ ॥ खग मृग मीन पुनीत किय, वनहु राम नयपाल ॥ कुमति वालि दशकंठ घर, सुहृद बंधु किये काल ॥ ४४२ ॥
लखय अघाने भूँख ज्यों, लखै जीतिमें हारि ॥ तुलसी सुमति सराहिये, मग पग धरै विचारि ॥ ४४३ ॥ लाभ समयको पालिबो,हानि समयकी चूक। सदा विचारहिं चारुमति, सुदिन कुदिन दिनढूक ॥ ४४४ ॥ सिंधुतरण कपि गिरिहरण, काज साइँ हित दोउ ॥ तुलसी समय यहि सब बड़ो, बूझत कहुँ कोउ कोउ ॥ ४४५ ॥
तुलसी मीठो अमीते, मांगो मिलै जो मीच ॥ सुधा सुधाकर समय बिनु, कालकूटते नीच ॥ ४४६ ॥
तुलसी असमयके सखा, धीरज धर्म विवेक ॥ साहित साहस सत्यव्रत, राम भरोसो एक ॥ ४४७ ॥ समरथ

कोउ न रामसों, सीय हरण अपराधु ॥ समयहि साधे काज सब, समय सराहहिं साधु ॥ ४४८ ॥ तुलसी तीरहुके चले, समय पाइवी थाह ॥ धाइ न जाइ थहाइबी, सर सरिता अवगाह ॥ ४४९ ॥ तुलसी जसि भवितव्यता, तैसी मिलै सहाय ॥ आपु न आवै ताहिपै, ताहि तहाँ लै जाय ॥ ४५० ॥ कै जूझिबो कै बूझिबो, दान कि काय कलेश ॥ चारि चारु परलोक पथ, यथायोग उपदेश ॥ ४५१ ॥ पाल पातको सींजिबो, नकरु सरग तरु हेत ॥ कुटिल कटुक फर फरैगो, तुलसी करत अचेत ॥ ४५२ ॥ गठिबँधते परतीति बड़ि, जेहि सबको सबकाज ॥ कहब थोर समुझब बहुत, गाड़े बढ़त अनाज ॥ ४५३ ॥ अपनो ऐपन निजहथा, तिय पूजहिं लिखिभीत॥ फलै सकल मनकामना, तुलसी प्रीति प्रतीत ॥ ४५४ ॥ वर्षत कर्षत आपुजल, हर्षत अर्घनि भानु ॥ तुलसी चाहत साधु सुर, तब सनेह सनमानु ॥ ४५५ ॥ श्रुति गुण-कर गुण पुजुगमृग, है रेवती सखाउ ॥ देहि लेहि धन धरणि धरु, गयेहु न जाइहि काउ ॥ ४५६ ॥ ऊगुन पूगुन विरज क्रम, आभ अमूगुण साथ ॥ हरो धरो गाड़ो दियो, धन फिर चढ़ै न हाथ ॥ ॥ ४५७ ॥ रवि हर दिशि गुणरस नयन, मुनि प्रथमादिक बार ॥तिथि सब काज नशावनी, होइ कुयोग विचार ॥ ४५८ ॥

शशि सर नव दुइ छद शकुन,मुनिफल बसु हर भानु॥ मेषादिक क्रमते गनहि,घात चंद्र जिय जानु ॥४५९॥ नकुल सुदरशन दरशनी, क्षेमकरी चखचाख ॥ दश दिशि देख न शकुन शुभ, पूजहि मन अभिलाष ॥ ४६० ॥ सुधा साधु सुरतरु सुमन, सफल सुहावनि बात ॥ तुलसी सीतापतिभगति, शकुन सुमंगल सात ॥ ४६१ ॥ भरत शत्रुसूदन लषण, सहित सुमिरि रघु-नाथ ॥ करहु काज शुभ साज सब, मिलहि सुमंगल साथ ॥४६२॥ राम लषण कौशिक सहित, सुमिरहु करहु पयान ॥ लक्षलाभ लै जगत यश, मंगल शकुन प्रमान ॥ ४६३॥ अतुलित महिमा वेदकी, तुलसी किये विचार ॥ जो निन्दित निन्दित भयो,विदित बुद्ध अवतार ॥ ४६४ ॥ बुध किसान सरवेद निज, मते खेत सब सींच ॥ तुलसी कृषि लखि जानिबो, उत्तम मध्यम नीच ॥ ४६५ ॥ सहि कुबोल, सांसति सकल, अँगइ अनट अपमान॥तुलसी धर्म न परिहरिय, कहि करि गये सुजान ॥४६६॥ अनहित भय परहित किये, पर अनहित हितहानि॥तुलसी चारु विचार भल,करिय काज सुनि जानि ॥ ४६७ ॥ पुरुषारथ पूरब करम, परमेश्वर परधाम ॥ तुलसी पैरत सरित ज्यों, सबहि काज अनुमान ॥ ४६८ ॥ चलब नीति मग राम पग, नेह निबाहब नीक ॥ तुलसी पहिरिय सो बसन, जो न

परखारे फीक ॥ ४६९ ॥ दोहा चारु विचारु चलु, परिहरि वाद विवाद ॥ सुकृतसींव स्वारथ अवधि, परमारथ मर्य्याद ॥४७०॥ तुलसीसो समरथ सुमति, सुकृति साधु सयान ॥ जो विचारि व्यवहरइ जग, खरच लाभ अनुमान॥४७१॥जाइ योग जग क्षेमविनु,तुलसीके हित राखि॥विनुऽपराध भृगुपति नहुप, वेनु बकासुर साखि॥ ॥ ४७२ ॥ बढ़ि प्रतीत गठिबंधते, बड़ो योग ते क्षेम ॥ बड़ो सुसेवक सांइते, बड़ो नेमते प्रेम ॥४७३॥ शिष्य सखा सेवक सचिव, सुतिय सिखावन साँच ॥ सुनि समझहु पुनि परिहरिय, परम निरंजन पाँच ॥ ४७४ ॥ नारि नगर भोजन सचिव, सेवक सखा अगार॥ सरस परिहरे रंगरस, निरस विषाद विकार ॥ ॥ ४७५ ॥ टूटहिं निजरुचि काजकरि, रूठहिं काज बिगारि ॥ तीय तनय सेवक सखा, मनके कंटक चारि ॥४७६॥ दीरघ रोगी दारिदी, कटुवच लोलुप लोग॥ तुलसी प्राण समानते, होइँ निरादर योग ॥ ४७७ ॥ पाही खती लगन बढ़, ऋण कुब्याज मग खेत ॥ वैर बढ़ै सो आपने, किये पाँच दुख हेत ॥ ४७८ ॥ धाय लगै लोहा ललकि, खींचि लेइ नइ नीचु ॥ समरथ पापीसों बयर, जानि बिसाही मीचु ॥ ४७९ ॥ शोचिय गृही जो मोह वश, करे कर्मपद त्याग ॥ सोचिय यती प्रपंच रत, विगत विवेक विराग ॥ ४८०॥तुलसी

स्वारथ सामुहो, परमारथ तनु पीठि ॥ अंध कहें दुख पाइहै, डिठियारो केहि डीठि ॥४८१ ॥ बिनु आखिनकी पानही, पहिचानत लखि पाइ ॥ चारि नयनके नारि नर, सूझत मीच न माइ ॥ ४८२ ॥ जोपै मूढ उपदेशको, होतो योग जहान ॥ क्यों न सुयोधन बोधकै, आये श्यामसुजान ॥ ४८३ ॥ (सोरठा) फूलै फरै न वेत, यदपि सुधा वर्षहिं जलद ॥ मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलैं विरंचि शिव ॥ ४८४ ॥ (दोहा) रीझि आपनी बूझपर,खीझ विचार विहीन॥ ते उपदेश न मानहीं, मोह महोदधि मीन ॥ ४८५ ॥ अनसमझे अनशोचनो, अवशि समुझि अहि आपु ॥ तुलसी आपु न समुझिये, पलपलपर परितापु ॥ ॥४८६॥ कूप खनत मंदिर जरत, आये धारि बबूर ॥ ववहिं नवहिं निज काज शिर,कुमति शिरोमणि कूर॥ ॥ ४८७ ॥ निडर ईशते बीसकै, बीस बाहुसो होइ ॥ गयो गयो कहै सुमति सब, भयो कुमति कह कोइ ॥ ॥ ४८८ ॥ जो सुनि समुझि अनीतिरत, जागत रहै जु सोइ॥ उपदेशिबो जगाइबो, तुलसी उचित न होइ ॥ ४८९ ॥ बहुमुख बहुरुचि बहुवचन, बहु अचार व्यवहार ॥ इनको भलो मनाइबो, यह अज्ञान अपार॥ ॥४९०॥ लोगनि लोभ मनाइबो, भलो होनकीआस ॥ करत गगनको गेडुआ, सो शठ तुलसीदास ॥ ४९१॥

अपयशयोग कि जानकी, मणिचोरी कब कान्ह ॥
तुलसी लोग रिझाइबो, कापँ कातिबो नान्ह ॥४९२॥
तुलसी जुपै गुमानको, होतो कछू उपाउ॥तौ कि जानि-
किहि जानि जिय, परिहरते रघुराउ ॥ ४९३ ॥ माँगि
मधुकरी खात ते, सोवत गोड पसारि ॥ पाय प्रतिष्ठा
बढ़ि परी,ताते बाढ़ी रारि ॥ ४९४ ॥ तुलसी भेड़ीकी
धसनि, जड़ जनता सनमान॥उपजत ही अभिमान भा,
खोवत मूढ अयान ॥४९५॥ लही आँखि कब आँधरे,
बाँझ पूत कब ल्याय ॥ कब कोढ़ी काया लही, जग
बहराइच जाइ ॥ ४९६ ॥ तुलसी निर्भय होत नर,
सुनियत सुरपुर जाइ ॥ सो गति देखियत अछत तनु,
सुख संपति गति पाइ ॥ ४९७ ॥ तुलसी तोरत तीर
तरु, बकहित हंस बिडारि ॥ विगत नलिन अलि
मलिन जल, सुरसरिहूं बढ़ियारि ॥ ४९८ ॥ अधिकारी
सब औसरा, लेउ जानिबे मंद॥सुधासदन बसु बारहो,
चउथिव चउथो चंद ॥ ४९९ ॥ त्रिविधि एक विधि
प्रभु अनुग, अवसर करहिं कुठाट ॥ सूधे टेढ़े सम
विषम, सबमहँ बारह बाट ॥ ५०० ॥ प्रभुते प्रभु-
गुण दुखद लखि, प्रजहिं सँभारे राउ ॥ करते होत
कृपाणकी, कठिन घोर घन घाउ ॥ ५०१ ॥ व्याल-
हुते बिकराल बड़, व्यालफेन जिय जानु ॥ ओहके
खाये मरत है, उह खाये बिनु प्रानु ॥ ५०२ ॥ कार-

पासे कारज कठिन, होइ दोष नहिं मोर॥ कुलिश अस्थिते उपलते, लोह कराल कठोर॥ ५०३॥ काल विलोकत ईश रुख, भानुकाल अनुहारि॥ रविहिं राउ राजहि प्रजा, बुध व्यवहरहिं विचारि॥ ५०४॥ यथा कमल पावन पवन,पाइ कुसंग सुसंग॥ कहिय कुवास सुवास तिमि, काल महीश प्रसंग॥ ५०५॥ भलेहु चलत पथपोचभय, नृपति योग नय नेम॥ सुतिय सुभूपति भापियत, लोह पवारित हेम॥ ५०६॥ माली भानु किसानसम,नीति निपुण नरपाल॥प्रजा भागवश होहिंगे, कबहुँ कबहुँ कलिकाल॥ ५०७॥ वर्षत हर्षत लोग सब,कर्षत लखै न कोइ॥ तुलसी प्रजा सुभागते, भूप भानु सो होइ॥५०८॥ सुधा सुनाज कुनाज फल, आम अशन सम जानि॥ सुप्रभु प्रजाहित लेहिकर, सामादिक अनुमानि॥ ५०९॥ पाके पकये विटपदल, उत्तम मध्यम नीच॥ फल नर लहैं नरेश त्यों, करि विचार मन बीच॥५१०॥ रीजि खीजि गुरु देत शिख, सखा सुसाहब साध॥ तोरि खाय फलहोइ भल, तरु काटे अपराध॥ ५११॥ धरणि धेनु चारित चरित, प्रजासु बच्छ पन्हाइ॥ हाथ कछू नहिं लागि है, किये गोड़की गाइ॥५१२॥ चढ़े बघूरे चंग ज्यों, ज्ञान ज्यों शोक समाज॥ कर्म धर्म सुख संपदा, त्यों जानिबे कुराज॥५१३॥ कंटक करि करि परत गिरि, शाखा

सहस खजूरि ॥ मरहिं कुनृप करि करि कुनप, सो कुचाल भव भूरि ॥ ५१४ ॥ काल तोपची तुपक महि, दारू अनय कराल ॥ पाप पलीता कठिन गुरु, गोला पुहुमीपाल ॥५१५॥ भूमि रुचिर रावण सभा, अंगद पद महिपाल ॥ धर्म रावणहि सीयबल, अचल होत शुभकाल ॥ ५१६ ॥ प्रीति रामपद नीतिरत, धर्म प्रतीति सुभाइ ॥ प्रभुहि न प्रभुता परिहरे, कबहुँ वचन मन काइ ॥ ५१७ ॥ करके कर मनुके मनहिं, वचन वचन गुण जानि ॥ भूपहि भूलि न परिहरे, विजय विभूति सयानि ॥ ५१८ ॥ गोली वाण सुमंत्र शर, समुझि उलटि मन देखु ॥ उत्तम मध्यम नीच प्रभु, वचन विचारि विशेखु ॥ ५१९ ॥ शत्रु सयानो सलिल ज्यों, राखि शीश रिपुनाउ ॥ बूड़त लखि पग डगत लखि ,चपरि चहूँदिशि धाउ ॥ ५२० ॥ रैयत राज समाज घर, तन धन धर्म सुभाहु ॥ शांत सुसचिवन सौंपि सुख, बिलसहिं नित नर नाहु ॥ ५२१ ॥ मुखिया मुखसों चाहिये, खान पानको एक ॥ पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक ॥ ५२२ ॥ सेवक कर पद नयनसे, मुखसों साहब होइ ॥ तुलसी प्रीतिकि रिति सुनि, सुकवि सराहहिं सोइ ॥ ५२३ ॥ मंत्री गुरु अरु वैद्य जो, प्रिय बोलहिं भय आश ॥ राज धर्म तन तीनिकर, होइ वेग ही नाश ॥ ५२४ ॥

रसना मंत्री दशन जन, तोष पोष निज काज ॥ प्रभु करसेन पदादिका, बालक राज समाज ॥ ५२५ ॥ लकड़ी डौआ करछुली, सरस काज अनुहारि ॥ सुप्रभु संग्रहहि परिहरहि, सेवक सखा विचारि ॥ ॥ ५२६ ॥ प्रभु समीप छोटे बड़े, निबल होत बलवान ॥ तुलसी प्रकट विलोकिये, कर अँगुली अनुमान ॥ ५२७ ॥ साहेबते सेवक बड़ो, जो निज धर्म सुजान ॥ राम बाँधि उतरे उदधि, लाँघि गये हनुमान ॥ ५२८ ॥ तुलसी भल बरतरु बढत, निज मूलहि अनुकूल ॥ सबहिभाँति सबकहँ सुखद, दलनि फलनि बिनु फूल ॥५२९॥ सघन सगुण सधरम सगन,सबल समाइ महीप ॥ तुलसी जे अभिमान बिनु, ते त्रिभुवनके दीप ॥ ५३० ॥ तुलसी निजकरतूति बिनु, मुक्त जात जब कोइ॥ गयो अजामिल लोकहरि,नाम सक्यो नहिं धोइ ॥ ५३१ ॥ बड़ो गहेते होत बड़,ज्यों बावनकर दंड ॥ श्रीप्रभुके सँगसों बढ़ी; गयो अखिल ब्रह्मंड ॥ ५३२ ॥ तुलसी दान जो देत हैं, जलमें हाथ उठाय॥प्रतिग्रही जीवै नहीं, दाता नरकै जाय ॥५३३॥ आनन छोड़ो साथ सब, तादिन हितू न कोइ॥तुलसी अंबुज अंबु बिन, तरणि तासु रिपु होइ ॥५३४॥ उरबी परि कुलहीन ह्वै, ऊपर कला प्रधान ॥ तुलसी देखु कलापगति, साधन धर्म पहिंचान ॥ ५३५ ॥ तुलसी

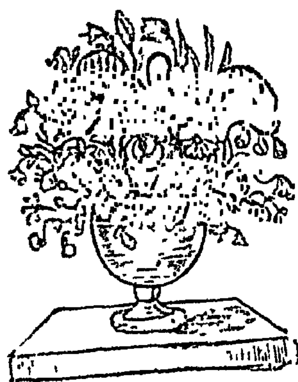
संगति पोचकी, सुजन होति भयदानि ॥ यों हरि रूप सुताहिते, कीनोगो हरि आनि ॥ ९३६ ॥ कलि कुचालि शुभगति हरणि, सरलै दंडै चक्र ॥ तुलसी यह निश्चय भई, बाढ़ीलेत न वक्र ॥ ९३७ ॥ गोखग खेखग वारि-खग, तीनों माह विशेक ॥ तुलसी पीवै फिरि चलै, रहै फिरै सँग एक ॥ ९३८ ॥ साधन समय सुसिद्धि लहि, उभै मूल अनुकूल ॥ तुलसी तीनिउ समयसम, ते महिमंगल मूल ॥ ९३९ ॥ मातु पिता गुरु स्वामि शिख, शिरधारि करहिं सुभाय ॥ लहेउ लाभ तिन जन्म कर, न तरु जन्म जग जाय ॥९४०॥ अनुचित उचित बिचार तजि, जे पालहिं पितुबैन ॥ ते भाजन सुख सुयशके, बसहिं अमरपति ऐन । ९४१ ॥ (सोरठा) सहज अपावनि नारि, पति सेवत शुभगति लहै ॥ यश गावत श्रुति चारि, अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥ ९४२ ॥ (दोहा) शरणागतकहँ जे तजहिं, निज अनहित अनुमानि॥ ते नर पाँवर पापमय, तिन्हैं विलो-कत हानि ॥९४३॥ तुलसी तृण जल कूलको, निर्बल निपट निकाज ॥ कै राखै कै सँग चलै, बाँह गहेकी लाज ॥ ९४४ ॥ रामायण अनुहरत शिख, जग भयो भारत रीति ॥ तुलसी शठकी को सुनै, कलिकुचालि परप्रीति ॥ ९४५ ॥ पातपातके सींचबे, बरी बरीके लोन ॥ तुलसी खोटे चतुरपन, कलिडहके कहु कौन ॥ ९४६ ॥ प्रीति सगाई सकल गुण, वणिज उपाय

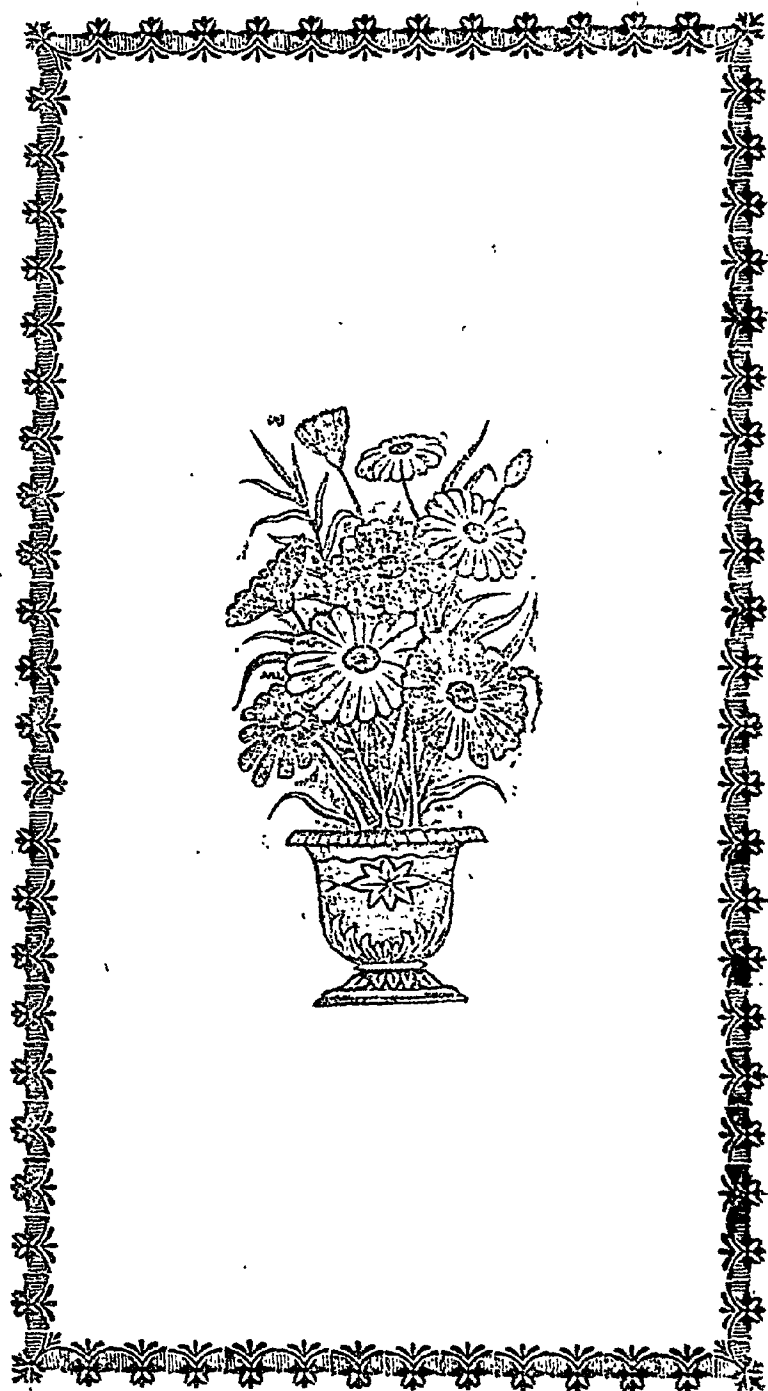
अनेक ॥ कलबल छल कलिमल मलिन,डहकत एकहि एक ॥ ५४७ ॥ दंभ सहित कलिधर्म सब, छल समेत व्यवहार ॥ स्वारथ सहित सनेह सब, रुचि अनुहरत अचार ॥ ५४८ ॥ चोर चतुर बटपार नट, प्रभु प्रिय भडुआ भंड ॥ सब भक्षक परमारथी, कलि सुपंथ पाषंड ॥ ५४९ ॥ अशुभवेष भूषण धरैं, भक्ष अभक्ष जे खाहिं ॥ ते योगी ते सिद्ध नर,पूजित कलियुगमाहिं ॥ ॥ ५५० ॥ (सोरठा)जे अपकारी चार,तिनकर गौरव मान्य तेइ ॥ मन वच कर्म लबार, ते वक्ता कलिकाल-महँ ॥ ५५१ ॥ (दोहा) ब्रह्म ज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात॥ कौड़ी लागि ते मोहवश,करहिं विप्र गुरु घात ॥ ५५२ ॥ बादहिं शूद्र द्विजनसन, हम तुमसे कछु घाटि ? ॥ जानहि ब्रह्म सो विप्रवर, आँखि दिखावहिं डाटि ॥५५३॥ साखी शबदी दोहरा, कहि केहनि उपखान ॥ भगति निरूपहिं भगत कलि, निंदहिं वेद पुरान ॥ ५५४ ॥ श्रुति संमत हरि भक्ति पथ, संयुत विरति विवेक ॥ तेहि परिहरहिं विमोहवश, कल्पहिं पंथ अनेक ॥ ५५५ ॥ सकल धर्म विपरीत कलि, कल्पित कोटि कुपंथ ॥ पुण्य पराय पहार वन, दुरे पुराण शुभग्रंथ ॥ ५५६ ॥ धातुवाद निरुपाधि सब, सदगुरु लाभ सुमीत ॥ [देव] दरश कलिकालमें, पोथिन दुरे सभीत ॥५५७॥ सुरसदननि तीरथपुरनि,

निपटि कुचालि कुसाज ॥ मनहुँ मवासे मारि कलि, राजत सहित समाज ॥ ५५८ ॥ गौंड गँवार नृपाल महि, यमन महा महिपाल ॥ साम न दान न भेद कलि, केवल दंड कराल ॥ ५५९ ॥ फोरहिं शिर लोढ़ा सदन, लागे अढुक पहार ॥ कायर कूर कुपूत कलि, घर घर सहस डहार ॥ ५६० ॥ प्रगट चारि पद धर्म-के, कलिमहँ एक प्रधान ॥ येन केन विधि दीन्हहूं, दान करै कल्यान ॥ ५६१ ॥ कलियुग सम युग आन नहिं, जो नर कर विश्वास ॥ गाइ रामगुण-गण विमल, भव तर बिनहिं प्रयास ॥ ५६२ ॥ श्रवण घटहु पुनि दृग घटहु, घटो सकल बल देह ॥ इते घटे घटिहै कहा, जो न घटे हरिनेह ॥५६३॥ तुलसी पावसके समय, धरी कोकिलन मौन॥ अब तौ दादुर बोलि हैं, हमैं पूछि है कौन ॥ ५६४ ॥ कुपथ कुतर्क कुचालि कलि, कपट दंभ पापंड ॥ दहन रामगुणग्राम जिमि, ईंधन अनल प्रचंड ॥ ५६५ ॥ (सोरठा) कलि पापंड प्रचार, प्रबल पाप पाँवर पतित ॥ तुलसी उभै अधार, रामनाम सुरसरि सलिल ॥ ५६६ ॥ (दोहा) रामचंद्र मुख चंद्रमा, चित चकोर जब होइ॥ राम राज सब काजशुभ, समै सुहावन सोइ ॥ ५६७॥ बीज रामगुण-गण नयन, जल अंकुर पुलकालि ॥ सुकृती सुतन सुखेत वर, बिलसत तुलसी शालि ॥ ॥५६८॥ तुलसी सहित सनेहु नित, सुमिरहु सीताराम॥

शकुन सुमङ्गल शुभ सदा, आदि मध्य परिनाम॥५६९॥
पुरुषारथ स्वारथ सकल, परमारथ परिनाम ॥ सुलभ
सिद्धि सब साहिबी, सुमिरत सीताराम ॥ ५७० ॥
मणिमय दोहा दीप जहँ, उरघर प्रगट प्रकाश ॥ तहँ
न मोह भय तम तमी, कलिकज्जली विलाश॥५७१॥
का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिये साँच ॥ काम जु
आवै कामरी, का लै करै कुमाच ॥ ५७२ ॥ मणि
माणिक महँगी कियो, सहतो तृण जल नाज ॥
तुलसी एही जानिये, राम गरीबनेवाज ॥ ५७३ ॥

इति श्रीगोसाईं तुलसीदासकृत दोहावली संपूर्ण ।





॥ श्रीः ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-

कवित्त-रामायण।

अर्थात्

परम मनोहर सुललित कवित्तोंमें रामायणके ज्ञान, भक्ति, करुणा, वीररसादिका वर्णन।



खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् १९८८, शकाब्दाः १८५३.

॥ श्रीरामपञ्चायतन ॥



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत

कवित्तरामायण ।

बालकाण्ड ।

अवधेशके द्वारे सकारे गई, सुत गोद कै भूपति लै निकसे ॥ अवलोकिहौं सोच विमोचनको, ठगिसी रहि जे न ठगे धिकसे॥तुलसी मनरंजन रंजित अंजन, नयन सुखंजन जात कसे ॥ सजनी शशिमें समशील उभै, नवनील सरोरुहसे विकसे ॥१॥ पग नूपुर औ पहुँची करकंजनि, मंजु बनी मणिमाल हिये ॥ नवनील कलेवर पीत झँगा, झलकैं पुलकैं नृप गोद लिये ॥ अरविंदसों आनन रूपमरंद, अनंदित लोचन भृंग पिये ॥ मनमें न बस्यौ अस बालक जो, तुलसी जगमें फल कौन जिये ॥ २ ॥ तनकी द्युति श्याम सरोरुह लोचन, कंजकि मंजुलताई हरैं ॥ अतिसुंदर सोहत धूरि भरे, छविभूरि अनंगकी दूरि धरैं ॥ दमकैं दँतियाँ द्युति दामिनि ज्यों, किलकैं कलबाल विनोद करैं ॥ अवधेशके बालक चारि सदा, तुलसीमनमंदिरमें विहरैं ॥ ॥ ३ ॥ कबहूं शशि माँगत आरि करैं, कबहूं प्रतिबिंब

निहारि डरैं ॥ कबहूं करताल बजाइके नाचत,मातु सबै मनमोद भरैं॥कबहूं रिसिआइ कहैं हठिकै,पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं ॥ अवधेशके बालक चारि सदा तुलसीमनमंदिरमें विहरैं ॥ ४ ॥ वरदंतकि पंगति कुंद-कली, अधराधर पल्लव खोलनकी ॥ चपला चमकैं घनबीच जगै, छबि मोतिन माल अमोलनकी ॥ घुँघुरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर, कुंडललोल कपोलनकी ॥ निवछावरि प्राण करै तुलसी,बलि जाउँ लला इन बोलनकी ॥ ५ ॥ पदकंजनि मंजु बनी पनहीं, धनुहीं शर पंकजपाणि लिये ॥ लरिका सँग खेलत डोलत हैं, सरयूतट चौहट हाट हिये ॥ तुलसी अस बालकसों नहिं नेह, कहा जप योग समाधि किये ॥ नर ते खर शूकर श्वानसमान, कहौ जगमें फल कौन जिये ॥ ६ ॥ सरयूवर तीरहि तीर फिरैं, रघुवीर सखा अरु वीर सबै॥ धनुहीं करतीर निषंग कसे, कटि पीत दुकूल नवीन फबै ॥ तुलसी त्यहि औसर लावणता, दशचारि तौ तीनि इकीस सबै ॥ मति भारति पंगु भई जो निहारि, विचारि फिरी उपमा न फबै ॥ ७ ॥ (कवित्त) छोनीमेंके छोनीपति छाजै तिन्हें छत्रछाया, छोनीछोनी छाए छिति आये निमिराजके ॥ प्रबलप्रचंड बरबंड बरवेष बपु, बरबेको बोले बयदेही बरकाजके ॥ बोले बंदी विरद बजाइ वर बाजनेऊ, बाजे बाजे बीर बाहु धुनत

समाजके ॥ तुलसी मुदित मन पुर नर नारि जेते, बार बार हेरैं मुख औधमृगराजके ॥ ८ ॥ सीयके स्वयंवर समाज जहाँ राजनके, राजनके राजा महाराजा जान नामको ॥ पवन पुरंदर कृशानु भानु धनदसे, गुणके निधान रूपधाम सोमकामको ॥ बाण बलवान यातुधानपति सारिखेसे, जिन्हके गुमान सदा सालिम-संग्रामको ॥ तहाँ दशरत्थके समर्थ नाथ तुलसीके, चपरि चढ़ायो चाप चंद्रमा ललामको ॥ ९ ॥ मयनहनन पुर-दहन गहन जानि, आनिकै सबैको सार धनुष चढ़ायो है ॥ जनकसदसि जेते भलेभले भूमिपाल, किये बल-हीन बल आपनो बढ़ायो है॥ कुलिश कठोर कूर्म पीठते कठिन अति, हठि न पिनाक काहू चपरि चढ़ायो है॥ तुलसी सो रामके सरोजपाणि परसेते, टूट्यो मानों बारेते पुरारिही पढ़ायो है ॥ १० ॥ (छप्पय) डिगति उर्वि अतिगुर्वि सर्व पर्वै समुद्र सर॥व्याल बधिर त्यहि काल विकल दिगपाल चराचर ॥ दिगगयंद लरखरत परत दशकंध मुक्खभर ॥ सुरविमान हिमवान भानु-संघटित परस्पर ॥ चौंके विरंचि शंकर सहित कोल कमठ अहि कलमल्यौ ॥ ब्रह्मांड खंड कियो चंडधुनि जबहिं राम शिवधनु दल्यौ ॥ ११ ॥ (घनाक्षरी) लोचनाभिराम घनश्याम रामरूप शिशु, सखी कहैं सखीसों तु प्रेमपय पालि री॥बालक नृपालजूके ख्याल

ही पिनाक तोऱ्यौ, मंडलीक मंडली प्रतापदाप दालि
री ॥ जनकको सियाको हमारो तेरो तुलसीको,सबको
भावतो ह्वैहै मैं जो कह्यो कालि री ॥ कौशिलाकी
कोखि परतोषि तन वारिये री, राय दशरत्थकी बलाय
लीजै आलि री ॥ १२ ॥ दूब दधि रोचना कनकथार
भरिभरि, आरती सँवारि वर नारि चलीं गावतीं ॥
लीन्हें जयमाल करकंज सोहै जानकीके,पहिरावो राघो-
जीको सखियां सिखावतीं ॥ तुलसी मुदितमन जनक
नगरजन, झांकती झरोखे लागीं सोभा रानी पावतीं ॥
मनहुँ चकोरी चारु बैठीं निजनिज नीड,चंदकी किरण
पीवें पलकैं न लावतीं ॥ १३ ॥ नगर निसान वर बाजैं
व्योम दुंदुभी,विमान चढ़ि गान कैकै सुरनारि नाचहीं॥
जयजय तिहूँ पुर जयमाल रामउर, बरषैं सुमन सुर
रूरे रूप राचहीं ॥ जनकको पण जयो सबको भावतो
भयो, तुलसी मुदित रोम रोम मोद माचहीं ॥ साँवरो
किशोर गोरी शोभापर तृण तोरि, जोरी जियो युग-
युग सखीजन यांचहीं ॥ १४ ॥भले भूप कहत भले
भदेस भूपनिसों, लोकलखि बोलिये पुनीत रीतिमा-
रषी ॥ जगदंबा जानकी जगतपितु रामचंद्र, जानि
जिय जोहो जो न लागे मुँह कारषी ॥ देखे हैं अनेक
व्याह सुने हैं पुराण वेद, बूझे हैं सुजान साधु नर नारि
पारषी ॥ ऐसे समसमधी समाज न विराजमान,रामसे

न वर दुलही न सीय सारपी ॥ १५ ॥ वाणी विधि गौरी हर शेषहू गणेश कही, सहीमरी लोमश भुशुंडि बहुवारिषो ॥ चारिदश भुवन निहारि नर नारि सब, नारदको परदा न नारदसो पारिषो ॥ तिन कही जगमें जगमगति जोरी एक, दूजीको कहैया औ सुनैया चष चारिपो ॥ राम रमारमण सुजान हनुमान कही, सीयसी न तीय न पुरुष रामसारिषो ॥ १६ ॥ (सवैया) दूलह श्रीरघुनाथ बने, दुलही सियसुंदर मंदिरमाहीं ॥ गावति गीत सबै मिलि सुंदरि, वेद युवायुव विप्र पढ़ाहीं ॥ रामको रूप निहारति जानकी, कंकणके नगकी परछाहीं ॥ याते सबै सुधि भूलि गई, कर टेकि रही पल टारति नाहीं ॥ १७ ॥ (कवित्त) भूपमंडलीप्रचंड चंडीशको दंडखंडचो, चंडबाहुदंड जाको ताहीसों कहतुहौं ॥ कठिन कुठार धार धरिबेकी धीरताहि, वीरता विदित ताकी देखिए चहतुहौं ॥ तुलसी समाज राज तजि सो विराजै आजु, गाज्यौ मृगराज गजराज ज्यों गहतुहौं ॥ छोनीमें न छांड्यौ छप्यौ छोनिपको छोना छोटो, छोनिप छपन बांको बीरुद बहतुहौं ॥ १८ ॥ निपट निदरि बोले वचन कुठारपानि, मानी त्रासऔनि पन मानौ मौनता गही ॥ रोषमाखे लषण अकनिअन खोहि वातैं, तुलसी विनीत वाणी विहँसि ऐसी कही ॥ सुयश तिहारे भरे भुवननि भृगु तिलक, प्रगट प्रताप

आपु कहो सो सबै सही ॥ टूट्यो सो न जुरैगो शरासन महेशजीको, रावरी पिनाकमें सरीकता कहां रही ॥ १९ ॥ (सवैया) गर्भके अर्भक काटनको, पटु धार कुठार कराल है जाको॥सोई हौं बूझत राजसभा, धनुके दलिहैं दलिहौं बल ताको॥लघु आनन उत्तर देत बड़ो, लरिहै मरिहै करिहै कछु साको ॥ गोरो गरूर गुमान भर्यो, कहौ कौशिक छोटोसो ढोटो है काको ॥२०॥ (घनाक्षरी) मख राखिबेके काज राजा मेरे संग दये, दले यातुधान जे जितैया विबुधेशके ॥ गौतमकी तीय तारी मेटे अघ भूरि भारी, लोचन अतिथि भए जनक जनेशके ॥ चंड बाहुदंड बल चंडीशको दंड खंड्यौ, ब्याही जानकी जीते नरेश देश देशके ॥ साँवरे गोरे शरीर धीर महावीर दोऊ, नाम राम लषण कुमार कोशलेशके ॥ २१ ॥ (सवैया) काल करोल नृपालनके धनु, भंग सुने फरसा लिये धाये ॥ लक्ष्मण राम विलोकि सप्रेम, महा रिसहा फिरि आँखि दिखाये ॥ धीरशिरोमणि वीर बड़े, विनयी विजयी रघुनाथ सुहाये॥ लायक हो भृगुनायक सो; धनुशायक सौंपि सुभाय सिधाये ॥ २२ ॥

इति श्रीकवित्त-रामायणे बालकाण्डः समाप्तः ॥ १ ॥

अथ अयोध्याकाण्ड।

सवैया—करिके कागर ज्यौं नृपचीर, विभूषण उप्पम अंगनिपाई ॥ औध तजी मग वासके रूख ज्यौं,पंथके साथ ज्यौं लोग लुगाई ॥ संग सुबंधु पुनीत प्रिया, मनों धर्मक्रिया धरि देह सोहाई ॥ राजिवलोचन राम चले तजि, बापको राज बटाऊकि नाई ॥ २३ ॥ कागर कीर ज्यौं भीषण चीर, शरीर लस्यो तजि नीर ज्यौं काई ॥ मातु पिता प्रिय लोग सबै, सनमानि सुभाई सनेह सगाई ॥ संग सुभामिनि भाई भलो, दिन द्वै जनु औधहूँते पहुनाई ॥ राजिवलोचन राम चले, तजि बापको राज बटाऊकि नाई ॥ २४ ॥ (घनाक्षरी) सिथिल सनेह कहै कौशिला सुमित्राजी-सों, मैं न लखी सौति सखी भगिनि ज्यों सेई है ॥ कहैं मोहिं मैया कहो मैं न मैया भरतकी, बलैया लेहौं मैया तरी मैया कैकयी है॥तुलसी सरल भाय रघुराय माय मानी, काय मन बानी हूं न जानिके मतेई है ॥ वाम विधि मेरो सुख सिरिससुमन सम, ताको छल छुरी कोह कुलिश ले टेई है ॥ २५ ॥ कीजे कहा जीजीजू सुमित्रा परि पाँय कहै, तुलसी सहावै विधि सोई सहियतु है॥रावरो सुभाव राम जन्मतेहि जानि-यत, भरतकी मातुको कीवो सो चहियतु है ॥ जाई राजघर ब्याहि आई राजघर महा, राज पूत पायेहू न

सुख लहियतु है ॥ देहसुधा गेह ताहि मृगने मलीन कियो, ताहुपर चाह बिनु राहु गहियतु है ॥ २६ ॥ (सवैया) नाम अजामिलसे खल कोटि, अपार नदी भव बूड़त काढ़े ॥ जो सुमिरे गिरि मेरु शिला कण, होत अजा खुर वारिधि बाढ़े ॥ तुलसी ज्यहिके पद-पंकजते, प्रकटी तटनी जो हरे अघ गाढ़े ॥ ते प्रभु या सरिता तरबेकहँ, माँगत नाव करारे ह्वै ठाढ़े ॥ २७ ॥ एहि घाटते थोरिक दूरि अहै, कटिलौं जल थाह देखाइहौं जू ॥ परसे पगधूरि तरै तरणी, घरणी घर क्यों समुझाइहौं जू ॥ तुलसी अवलंब न और कछू, लरिका क्यहि भाँति जिआइहौं जू ॥ बरु मारिए मोहिं बिना पग धोये हौं, नाथ न नाव चढ़ाइहौं जू ॥ २८ ॥ रावरे दोष न पायँनको, पगधूरिको भूरि प्रभाउ महा है ॥ पाहनते बरु बाहन काठको, कोमल है जलखाइ रहा है ॥ तुलसी सुनि केवटके बरबैन, हँसे प्रभु जानकी ओर हहा है ॥ पावन पायँ पखारिके नाव, चढ़ाइहौं आयसु होत कहा है ॥ २९ ॥ (घनाक्षरी) पातभरी सहरी सकल सुतवारे वारे, केवटकी जाति कछु वेद न पढ़ाइहौं ॥ सब परिवार मेरो याही लागि राजाजी हौं, दीन वित्तहीन कैसे दूसरी गढ़ाइहौं ॥ तुलसीके ईश राम रावरेसों साँची कहौं, बिना पग धोए नाथ नाव न चढ़ाइहौं ॥ गौतमकी घरणी ज्यौं तरणी तरैगी मेरी,

प्रभुसों निषाद ह्वैके बाद ना बढाइहौं ॥ २० ॥ जिनको पुनीतबारि शिर शिव है पुरारि, त्रिपथगामिनि अस वेद कह गाइ के ॥ जिनको योगींद्र मुनिवृन्द देव देहधारि, करत विविधयोग जप मन लाइके ॥ तुलसी जिनकी धूरि परसि अहल्या तरी, गौतम सिधारे गृह गौनोसो लिवाइकै ॥ तेई पायँ पाइकै चढाय नाव धोए बिनु, ख्वैहौं न पठावनी कहैहौं न हँसाइकै ॥ २१ ॥ प्रभुरुख पाइकै बोलाइ बाल घरनिहिं, बंदिकै चरण चहूंदिशि बैठे घेरि घेरि ॥ छोटोसो कठौता भरि आनि पानी गंगाजूको, धोइ पाँय पियत पुनीत वारि फेरि फेरि ॥ तुलसी सराहैं ताको भाग सानुराग सुर, बरषैं सुमन जय जय कहैं टेरि टेरि ॥ विविध सनेहसानी बानी अस यानि सुनि, हँसे राघो जानकी लषण तन हेरि हेरि ॥ २२ ॥ (सवैया) पुरते निकसी रघुवीर वधू, धरि धीर दये मगमें डग द्वै ॥ झलकी भरिभाल कनी जलकी, पट सूखिगए मधुराधर वै ॥ फिर बूझत हैं चलनोव कितो, पिय पर्णकुटी करि हैं कित है ॥ तियकी लखि आतुरता पियकी, अँखियां अतिचारु चलीं जल च्वै ॥२३॥ जलको गये लक्ष्मण हैं लरिका, परिखौं पिय छांह घरीक है ठाढे ॥ पोंछि पसेउ बयारि करौं अरु, पायँ पखारिहौं भूभुरि डाढे ॥ तुलसी रघु-वीर प्रिया श्रम जानिकै, बैठि बिलंबसों कंटक काढे॥

जानकी नाहको नेह लख्यौ, पुलकी तनु वारि विलो-
चन बाढ़े ॥ ३४ ॥ ठाढे हैं नवद्रुम डार गहे धनु, कांधे
धरे कर सायक लै ॥ विकटी भ्रुकुटी बडरी अँखियाँ,
अनमोल कपोलनकी छबि है ॥ तुलसी ऐसी मूरति
आनु हिये जड, डारु धौं प्राण निछावरि कै ॥ श्रम
सीकर साँवरि देह लसै मनो, रारि महातम तारकमै
॥ ३५ ॥ (घनाक्षरी) जलजनयन लजजानन जटा हैं
शिर,यौवन उमंग अंग उदित उदार हैं॥ साँवरे गोरेके बीच
भामिनी सुदामनिसी, मुनिपटधरे उर फूलनिके हार
हैं ॥ करनि शरासन सिलीमुख निषंग कटि, अतिही
अनूप काहू भूपके कुमार हैं ॥ तुलसी विलोकी कै
तिलोकके तिलक तीनि,रहे नर नारि ज्यों चितेरे चित्र-
सार हैं ॥ ३६ ॥ आगे सोहै साँवरा कुवँर गोरो पाछे
आछे, आछे मुनि वेष धरे लाजत अनंग हैं ॥ बाण
विशिखासन बसन वनहीके कटि, कसी है बनाइ नीके
राजत निषंग हैं ॥ साथ निशिनाथमुखी पाथ नाथ
नंदिनीसी, तुलसी विलोके चित लाइलेत संग हैं ॥
आनँद उमंग मन यौवन उमंग तन, रूपकी उमंग उम-
गत अंग अंग हैं ॥ ३७ ॥ (कवित्त)सुंदर बदन सर-
सीरुह सोहाए नैन,मंजुल प्रसून माथे मुकुट जटनिके॥
अंशनि शरासन लसत शुचि शरकर, तूणकटि मुनि-
पट लूट कपटिनके ॥ नारि सुकुमारि संग जाके अंग

छबटिकै, विधि विरचे बरूथ विद्युच्छटनिके ॥ गोरेको वरण देखे सोनो न सलोनो लागे,साँवरो विलोके घटत घटनिके ॥ ३८ ॥ वलकल वसन धनुबाण पाणि तूण-कटि, रूपके निधान घन दामिनी बरन हैं ॥ तुलसी सुतीय संग सहज सोहाए अंग,नवल कमलहूते कोमल चरन हैं । और सो बसंत औरे रति औरे रतिपति; मूरति विलोके तन मनके हरन हैं ॥ तापस वेषै बनाये पथिक पंथै सोहाये, चले लोक लोचननि सुफल करन हैं ॥ ३९ ॥ (सवैया) बनिता बनी श्यामल गोरेके बीच, विलोकहु री सखी मोहिसी ह्वै ॥ मग जोग न कोमल क्यों चलिहैं,सकुचात महि पदपंकज छ्वै॥तुलसी सुनि ग्रामवधू विथकीं, पुलकीं तन औ चले लोचन च्वै ॥ सबभाँति मनोहर मोहन रूप, अनूप हैं भूपके बालक द्वै ॥ ४० ॥ साँवरे गोरे सलोने सुभाय, मनोह-रता जित मैन लियो है ॥ बान कमान निषंग कसे शिर, सोहैं जटा मुनिवेष कियो है ॥ संग लिये विधुबैनी वधू, रतिको जेहि रंचक रूप दियो है ॥ पाँयनता पनहीं न पयादेहि, क्यों चलिहैं सकुचात हियो है ॥ ४१ ॥ रानी मैं जानी सयान महा पवि, पाहनहूं ते कठोर हियो है ॥ राजहु काज अकाज न जान्यो, कह्यो तियको ज्यहि कान कियो है ॥ ऐसी मनोहर मूरति ए, बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियो है ॥ आँखिनमें

सखि राखिबे योग, इन्हैं किमि कै वनवास दियो है ॥ ४२ ॥ शीश जटा उर बाहु विशाल, विलोचन लाल तिरौंछीसि भौंहैं॥तूण शरासन बाण धरे,तुलसी बन मारगमें सुठि सोहैं ॥ सादर बारहि बार सुभाय, चितै तुम त्यों हमरो मन मोहैं ॥ पूंछति ग्रामवधू सियसों कहो साँवरोसो सखि रावरो को हैं ॥ ४३ ॥ सुनि सुंदर बैन सुधारस साने,सयानी हैं जानकी जान भली ॥ तिरछे करि नैन दै सैन तिन्हैं, समुझाइ कछू मुसुकाइ चली ॥ तुलसी त्यहि औसर सोहैं सबै,अवलोकति लोचन लाहु अली ॥ अनुराग तडागमें भानु उदै, विकसी मनों मंजुल कंजकली ॥ ४४ ॥ धरि धीर कहैं चलु देखिय जाइ, जहाँ सजनी रजनी रहि हैं ॥ कहिहैं जग पोच न शोच कछू,फल लोचन आपन तौ लहि हैं ॥ सुख पाइहैं कान सुने बतियां, कल आपुसमें कछुपै कहिहैं॥ तुलसी अति प्रेम लगी पलकैं पुलकी लखि रामहिये महि हैं ॥ ४५ ॥ पद कोमल श्यामल गौर कलेवर, राजत कोटि मनोज लजाए ॥ कर बाण शरासन शीश जटा, सरसीरुह लोचन सो न सुहाए ॥ जिन देखे सखी सतभावहुते, तुलसी तिनसो मन फेरि न पाए॥यहि मारग आजु किशोर वधू,बिधुबैनी समेत सुभावसिधाए ॥ ४६ ॥ मुखपंकज कञ्ज विलोचन मंजु, मनोज शरासनसी बनी भौंहैं ॥ कमनीय

कलेवर कोमल श्यामल, गोर किशोर जटा शिर सोहैं॥ तुलसी कटि तून धरे धनु बाण, अचानक दृष्टि परी तिरछोहैं॥ केहि भाँति कहौं सजनी तोहिसों, मृदु मूरति द्वै निवसी मनमोहैं॥ ४७॥ प्रेमसों पीछे तिरीछे प्रियाहि, चितै चितु दै चले लै चितचोरे॥ श्याम शरीर पसेउ लसै, हुलसै तुलसी लखि सो मन मोरे॥ लोचन लोल चलैं भृकुटी कल, काम कमान-हुसो तृण तोरे॥ राजत राम कुरंगके संग, निषंगकसे धनुलों शर जोरे॥ ४८॥ शर चारिक चारु बनाइ कसे, कटि पाणि शरासन शायकलै॥ वन खेलत राम फिरैं मृगया, तुलसी छवि सो वरणै किमिकै॥ अव-लोकि अलौकिक रूप मृगी, मृग चौंकि चकै चितवै चितदै॥ न डगै न भगै जिय जानि शिलीमुख, पंच धरे रतिनायक है॥ ४९॥ विंध्यके बासी उदासी तपोव्रत, धारी महाबिननानि दुखारे॥ गौतमतीयतरी तुलसी, सो कथा सुनिभे मुनिवृन्द सुखारे॥ ह्वैहैं शिला सब चन्द्रमुखी, परशे पद मंजुल कंज तिहारे॥ कीन्ही भली रघुनायकजी, करुणाकरि काननको पगुधारे॥५०॥

इति श्रीकवित्तरामायणे अयोध्याकाण्डः समाप्तः २.

अथारण्यकाण्डः।

पंचवटी वर पर्णकुटी तर, बैठे हैं राम सुभायसुहाये॥ सोह प्रिया प्रियबंधु लसै, तुलसी सब अंग घने छबि

छाये ॥ देखि मृगा मृगनैनी कहैं, प्रियबैनते प्रीतमके मन भाये ॥ हेमकुरंगके संग शरासन, शायक लै रघुनायक धाये ॥ ५१ ॥

इति श्रीकवित्त रामायणे आरण्यकाण्डः समाप्तः ३.

अथ किष्किन्धाकाण्डः ।

जब अंगदादिनकी मनोगति मंदभई, पवनकेपूतको नकूदिबेको पलुगो ॥ साहसी ह्वै शैलपर सहस सेकेलि आइ, चितवत चहूँधा औरनको कलुगो ॥ तुलसी रसातलको निकसि सलिल आयो, कोल कलमल्यो अहि कमठको बलुगो ॥ चारिहू चरणके चपेट चापै चिपिटिगो,उचकि उचकि चारि अंगुल अचलुगा५२॥

इति श्रीकवित्त रामायणे किष्किन्धाकाण्डः समाप्तः ४.

अथ सुंदरकाण्डः ।

वासव वरुण विधि वनते:सोहावनो,दशाननको कानन वसंतको शृँगारसो ॥ समय पुराने पात मरत डरतवात, पालत ललात रति मारको विहारसो ॥ देखे वर वापिका तडाग बागको बनाव,रागवशभो विरागी पवनकुमारसो ॥ सीयकी दशा विलोकि विटप अशो तर, तुलसी विलोक्यो सो तिलोक शोक सारसो ॥ ५३ ॥ माली मेघ माल वनपाल विकराल भट, नीके सब काल सींचैं सुधासार नीरको ॥ मेघना-

दते दुलारो प्राणते पियारो बाग, अति अनुराग जिय यातुधान धीरको ॥ तुलसी सो जानि सुनि सीयको दरश पाइ, पैठो वाटिका बजाइ बल रघुवीरको ॥ विद्यमान देखत दशाननको कानन सो, तहस नहस कियो साहसी समीरको ॥ ५४ ॥ बसन बटोरि बोरिबोरि तेल तमीचर, खोरि खोरि धाइ आइ बाँधत लँगूर हैं ॥ तैसो कपि कौतुकी डरात ढीलो गात कैकै, लातके अघात सहै जीमें कहे कूर हैं॥बालकिलकारी कैकै तारी दै दै गारी देत, पाछे लागे बाजत निशान ढोल तूर हैं॥ बालधी बढनलागी ठौर ठौर दीन्ही आगि, विन्धकी दवारि कैधों कोटिशत सूर हैं ॥ ५५ ॥ लाइ लाइ आगि भागे बाल जात जहाँ तहाँ, लघु ह्वै निबुकि गिरिमेरुते विशालभो ॥ कौतुकी कपीश कूदि कनक-कँगूरा चढ्यो, रावण भवन चढ़ि ठाढो त्यहि कालभो॥ तुलसी विराज्यो व्योम बालधि पसारि भारि, देखे हहरात भट कालसों करालभो ॥ तेजको निधान मानो कोटिक कृशानुभानु, नख विकराल मुख तैसो रिसलालभो ॥ ५६ ॥ बालधी विशाल विकराल ज्वाल मानौं लंक, लीलिबेको काल रसना पसारी है॥ कैधों व्योमवीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु, वीररस वीर तरवारिसी उघारी है॥ तुलसी सुरेश चाप कैधौं दामिनी कलाप, कैधों चली मेरुते कृशानु सरि

भारी है ॥ देखैं यातुधान यातुधानी अकुलानी कहैं, कानन उजारेउ अब नगर प्रजारी है ॥ ५७ ॥ जहाँ तहाँ बुबुक बिलोकी बुबुकारी देत, जरत निकेत धावो धावो लागि आगि रे ॥ कहाँ तात मात भ्रात भगिनी कुमारी भामी, ढोटा छोटे छोहरा अभागे भोरे भागि रे॥ हाथी छोरो घोरा छोरो महिष वृषभ छोरो, छेरी छोरो सोवै सो जगावो जागि जागि रे ॥ तुलसी बिलोकि अकुलानी यातुधानी कहैं, बार बार कह्यो पिय कपिसों न लागि रे ॥ ५८ ॥ देखि ज्वालजाल हाहाकार दश कन्ध सुनि, कह्यो धरो धरो धाये वीर बलवान हैं ॥ लिये शूल शैल पाश परिघ प्रचंड दंड, भाजन सनीर धीर धरे धनुबाण हैं ॥ तुलसी समिध सौंज लंकयज्ञ कुण्ड लखि, यातुधान पुंगीफल यव तिल धान हैं ॥ श्रुवा सो लँगूल बलमूल प्रतिकूल हवि, स्वाहा महा हाँकि २ हुनै हनुमान हैं ॥ ५९ ॥ गाजो कपिराज ज्यों विराज्यो ज्वाला जालयुत, भाज्यो वीर धीर अकुलाइ उठ्यो रावनो ॥ धावो धावो धरो सुनि धाये यातुधानधारी, वारिधारा उलधैं जलद ज्यो नसावनो॥ लपट झपट झहराने हहराने वात, भहराने भट परेउ प्रबल परावनो ॥ ढकनि ढकेलि पेलि सचिव चलेलै ठेलि, नाथ न चलैगो बल अनल भयावनो ॥ ६० ॥ बडो विकराल देखि सुनि सिंहनाद उठ्यो, मेघनाद

सहित विषाद कहै रावनो ॥ वेग जीतो मारुत प्रताप मारतण्ड कोटि,कालऊ करालता बड़ाई जितो बावनो॥ तुलसी सयाने यातुधाने पछिताने कहैं,जाको ऐसो दूत सो तो भूप अबै आवनो॥काहेकी कुशल रोषे राम बाम देवहूँकी, विषम वलीसों वादि वैरको बढावनो॥ ६१ ॥ पानी पानी पानी सब रानी अकुलानी कहैं, जातिहैं परानी गति जानि गजचालिहै ॥ वसन बिसारैं मणि भूषण सँभारत न, आनन सुखाने कहैं क्योंहुं कोऊ पालिहै ॥ तुलसी मँदोवै मींजि हाथ धुनि मास कहै, काहू कान कियो मैं कह्यों केतौ कालिहै ॥ बापुरो विभीषण पुकारि बारबार कह्यो, वानर बड़ी बलाइ घने घर घालिहै ॥ ६२ ॥ कानन उजारेउ तौ उजारेउ न बिगारेउ कछु, वानर विचारो बांधि आन्यो हठि हारसों ॥ निपट निडर देखि काहू ना लख्यो विशेषि, दीन्हों ना छोड़ाइ कहि कुलके कुठारसों ॥ छोटे औ बडेरे मेरे पूतऊ अनेरे सब,साँपनिसों खेलैं मेलैं गरे छुराधारसों॥ तुलसी मँदोवै रोइ रोइकै बिगोवै आपु,बार बार कह्यों मैं पुकारि दाढीजारसों ॥ ६३ ॥ रानी अकुलानी सब डाढ़त परानी जाहिं, सकैं ना बिलोकि वेष केशरीकुमारको ॥ मींजि मींजि हाथ धुनि माथ दशमाथ तिय, तुलसी तिलो न भयो बाहिर अगारको ॥ सब असबाब डाढो मैं न काढ़ो तै न काढ़ो, जियकी परी

सँभारे सहन भँडारको ॥ खीझत मँदोवै सविषाद देखि मेघनाद, बयों लुनियत सब याही दाढ़ीजारको ॥ ६४ ॥ रावणकी रानी बिलखानी कहै यातुधानी, हाहा कोऊ कहै बीस बाहु दशमाथसों ॥ काहे मेघनाद काहे काहेरे महोदर तू, धीरज न देत लाइलेत क्यों न हाथलों ॥ काहे अतिकाय काहे काहेरे अकंपन, अभागे तिय त्यागे भोंडे भागेजात साथसों ॥ तुलसी बढाय बाद शालते बिशाल वहै, याही बल बालिसों विरोध रघुनाथसों ॥ ६५ ॥ हाट वाट कोट ओट अट्टनि अगार पौरि, खोरि खोरि दौरि दौरि दीन्ही अति आगि है ॥ आरत पुकारत सँभारउ न कोऊ काहू, व्याकुल जहाँ सो तहाँ लोग चले भागि है ॥ बालधी फिरावै बार बार झहरावै झरै, बुंदियासी लंक पघिलाइ पाग पागि है ॥ तुलसी विलोकि अकुलानी यातुधानी कहैं, चित्रहूके कपिसों निशाचरन न लागि है ॥ ६६ ॥ लागी लागि आगि भागि भागि चले जहाँ तहाँ, धीयकी न माय बाप पूत न सँभारही॥छूटै बार बसन उघारे धूम धुंद अंध, कहैं बारे बूढे बारि बारि बार बारहीं ॥ हय हिहिनात भागेजात घहरात गज, भारी भीर ठेलि पेलि रौंदि खौंदि डारही ॥ नाम लै चिलात बिललात अकुलात अति, तात तात तोसियत झौंसियत झारही ॥ ॥ ६७ ॥ लपट कराल ज्वालजालमाल दुहूँ दिशी, धूम

अकुलाने पहिंचानै कौन काहिरे ॥ पानीको ललात बिललात जरे गात जात, परे पाइ माल जात भ्रात तू निबाहि रे ॥ प्रिया तू पराहि नाथ नाथ तू पराहि बाप, बाप तू पराहि पूत पूत तू पराहि रे ॥ तुलसी बिलोकि लोक व्याकुल बिहाल कहैं, लेहि दश-शीश अब वीस चख चाहिरे ॥ ६८ ॥ बीथिका बजार प्रति अटनि अगार प्रति, पँवरि पगार प्रति, वानर बिलोकिये ॥ अर्द्ध उर्द्ध बानर विदिश दिशि वानर है, मानो रह्यो भरि भरि वानर तिलोकिये ॥ मूँदे आंखि हीयमें उघारे आंखि आगे ठाढ़ो, धाइ जाइ जहाँ तहाँ और कोऊ कोकिये ॥ लेहु अब लेहु तब कोऊ न सिखावो मानों, सोई सतराइ जाइ जाहि जाहि रोकिये ॥ ६९ ॥ एक करै धौज एक कहै काढ़ो सौज एक, औजि पानी पीकै कहै बनत न आवनो ॥ एक परे गाढ़े एक डाढ़तहीं काढ़े एक देखत हैं ठाढ़े कहैं पावक भयावनो ॥ तुलसी कहत एक नीके हाथ लाये कपि, अजहूं न छांडै बाल गालको बजावनो ॥ धावरे बुझावरे कि बावरे जिआवरेहो, औरै अगिलागी न बुझावै सिंधुसावनो ॥७०॥ कोपि दशकन्ध तब प्रलय पयोद बोले, रावण रजाइ धाइ आये यूथ जोरिकै ॥ कह्यो लंकपति लंक बरत बुतावो वेगि, वानर बहाइ मारो महा वारि बोरिकै ॥ भले

नाथ नाइ माथ चले पाथ प्रदनाथ, वरपैं मुशलधार वार वार परिकै ॥ जीवनते जागी आगी चपरि चौगुनी लागी, तुलसी भभरि मेघ भागे मुख मोरिकै ॥ ७१ ॥ इहाँ ज्वाल जरेजात उहाँ ग्लानि गरे गात, सूखे सकुचात सब कहत पुकार है ॥ युग पटभानु देखे प्रलय कृशानु देखे , शेष मुख अनल विलोके वार वार है ॥ तुलसी सुना न कान सलिल सर्पी समान, अतिअचरज किया केशरीकुमार है ॥ वारिद वचन सुनि धुनै शीश सचिवन्ह, कहै दशशीश ईश वामता विकार है ॥ ७२ ॥ पावक पवन पानी भानु हिम वाम यम, काल लोकपाल मेरे डर डांवाडोल है ॥ साहव महेश सदा शंकित रमेश मोहिं,महातप साहस विरंचि लीन्हें मोल है ॥ तुलसी त्रिलोक आजु दूजो न विराजै राजा, वाजे वाजे राजनिके वेटा वेटी वोल है ॥ कोहै ईशनामको जो वाम होत मोहूसे को, माल्यवान रावरेके वावरेके वोल है ॥ ७३ ॥ भूमि भूमिपाल व्यालपालक पताल नाक,-पाल लोकपाल जेते सुभट समाज हैं ॥ कहै मालवान यातुधानपति रावरेको, मनहुँ अकाज आने ऐसो कौन आज है ॥ रामकोह पावक समीर सीय श्वास कीश,ईश वामता विलोकि वानरको व्याज है ॥ जारत प्रचारि फेरि फेरि सो निशंक लंक, जहाँ वाँको वीर तासों शूर शिरताज है ॥ ७४ ॥ पान पकवान

विधि नानाके सँधानो सीधो,विविध विधान धान बरत बखारहीं ॥ कनक किरीट कोटि पलँग पेटारे पीठ, काढ़त कहार सब जरेभरे भारही ॥ प्रबल अनल बाढ़े जहाँ काढ़े तहाँ ठाढ़े, झपट लपट भरे भवन भँडारही ॥ तुलसी अगार न पगार न बजार बच्यो, हाथी हथि, सार जरे घोरे घोरसारही ॥ ७५ ॥ हाट बाट हाटक पिघिलि चलो घीसो घनो, कनक कराही लंक तल-फत जायसों ॥ नाना पकवान यातुधान बलवान सब, पागि पागि ढेरी कीन्ही भलीभाँति भायसों ॥ पाहुने कृशानु पवमानसो परोसो हनु,-मान सनमानिकै जेंवाये चितचायसों ॥ तुलसी निहारि अरिनारि दैदै गारि कहैं, बावरे सुरारि वैर कीन्हों रामरायसों ॥ ७६ ॥ रावणसों राज रोग बाढत विराट उर, दिनदिन विकल सकल सुख राँकसो ॥ नाना उपचार करि हारे सुर सिद्धि मुनि, होत न विशोक औ तपावै न मनाकसो॥ रामकी रजायते रसायनी समीरसूनु, उतरि पयोधिपार शोधि सरवांकसो ॥ यातुधान बुटपुट पाक लंकजात रूप, रतन यतन जारि कियो है मृगांकसो ॥ ७७ ॥ जारि वारिकै विधूम वारिधि बुताइ लूम, नाइ माथो पगनि भो ठाढो कर जोरिकै ॥ मातु कृपा कीजै सहिदान दीजै सुनि सीय, दीन्हीं है अशीष चारु चूडामणि छोरिकै ॥ कहा कहौं तात देखे जात जो

बिहान दिन, बडी अवलंबडी सो चले तुम तोरिकै ॥ तुलसी सनीर नैन नेहसों शिथिल वैन, बिलकि बिलोकि कपि कहत निहोरिकै ॥७८॥ दिवस छसात जानबे न मातु धरु, धीर अरि अंतकी अवधि रही थोरिकै ॥ वारिधि बँधाय सेतु ऐहैं भानुकुलकेतु, सानुज कुशल कपि कटक बटोरिकै ॥ वचन विनीत कहि सीताको प्रबोध करि, तुलसी त्रिकूट चढि कहत डरफोरिकै ॥ जैजै जानकीश दशशीश करि केशरी, कपीश कूद्यो बात घात उदधि हलोरिकै ॥ ७९ ॥ साहसी समीर सूनु नीरनिधि लंघि लखि, लंक सिद्धि पीठ निशि जागो है मशानसो ॥ तुलसी बिलोकि महा साहस प्रसन्न भई, देवी सियसारिषी दियो है वरदानसो ॥ वाटिका उजारि अच्छ धारि मारि जारि गढ, भानु-कूल भानुको प्रताप भानु भानुसो ॥ करत विशोक लोक कोकनद कोक कपि, कहै जामवंत आयो आयो हनुमानसो ॥ ८० ॥ गगन निहारि किलकारी भारी सुनि,हनुमान पहिचानि भये सानँद सचेत हैं ॥ बूडत जहाज बच्यो पथिक समाज मानो, आजु जाये जानि सबै अंकमाल देत हैं ॥ जैजै जानकीश जैजै लषण कपीश कहि, कूदि कपि कौतुकी नटत रेत रेत हैं ॥ अंगद मयन्द नल नील बलशील महा,बालधी फिरावैं मुख नाना गति लेत हैं ॥८१ ॥ आयो हनुमान प्राण-

हेतु अंकमाल देत, लेत पगधूरि यक चूमत लँगूर हैं ॥ एक बूझै बार बार सीय समाचार कहे, पवनकुमार भो विगत श्रम शूल हैं ॥ एक भूखे जानि आगे आनि कंद मूल फल, एक पूजे बाहुबल मूल तोरी फूल हैं॥ एक कहैं तुलसी सकल सिधि ताके जाके, कृपापाथ नाथ सीतानाथ सानुकूल हैं॥८२॥ सीयको सनेहशील कथा तथा लंककी, चले कहत चायसों सिरानो पथ छनमें ॥ कह्यो युवराज बोलि वानर समाज आजु, खाहु फल सुनि पेलि पैठे मधुवनमें ॥ मारे बागवान ते पुकारत देवानगे, उजारे बाग अंगदादि खाये घाय तनमें ॥ कहें कपिराज करि काज आये कीश तुलसी-शकी शपथ महामोद मेरे मनमें ॥८३॥ नगर कुबे-रको सुमेरकी बराबरी, विरंचि बुद्धिको विलास लंक निरमाण भो॥ईशहि चढाय शीश बीस बाहु वीर तहां, रावणसों राजा रज तेजको निधान भो॥ तुलसी त्रिलो-ककी समृद्धि सौंज संपदा, सकेलि चाकि राखी राशि जांगर जहानसो ॥ तीसरे उपास वनवास सिंधु पास सो, समाज महाराजजीको एक दिन दानभो ॥ ८४ ॥

इति श्रीकवित्तरामायणे सुंदरकाण्डः समाप्तः ५.

अथ लंकाकाण्डः।

बडे विकराल भालु बानर विशाल बडे, तुलसी खडे पहार लै पयोधि तोपि हैं ॥ प्रबल प्रचण्ड बरिबण्ड बहु दण्ड खण्डि, मण्डि मेदिनीको मण्डलीक लीक लोपि हैं ॥ लंक दाहु देखे न उछाहु रह्यो काहुनको, कहैं सब सचिव पुकारि पाँव रोपि हैं ॥ बाचि है न पाछ त्रिपुरारिहू मुरारिहूके, को है रण रारिको जो कोशलेश कोपि हैं ॥ ८५ ॥ त्रिजटा कहत बार बार तुलसीश्वरीसों, राघौ बाण एकही समुद्र सातों सोपिहैं ॥ सकुल सँहारि यातुधान धारि जंबुकादि, योगिनी जमाति कालिका कलाप तोषि हैं ॥ राज दै निवाजिबो बजाइकै विभीषणै, बजैंगे व्योम बाजने विबुध प्रेम पोषिहैं ॥ कौन दश-कंध कौन मेघनाद बापुरो, को कुम्भकर्ण कीट जब राम रण रोषि हैं ॥ ॥ ८६ ॥ विनय सनेहसों कहति सिया त्रिजटासों;पाये कछु समाचार आरज सुवनके॥ पायेजू बँधाये सेतु उतरि भानुकुलकेतु,आये देखि देखि दूत दारुण दुवनके ॥ वदनमलीन बलहीन दीन देखि माने, मिटे घटे तमीचर तिमिर भुवनके ॥ लोकपति शोक कोक मूंदे कपि कोकनद, दण्ड द्वै रहे हैं रघु अदित उवनके ॥ ८७ ॥ (झूलना) सुभुज मारीच खर त्रिशिर दूषण बालि दलत जेहि दूसरो शर न

सांध्यो ॥ आनि परवांस विधिवाम तेहि रामसो सकत संग्राम दशकन्ध कांध्यो ॥ समुझि तुलसीश कपि कर्म घर घर घैरु विकल सुनि सकल पाथोधि बांध्यो ॥ वसत गढ़ लंक बंकेश नायक अछत लंक नहिं खात कोउ भात रांध्यो ॥ ८८ ॥ (सवैया) विश्वजयी भृगुनायकसे, बिन हाथ भये हनि हाथ हजारी॥बातुल मातुलकी न सुनी, सिख का तुलसी कपि लंक न जारी ॥ अजहूँ तौ भलो रघुनाथ मिले, फिरि बूझिहै को गज कौन गजारी ॥ कीर्त्ति बडो करतूति बडो जन, बात बडो सो बडोई. बजारी ॥ ८९ ॥ जब पाहन भे बन वाहनसे, उतरे वनरा जय राम रढे ॥ तुलसी लिये शैल शिला सब सोहत, सागर ज्यों बल बारि बढे ॥ करि कोप करैं रघुबीरको आयसु, कौतुकही गढ कूदि चढे ॥ चतुरङ्ग चमू पलमें दलिकै, रण रावण राडके हाड गढे ॥ ९० ॥ (घनाक्षरी) विपुल विशाल विकराल कपि भालु माने, काल बहु वेष धरे धाये किये करषा ॥ लिये शिला शैल शाल ताल औ तमाल तोरि, तोपे तोयनिधि सुरको समाज हरषा॥ डगे दिग कुंजर कमठ कोल कलमले, डोलै धराधर धारि धरा धर धरषा ॥ तुलसी तमकि चलै राघौकी शपथ करै, को करै अटक कपि कटक असरषा ॥ ९१ ॥ आये शुक सारन बोलायेते कहन लागे, पुलकी शरीर सेना करत

कहामही ॥ महाबली बानर विशाल भालुकालसे, कराल हैं रहे कहां समाहिंग कहामही ॥ हँस्यो दशकन्ध रघुनाथको प्रताप सुनि, तुलसी दुरावै मुख सूखत सहामही॥ रामके बिरोधे बुरो विधि हरिहरहूको, सबको भलो है राजा रामके रहामही ॥ १२ ॥ आयो आयो आयो सोई बानर बहोरि भयो, शोर चहुँओर लंका आये युवराजके ॥ एक काढै सौज एक धौज करै कहा ह्वैहै, पोच भई महा शोच सुभट समाजके ॥ गाज्यो कपिराज रघुराजकी शपथ करि, मूंदे कानयातुधान मानों गाजे गाजके ॥ सहमि सुखात बात जातकी सुरति करि, लवा ज्यों लुकात तुलसी झपेटे बाजके ॥ १३ ॥ तुलसी सबल रघुवीरजीको बालिसुत, वाहि न गनत बात कहत करेरीसी ॥ बखशीश ईशजीकी खीस होत देखियत, रिस काहे लागत कहतहौं मैं तेरीसी ॥ चढि गढ मढ दृढ कोटके कँगूरे कोपि, नेकु धका दैहैं ढैहैं ढेलनकी ढेरीसी॥ सुनु दशमाथ नाथ साथके हमारे कपि, हाथ लंका लाइहै तो रहैगी हथेरीसी ॥ १४ ॥ दूषण विराध खर त्रिशिरा कबन्ध वधे, तालऊ विशाल वेधे कौतुक है कालिको ॥ एकही विशिष वश भये वीर बाँकुरे सो, तोहू है विदित बल महाबली बालिको ॥ तुलसी कहत हित मान तन नेकु शंक, मेरो कहा

जैहे फल पैहै तू कुचालिको ॥ वीर करि केशरी कुठार पानि मानि हारि, तेरी कहा चली बूडे तोसे गने घालिको ॥९५॥ (सवैया) तोसों कहौं दशकंधर रे, रघुनाथ विरोध न कीजिय बौरे ॥ वालि बली खर दूषण और अनेक गिरे, जे जे भीतिमें दौरे ॥ ऐसिय हाल भई तोहिको, नतौ लै मिलु सीय चहै सुख जौ रे ॥ रामके रोष न राखिसकै, तुलसी विधि श्रीपति शंकर सौरे ॥ ९६ ॥ तू रजनीचरनाथ महा, रघुनाथके सेवकको जन हौं ॥ बलवान है श्वान गली अपनी, तोहिं लाज न गाल बजावत सौहौं॥ बीस भुजा दशशीश हरौं, न डरौं प्रभु आयसु भंगते जौहौं ॥ खेतमें केहरि ज्यों गजराज, दलौं दल बालिको बालक तोहौं ॥ ९७ ॥ कोशलराजके काज हौं आजु, त्रिकूट उपारिलै वारिधि बोरौं ॥ महाभुज दंड द्वै अंड कटाह, चपेटक चोट चटाक दै फोरौं ॥ आयसु भंगते जो न डरौं, सब मींजि सभासद शोणित घोरौं ॥ बालिको बालक जो तुलसी, दशहू मुखके रणमें रद तोरौं ॥९८॥ अति कोपसों रोप्यो है पाँव सभा, सब लंक सशंकित शोर मचा ॥ तमके घननादसे वीर प्रचारिकै, हारि निशाचर सैन पचा ॥ न टरै पग मेरु-हुते गरुओ, सो मनो महिसंग विरंचि रचा ॥ तुलसी सब शूर सराहत हैं, जगमें बलशालि है बालिबचा॥९९॥

(घनाक्षरी) रोंप्यो पाँव पैजके विचारि रघुवीर बल, लागे भट सिमिट न नेकु टसकतु है ॥ तज्यो धीर धरणि धरणिधर धसकत, धराधर धीर भार सहि न सकतु है ॥ महाबली बालिको दबत दलकतु भूमि, तुलसी उछलि सिंधु मेरु मसकतु है ॥ कमठ कठिन पीठि घेठा परो मंदरको, आयो सोई काम पै करेजा कसकतु है ॥१००॥ (झूलना) कनकगिरि शृंग चढि देखि मर्कट कटक, वदत मंदोदरी परम भीता ॥ सहसभुज मत्त गजराज रणकेशरी, परशुधर गर्व जेहि देखि बीता ॥ दास तुलसी समर सबल कोशलधनी, ख्यालही बालि बलशालि जीता ॥ रे कंत तृण दंत गहि शरण श्रीराम कहि, अजहुँ यहिभाँति ले सौंपु सीता ॥ १ ॥ रे नीच मारीच विच-लाइ हति ताडका, भंजि शिवचाप सुख सबहि दीन्ह्यो ॥ सहस दशचारि खल सहित खर दूषणहि, पठै यमधाम तैं तउ न चीन्ह्यो॥ मैं जु कहुँ कंत सुनुमंत भगवंतसों, विमुख है बालि फल कौन लीन्ह्यो ॥ बीस भुज शीश दश खीश गये तबहिं जब, ईशके ईशसों वैर कीन्ह्यो ॥ २ ॥ बालि दलि काल्हि जलयान पाषान किय, कंत भगवंत तैं तब न चीन्हे ॥ विपुल विकराल भट भालु कपिकालसे, संग तरु तुंग गिरिशृंग लीन्हे ॥ आइये कोशला, धीश तुलसीश जेहि, छत्रमिस मौलि दश दूरि

कीन्हे ॥ ईश बकशीश जनि खीश करु ईश सुनु, अजहुँ कुल कुशल वैदेहि दीन्हे ॥ ३ ॥ जाके सैन समूहकपि को गनै अर्बुदै, महाबल बीर हनुमान जानी ॥ भूलि है दशदिशा शीश पुनि डोलि, है कोपि रघुनाथ जब बाण तानी ॥ वालिहू गर्ब जियमाहिं ऐसो कियो, मारि दहपट कियो यमकि घानी ॥ कहत मंदोदरी सुनहि रावण मतो, वेगि लै देहि वैदेहि रानी ॥ ४ ॥ गहन उजारि पुर जारि सुत मारि तव,कुशलगो कीश वर वैरि जाको ॥ दूसरो दूत प्रण रोंपि कोपेउ सभा, खर्व कियो सर्वको गर्व थाको ॥ दास तुलसी सभय वदत मयनंदिनि, मंदमति कंत सुनु मंत म्हाको ॥ तोलौं मिल वेगि नहिं जौलौं रण रोष भयो, दाशरथि वीर विरदैत बांको ॥ ५ ॥ (घनाक्षरी) कानन उजारि अक्ष मारि धारि धूरि कीन्ही,नगर प्रजारचो सोविलोक्यो बल कीशको ॥ तुम्हैं विद्यमान यातुधान मंडली में कपि, कोपि रोंप्यो पाँउ सो प्रभाव तुलसीशको ॥ कंत सुनु मंतकुल अंत किय अंत हानि, हातो कीजे हीयते भरोसो भुज बीशको ॥ तौलौं मिलु वेगि जौलौं चाप न चढ़ायो राम, रोषि बाण काढ्यो ना दलैया दशशीशको ॥ ६ ॥पवनको पूत देखो दूत वीरबाँकुरो जो, बंक गढ लंक सो ढकाढकेलि ढाहिगो ॥ वालि बलशालिको सो कालिह दापि दलि कोपि, रोंप्योपाँउ

चपरि चमूको चाउ चाहिगो ॥ सोई रघुनाथ कपि साथ पाथनाथ बाँधि, आये नाथ भागेते खिरीर खेह खाहिगो ॥ तुलसी गरब तजि मिलिबेको साज सजि, देहि सीय नतो पिय पाइमाल जाहिगो ॥ ७ ॥ उदधि अपार उतरत नहिं लागी बार, केशरीकुमारसो अदंड कैसो डांडिगो ॥ वाटिका उजारि अक्ष रक्षकनि मारि भट, भारी भारी रावरेके चाउरसों कांडिगो ॥ तुलसी तिहारे विद्यमान युवराज आज्ञ, कोपि पाँव रोप्यो बसकैं छुवाय छांडिगो ॥ कहेकी न लाज पिय अजहूँ न आये बाज, सहित समाज गढ रांडकैसो मांडिगो॥ ॥ ८ ॥ जाके रोप दुसह त्रिदोप दाह दूरि कीन्हे, पैयत न क्षत्री खोज खोजता खलकमें ॥ महिपमती को नाथ साहसी सहसबाहु,समर समर्थनाथ हेरिये हलकमें॥सहित समाज महाराज सोज हाजराज,बूडि गयो जाके बल वारिधि छलकमें ॥ टूटत पिनाकके मनाक वाम राम सेते, नाक विनु भये भृगुनायक पलकमें ॥ ॥ ९ ॥ कीन्हीं छोनी छत्री विनु छोनिप छपनहार, कठिन कुठार पानि वीर वान जानिकै॥ परमकृपालु जो नृपाल लोकपालनपै, जब धनुहाई ह्वैहै मन अनुमानि कै ॥ नाक मैं पिनाक मिसि वामता विलोकि राम, रोक्यो परलोक लोक भरी भ्रम भानिकै ॥ नाइ दशमाथ महि जोरि बीस हाथ पिय,मिलिये पै नाथ रघु-

नाथ पहिचानिकै ॥१०॥ कह्यो मत मातुल बिभी-षणहु बार बार, आंचल पसारि पिय पांइ लैलै हौं परी ॥ विदित विदेह पुरनाथ भृगुनाथ गति, समय सयानी कीन्ही जैसी आइ गौंपरी ॥ बायस विराध खर दूषण कबंध बालि, वैर रघुबीरके न पूरी काहुको परी ॥ कन्त बीस लोचन बिलोकिए कुमन्त फल ख्याल लंका लाई कपि रांडकीसी झोपरी ॥ ११ ॥ (सवैया) रामसो साम किये नित है, हित कोमल काज न किजिय टांठे॥ आपनि सूझि कहौं पिय बूझिये, जूझिबे योग न ठाहरु नाठे ॥ नाथ सुनी भृगुनाथकथा बलि बालि गये चलि बातके साठे ॥ आइ विभीषण जाइ मिल्यो प्रभु, आइ परे सुनि सायर काठे ॥ १२ ॥ पालिबेको कपि भालु चमू, यमकाल करालहु कोप हरी है ॥ लंकसे बंक महागढ दुर्गम,ढाइबे दाहिबेकोक हरी है ॥ तीतर तोम तमीचर सैन,समीरको सूनु बडो बहरी है ॥ नाथ भलो रघुनाथ मिले, रजनीचर सैन हिये हहरी है ॥ १३ ॥ (घनाक्षरी) रोषे रण रावण बोलाये वीर बानइत, जानत जे रीति सब संयुग समा-जकी ॥ चली चतुरंग चमू चपरि हने निशान,सेना है बडाई योग रातिचर राजकी ॥ तुलसी विलोकि कपि भालु किलकत लल,-कत लखि ज्यों कँगाल पातरी सुनाजकी ॥ राम रुख निरखि हरषि हिय हनुमान,

मानों खेलवार खोली शीश ताज बाजकी ॥ १४ ॥
साजिकै सनाह गजगाह स उछाह दल, महाबली धाये
वीर यातुधान धीरके ॥ इहाँ भालु बन्दर विशालमेरु
मंदरसे,लिये शैल साल तोरि नीरनिधि तीरके॥तुलसी
तमकि तकि भिरे भारी युद्ध क्रुद्ध, सेनप सराहैं निज
निज भट भीरके ॥ रुंडनके झुंड झूमि झूमि झूकरेसे
नाचैं, समर शुमार शूर मारे रघुबीरके ॥ १५ ॥
(सवैया) तीखे तुरंग कुरंग सुरंगनि, साजि चढे छटि
छैल छबीले ॥ भारी गुमान जिन्हैं मनमें,कबहूं न भये
रणमें तनु ढीले ॥ तुलसी गजले लखिकै हरिलौं,झपटे
पटके सब शूरसलीले ॥ भूमि परे भट घूमि कराहत,
हांकि हने हनुमान हठीले ॥ १६ ॥ शूर सजोयल साजि
सुबाजि, सुशैल धरे बगमेल चले हैं ॥ भारी भुजा
भरि भारी शरीर, बली विजयी सब भाँति भले हैं ॥
तुलसी जिन्है धाय धुकै धरणीधर,धौरि धकानिसों मेरु
हले हैं ॥ ते रण तीक्षण लक्ष्मण लाखन, दानि ज्यों
दारिद दाबि दले हैं ॥ १७ ॥ गहि मंदर बंदर भालु
चले, सो मनो उनये घन सावनके ॥ तुलसी उत झुण्ड
प्रचण्ड झुके, झपटैं भट जे सुरदावनके ॥ बिरुझे
बिरदैत जे खेतअरे, न टरे हठि बैर बढावनके ॥ रण
मार मची उपरी उपरा, भले वीर रघूपति रावनके
॥ १८ ॥ शर तोमर शैल समूह पँवारत, मारत वीर

निशाचरके ॥ इतते तरु ताल तमाल चले, खर खण्ड प्रचंड महीधरके ॥ तुलसी करि केहरि नाद भिरे, भट खड्ग खगे खपुवा खरके ॥ नख दंतनसों भुज दंड विहंडत, मुंडसों मुण्ड परे झरके ॥ ११ ॥ रजनीचर मत्त गयंद घटा, बिघटै मृगराजके साथ लरै ॥ झपटै भट कोटि मही पटकैं, गरजैं रघुवीरकी सौंह करै ॥ तुलसी उत हांक दशानन देत, अचेत भे वीरको धीर धरै ॥ विरुझो रण मारुतको बिरुदैत, जो कालहु कालसो बूझिपरै ॥ १२० ॥ जे रजनीचर वीर विशाल, कराल विलोकत कालन खाये ॥ ते रण रोर कपीश किशोर, बडे बरजोर परे फल पाये ॥ लूम लपेटि अकाश निहारिकै, हांक ; हठी हनुमान चलाये ॥ सूखिगे गात चले नभ जात, परे भ्रम बातन भूतल आये ॥२१॥ जो दशशीश महीधर ईशको, वीस भुजा खुलि खेलनहारो ॥ लोकप दिग्गज दानव देव, सबै सहमैं सुनि साहस भारो ॥ वीर बडो बिरदैत बली, अजहूं जग जागत जासु पँवारो ॥ सो हनुमान हन्यो मुठिका, गिरिगो गिरिराज ज्यों गाज को मारो ॥ २२ ॥ दुर्गम दुर्ग पहारते भारे, प्रचंड महा-भुजदंड बने हैं ॥ लक्खमें पक्खर तिक्खन तेज, जे शूर समाजमें गाज गने हैं ॥ ते बिरुदैत बली रण बाँकुरे, हाँकि हठी हनुमान हने हैं ॥ नाम लै

राम देखावत बंधुको, घूमत घायल घाय घने हैं॥२३॥
(घनाक्षरी)हाथिनसों हाथी मारे घोडे घोडेसों सँहारे, रथनिसों रथ विदरनि बलवानकी ॥ चंचल चपेट चोट चरण चकोट चाहैं,हहरानी फौजें भहरानी यातुधानकी॥ बारबार सेवक सराहना करत राम, तुलसी सराहैं रीति साहेब सुजानकी॥लांबी लूम लसत लपेटि पटकत भट, देखो देखो लषण लरनि हनुमानकी ॥ २४ ॥ दबकि दबोरे एक वारिधिमें बोरे एक,मगमें महीमें एक गगन उडात है ॥ पकरि पछारे कर चरण उखारे एक चीरि फारि डारे एक मीजि मारे लात हैं ॥ तुलसी लषण राम रावण विविध विधि, चक्रपाणि चंडीपति चंडीका सिहात हैं ॥ बड बड बानइत वीर बलवान बड. यातुधान यूथप निपाते वातजात हैं॥२५॥प्रबला प्रचंडबरिबंड बाहुदंड वीर,धाये यातुधान हनुमान लियो घेरिकै ॥ महाबल पुंज कुंजरारि ज्यों गरजि भट,जहाँ तहाँ पटके लंगूर फेरि फेरिकै ॥ मारें लात तोर गात भागे जात हाहाखात, कहै तुलसी सराहि रामकीसों टेरिकै ॥ ठहर ठहर परै कहरि कहरि उठैं, हहर हहर हरसिद्ध हँसे हेरिकै ॥२६॥ जाकी बाकी वीरता सुनत सहमत शूर, जाकी आँच अबहूं लषत लंक लाहसी ॥ सोई हनुमान बलवान बाँको बानइत, जोहै यातुधान सेना चले लेत थाहसी ॥ कंपत अकंपन सुखाय अति-

काय काय, कुंभऊकरण आइ रह्यो पाइ आहसी ॥ देखे गजराज मृगराज ज्यों गराज धायो, वीर रघुवीरको समीरसूनु साहसी ॥ २७ ॥ (झूलना) मत्त भट मुकुट दशकंध साहस शैल शृंग विदरनि जनु वज्रटांकी ॥ दशन धरि धरणि चिक्करत दिग्गज कमठ शेष संकुचित शंकित पिनाकी ॥ चलित महिमेरु उच्छलत सागर सकल विकल विधि वधिर दिशिविदिशि झांकी ॥ रजनिचर घरनिघर गर्भ अर्भक श्रवत, सुनत हनुमानकी हांक बाँकी ॥ २८ ॥ कौनकी हांकपर चौंकि चंडीश विधि, चंडकर थकित फिरि तुरंग हांके ॥ कानके तेजबल सीम भट भीमसे, भीमता निरखि करि नयन ढांके ॥ दास तुलसीशके विरद वरणत विदुष, वीर विरुदैत वर वैरि धांके ॥ नाक नरलोक पाताल कोउ कहत किन, कहां हनुमानसे वीर बांके ॥ २९ ॥ यातुधानावली मत्त कुंजर घटा, निरखि मृगराज जनु गिरिते टूटचो ॥ विकट चटकन चोट चरण गहि, पटकि महि निघटि गये सुभट सत सटन छूटचो ॥ दास तुलसी परत धरणि, धरकत झुकत हाटसी उठत जंबुकनि लूटचो ॥ धीर रघुवीरके वीर रण बांकुरे, हांकि हनुमान कुलि कटक कूटचो ॥ ३० ॥ (छप्पय) कतहुँ विटप भूधर उपारि अरिसैन वरक्खत ॥ कतहुँ वाजिसों वाजि मर्दि गज

राज करकखत ॥ चरण चोट चटकन चकोट अरि उर शिर बज्जत ॥ विकट कटक चरण चोट वारिद जिमि गज्जत ॥ लंगूर लपेटत पटकि भट जयति रामजय उच्चरत॥ तुलसीश पवननंदन अटल युद्ध क्रुद्ध कौतुक करत ॥ ३१ ॥ (घनाक्षरी) अंग अंग दलित ललित फूले किंशुकसे, हने भट लाखन लषण यातुधानके ॥ मारिकै पछारिकै उपारि भुज दंड चंड, खंडि खंडि डारे ते विदारे हनुमानके ॥ कूदत कबन्धके कदंब बंब-सी करत,धावत देखावत हैं लाघौ राघौ बानके॥तुलसी महेश विधि लोकपाल देवगण, देखत विमान चढ़े कौतुक मशानके ॥ ३२ ॥ लोथिनसों लोहूके प्रवाह चले जहां तहां, मानहुँ गिरिन गेरु झरना झरत हैं ॥ शोणित सरित घोर कुंजर करारे भारे, कूलते समूल वाजि विटप परत हैं ॥ सुभट शरीर नीरचारी भारी भारी तहाँ, शूरनि उछाह कूर कादर डरत हैं ॥ फेकरि फेकरि फेर फारि फारि पेट खात, काक कंकबालक कोलाहल करत हैं॥३३॥ ओझरी अझोरी कांधे आँत-नकी सेल्ही बांधे,मूँडके कमण्डलु खपर किये फोरिकै ॥ योगिनी जमाति जोरि झुंड बनी तापसीसी, तीर तीर बैठीं सो समर सारिखोरिकै ॥ शोणितसों सानि सानि गूदा खात सतुआसे,प्रेत एक पियत बहोरि घोरि घोरि-कै ॥ तुलसी बैताल भूत साथ लिये भूतनाथ, हेरिहेरि

हँसत हैं हाथ हाथ जोरिकै ॥ ३४ ॥ (सवैया) राम-शरासनते चले तीर, रहे न शरीर हड़ावरि फूटी ॥ रावन धीर न पीर गनी, लखि लैकर खप्पर योगिनि जूटी ॥ शोणित छींट छटानि छुटी, तुलसी प्रभु सोहै महाछबि छूटी ॥ मानौ मरक्कत शैल बिशालमें, फैलि चली बर बीरबहूटी ॥ ३५ ॥ (घ०) मारि मेघनाद सों प्रचारि भिरे भारी भट, आपने अपन पुरुषारथ न ढील की ॥ घायल लषणलाल सुनि बिलखाने राम, भई आशा शिथिल जगन्निवास दीलकी ॥ भाईको न मोह छोह सीयको न तुलसीश, कहैं मैं बिभीषणकी कछु न सबील की ॥ लाजबांह बोलकी नेवाजेकी सँभार सार, साहेब न रामसे बलाइ लेउँ शीलकी ॥ ॥ ३६ ॥ (स०) कानन बास दशाननसों रिपु, आनन श्रीशशि जीति लियो है ॥ बालि महाबलशालि दल्यो कपि, पालि बिभीषण भूप कियो है ॥ तीय हरी रण बंधु पर्‍यौ पै, भयो शरणागत शोच हियो है ॥ बाँह पगार उदार कृपालु, कहाँ रघुबीरसों बीर बियो है ॥ ३७ ॥ लीन्ह उखारि पहार बिशाल, चल्यो तेहि काल बिलंब न लायो ॥ मारुतनंदन मारुतको मन,को खगराजको वेग लजायो ॥ तीखी तुरा तुलसी कहतो पै, हिये उपमाको समाउ न आयो ॥ मानो प्रतक्षण पर्वतकी, न भली कलसी कपिज्यों धुकिधायो ॥३८॥

(घना०) चल्यो हनुमान सुनि यातुधान कालनेमि, पठयो सो मुनिभयो पायो फल छलिकै ॥ सहसा उखारो है पहार बहु योजनको, रखवारे मारे भारे भूरि भटदलिकै॥ बेगबल साहस सराहत कृपालु राम, भरतकी कुशल अचल ल्यायों चलिकै। हाथ हरिनाथके बिकाने रघुनाथ जनु, शीलसिंधु तुलसीश भलो मान्यो भलिकै ॥ ३९ ॥ बापु दियो काननभो आनन सुभानसों, वैरी भो दशानन सो तीयको हरन भो ॥ घोर रारि हेरि त्रिपुरारि विधि हारे हिये, घायल लषण वीर बानर मरन भो ॥ वालिबलशालि दलि पालि कपिराजको, बिभीषण नेवाजि सेतुसागर तरन भो ॥ ऐसे शोकमें तिलोकके विशोक पलहीमें, सबहीके तुलसीके साहिब शरन भो ॥ १४० ॥ (स०) कुम्भकरण्ण हन्यो रण राम, दल्यो दशकंधर कंधर तोरे ॥ पूषण वंश विभूषण पूषण, तेज प्रताप गरे अरि ओरे॥ देव निशान बजावत गावत, धावत गे मन भावत भोरे। नाचत वानर भालु सबै, तुलसी कहि हारे हहा भय होरे ॥ ४१ ॥(घना०)मारे रण रातिचर रावण सकुल दल, अनुकूल देव मुनि फूल बरसतु हैं ॥ नाग नर किन्नर विरंचि हरि हर हेरि, पुलक शरीर हिये हेतु हरषतु हैं ॥ वाम ओर जानकी कृपानिधानके विराजैं, देखत विषाद मिटै मोद सरसतु हैं ॥ आयसु भो

लोकनि सिधारे लोकपाल सबै, तुलसी निहारिकै दियो सो सरखतु हैं ॥ १४२ ॥

इति श्रीकवित्तरामायणे लंकाकाण्डः समाप्तः ॥ ६ ॥

अथ उत्तरकाण्ड ।

सवैया—बालिसे बीर बिदारि सुकंठ, थप्यो हरषे सुर बाजने बाजे ॥ पलमें दल्यो दाशरथी दशकंधर, लंक विभीषण राज विराजे॥राम स्वभाव सुने तुलसी,हुलसे अलसी हमसे गल गाजे ॥ कायर क्रूर कपूतनकी हद, तेऊ गरीबनेवाज नेवाजे ॥ १ ॥ वेद पढैं विधि शंभुसभीत,पुजावन रावणसों नित आवैं॥दानव देव दयावने दीन,दुखी दिन दूरिहिते शिर नावैं ॥ ऐसेउ भाग भगे दशभाल ले,जो प्रभुता कवि कोविद गावैं॥रामसे वाम भये तेहि वामहि, वाम सबै सुख संपति लावैं ॥ २ ॥ वेद विरुद्ध मही मुनि साधु, सशोक किये सुरलोक उजारचो ॥ और कहा कहौं तीय हरी, तबहूं करुणाकर कोप न धारचो ॥सेवक छोहते छांडी क्षमा, तुलसी लख्यो राम स्वभावहि हारचो ॥ तौलौं न दाप दल्यो दशकन्धर, जौलौं विभीषण लात न मारचो ॥ ३ ॥ शोक समुद्र निमज्जत काढि, कपीश कियो जग जानत जैसो ॥ नीच निशाचर वैरीको बंधु, विभीषण कीन्ह पुरन्दर ऐसो ॥ नाम लिये अप-

नाइ लियो, तुलसी सो कहो जग कौन अनैसो ॥ आरत आरति भञ्जन राम, गरीबनेवाज न दूसर ऐसो ॥ ४ ॥ सीत पुनीत कियो कपि भालुको, पाल्यो ज्यों काहु न बाल तनूजो ॥ सज्जन सींव विभीषण भा, अजहूं विलसे वर बंधु वधू जो ॥ कोशलपाल विना तुलसी, शरणागतपाल कृपालु न दूजो ॥ क्रूर कुजाति कपूत अघी, सबकी सुधरै जो करै नर पूजो ॥ ५ ॥ तीय शिरोमणि सीय तजी, जेहि पावककी कलुखाई दही है । धर्म धुरन्धर बंधु तज्यो, पुरलोगनिको विधि बोलि कही है ॥ कीश निशाचरकी करनी, न सुनी न विलोकि न चित्त रही है ॥ राम सदा शरणागतकी, अनखौंही अनैसी स्वभाय सहीहै ॥ ६ ॥ अपराध अगाध भये जनते, अपने उर आनत नाहिंत जू ॥ गणिका गज गीध अजामिलके गति, पातक पुञ्ज सराहि न जू ॥ लिये वारक नाम सुधाम दिये जिहि, धाम महामुनि जाहि न जू ॥ तुलसी भजु दीनयालुहि रे, रघुनाथ अनाथहि दाहिन जू ॥ ७ ॥ प्रभु सत्य करी प्रह्लाद गिरा, प्रकटे नरकेहरि खम्भ महा ॥ झखराज ग्रस्यो गजराज कृपा, ततकाल बिलम्ब किये न तहाँ ॥ सुर साखी दै राखी है पाण्डुबधू, पट लूटत कोटिक भूप जहाँ ॥ तुलसी भजु शोच विमोचनको, जनको

पण राख्यो न राम कहाँ ॥ ८ ॥ नर नारि उघारि सभामहँ होत, दिये पट शोच हरयो मनको ॥ प्रह-लाद विषाद निवारण वारण, तारण मीत अकारनको॥ जो कहावत दीनदयालु सही, जेहि भीर सदा अपने पनको ॥ तुलसी तजि आन भरोस भजै, भगवान भलो करिहैं जनको ॥ ९ ॥ ऋषिनारि उधारि कियो शठ केवट, मीत पुनीत सुकीर्ति लही ॥ निजलोक दियो शबरी खगको, कपि थाप्यो सो मालुम है सबही ॥ दशशीश विरोध सभीत विभीषण,भूप कियो जगलीक रही ॥ करुणानिधिको भजु रे तुलसी, रघु-नाथ अनाथके नाथ सही ॥ १० ॥ कौशिक विप्रवधू मिथिलाधिपके सब शोच दल्यो पलमा हैं ॥ बालि दशानन बंधु कथा, सुनि शत्रु सुसाहिब शील सराहैं॥ ऐसी अनूप कहै तुलसी, रघुनायककी अगुणा गुण गाहैं ॥ आरत दीन अनाथनको, रघुनाथ करैं निज हाथकी छाहैं ॥ ११ ॥ तेरे बेसाहे बेसाहत औरनि, और बेसाहिके बेचनहारे ॥ व्योम रसातल भूमि भरे, नृप कूर कुसाहिबसे तिहुँ खारे ॥ तुलसी तेहि सेवत कौन मरे,रजते लघुको कर मेरुते भारे॥ स्वामी सुशील समर्थ सुजान, सो तोसों तुहीं दशरत्थ दुलारे ॥ १२ ॥ (घ०)यातुधान भालु कपि केवट विहंग जो जो,पालो नाथ सद्य सो सो भयो काम काजको ॥ आरत अनाथ

दीन मलिन शरण आये,राखे अपनायसो स्वभाव महा-
राजको ॥ नाम तुलसीपै भोंडे भागसों कहायो दास,
किये अंगीकार ऐसे बडे दगवाजको ॥ साहेब समर्थ
दशरथके दयालु देव,दूसरो न तोसो तुही आपनेके
लाजको ॥ १३ ॥ महाबली बली दलि कायर सुकंठ
कपि,सखा किये महाराज हौं न काहू कामको ॥ भ्रात
घात पातकी निशाचर शरण आये, किये अंगीकार
नाथ एते बडे बापको ॥ राय दशरत्थके समर्त्थ तेरे
नाम लिये, तुलसीसे क्रूरको कहत जग रामको ॥
आपने निवाजे की तौ लाज महाराजको,स्वभाव समु-
झत मन मुदित गुलामको ॥ १४ ॥ रूप शीलसिंधु
गुणसिंधु बंधु दीनको द,-यानिधान जान मणि वीर
बाहु बोलको॥श्राद्ध कियो गीधको सराहे फल शबरीके,
शिलाशाप शमन निवाह्यो नेह कोलको ॥ तुलसी
उराउ होत रामको स्वभाव सुनि,को न बलि जाइ न
बिकाइ बिन मोलको ॥ ऐसेहु सुसाहेबसों जाको अनु-
राग न सो,बडोई अभागी भाग भागो लोभ लोलको॥
॥ १६ ॥ शूर शिरताज महाराजनिके महाराज, जाको
नाम लेतही सुखेत होत ऊसरो ॥ साहब कहाँ जहाँ न
जानकीशसों सुजान, सुमिरे कृपालुके मराल होत खू-
सरो ॥ केवट पषाण यातुधान कपि भालु तारे, अप-
नायो तुलसीसो धींग धमधूसरो॥बोलको अटलबाहको

पगार दीनबंधु, दूबरेको दानीको दयानिधान दूसरो ॥ ॥ १६ ॥ काबेको विशोक लोक लोकपालहूते सब, कहूँ कोऊ भो न चरवाहो कपि भालुको॥पविको पहार कियो ख्यालही कृपालु राम, वापुरो विभीषण घरोंधी हुतो वालको ॥ नाम वोट लेतहीं निखोट होत खोटे खल, चोविनहू मोट पाइ भयो न निहालको ॥तुलसी की बार बडी ढील होति शीलसिंधु, बिगरि सुधारिबे को दूसरो दयालु को॥ १७ ॥नाम लिये पूतको पुनीत कियो पातकीश, आरति निवारे प्रभु पाहि कहे पीलकी छलिनकी छौडी सो निगोडी छोटी जाति पाँति, कीन्ही लीन आपुमें सुनारी ओंडे भीलकी तुलसी ओ तारिवो विसारिबो न अन्त मोहूं, नीके हैं प्रतीतिरावरे स्वभाव शीलकी॥देवतौ दयानिकेत देत दादि दीननकी, मेरी बार मेरेही अभाग नाथ ढील की ॥ १८ ॥आगे परे पाहन कृपा किरात कोलनी,कपीश निशिचर अपनाये नाये माथजू ॥ सांची सेवकाई हनुमानकी सुजान राइ, ऋणियाँ कहायेहौं बिकाने तके हाथजू ॥ तुलसी-से खोटे खरे होत ओट नामहीकी, तेजी माटी मगहू की मृगमद साथजू ॥ बात चले बातको न मनिबो बिलग बलि, काकी सेवा रीझिको निवाजी रघुनाथजू ॥ १९ ॥ कौशिककी चलत पषाणकी परस पाइ,टूटत धनुष बनिगई है जनककी ॥ कोल पशु शबरी विहंग

भालु रातिचर, रतिनके लालचिन प्रापति मननकी ॥ कोटि कला कुशल कृपालुनतपाल बलि,बातहु कितक तृण तुलसी तनककी॥राइ दशरत्थके समर्त्थराम राज-मणि, नेरे हेरे लोपै लिपि विधिहू गनककी ॥ २० ॥ (घनाक्षरी) शिला शाप पाप गुह गीधको मिलाप शबरीके पास आप चलिगयेहौ सो सुनी मैं ॥ सेवक सराह कपिनायक विभीषणको, भरत सभा सादरसनेह शिरधुनी मै ॥ आलसी अभागी अघी आरत अनाथ पाल, साहेब समर्त्थ एक नीके मन गुनी मैं ॥ दोष दुख दारिद दलैया दीनबंधु राम,तुलसी न दूसरो दया-निधान दुनीमैं ॥२१ ॥ मीत बालि बंधु पूत दूतदश-कंध बंधु, सचिव सराध कियो शबरी जटाईको॥लंक जरी जो है जिये शोच सो विभीषणको, कहो ऐसे साहेबकी सेवा न खटाइको ॥ बडे एक एकते अनेक लोक लोकपाल, अपने अपनेकोतौ कहेगो घटाइको ॥ सांकरेको सेइबो सराहिबे सुमिरिबेको,रामसों न साहि-बन कुमति कटाइको ॥ २२ ॥ भूमिपाल व्यालपाल नाकपाल लोकपाल, कारण कृपालु मैं सबैके जीकी थाह ली ॥ कागजको आदर किसीके नाहिं देखियत, सबनि सोहात है सेवा सुजानि टाहली॥तुलसी स्वभाव कहै नहीं कछू पक्षपात,कौने ईश किये कीश भालुखास-माहली ॥ रामहीके द्वारपै बोलाइ सनमानि यत,मोसे

दान दूबरे कुपूत कूरकाहली ॥२३॥ सेवा अनुरूप फल देत भूप कूप ज्यों, विहीनगुण पथिक पियासे जात पथके। लेखे जोखे चोखे चित तुलसी स्वारथहित, नीके देखे देवता देवैया घने गथके। गीध मानो गुरु कपि भालु मानो मीतके, पुनीत गीत साके सब साहेब समत्थके। और भूप परखि सुलाखि तौलि ताइ लेत, लसमके खसम तुहीपै दशरत्थके ॥ २४ ॥ रीति महाराजकी नेवाजिये जो माँगनो सो,दोष दुख दारिद दरिद्र कैकै छोडिये ॥ नाम जाको कामतरु देत फल चारि ताहि, तुलसी विहाइकै बबूर रेंड गोडिये ॥ याचैको नरेश देशके देशके कलेश करै, देहै तौ प्रसन्न ह्वै बडाई वडी बोडिये ॥ कृपापाथनाथ लोकनाथ नाथ सीतानाथ, तजि रघुनाथ हाथ और काहि ओडिये ॥२५॥ (सवैया) जाके विलोकत लोकप होत, विशोक लहैं सुरलोग सुठौरहि ॥ सो कमला तजि चंचलता, अरु कोटि कला रिझवै शिरमौरहि ॥ ताको कहाय कहै तुलसी, तुल जाहि न माँगत कूकर कौरहि ॥ जानकीजीवनको जन ह्वै,जरिजाउ सो जीह याँचत औरहि॥ ॥ २६ ॥ जड पंच मिलै जेहि देहकरी, करनी लघुधा धरणीधरकी ॥ जनकी कहु क्यों करिहै न सँभार, जो सार करै सचराचरकी ॥ तुलसी कहु रामसमान को आन है, सेवकि जासु रमाघरकी ॥ जगमें गति

जाहि जगत्पतिकी, परवाह है ताहि कहा नरकी ॥ २७ ॥ जग याचिये कोऊ न याचिये जो, जिय याचिये जानकीजानहि रे ॥ जेहि यांचत जांचकता जरिजाइ, जो जारति जोर जहानहि रे ॥ गति देखु विचारि विभीषणकी, अरु आनु हिये हनुमानहि रे ॥ तुलसी भजु दारिद दोष दवानल, संकट कोटि कृपानुहि रे ॥ २८ ॥ सुनु कान दिये नित नेम लिये, रघुनाथहिके गुणगाथहि रे॥ सुख मन्दिर सुंदर रूप सदा, उर आनि धरे धनुभाथहि रे ॥ रसना निशि वासर सादर, सो तुलसी जपु जानकीनाथहि रे ॥ करु संग सुसन्तनसों तजि कूर, कुपंथ कुचालि कुसाथहि रे ॥ ॥२९॥सुत दार अगार सखा परिवार, विलोकु महाकुसमाजहि रे॥सबकी ममता तजिकै समता, सजि संतसभा न विराजहि रे ॥ नरदेह कहा करि देखु विचारि, बिगारु गँवार न काजहि रे ॥ जनि डोलहि लोलुप कूकर ज्यों, तुलसी भजु कोशलराजहि रे ॥ ३० ॥ विषया परनारि निशा तरुणाई,सु पाइ परचौ अनुरागहि रे ॥ यमके पहरू दुख रोग बियोग, विलोकतहू न विरागहि रे ॥ ममतावशते सब भूलिगयो,भयो भोर महा भय भागहि रे ॥ जरठाइ दिशा रविकाल उग्यो, अजहूं जड जीवन जागहि रे ॥ ३१ ॥ जनम्यो जेहि योनि अनेक क्रिया, सुखलागि करी न परै बरनी ॥

जगमें जनकादि हितू भये भूरि, बहोरि भई उरकी जरनी ॥ तुलसी अब रामको दास कहाइ, हिये धरु चातककी धरनी ॥ करि हंसको वेष बडो सबसों,तजि दे वक वायसकी करनी ॥ ३२ ॥ भलि भारतभूमि भले कुल जन्म, समाज शरीर भलो लहिकै ॥ ममता करखा तजिकै वरखा, हिम मारुत घाम सदा सहिकै ॥ जो भजै भगवान सयान सोई, तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै॥नत और सबै विष बीजबये,हरहाटक कामदुकानहिकै ॥ ३३ ॥ सो सुकृती शुचिमन्त सुसंत, सुजान सुशील शिरोमणि स्वै ॥ सुर तीरथ तासु मनावन आवन, पावन होत है तातन छै ॥ गुणगेह सनेहको भाजन सो, सबहीसों उठाइ कहौं भुज द्वै ॥ सतिभाय सदा छलछाँडि सबै, तुलसी जो रहै रघुबीरको ह्वै ॥ ३४ ॥ सो जननी सो पिता सोइ भ्रात, सो भामिनि सो सुत सोहित मेरो ॥ सोई सगो सो सखा सोइ सेवक, सो गुरु सो सुर साहिब चेरो ॥ सो तुलसी प्रिय प्राणसमान, कहाँलौं बनाइ कहौं बहुतेरो ॥ जो तजि देहको गेह सनेह सो, रामको सेवक होइ सवेरो ॥ ३५ ॥ राम है मातु पिता गुरु बंधु, औ संगी सखा सुत स्वामि सनेही ॥ रामकी सौंह भरोसो है रामको,रामरँग्यो रुचि राच्यो न केही॥ जीवत राम मुये पुनि राम, सदा रघुनाथहिकी गति

जेही ॥ सोई जियै जगमें तुलसी, नतु डोलत और मुये धरि देही ॥ ३६ ॥ सियराम स्वरूप अगाध अनूप, विलोचन मीननको जलु है ॥ श्रुति रामकथा मुख रामको नाम, हिये पुनि रामहिको थलु है ॥ मति रामहिसों गति रामहिसों, रति रामसों रामहिको बलु है ॥ सबकी न कहै तुलसीके मते, यतनो जग जीवनको फलु है ॥ ३७ ॥ दशरत्थके दानि शिरोमणि राम, पुराण प्रसिद्ध सुन्यो जस मैं ॥ नर नाग सुरासुर याचक जो, तुमसों मनभावत पायों न कै ॥ तुलसी करजोरि करै विनती, जो कृपा करि दीनदयालु सुनैं ॥ जेहि देह सनेह न रावरेसों, ऐसी देह धराइके जाय जियै ॥ ३८ ॥ झूठो हे झूठो है झूठो सदा जग, सन्त कहन्त जे अन्त लहा है ॥ ताको कहै शठ संकट कोटिक, काढत दन्त करन्त हहा है ॥ जान पमीको गुमान बडो, तुलसीके बिचार गँवार महा है ॥ जानकीजीवन जानन जान्यो,तो जान कहावत जान कहाँ है ॥ ३९ ॥ तिन्हते खर शूकर श्वान भले, जडता वशते न कहै कछु वै ॥ तुलसी जेहि रामसों नेह नहीं, सो सही पशु पूछ बिखानन द्वै ॥ जननी कत भार मुई दश मास, भई कि न बाँझ गई कि न च्वै ॥ जरि जाउ सो जीवन जानकीनाथ, जिये जगमें तुम्हरो विन ह्वै ॥ ४० ॥ गज बाजि घटा

भले भूरि भटा, वनिता सुत भौंह तकैं सबकै॥ धरणी धन धाम शरीर भलो, सुरलोकहु चाहि इहै सुख स्वै॥ सब फोकट साटक है तुलसी, अपनो न कछू सपनो दिन द्वै॥ जरि जाउ सो जीवन जानकीनाथ, जिये जगमें तुम्हरो बिनु ह्वै॥४१॥ सुरराजसों राज समाज समृद्धि, विरंचि धनाधिपसों धन भो॥ पवमानसों पावकसों यम सोम, सो पूषनसों भवभूषण भो॥ करि योग समीरन साधि समाधिकैं, धीर बडो बशहू मन भो॥ सब जाइ स्वभाइ कहै तुलसी, जो न जानकी-जीवनको जन भो॥४२॥ कामसे रूप प्रताप दिनेशसे, सोमसे शील गणेशसे माने॥ हरिचन्द्रसे साँचे बडे विधिसे, मघवासे महीप विषै सुखसाने॥ शुकसे मुनि शारदसे वकता, चिरजीवन लोमशते अधिकाने॥ ऐसे भये तौ कहा तुलसी, जुपै राजिवलोचन राम न जाने॥४३॥ झूमत द्वार अनेक मतंग, जँजीर जरे मदअंबु चुचाते॥ तीखे तुरंग मनोगति चंचल, पौनके गौनहुँते बढि जाते॥ भीतर चन्द्रमुखी अवलोकत, बाहर भूप खडे न समाते॥ ऐसे भये तौ कहा तुलसी, जुपै जानकीनाथके रंग न राते॥४४॥ राज सुरेश पचाशकको, विधिके करको जो पटो लिखि पाये॥ पूत सुपूत पुनीत प्रिया, निज सुंदरता रतिको मद नाये॥ संपति सिद्धि सबै तुलसी, मनकी मनसा

चितवैं चित लाये ॥ जानकीजीवन जाने विना,नर ऐसेऊ जीवन जीव कहाये ॥ ४५ ॥ कृश गात ललात जो रोटिनको,घर बात घरे खुरपाखरिया ॥ तिन सोनेके मेरुसे ढेर लहे, मनतौ न भरो घरपै भरिया ॥ तुलसी दुख दूनो दशा दुहुँ देखि, कियो मुख दारिदको करिया ॥ तजि आशभो दास रघूपतिको, दशरत्थको दानि दया करिया ॥ ४६ ॥ को भरिहै हरिके रितये, रितवै पुनि को हरि जौं भरिहै ॥ उथपै तेहि को जेहि राम थपै, थपि है तेहि को हरि जा टरि है ॥ तुलसी यह जानि हिये अपने, सपने नहि कालहुते डरि है ॥ कुमया कछु हानि न औरनकी, जोपै जानकीनाथ कृपा करि है ॥ ४७ ॥ व्याल कराल महाविष पावक, मत्त-गयंदहुके रद तोरे ॥ शासति शंकि चली डरपेहुते, किंकरते करनी मुख मोरे ॥ नेकु विषाद नहीं प्रह्लादहि, कारण केहरि केवल होरे ॥ कौनकी त्रास करे तुलसी, जोपै राखिहै राम तौ मारि है कोरे ॥ ४८ ॥ कृपा जेहिकी कछु काज नहीं, मैं.अकाज कछू जेहिके मुख मोरे ॥ करै तिनकी परवाहिको जाहि, विषानन पूछ फिरै दिन दोरे ॥ तुलसी जेहिके रघुवीरसे नाथ, समर्थ सुसेवत रीझत थोरे ॥ कहा भव भीर परी तेहि धौं, विचरै धरणी तिनसों तृण तोरे ॥ ४९ ॥ कानन भूधर बारि बयारि, महाविष व्याधि दवा अरि घेरे ॥

संकट कोटि जहाँ तुलसी, सुत मात पिता हित बंधु न नेरे ॥ राखि हैं राम कृपालु तहाँ, हनुमानसे सेवक हैं जेहिकेरे ॥ नाक रसातल भूतलमें,रघुनायक एक सहायक मेरे ॥ ५० ॥ जबै यमराज रजायसुते मोहिं लै चलिहैं भट बाँधि नटैया॥ तात न मात न स्वामि सखा सुत, बंधु विशाल विपत्ति बटैया ॥ शासति घोर पुकारत आरत, कौन सुनै चहुँ वोर डटैया ॥ एक कृपालु तहाँ तुलसी, दशरत्थको नंदन बंदि कटैया ॥ ५१ ॥ जहाँ यमयातन घोर नदी,भट कोटि जलच्चर दंत टेवैया॥ जहँ धार भयंकर वार न पार, न वोहित नाव न नीक खेवैया ॥ तुलसी जहँ मातु पिता न सखा, नहिं कोऊ कहूं अवलंब देवैया ॥ तहाँ बिनु कारण राम कृपालु; विशाल भुजागहि काढि लेवैया ॥ ५२ ॥ जहाँ हित स्वामि न संग सखा,वनिता सुत बंधु न बापु न मैया॥ काय गिरा मनके जनके, अपराध सबै छल छांडि क्षमैया ॥ तुलसी तेहि काल कृपालु बिना,दूजो कौन है दारुण दुःखद मैया ॥ जहाँ सब संकट दुर्घट शोच, तहाँ मेरो साहब राखै रमैया ॥ ५३ ॥ तापसको वरदायक देव, सबै पुनि वैर बढावत बाढे ॥ थोरहि कोप कृपा पुनि थोरेहि, बैठिकै जोरत तोरत ठाढे ॥ ठोंकि वजाय लखे गजराज, कहाँलौं कहौं केहिसों रद काढे ॥

आरत कोहित नाथ अनाथको, राम सहाय सही दिन गाढे॥५४॥जप योग विराग महा मख साधन,दान दया दम कोटि करै ॥ मुनि सिद्ध सुरेश गणेश महेशसे, सेवत जन्म अनेक मरै ॥ निगमागम ज्ञान पुराण पढै, तपसानलसे युग पुंज जरै ॥ मनसों प्रण रोपि कहै तुलसी, रघुनाथ विना दुख कौन हरै ॥ ५५ ॥ पातक पीन कुदारिद दीन, मलीन धरे कथरी करवा है ॥ लोक कहै विधिहू न लिख्यो,स्वपनेहूं नहीं अपने बरवा है ॥ रामको किंकर सो तुलसी, समुझेही भलो कहिबो नरवा है ॥ ऐसेको ऐसो भयो कबहूं न, भजे बिन बानरको चरवा है ॥५६॥ मातु पिता जग जाय तज्यो, विधिहू न लिखी कछु भाल भलाई ॥ नीच निरादर भाजन कादर, कूकुर टूक मिला गिललाई ॥ राम स्वभाव सुन्यो तुलसी, प्रभुसों कह्यो वारक पेट खलाई ॥ स्वारथको परमारथको, रघुनाथसों साहब खोरि न लाई ॥ ५७ ॥ पाप हरै परिताप हरै, तन पूजि भो हीतल शीतलताई ॥ हंस कियो बकते बलि जाउँ,कहाँलौं कहौं करुणा अधिकाई ॥ काल विलोकि कहै तुलसी, मनमें प्रभुकी परतीति अघाई ॥ जन्म जहाँ तहँ रावरेसों, निबहै भार देह सनेह सगाई ॥५८॥ लोग कहैं अरु हौंहू कहौं, जन खोटो खरो रघुनायक-हीको ॥रावरी राम बडी लघुता,यश मेरो भयो सुखदा-

यकहीको॥कै यह हानि सहौं बलिजाउँ कि, मोहूं करौं निज लायकहीको॥ आनि हिये हित जानि करो ज्यों, हौं ध्यान धरौं धनुशायकहीको ॥८९॥ आपुहो आपु को नीकेकै जानत, रावरो राम भरायो गढायो ॥ कीर ज्यों नाम रटै तुलसी,सो कहै जगजानकीनाथ पढायो॥ सोईहै खेद जो वेद कहै,न घटै जन जो रघुवीर बढायो॥ हौं तौ सदा खरको असवार, तिहारोई नाम गयंद चढायो ॥ ९० ॥ (घनाक्षरी) छारते सँवारिकै पहाड हुते भारी कियो,गारो भयो पाँचमें पुनीत पक्ष पाइकै॥ हौतो जैसो तब तैसो अब अधमाई कैकै,पेट भरो राम रावरोई गुण गाइकै ॥ आपने निवाजे कीपै कीजे लाज महाराज, मेरी ओर हेरिकै न बैठिये रिसाइक ॥ पालिकै कृपालु व्याल बालको न मारिये, औ काटिये न नाथ विषहूको रूख लाइकै ॥९१॥ वेद न पुराण गान जानो न विज्ञान ज्ञान, ध्यान धारणा समाधि साधन प्रवीणता ॥ नाहिं न विराग योग याग भाग तुलसीके, दया दान दूबरो हौं पापहीकी पीनता ॥ लोभ मोह काम कोह दोषको पमोसों कौन, कलिहू जो सिखि लई मेरिये मलीनता॥ एकही भरोसो राम रावरो कहावत हौं, रावरे दयालु दीनबन्धु मरी दीनता ॥ ९२ ॥ रावरो कहावों गुण गावों रामरावरोई, रोटी द्वहौं पावों राम रावरो हि कानिहौं॥जानत जहान मन मेरेहू गुमान

बडो, मान्यो मैं न दूसरो न मानत न मानिहौं॥ पाँचकी प्रतीति न भरोसो मोहिं आपनोई, तुम अप-नाइहौ तबैहीं परि जानिहौं ॥ गढि गुढि छोलि छालि कुंद कीसी भाई बातें, जैसा मुख कहौं तैसी जीय जबै आनिहौं ॥ ६२ ॥ वचन विकार करतवऊ खुआर मन, विगत विचारि कलि मलको निधानु है ॥ रामको कहाइ नाम वीच वेंचि खाइ सेवा, संगति न जाइ पाछिलेको उपखानु है ॥ तेहू तुलसीको लोग भलो भलो कहै ताको, दूसरो न हेतु एक नीकेकै निदानु है ॥ लोकरीति विदित विलोकियत जहाँ तहाँ, स्वामीके सनेह श्वानहूको सनमानु है ॥ ६४ ॥ स्वार-थको साजन समाज परमारथको; मोसों दगाबाज दूसरो न जगजाल है ॥ कै न आयों करों न करौंगो करतूति भलि, लिखी न विरंचि हू भलाई भूलि भाल है ॥ रावरी शपथ राम नामहीकी गति मेरे, इहाँ झूठो झूठो सो तिलोक तिहूं काल है ॥ तुलसीको भलोपै तुम्हारेही किये कृपालु, कीजै न विलंब वलि पानी भरी खाल है ॥ ६५ ॥ रागको न साज न विराग योगयाग जिय, काया नहिं छाँडि देत ठाटिबो कुठा-टको ॥ मनो राज करत अकाज भयो आजु लगि, चाहै चारु चीरपै लहै न टूक टाटको ॥ भयो करतार बडे कूरको कृपालु पायो, नाम प्रेम पारसहौ लालची

बराटको॥ तुलसी बनी है रामरावरे बनाये नातो,धोबी कैसो कूकर न घरको न घाटको॥९६॥ऊंचो मन ऊंची रुचि भाग नीचो निपटही, लोकरीति लायक न लँगर लबारु है ॥ स्वारथ अगम परमारथकी कहाँ चली, पेटको कठिन जग जीवको जवारु है॥ चाकरी न आकरी न खेती न बणिज भीख, जानत न कूर कछु किसब कबारु है॥ तुलसीकी बाजी राखी रामहीके नाम नत, भेद पितरनसों न मूडहूमें बारु है ॥ ९७ ॥ अपत उतार अपकारको अगार जग, जाको छाँह छुये सहमत व्याध बाधको ॥ पातक पुहुँमि पलिबेको सहसाननसों, कानन कपटको पयोधि अपराधको ॥ तुलसीसे वामको भो दाहिनो दयानिधान, सुनत सिहात सब सिद्ध साध साधको ॥ रामनाम ललित ललाम कियो लाखनिको, बडो कूर कायर कपूत कौडी आधको ॥ ९८ ॥ सब अंगहीन सब साधन विहीन मन, वचन मलीन हीन कुल करतूतिहौं ॥ बुधि-बलहीन भाव भगति विहीन दीन, गुण ज्ञान हीन हीन भागहू विभूतिहौं ॥ तुलसी गरीबकी गई बहार राम नाम, जाहि जप जीह रामहूको बैठो धूतिहौं ॥ प्रीति रामनामसों प्रतीति रामनामके,प्रसाद रामनामके पसारि पाइँ सूतिहौं ॥९९॥ मेरे जान जबते हौ जीव ह्वै जनमि जग, तबते वेसाह्यो दाम लोभ कोह कामको ॥ मन

तिनहीकी सेवा तिनहीसों भाव नीको, वचन बनाइ कहौ हौं गुलाम रामको ॥ नाथहू न अपनायो लोक झूठी ह्वै परी पै, प्रभुहूते प्रबल प्रताप प्रभु नामको ॥ अपनी भलाई भलो कीजै तौ भलोई भलो, तुलसीको खुलैगो खजाना खोटे दामको ॥ ७० ॥ योग न विराग जप याग तप त्याग व्रत, तीरथ न धर्म जानों वेदविधि किमि है ॥ तुलसीसों पोच न भयो न ह्वैहै नहीं कहूं, सोचै सब याके अघ कैसे प्रभु क्षमि हैं ॥ मेरे तौ न डरु रघुवीर सुनो सांची कहौं, खल अनखैहै तुम्हैं सज्जन निगमि है ॥ भले सुकृताके संग मोहूं तुला तौलिये तौ, नामके प्रसाद भार मेरी ओर नमि है॥७१॥जातिके सुजातिके कुजातिके पेटागिवश, खाये टूक सबके विदित बात दुनीसो ॥ मानस वचन काय किये पाप सतिभाय,रामको कहाय दास दगाबाज धुनीसो॥रामनामको प्रभाउ पाउ महिमा प्रताप तुलसीको जग मनियत महामुनीसो॥अतिही अभागे अनुराग तन रामपद, मूढ यतो बडो अचरज देखी सुनीसो ॥७२॥ जायो कुल मंगन बधावनो बजायो सुनि, भयो परिताप पाप जननी जनकको ॥ बारेते ललात बिललात द्वार द्वार दीन,जानत हौं चारि फल चारिहि चनकको॥ तुलसी सो साहिब समर्थको सुसेवकहि, सुनत सिहात शोच विधिहू गनकको ॥नाम राम रावरो सयानो किधौं

बावरो, जो करत गिरीते गरु तृणते तनकको ॥ ७३ ॥ बेदहू पुराण कही लोकहू बिलोकियत, राम नामहीसों रीझे सकल भलाईहै॥काशिहू मरत उपदेशत महेश सोइ, साधन अनेक चित इन चित लाई है॥छाछीको ललात जेते राम नामके प्रसाद, खात खुनसात सोधे दूधकी मलाई है॥रामराज सुनियत राजनीति की अवधि,नाम राम रावरे तौ चामकी चलाई है ॥ ७४ ॥ शोच संकटनि शोच संकट परत जर, जरत प्रभाउ नाम ललित ललामको ॥ बूडियो तरत बिगरियो सुधरित बात, होत देखि दाहिनो स्वभाव विधि वामको ॥ भागत अभाग अनुरागत विराग भान,जागत अलसि तुलसीहूसे निकामको ॥ घाइ धारि फिरिकै गोहारि हितकारी होत, आई मीचु मिटत जपत राम नामको ॥ ७५ ॥ आंधरो अधम जड जाजरो जराजवन, शूकरके शावक ढका ढकेलो मगमें॥गिरो हियो हहरि हराम हो हराम हन्यो, होइ हाइ करत परीगो कालफगमैं ॥ तुलसी विशोक ह्वै त्रिलोकपति लोक गयो, नामक प्रतापबात विदित है जगमें ॥ सोई राम नाम जो सनेहसों जपत जन, ताकी महिमाहू क्यों कहीहै जात अगमें ॥ ७६॥ जापकी न तप खप कियो न तमाइ योग, याग न विराग त्याग तीरथ न तनको ॥ भाईको भरोसो न खरोसो बैर बैरीहूसों, बल अपनो न हितू जननी न

जनको ॥ लोकको न डर परलोकको न शोच देव, सेवा न सहाय गर्व धामको न धनको ॥ रामहीके नामते जो होई सोई नीको लागै, ऐसोई स्वभाव कछु तुलसीके मनको ॥ ७७ ॥ ईश न गणेश न दिनेश न धनेश न, सुरेश सुर गौरि गिरापति नहिं जपने ॥ तुम्हरेई नामको भरोसो भव तरिवेको, बैठे उठे जागत बागत सोये सपने॥तुलसी है बावरो सो रावरोई रावरी, रावरेउ जानि जिय कीजिये जु अपने ॥ जानकीरमण मेरे रावरे वदन फेरे, ठाउँ न समाऊँ कहूँ सकल निरपने ॥७८॥ जाहिर जहानमें जमानो एक भाँति भयो, बेंचिये विबुध धेनु रासभी बेसाहिये ॥ ऐसेऊ कराल कलिकालमें कृपालु तेरे, नामके प्रताप न त्रिताप तन दाहिये ॥ तुलसी तिहारो मन वचन करम जेहि, नातो नेमनेहू निज ओरते निबाहिये ॥ रंकके निवाज रघुराज राज राजनिके, उमरि दराज महाराज तेरी चाहिये ॥ ॥ ७९ ॥ स्वारथ सयानप प्रपंच परमारथ, कहायो रामरावरे हौं जानत जहान है ॥ नामके प्रताप बाप आजुलौं निबाही नीके, आगेको गोसाईं स्वामी सबल सुजान है ॥ कलिको कुचालि पेखि दिन दिन दूनी देव, पाहरोई चोर हेरि हिय हहरातु है ॥ तुलसीकी बलि बार बारही सँभार कीबी, यदपि कृपानिधान सदा सावधान है ॥ ८० ॥

दिन दिन दूनी देखि दारिद दुकाल दुख, दुरित दुराज सुख सुकृत सकोचु है ॥ मांगेपै न पावत प्रचारि पातकी प्रचंड, काजकी करालता भलेको होत पोचु है ॥ आपने तो एक अवलंब अंब डिंभ ज्यों, समर्थ सीतानाथ सब संकट बिमोचु है ॥ तुलसीकी साहसी सराहिये कृपालु राम, नामके भरोसे परिणामको निशोचु है ॥ ८१ ॥ मोह मद मात्यो रात्यो कुमति कुनारिसों, बिसारि वेद लोक लाज आकरो अचेतु है॥ भावै सो करत मुँह आवै सो कहत कछु, काहूकी सहत नाहिं सरकस हेतु है ॥ तुलसी अधिक अधमाई हू अजामिलते, ताहूमें सहाय कलि कपट निकेतु है ॥ जैबेको अनेक टेक एक टेक ह्वैबेकी सो, पेट प्रिय पूत हित राम नाम लेतु है ॥ ८९ ॥ जागिये न सोइये विगोइये जनम जाय, दुख रोग रोइये कलेश कोह कामको ॥ राजा रंक रागी न विरागी भूरि भागी ये,अभागी जीव जरत प्रभाव कलि वामको ॥ तुलसी कबंध कैसो धाइबो विचारु अंध, धंध देखियत जग शोच परिणामको ॥ सोइबो जो रामके सनेहकी समाधि सुख, जागिबो जो जीह जपै नीके राम नामको ॥ ८३ ॥ वरण धरम गयो आश्रम निवास तजो, त्रास न चकृतसों परावनो परोसो है॥ करम उपासना कुवासना बिनासो ज्ञान, वचन विराग

वेष जगत हरोसो है ॥ गोरख जगायो योग भगति भगायो लोग, निगम नियोग तेसौ कलिहि क्षरोसो है ॥ काय मन वचन स्वभाय तुलसीहे जाहि, राम नामको भरोसो ताहिको भरोसो है ॥ ८४ ॥ (सवैया) वेद पुराण विहाइ सुपंथ, कुमारग कोटि कुचाल चली है ॥ काल कराल नृपाल कृपालन, राजसमाज बडोई छली है॥ वर्ण विभाग न आश्रम धर्म, दुनी दुख दोष दरिद्र दली है ॥ स्वारथको परमारथको कलि,रामको नाम प्रताप बली है॥ ८५ ॥ न मिटै भव संकट दुर्घट है तप, तीरथ जन्म अनेक अटो ॥ कलिमें न विराग न ज्ञान कहूं, सब लागत फोकट झूंठ जटो ॥ नट ज्यों जनि पेट कुपेटक कोटिक, चेटक कौतुक ठाट ठटो ॥ तुलसी जो सदा सुख चाहिय तौ, रसना निशि वासर राम रटो ॥ ८६ ॥ दम दुर्गम दान दया मख कर्म, सुधर्म अधीन सबै धनको ॥ तप तीरथ साधन योग विराग, सो होइ नहीं दृढता तनको ॥ कलिकाल करालमें राम कृपालु, यहै अवलंब बड़ो मनको ॥ तुलसी सब संयमहीन सबै यक,नाम अधार सदा जनको ॥ ८७ ॥ पाइ सुदेह विमोह नदी, तरणी न लही करणी कछू की ॥ राम कथा वरणी न बनाइ, सुनी न कथा प्रहलाद न ध्रूकी ॥ अब जोर जरा जरि गात गयो मन, मानि गलानि कुबानि न मूकी ॥

नीकेकै ठीक दई तुलसी,अवलंब बडी उर आखर दूकी ॥ ८८ ॥ राम विहाय मरा जपते, बिगरी सुधरी कवि कोकिलहूकी॥ नामहिंते गजकी गणिकाहु,अजामिलकी चलिगै चलचूकी ॥ नाम प्रताप बडे कुसमाज, बजाइ रही पति पांडु वधूकी ॥ ताको भलो अजहूँ तुलसी जेहि, प्रीति प्रतीति है आखर दूकी ॥ ८९ ॥ नाम अजामिलसे खल तारण, तारण वारण बार बधूको ॥ नाम हरे प्रहलाद विषाद, पिता भय शासति सागर सूको ॥ नामसों प्रीति प्रतीति विहीन, गिल्यो कलिकाल कराल सो चूको ॥ राखि हैं राम सो जासु हिये, तुलसी हुलसै बल आखर दूको ॥ ९० ॥ (घनाक्षरी) खेती न किसानको भिखारिको न भीख बलि, बणिकको वणिज न चाकर को चाकरी ॥ जीविका विहीन लोग सिद्ध मान शोच-वश, कहे एक एकनसों कहाँ जाइ का करी ॥ वेदहू पुराण कही लोकहू विलोकियत, साँकरे सबैको राम रावरी कृपा करी ॥ दारिद दशानन दबाई दुनी दीन-बंधु, दुरित दहत देखि तुलसी हहाकरी ॥ ९१ ॥ कुल करतूति भूति कीरति स्वरूप गुण, यौवन जरत ज्वर परै न कल कही ॥ राजकाज कुपथ कुसाज भोग रोगहीके, वेद बुध विद्या पाई विवश बलकही ॥ गति तुलसीशकी लखत नहीं जो तुरत, पविते करत छार

पवै सो गति पलकही ॥ कासों कीजै रोप दोष दीजे काहि पाहि राम, कियो कलिकाल कुलि खलल खलकही ॥ ९२ ॥ बब्बुर बहेरेको बनाय बाग लाइयत, रूंधबेको सोऊ सुरतरु काटियत है ॥ गारी देत नीच हरिचंदहू दधीचिहूको, आपने चना चवाइ हाथ चाटियत है ॥ आप महापातकी हँसत हरि हरहूको, आपु है अभागी भूरिभागी डाटियत है ॥ कलिको कलुप मन मलिन किये महंत, मशककी पांसुरी पयोधि पाटियत है ॥ ९३ ॥ सुनिये कराल कलिकाल भूमिपाल तुम, जाहि घालो चाहिये कहौ धौं राखै ताहि को ॥ हौंतौ दीन दूबरो बिगारो ढारो रावरो न, ताको हुतुमहुँ सकल जग जाहि को ॥ काम कोह लाइके देखाइयत आंखि मोहिं, येत मान अकस कीवेको आपु आहि को ॥ साहिब सुजान जिन श्वानहूको पक्ष कियो, राम बोला नाम हौं गुलाम राम साहिको ॥ ९४ ॥ (सवैया) साँची कहौं कलिकाल करालमैं, ढारो बिगारो तिहारो कहा है ॥ कामको कोहको लोभको मोहको, मोहिसों आनि प्रपंच रहा है ॥ हौ जगनायक लायक आजुपै, मेरियो टेंव कुटेंव महा है ॥ जानकीनाथ बिना तुलसी, जग दूसरेसों करिहौं न हहा है ॥ ९५ ॥ भागीरथी जल पान करौं, अरुनाम द्वै रामके लेत नितैहौं ॥ मोसों न लेनो न देनो

कछु, कलि भूलि न रावरी ओर चितैहौं ॥ जानिकै जोर करो परिणाम, तुम्हैं पछितैहो पै मैं न भितैहौं ॥ ब्राह्मण ज्यों उगिल्यो उरगारिहौं, त्योंहीं तिहारे हिय न हितैहौं ॥ ९६ ॥ राज मरालके बालक पेलिकै, पालत लालत खूसरको ॥ शुचि सुंदर सालि सकेलि सुवारिकै, बीज बटोरत ऊसरको ॥ गुण ज्ञान गुमान भभेरि बडो, कलपद्रुम काटत मूसरको ॥ कलिकाल विचार अचार हरी, नहिं सूझे कछु धमधूसरको ॥ ९७ ॥ कीबे कहा पढिबेको कहा, फल बूझि न वेदको भेद विचार्यो ॥ स्वारथको परमारथको कलि, कामद रामके नाम विसार्यो ॥ वाद विवाद विषाद बढाइकै, छाती पराई औ आपनि जार्यो ॥ चारिहुको छहुको नवको दश, आठको पाठ कुकाठ ज्यों भार्यो ॥ ९८ ॥ आगम वेद पुराण बखानत, मारग कोटिक जाहिं न जाने ॥ जे मुनिते पुनि आपुहि आपुको, ईश कहावत सिद्ध सयाने ॥ धर्म सबै कलिकाल ग्रसे, जप योग विराग लै जीव पराने ॥ को करि शोच मरै तुलसी, हम जानकिनाथ के हाथ बिकाने ॥ ९९ ॥ धूत कहौ अवधूत कहौ, रजपूत कहौ जोलहा कहौ कोऊ ॥ काहूकी बेटिसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगारन सोऊ ॥ तुलसी सरनाम गुलाम है रामको, जाको रुचै सो कहै कछु

ओऊ ॥ मांगिकै खबो मसीदको सोइबो, लेबेको एक न देबेको दोऊ ॥ १०० ॥ (घनाक्षरी) मेरे जाति पाँति न चहौं काहूकी जाति पाँति, मेरे कोऊ कामको न हौं काहूके कामको ॥ लोक परलोक रघुनाथहीके हाथ सब, भारी है भरोसो तुलसीके एक नामको ॥ अतिही अयाने उपखानो नहिं बूझें लोग, साहेबको गोत गात होत है गुलामको ॥साधुकै असाधुकै भलाकि पोच शोच कहा, काहूके द्वार परों जोहौं सोहौं रामको ॥ १०१ ॥ कोऊ कहै करत कुसाज दगावाज बडो, कोऊ कहै रामको गुलाम खरो खूब है ॥ साधु जानैं महासाधु खल जानैं महाखल, वानी झूँठी सांची कोटि उठत हबूब है॥चहत न काहूसों कहत न काहूकी कछू, सबकी सहत उर अन्तर न ऊबै है ॥ तुलसीको भलो पोच हाथ रघुनाथहकि, रामकी भगति भूमि मेरी मति दूब है ॥ १०२ ॥ जागैं योगी जंगम यती समाज ध्यान धरैं,डरैं उर भारी लोभ मोह कोह काम के ॥ जागैं राजा राज काज सेवक समाज साज,शोचैं सुनि समाचार बडे वैरी वामके ॥ जागैं बुध विद्या हित पंडित चकित चित, जागैं लाभा लालची धरणि धन धामके ॥ जागैं भोगी भोगही वियोगी रोगी रोग वश, सोवै सुख तुलसी भरोसे एक रामके ॥ १०३ ॥ (छप्पय) राम मातु पितु बंधु सुजन गुरु पूज्य परम

हित ॥ साहेब सखा सहाय नेह नाते पुनीत चित ॥ देश कोश कुल कर्म धर्म धन धाम धरणिगति॥जाति पाँति सबभाँति लागि रामहिं हमारि पति ॥ परमारथ स्वारथ सुयश सुलभ रामते सकल फल ॥ कह तुलसि दास अब जब कबहुँ एक रामते मोर भल ॥ १०४ ॥ महाराज बलि जाउँ रामसेवक सुखदायक ॥ महाराज जाउँ राम सुन्दर सब लायक ॥ महाराज बलि जाउँ राम सब संकट मोचन ॥ महाराज बलि जाउँ राम राजीव विलोचन ॥ बलि जाउँ राम करुणायतन प्रण-तपाल पातकहरण ॥बलि जाउँ राम कलि भय विकल तुलसिदास राखिय शरण ॥ १०५ ॥ जय ताडका सुबाहु मथन मारीच मानहर ॥ मुनिमख रक्षण दक्ष शिलातारण करुणाकर ॥ नृपगण बल मदसहित शंभु कोदंड विहंडन ॥ जय कुठारधर दर्पदलन दिनकर कुल मंडन ॥ जय जनकनगर आनंदप्रद सुखसागर सुखमाभवन ॥ कह तुलसिदास सुर मुकुटमणि जय जयजय जानकिरमण ॥ १०६ ॥ जयजयंत जयकर अनंत सज्जनजनरंजन ॥ जय विराधवध विदुष विबुध मुनिगण भयभंजन ॥ जय निशिचरी विरूपकरन रघु-वंशविभूषण ॥ सुभट चतुर्दश सहस दलन त्रिशिराखर दूषण ॥जय दण्डकवन पावन करन तुलसिदास संशय शमन॥ जगविदित जगतमणि जयति जय जय जय जय

जानकिरमन॥१०७॥जय मायामृग मथन गीधशवरी उ-
द्धारण।जय कबन्धसूदन विशाल तरुताल विदारण।दवन
वालि बलशालि थपन सुग्रीव सन्तहित ॥ कपिकराल
भट भालुकटक पावन कृपालुचित ॥ जय सियवियोग
दुखहेतु कृत सेतुबन्ध वारिधि दमन ॥ दशशीश
विभीषण अभयप्रद जय जय जय जानकिरमन॥१०८॥
कनक कुधरकेदार बीज सुंदर सुरमणिवर ॥ सींचि
कामधुकधेनु सुधामय पय विशुद्धतर ॥ तीरथपति
अंकुर स्वरूप यक्षेश रक्ष तेहिं ॥ मरकत मय शाखा
सुपत्र मंजरि अलक्ष जेहि॥ कैवल्य सकल फल कल्प-
तरु शुभ स्वभाव सब सुख बरिस ॥ कह तुलसिदास
रघुवंशमणि तौकि होहि तवकर सरिस ॥ १०९ ॥ जाइ
सो सुभट समर्थ पाइ रण रारि न मंडै ॥ जाइ सो
यती कहाय विषय बासना न छंडै ॥ जाइ धनिक बिन
दान जाइ निर्धन बिनु धर्महिं ॥ जाइ सो पंडित पढ़ि
पुराण जो रत्न सुकर्महिं ॥ सुत जाइ मातु पितु भक्ति
बिनु तिय सो जाइ जाह पति न हित ॥ सब जाइ
दास तुलसी कहै जौ न रामपद नेह नित ॥ ११० ॥
को न क्रोध निरदह्यो काम वश केहि नहिं कीन्हों ॥
को न लोभ दृढफंद बाँधि त्रासन करि दीन्हों ॥ कवन
हृदय नहिं लाग कठिन अति नारिनयन शर ॥ लोच-
नयुत नहिं अंध भयो श्रीपाइ कवन नर ॥ सुर नाग

लोक महिमंडलहु को जु मोह कीन्हों जयन ॥ कह तुलसिदास सो ऊबरै जेहि राख राम राजिवनयन ॥ १११ ॥ (सवैया) भौंह कमान सँधान सुठान, जे नारि विलोकनि बाणते बाचै ॥ कोप कृशानु गुमान अवाँघट, ज्यों जिनके मन आँचन आँचे ॥ लोभ सबै नटके वश ह्वै,कपि ज्यों जगमें बहु नाचन नाचे॥ नीके हैं साधु सबै तुलसी, पै तेई रघुवीरके सेवक साँचे ॥ ११२ ॥ (कवित्त) भेष सुबनाय भले बचन कहैं चुवाइ, जाइ तौ न जरनि धरणि धन धामकी ॥ कोटिक उपाय करि लालि पालियत देह, मुख कहि-यत गति रामहीके नामकी ॥ प्रगटै उपासना दुरावै दुर्वासनाहिं, मानस निवास भूरि लोभ मोह कामकी ॥ राग रोष ईर्षा कपट कुटिलाई भरे, तुलसीसे भगत भगति चहै रामकी ॥ ११३ ॥ काल्हिही तरुण तन काल्हिही धरणि धन, काल्हिही जितौंगो रण कहत कुचालि है ॥ काल्हिही साधौंगो काज काल्हिही राजा समाज, मसक ह्वै कहै भारत मेरे मेरु हालि है ॥ तुलसी यही कुभाँति घने घर घालि आये, घने घर घालत है घने घर घालि है ॥ देखत सुनत समुझतहू न सूझै सोई, कबहूं कह्यो न काहूको काल काल्हि है ॥ ११४॥ भयो न तिकाल तिहूं लोक तुलसीसों मन्द, निंदै सब साधु सुनि मानौ न सकोचु हौं ॥ जानत न

योग हिय हानि मानै जानकीश,काहको परेखो हौं पापि प्रपंची पोचु हौं ॥ पेट भरिवेके काज महाराजको कहायों, महाराजहू कह्यो है प्रणत विमोचु हौं ॥ निज अघ जाल कलिकालकी करालता, विलोकि होत व्याकुल करत सोई शोचुहौं ॥ ११५ ॥ धरमको सेतु जगमंगलको हेतु भूमि, भार हरिवेको अवतार लियो नरको ॥ नीति औ प्रतीति प्रीति पालचालि प्रभु मान, लोक वेद राखिवेको प्रण रघुवरको ॥ वानर विभीषणकी ओरको कनावडो है, सो प्रसंग सुने अंग जरे अनुचरको ॥ राखे रीति आपनी जो होइ सोई कीजै बलि, तुलसी तिहारो घर जाय वाही घरको ॥ ११६ ॥ नाम महाराजके निवाही नीकी कीजै उर, सबही सोहात मैं न लोगनि सोहात हौं ॥ कीजै राम वार यहि मेरी ओर चखकारे, ताहि लगि रंक ज्यों सनेहको ललात हौं ॥ तुलसी विलोकि कलि कालकी करालता, कृपालुको स्वभाव समुझत सकुचात हौं ॥ लोक एक भांतिको त्रिलोकनाथ लोकवश, आपनो न शोच स्वामी शोचही सुखात हौं ॥ ११७ ॥ तौलों लोभ लोलुप ललात लालची लबार, बार बार लालच धरणि धन धामको ॥ तबलों वियोग रोग शोग भोग यातनाके, युग सम लागत जीवन याम यामको ॥ तौलों दुख दारिद दहत आत नित तनु,

तुलसी है किंकर विमोह कोह कामको ॥ सब दुख आपने निरापने सकल सुख, जौलों जन भयो न बजाइ राजा रामको ॥ ११८॥ तबलौं मलीन हीन दीन सुख सपने न, जहाँ तहाँ दुखीजन भाजन कलेशको ॥ तबलों उबैने पायँ फिरत पेटौ खलाय, बाये मुख सहत पराभौ देश देशको ॥ तबलों दयावनो दुसह दुखदारिदको, साथरीको सोइबो ओढिबो झूने खेशको ॥ जबलौं न भजै जीह जानकीरमण राम,राजनको राजा सोतौ साहब महेशको ॥ ११९ ॥ ईशनके ईश महाराजनके महाराज, देवनके देवदेव प्राणहूंके प्राण हौ॥ कालहूके काल महाभूतनके महाभूत, कर्महूके कर्म निदानहूके निदान हौ ॥ निगमको अगम सुगम तुलसीहूसेको, येते मान शीलसिंधु करुणानिधान हौ॥ महिमा अपार काहू बोलको न वारापार, बडी साहिबीमें नाथ बडे सावधान हौ ॥ १२० ॥ (सवैया) आरतपाल कृपालु जो राम, जेही सुमिरे तेहिको तहँ ठाढे ॥ नामप्रताप महामहिमा, अँकरेकिये खोटेउ छोटेउ बाढे ॥ सेवक एकते एक अनेक, भये तुलसी तिहुँ तापन डाढे ॥ प्रेम बडो प्रह्लादहिको जिन पाहनते परमेश्वर काढे ॥ १२१ ॥ काढि कृपान कृपानकहूं पितु, कालकराल विलोकि न भागे ॥ राम

कहाँ सब ठाउ है खंभमें, हा सुनि हांक नृकेहरि जागे॥
वैरि विदारि भये विकराल, कहे प्रहलादहिके अनुरागे॥
प्रीति प्रीतीति बढी तुलसी, तबते सब पाहन पूजनलागे
॥ १२२ ॥ अंतर्य्यामिहुते बड बाहर, जानिहैं राम जे
नाम लियेते ॥ धावत धेनु पन्हाइ लवाइ ज्यों, बालक
बोलनि कान कियेते ॥ आपनि बूझि कहै तुलसी,
कहिबेकी न बावरि बात वियेते॥ पैजपरे प्रहलादहुको,
प्रगटे प्रभु पाहनते न हियेते ॥ १२३ ॥ बालक बोलि
दिये बलिकालको, कायर कोटि कुचाल चलाई॥पापि
है बाप बडे परितापते, आपनी ओरते खोरि न लाई ॥
भूरि दई विषमूरि भई,प्रहलाद सुधाई सुधाकी मलाई॥
रामकृपा तुलसी जनको, जग होत भलेको भलोई
भलाई ॥ १२४ ॥ कंस करी व्रजवासिनपै, करतूति
कुभाँति चली न चलाई ॥ पाण्डुके पूत सपूत कुपूत,
सुयोधन भो कलि छोटो छलाई ॥ कान्ह कृपालु बडे
नतपाल, गये खलखेचर खीस खलाई॥ठीक प्रतीति
कहै तुलसी, जग होइ भलेको भलोई भलाई ॥१२५॥
अवनीश अनेक भये अवनी, जिनके डरते सुरशोच
सुखाहीं ॥ मानव दानव देवसतावन, रावण घाटि
रच्यो जगमाहीं ॥ ते मिलये धरि धूरि सुयोधन,

जे चलते बहुछत्र कि छाहीं ॥ वेद पुराण कहै जग जान, गुमान गोविंदहि भावत नाहीं ॥ १२६ ॥ जब नयनन प्रीति ठय ठग श्यामसों, स्यानी सखी हठिहौं वरजी ॥ नहिं जानो वियोग सुरोग है आगे, झुकी तब-हौं तेहिसों तरजी ॥ अब देह भई पटनेहके घालेसों, ब्योंत करै किरहा दरजी ॥ ब्रजराज कुमार बिना सुनु भृङ्ग, अनंग भयो जियको गरजी ॥ १२७ ॥ योग कथा पठई ब्रजको, सबसो शठ चेरीकी चालचलाकी॥ ऊधोजू कौन कहै कुबरी, जो बरी नटनागर हेरिहला-की ॥ जाहिलगै परि जानै सोई, तुलसी सो सुहागि-नि नंदललाकी ॥ जानी है जानपनी हरिकी, अब बांधियेगी कछु मोटि कलाकी॥१२८॥ (क०)पठयो है छपद छबीले कान्ह केहूकहूं, खोजिकै खवास खासो कूबरीसी बालको॥ज्ञानको कढैया बिनु गिराको पढैया बार, खालको कढैयासे वढैया उरशालको ॥ प्रीतिको बधिक रसरीतिको अधिक नीति, निपुण विवेक है निदेश देशकालको ॥ तुलसी कहे न बनै सहेही बनैगी सब, योग भयो योगको वियोग नंदलालको ॥१२९॥ हनूमान है कृपालु लाडिले लषणलाल, भावते भरत कीजै सेवक सहायजू ॥ विनती करत दीन दूबरो दयावनोसों, बिगरेते आपही सुधारी लीजै भायजू ॥

मेरी साहिबिनि सदा शीशपर बिलसत, देवि क्यों न दासको देखाइयत पायजू ॥ खीझहूमें रीझवेको बाणि राम रीझतहैं, रीझेहैहैं रामकी दुहाई रघुरायजू॥१२०॥ (सवैया) वेष विरागको राग भरो, मनमायकहौ सतिभावहौ तोसों ॥ तेरेही नाथको नाम लै बेंचिहौं, पातकी पामर प्राणनि पोसों ॥ येते बडे अपराधी अधीकहु, तैं कहो अबकी मेरो तुमोसों ॥ स्वारथको परमारथको, परिपूरण भो फिरि घाटि न होसों ॥ ॥ १२१ ॥ (घनाक्षरी) जहाँ वालमीकि भये व्याध-ते मुनींद्र साधु, मरा मरा जपे सुनि शिष ऋषि सात-की॥सीयको निवास लव कुशको जनम थल,तुलसी छुवत छाँह ताप गरै गातकी॥ विटप महीप सुर सरित समीप सोहै, सीता वट पेखत पुनीत होत पातकी ॥ वारि पुर दिग पुर बीच विलसति भूमि; अंकित जो जानकी चरण जलजातकी ॥ १२२ ॥ मरकत बरन परन फल मानिकसे, लसै जटाजूट जनु रूख वेष हरु है ॥ सुखमाको ढेरु कैधौं सुकृत सुमेरु कैधौं, संपदा सकल मुद मंगलको घरु है ॥ देत अभिमत जो समेत प्रीति सेइये, प्रतीति मानि तुलसी विचारि काको थरु है ॥ सुरसरि निकट सोहावनी अवनि सोहै, राम रमणीको वट कलि कामतरु है ॥ १२३ ॥ देवीधुनी पास मुनिवास श्रीनिवास जहाँ, प्राकृतहूं बट बुट बसत

धुरारि हैं ॥ योग जप यागको विरागको पुनीत पीठि, रागिनपै सीठि डीठि बाहरी निहारि हैं ॥ आयसु आदेश बाबू भलो भलो भावसिद्धि; तुलसी विचारि योगी कहत पुकारि हैं ॥ रामभगतनको तौ कामतरुते अधिक, सियवट सेये करतल फल चारि हैं ॥ १३४ ॥ जहाँ वन पावन सुहावनो विहंग मृग, देखि अति लागत अनंद खेट खूंटसो ॥ सीताराम लषण निवास वास मुनिनको, सिद्ध साधु साधक सबै विवेक बूटसो ॥ झरना झरत झरि शीतल पुनीत वारि, मंदाकिनि मंजुल महेश जटाजूटसो ॥ तुलसी जो रामसों सनेह साँचो चाहिये, तौ सेइये सनेहसों विचित्र चित्रकूटसो ॥ १३५ ॥ मोह वन कलिमल पल पीन जानि जिय, साधु गाइ विप्रनके भयको नेवारि है ॥ दीन्हीं है रजाइ राम पाइ सो सहाय लाल, लषण समर्थ बीर हेरि हेरि मारि है॥ मंदाकिनी मंजुल कमान असि बान जहां, बारि धार धीर धीर सुकर सुधारि है ॥ चित्रकूट अचल अहेरि बैठ्यो घात मानों, पातकके व्रात घोर सावज सँहारि है ॥ १३६ ॥ (सवैया) लागि दवारि पहार ढही, लहकी कपिलंक यथा खर खोकी ॥ चारुचुवा चहुँओर चली, लपटैं झपटैं सो तमीचर तोकी ॥ क्यों कहि जात महासुखमा, उपमा तकि ताकत है कवि कोकी ॥ मानों लसी तुलसी हनुमान, हिये जगजीति जरायकी चौकी ॥ १३७ ॥

देव कहैं अपनी अपना, अवलोकन तीरथराज चलो रे ॥ देखि मिटै अपराध अगाध, निमज्जत साधुसमाज भलो रे ॥ सोह सितासितको सिलिबो, तुलसी हुलसे हिय हेरि हलो रे ॥ मानों हरे तृण चारु चरैं, बगरे सुरधेनुके धौल कलोरे ॥ १३८ ॥ देवनदी कहँ जो जन जान, किये मनसा कुल कोटि उधारे ॥ देखि चलैं झगरैं सुरनारि, सुरेश बनाइ विमान सँवारे ॥ पूजाको साज विरंचि रचैं,तुलसी जे महातम जानन हारे॥ओक-की नीव परी हरि लोक, विलोकत गंग तरंग तिहारे ॥ १३९॥ ब्रह्म जो व्यापक वेद कहैं, गम नाहिं गिरा गुणज्ञान गुनीको ॥ जो करता भरता हरता सुर,साहिब साहिब दीन दुनीको ॥ सोई भयो द्रव रूप सहीजु है, नाथ विरंचि महेश मुनीको ॥ मानि प्रतीति सदा तुलसी, जल काहे न सेवत देवधुनीको ॥१४० ॥वारि तिहारो निहारि मुरारि, भये परसे पद पाप लहौंगो ॥ ईश ह्वै शीश धरौंपै डरौं,प्रभुकी समता बड़ दोष कहौंगो॥ वरु बारहि बार शरीर धरौं, रघुवीरको ह्वै तव तीर रहौंगो ॥ भागीरथी बिनवौं करजोरि, बहोरि न खोरि लगै सो कहौंगो ॥ १४१॥(कवित्त) लालची ललात विललात द्वार द्वार दीन, वदन मलीन मन मिटै न विभू-रना ॥ ताकत सराधकै विवाहकै उछाह कछू, डोलै लोल बूझत शबद ढोल तूरना ॥ प्यासेहु न पावै बारि

भूखे न चनक चारि, चाहत अहार तपहार दारि कूरना॥ शोकको अगार दुख भार भरो तौलोंजन, जौलों देवी द्रवै न भवानी अन्न पूरना ॥१४२॥ (छप्पय) भस्म अंग मर्दन अनंग संतत असंगहर॥शीश गंग गिरिजा अर्धंग भूषण भुजंगवर ॥ मुण्डमाल विधु बाल भाल डमरू कपालकर ॥ विबुध वृंद नवकुमुद चन्द सुख-कन्द शूलधर ॥ त्रिपुरारि त्रिलोचन दिग्वसन विष भोजन भव भय हरण ॥ कह तुलसिदास सेवत सुलभ शिव शिव शिव शंकर शरण ॥ १४३ ॥ गरल अशन दिग्वसन व्यसन भंजन जनरंजन॥ कुंद इंदु कर्पूरगौर सच्चिदानंदघन ॥ विकटवेष उरशेश शीशसुर सरित सहज शुचि ॥ शिव अकाम अभिराम धाम नित राम नामरुचि ॥ कंदर्पदर्प दुर्गमदवन उमा रमण गुणभवनहर ॥ तुलसीश त्रिलोचन त्रिगुण पर त्रिपुरमथन जय त्रिदशवर ॥१४४॥ अर्ध अंग अंगना नाम योगीश योगपति ॥ विषम अशन दिगवसन नाम विश्वेश विश्वगति ॥ कर कपाल शिर माल व्याल विष भूति विभूषण ॥ नाम शुद्ध अविरुद्ध अमर अनवद्य अदूषण ॥ विकराल भूत वैतालप्रिय भीम नाम भवभय दमन ॥ सब विधि समर्थ महिमा अकथ तुल-सिदास संशयशमन ॥ १४५ ॥ भूतनाथ भवहरण भीम भय भवन भूमिधर ॥ भानुमंत भगवंत भूति

भूषण भुजंगवर॥ अन्य भाव वल्लभ भवभार त्रिभंजन॥ भूरि भोग भैरव कुयोग गंजन जनरंजन ॥ भारती बदन विष अशन शिव शशि पतंग पावकनयन॥ कह तुलसिदास किन भजसि मन भद्रसदन मर्दनमयन ॥ १४६ ॥ (सवैया) नांगो फिरै कहै मांगतो देखि. न खांगो कछू जनि मांगिये थोरो ॥ राँकनि नाकप रीझि करै, तुलसी जग जो याचक जोरो ॥ नाक सवाँरत आयोहौं नाकहि, नाहिं पिनाकिहि नेकु निहोरो ॥ विरंचि कहै गिरिजा सिखवो, पति रावरो दानि है बावरो भोरो ॥ १४७ ॥ विष पावक व्याल कराल गरे, शरणागत तौ तिहुँ तापन डाढे ॥ भूत वैताल सखा भव नाम, दलै पलमें भवके भय गाढे ॥ तुलसीश दरिद्र शिरोमणिसों, सुमिरे दुखदारिद होहिं न ठाढे ॥ भौनमें भांग धतूरोई आंगन, नांगेके जागे हैं माँगने बाढे ॥ १४८ ॥ शीश जटा वरदा वरदानि, चढेउ वरदा धरन्यों वरदा है ॥ धाम धतूरो विभूतिको कूरो, निवास तहाँ सबलै मरदा है ॥ व्यालि कपाली है ख्याली चहूँदिशि, भांगके टाटिनको परदा है ॥ रंक शिरोमणि काकिणिभाव, विलोकत लोकपको करदा है ॥ १४९ ॥ दानि जो चारि पदारथको, त्रिपुरारि तिहूँपुरमें शिर टीको ॥ भोरो भलो भले भायको भूखो, भलोई कियो सुमिरे तुलसीको ॥

ता बिन आशको दास भयो, कबहूँ न मिटचो लघु लालच जीको ॥ साधो कहा करि साधनते, जोपै राधो नहीं पति पारबतीको ॥ १९० ॥ जात जरे सब लोक विलोकि, त्रिलोचनसों विष लोकि लियो है ॥ पान कियो विष भूषण भो, करुणा वरुणालय सांइ हियो है ॥ मेरोई फोरिबे योग कपार, किधौं कछु काहू लखाइ दियो है ॥ काहे न कान करो विनती, तुलसी कलिकाल विहाल कियो है ॥ १९१ ॥ (कवित्त) खायो कालकूट भयो अजर अमर तनु, भवन मशान गथ गांठरी गरदकी ॥ डमरू कपाल कर भूषण कराल व्याल, बावरे वडेकी रीझ बाहन बरदकी ॥ तुलसी विशाल गोरे गात विलसति भूति, मानों हिमगिरि चारुचाँदनी शरदकी ॥ अर्थ धर्म काम मोक्ष वसत विलोकनिमें, काशी करामाति योगी जागत मरदकी ॥ १९२ ॥ पिंगल जटा कलाप माथेपै पुनीत आप, पावक प्रताप नयना छुपर बरत हैं॥ लोचन विशाल लाल सोहै लाल चन्द्र भाल, कंठ कालकूट व्याल भूषण धरत हैं ॥ देत न अघात रीझि जात पात आकहीके, भोलानाथ योगी जब औढर ढरत है ॥ सुंदर दिगम्बर विभूति गात भांग खात, रूरे शृंगी पुरे काल कंटक हरत हैं ॥ १९३ ॥ देत संपदा समेत श्रीनिकेत याच-

कनि, भवन विभूति भांग वृषभ बहनु है ॥ नाम वाम-देव दाहिनो सदा असंग रंग, अर्द्धंग अंगना अनंगको महनु है ॥ तुलसी महेशको प्रभाव भावही सुगम, गिरा अगमनिहूंको जानिबो गहनु है ॥ वेष तौ भिखारिको भयंकर रूप शंकर, दयालु दीनबंधु दानि दारिद दहनु है ॥ १९४ ॥ चाहै न अनंग अरि एकौ अंग मांग-नेको, देबोई पै जानिये स्वभाव सिद्ध वानिसों ॥ वारि बुंद चारि त्रिपुरारि पर डारिये तौ, देत फल चारि लेत सेवा साँची मानिसों ॥ तुलसी भरोसो न भवेश भोलानाथको तौ, कोटिक कलेश करो मरो छार छानिसों ॥ दारिद दमन दुख दोष दाह दावानल, दुनी न दयालु दूजो दानि शूलपाणिसों ॥ १९५ ॥ काहेको अनेक देव सेवत जागै मशान, खोवत अपान शठ होत हठि प्रेत रे ॥ काहेको कोटि उपाइ करत मरत धाय, याचत नरेश देश देशके अचेत रे ॥ तुलसी प्रतीति बिनु त्यागे तौ प्रयाग तनु, धनहीके हेतु दान देत कुरु खेत रे ॥ पात द्वै धतूरके द्वै भोरेकै भवेश सो, सुरेश-हीकी संपदा सुभाय सो न लेत रे ॥ १९६ ॥ स्यन्दन गयंद बाजिराजि भले भले भट, धन धाम निकर करनिहू न पूजै कै ॥ वनिता विनीत पूत पावन सोहावन औ, विनय विवेक विद्या सुभग शरीर वै ॥ यहां ऐसो सुख परलोक शिवलोक ओक, ताको फल

तुलसी सो सुनौ सावधान है ॥ जाने बिनु जानेके रिसाने केलि कबहुँक, शिवहि चढाये हैं हैं बेलके पतौवा है ॥ १६७ ॥ रतिसी रवनि सिंधु मेखला अवनिपति, औनिप अनेक ठाढे हाथ जोरि हारिके ॥ संपदा समाज देखि लाज सुरराजहूके, सुख सब विधि दांध दीन्हे हैं सँवारिकै ॥ यहाँ ऐसो सुख सुरलोकनाथ पद,ताको फल तुलसी सो कहैगो विचारिकै॥आकके प तौवा चारि फूलहू धतूरेके है,दीन्हें ह्वैहैं बारक पुरारिपर डारिकै ॥ १६८ ॥ देवसरि सेवौ वामदेव गाउँ रावरेही, नाम रामहीके माँगि उदर भरत हौं ॥ दीबे योग तुलसी न लेत काहूको कछुक, लिखी न भलाई भल पोचन करत हौं ॥ येतेहू पर कोऊ जो रावरोहूं जोर करै,ताको जोर देवदीन द्वारे गुदरत हौं ॥ पाइके उराहनो उरहनो न दीजै मोहिं, कालि काला काशीनाथ कहे निवरत हौं ॥ १६९ ॥ चेरो राम रायको सुयश सुनि तेरो हर, पाइ तर आइ रह्यों सुरसरि तीर हौं ॥ वामदेव रामको स्वभाव शील जानियत, नाता नेह जानि जिय रघुवीर भीर हौं ॥ अवि भूत वेदन विषम होत भूतनाथ,तुलसी विकल पाहि पचत कुपीर हौं ॥ मारिये तो अनायास काशीवास खास फल, ज्याइये तौ कृपा करि निरुज शरीर हौं ॥ १६० ॥ जीवेकी न लालसा दयालु महादेव मोहिं, मालुम हैं तोहिं मरिबेको रहतु हौं ॥ काम

रिपु रामके गुलामनिको कामतरु, अवलंब जगदम्ब सहित चहतु हौं ॥ रोग भये भूत सो कुसूत भयो तुलसीको, भूतनाथ पाहि पदपंकज गहतु हौं ॥ ज्याइये तौ जानकीरमण जन जानि जिय, मारिये तौ मांगी मीचु सुधिये कहतु हौं ॥ १६१ ॥ भूत भव भवति पिशाच दूत प्रेत प्रिय, आपनो समाज शिव आपु नीके जानिये ॥ नाना वेष वाहन विभूषण वसन वास, खान पान बलि पूजा विधिको वखानिये ॥ रामके गुलामनिकी रीति प्रीति सूधी सब, सबसों सनेह सबहीको सनमानिये ॥ तुलसीकी सुधरे सुधारे भूतनाथहीके, मेरे माय बाप गुरु शंकर भवानिये ॥ ॥ १६२ ॥ गौरीनाथ भोलानाथ भवत भवानीनाथ, विश्वनाथ पुर फिरि आन कलिकालकी ॥ शंकरसे नर गिरिजासी नारि काशीवासी, वेद कही सही शशिशेखर कृपालकी ॥ छमुख गणेशते महेशते पियारे लोग, विकल विलोकियत नगरी विहालकी ॥ परी सुरवेलि केलि काटत किरात कलि, निठुर निहारिये उघारि डीठि भालकी ॥ १६३ ॥ ठाकुर महेश ठकुराइनि उमासी जहाँ, लोक वेदहू विदित महिमा ठहरकी ॥ भट रुद्र गण भूत गणपति सेनापति, कलिकालकी कुचाल काहूतौ न हरकी ॥ बसी विश्वनाथकी विषाद बडो वाराणसी, बूझिये न ऐसी गति शंकर शहरकी ॥

कैसे कहे तुलसी वृषासुरके वरदानि, बानि जानि सुधा तजि पिय निज हरकी ॥ १६४ ॥ लोक वेदहू विदित वाराणसीकी बडाई, बासी नर नारि ईश अंबिका स्वरूप हैं ॥ कालनाथ कोतवाल दंडकारि दंडपाणि, सभासद्गणपसे अमित अनूप हैं ॥ तहाँऊ कुचालि कलिकालकी कुरीति कैधौं, जानत न मूढ इहाँ भूतनाथ भूप हैं ॥फलै फूलै फैले खलसीदैं साधु पलपल, वाती दीपमालिका ठठाइयत सूप हैं ॥ १६५ ॥ पंचकोश पुण्य कोष स्वारथ परारथको, जानि आप आपने सुपास वास दियो है ॥ नीच नर नारि न सँभारि सके आदर, लहन फल कादर विचारि जो न कियो है ॥ बारी वाराणसी बिनु कहे चक्र चक्रपानि, मानि हित मानि सो मुरारि मनभियो है ॥ रोषमें भरोसो एक आशुतोष कहि जात, त्रिशूल विलोकि लोक कालकूट पियो है ॥ १६६ ॥ रचत विरंचि हरि पालत हरत हर, तेरेही प्रसाद जग अगजग पालिके ॥ तोहिमें विकास विश्व तोहिमें विकास सब, तोहिमें समात मातु भूमिधर वालिके ॥दीजै अवलंब जगदम्ब न विलंब कीजे, करुणा तरंगिनी कृपातरंग मालिके ॥ रोष महामारी परितोष महतारी दुनि, देखिये दुखारी मुनि मानस मरालिके ॥ १६७ ॥ निपट बसेरे अघ औगुण घनेरे नर, नारिऊ अनेरे जगदंब चेरी चेरे हैं ॥ दारिद दुखारी

देखि भूसुर भिखारी भीरु, लोभ मोह काम कोह कलिमल घेरे हैं ॥ लोकरीति राखि राम साखि वाम देव जानि, जनकी विनति मानि मातु कहि मेरे हैं ॥ महामारी महेशानि महा महिमाकि खानि, मोद मंगलकी राशि काशीवासी तेरे हैं ॥१६८॥ लोगनको पाप कैधौं सिद्ध सुर शाप कैधौं, कालके प्रताप काशी तिहूं ताप तई है ॥ ऊंचे नीचे बीचके धनिक रंक राजा राय, हठानि बजायकरि डीठि पीठि दई है ॥ देवता निहोरे महामारिन्हसों कर जोरे, भोलानाथ जानि भोरे आपनीसी ठई है ॥ करुणानिधान हनुमान वीर बलवान, यशराशि जहाँ तहाँ तैहीं लूटि लईहै॥१६९॥ शंकर शहर सर नर नारि वारिचर, विकल सकल महामारी माया भई है ॥ उछरत उतरात हहरात मरिजात, भभरि भगत जल थल मीचु मई है ॥ देवन दयालु महिपालन कृपालु चित, वाराणसी बाढत अनीति नित नई है ॥ पाहि रघुराज पाहि कपिराज रामदूत, रामहूकी बिगरी तुहीं सुधारि लई है ॥ १७० ॥ एकतौ कराल कलिकाल शूल मूलतामें, कोढमेंकी खाजुसी शनीचरी है मीनकी ॥ वेद धर्म दूर गये भूप चोर भूप भये, साधु सिद्ध मान जन बीते पाप पीनकी ॥ दूबरेको दूसरो न द्वार रामदया धाम, रावरोई गतिबल विभव बिहानकी ॥ लागैगी पै लाजवा विराजमान

विरदहिं, महाराज आजु जो न देत दादि दीनकी ॥ ॥ १७१ ॥ रामनाम मातु पितु स्वामिसमरथ हितु, आश राम नामको भरोसो रामनामको ॥ प्रेम रामनामहींसों नेम रामनामहीको, जानो न परम पद दाहिनो न वामको ॥ स्वारथ सकल परमारथको रामनाम, रामनामहीन तुलसी न काहू कामको ॥ रामकी शपथ सरवस्व मेरे रामनाम, कामधेनु कामतरु मोसे क्षीण छामको ॥ १७२ ॥ (सवैया) मारग मारि महीसुर मारि, कुमारग कोटिककै धन लीयो ॥ शंकर कोपसो पापको दाम, परीक्षित जाहिगो जारिकै हीयो॥काशीमें कंटक जेते भये, ते गोपाइ अघाइकै आपनो कीयो ॥ आजुकि काल्हि परों कि नरों, जड जाहिंगे चाटि देवारिको दीयो ॥ १७३ ॥ कुंकुम रंग सुअंग जितो, मुखचंद्रसों चंदन होड परी है ॥ बोलत बोल समृद्धि चुवै, अवलोकत शोच विषाद हरी है ॥ गौरीकी गंग विहंगिनि वेष कि, मंजुल मूरति मोद भरी है ॥ पेखि सप्रेम पयान समय सब, शोच विमोचन क्षेम करी है ॥ १७४ ॥ (घ०) मंगलकी राशि परमारथकी खानि जानि, विरचि बनाई विधि केशव बसाई है ॥ प्रलयहू काल राखी शूलपाणि शूलपर, मीचुवश नीच सोऊ चहत खसाई है ॥ छाँडि क्षितिपाल तो परीक्षित भये कृपालु, भलो कियो खलको निकाई सो नसाई है ॥

पाहि हनुमान करुणानिधान राम पाहि, काशि काम धेनु कलिकुहत कसाई है ॥ १७५ ॥ विरची विरंचिकी बसति विश्वनाथकी जो, प्राणहूते प्यारी पुरी केशव कृपालकी ॥ ज्योतिरूप लिंगमई अगनित अंगमई, मोक्ष बितरनि बिदरनि जगजालकी ॥ देवी देव देव-सरि सिद्धि मुनि वरवास, लोपति विलोकति कुलिपि भोंडे भालकी ॥ हाहा करै तुलसी दयानिधान राम ऐसी, काशीकी कदर्थना कराल कलिकालकी॥१७६॥ आश्रम वरण कलि विवश बिकल भये, निज २ मर-याद मोटरीसि डार दी ॥ शंकर सरोप महामारिहीते जानियत, साहिब सरोष दुनी दीन दीन दारदी ॥ नारि नर आरत पुकारत सुनैं न कोउ, कोहू देवननि मिलि मोटी सूठी मारदी ॥ तुलसी सभीत पाल सुमिर कृपालु राम, समय सुकरुणा सराहि सनकार दी ॥ १७७ ॥

इति श्रीतुलसीदासकृतकवित्तरामायणे

उत्तरकाण्डः समाप्तः ।

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-विनयपत्रिका ।

राग बिलावल ।

गाइये गणपति जगवन्दन । शङ्करसुवन भवानीनन्दन ॥ सिद्धिसदन गजवदन विनायक । कृपासिंधु सुन्दर सबलायक ॥ मोदकप्रिय मुदमङ्गलदाता । विद्यावारिधि बुद्धिविधाता ॥ माँगत तुलसिदास कर जोरे ॥ बसहिं राम सिया मानस मोरे ॥ १ ॥ दीनदयालु दिवाकर देवा । कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा ॥ हिम तमकरी केहरि करमाली । दहन दोष दुख दुरित रुजाली ॥ कोक कोकनद लोक प्रकाशी । तेज प्रताप रूप रसराशी ॥ सारथि पंगु दिव्यरथगामी । हरि शङ्कर विधि मूरति स्वामी ॥ वेद पुराण प्रगट यश जागै । तुलसी रामभक्ति वर माँगै ॥२॥ को याचिये शंभु तजि आन । दीनदयालु भक्त आरतहर, सब प्रकार समरथ भगवान ॥ कालकूटज्वर जरत सुरासुर; निजपन लागि कियो विष पान । दारुण दनुज जगत दुखदायक, मारचो त्रिपुर एकही बान ॥ जो गति अगम महामुनि

दुर्लभ, कहत सन्त श्रुति सकल पुरान। सो गति मरण काल अपने पुर, देत सदाशिव सबहिं समान॥ सेवत सुलभ उदार कल्पतरु, पारवतीपति परमसुजान। देहु कामरिपु रामचरण रति, तुलसिदास कहँ कृपा-निधान॥ ३॥

राग धनाश्री।

दानी कहुँ शंकर सम नाहिं॥ दीनयदालु दिबोई भावै, याचक सदा सिहाहीं॥ मारिकै मार थप्यो जग-में जाकी, प्रथम रेख भटमाहीं। ता ठाकुरको रीझि निवाजिबो, कह्यो क्यों परत मोपाहीं॥ योग कोटि करि जो गति हरिसों, मुनि माँगत सकुचाहीं। वेदवि-दित तेहि पद पुरारि पुर, कीट पतङ्ग समाहीं। ईश उदार उमापति परिहरि, अनत जे याचन जाहीं॥ तुलसिदास ते मूढ माँगने, कबहुँ न पेट अघाहीं॥ ४॥ बावरो रावरो नाह भवानी। दानि बडो दिन देत दये बिन, वेद बडाई भानी॥ निज घरकी वर बात विलो-कहु, हौ तुम परमसयानी॥ शिवकी दई सम्पदा देखत, श्रीशारदा सिहानी॥ जिनके भाल लिखी लिपि मेरी, सुखकी नहीं निसानी। तिन्ह रंकनको नाक सँवारत, हौं आयो नकबानी॥ देखि दीनता दुखियनके दुख, याचकता अकुलानी। यह अधिकारी सौंपिये औरहि, भीख भली मैं जानी॥ प्रेम प्रशंसा विनय व्यँगयुत,

सुनि विधि की वर बानी । तुलसी मुदित महेश मनहिं मन जगतमातु मुसुकानी ॥ ५ ॥

राग रामकली ।

याचिये गिरिजापति कासी । जासु भवन अणिमादिक दासी ॥ औढर दानि द्रवत पुनि थोरे । सकत न देखि दीन कर जोरे ॥ सुख सम्पति मति सुमति सुहाई । सकल सुलभ शंकर सेवकाई ॥ गये शरण आरतके लीन्हें । निरखि निहाल निमिषमहँ कीन्हें ॥ तुलसिदास याचक यश गावै । विमल भक्ति रघुपतिकी पावै ॥ ६ ॥ कस न दीन पर द्रवहु उमावर । दारुणविपति हरण करुणाकर ॥ वेद पुराण कहत उदार हर । हमरि वेर कस भयहु कृपणतर ॥ कवन भक्ति कीन्हीं गुणनिधि द्विज । ह्वै प्रसन्न दीन्हेहु शिव पद निज ॥ जो गति अगम महामुनि गावहिं । तव पुर कीट पतंगहु पावहिं ॥ देहु कामरिपु रामचरण रति । तुलसिदास प्रभु हरहु भेद मति ॥ ७ ॥ देव बडे दाता बडे शंकर बडे भोरे । किये दूर दुख सबनिके जिन २ करजोरे ॥ सेवा सुमिरण पूजिबो पात अक्षत थोरे । दियो जगत जहँ लगि सबै सुख गज रथ घोरे ॥ गाँउ बसत वासदेव मैं कबहूं न निहोरे । अधिभौतिक बाधा भई ते किंकर तोरे ॥ वेगि बोलि बरजिये कर वलि

तूति कठोरे। तुलसी दल सूंध्यो चहै शठ साखि सिहोरे ॥ ८ ॥ शिव शिव होइ प्रसन्न अरु दाया। करुणामय उदार कीरति बलि जाउँ हरहु निज माया ॥ जलजनयन गुणअयन मयनरिपु महिमा जान न कोई। विन तव कृपा रामपदपंकज स्वप्नेहु भक्ति न होई ॥ ऋषी सिद्ध मुनि मनुज दनुज सुर अपर जीव जगमाहीं। तव पद विमुख पार नहिं पावत कल्पकोटि चलि जाहीं ॥ अहिभूषण दूषणारिपु सेवक देव देव त्रिपुरारी। मोह निहार दिवाकर शंकर शरण शोक भयहारी ॥ गिरिजामनमानसमराल काशीश मशान निवासी। तुलसिदास हरिचरण कमल वर देहु भक्ति अविनासी ॥ ९ ॥ देव! मोहतमतरणि हर रुद्र शंकर शरण हरण

राग धनाश्री।

मशोक लोकाभिरामं। बालशशिभाल सुविशाललोचन कमल काम शतकोटि लावण्य धामं ॥ कंबुकुन्देन्दु कर्पूर विग्रह रुचिर तरुण रवि कोटि तनु तेज भ्राजै। भस्म सार्वाङ्ग अर्द्धाङ्ग शैलात्मजा व्याल नृकपाल माला विराजै ॥ मौलिसंकुल जटा मुकुट विद्युच्छटा तटिनि वरवारि हरिचरणपूतं। श्रवण कुंडल गरल कंठ करुणाकन्द सच्चिदानन्द वन्देवधूतं॥ शूलसायक पिनाकासिकर शत्रुवन दहन इव धूमध्वज वृष भयानं। व्याघ्र गजचर्म्म परिधान विज्ञान घन सिद्ध

सुर मुनि मनुज सेव्यमानं ॥ तांडवित नृत्य पर डमरू डिंडिम प्रवर अशुभ इव भाँति कल्याणराशी । महा कल्पान्त ब्रह्माण्डमंडलद्वन भवन कैलास आसीन काशी ॥ तज्ज्ञ सर्वज्ञ यज्ञेश अच्युत विभव विश्व भव-दंश संभव पुरारी । ब्रह्मेन्द्र चन्द्रार्क वरुणाग्नि वसु मरुत यम अर्च्य भवदंघ्रि सर्व्वाधिकारी ॥ अकल निरुपाधि निर्गुण निरञ्जन ब्रह्म कर्म्म पथमेकमजनिर्विकारं । अखिल विग्रह उग्ररूप शिव भूपसुर सर्वगत सर्व सर्वोपकारं ॥ ज्ञान वैराग्य धन धर्म कैवल्य सुख सुभग सौभाग्य शिवसानुकूलं। तदपि नर मूढ आरूढ संसा-रपथ भ्रमत भवविमुख तव पादमूलं ॥ नष्टमति दुष्ट अति कष्टरत खेदगत दास तुलसी शम्भु शरण आया । देहि कामारि श्रीरामपदपंकजे भक्तिमन-वरतगत भेद माया ॥ १० ॥ देव ! भीषणाकार भैरव भयङ्कर भूत प्रेत प्रमथाधिपति विपतिहर्त्ता । मोहमूषकमार्जार संसारभयहरण तारणतरण अभयक-र्त्ता ॥ अतुल बल विपुल विस्तार विग्रह गौर अमल अतिधवल धरणीधराभं । शिरसि संकुलित कलकूट पिङ्गलजटा पटल शतकोटि विद्युच्छटाभं ॥ भ्राज विबुधापगा आप पावन परम मौलिमालेव शोभावि-चित्रं । ललित लल्लाट पर राज रजनी सकल कला-धर नौमिहर धनदमित्रं ॥ इन्दु पावक भानुनयन मर्द्द-

नमयन ज्ञानगुणअयन विज्ञानरूपं । रवनगिरिजा भवन भूधराधिप सदा श्रवणकुण्डल वदन छबि अनूपं ॥ चर्म असि शूलधर डमरु शर चापकर जान वृषभेश करुणानिधानं । जरत सुर असुर नरलोक शोकाकुलं मृदुल चित अजित कृत गरल पानं ॥ भस्म तनुभूषणं व्याघ्रचर्माम्बरं उरग नरमौलि उरमालधारी । डाकिनी शाकिनी खेचरं भूचरं यंत्र मंत्र भंजन प्रबल कल्मषारी ॥ काल अतिकाल कलिकाल व्यालादि खग त्रिपुरमर्दन भीम कर्म भारी । सकल लोकान्त कल्पान्त शूलाग्र कृत दिग्गजा व्यक्त गुणनृत्यकारी ॥ पाप सन्ताप घनघोर संसृति दीन भ्रमत जग योनि नहिं कोपि त्राता ॥ पाहि भैरवरूप रामरूपी रुद्र बंधु गुरु जनक जननी विधाता ॥ यस्य गुणगण गणति विमलमति शारदा निगम नारद प्रमुख ब्रह्मचारी । शेष सर्वेश आसीन आनन्दवन दास तुलसी प्रणत त्रासहारी ॥ ११ ॥

सदा शंकरं शंप्रदं सज्जनानंददं शैलकन्यावरं परमरम्यं । काममदमोचनं तामरसलोचनं वामदेवं भजे भावगम्यं ॥ कम्बुकुन्देन्दु कर्पूरगौरं शिवं सुन्दरं सच्चिदानन्दकंदं । सिद्ध सनकादि योगीन्द्रवृन्दारका विष्णु विधिवन्द्य चरणारविंदं ॥ ब्रह्मकुलवल्लभं सुलभमति दुर्लभं विकटवेषं विभुं वेदपारं । नौमि करुणाकरं गरलगंगाधरं निर्मलं निर्गुणं निर्विकारं ॥ लोकनाथं शोकशूलनिर्मूलिनं

शूलिनं मोहतमभूरि भानुं। कालकालं कलातीतमजरं हरं कठिन कलिकाल कानन कृशानुं॥ तज्ञमज्ञानपाथोधिघटसम्भवं सर्वगं सर्व सौभाग्य मूलं। प्रचुर भवभंजनं प्रणतजनरंजनं दास तुलसीशरणसानुकूलं॥१२॥

राग वसन्त।

सेवहु शिवचरण सरोजरेनु। कल्याण अखिलप्रद कामधेनु॥ कर्पूरगौर करुणाउदार। संसारसार भुजगेन्द्रहार॥ सुखजन्म भूमि महिमा अपार। निर्गुण गुणनायक निराकार॥त्रयनयन मयन मर्दनमहेश। अहङ्कारनिहार उदित दिनेश॥ वरबाल निशाकर मौलि भ्राज। त्रैलोक शोकहर प्रमथराज॥ जिन्ह कहँ विधि सुगति न लिखी भाल। तिन्हकी गति काशीपति कृपाल॥ उपकारी कोऽपर हरसमान। सुर असुर जरत कृत गरल पान॥बहु कल्प उपायन करि अनेक। बिनु शंभु कृपा नहिं भव विवेक॥ विज्ञानभवन गिरिसुतारवन। कह तुलसिदास मम त्रासशमन॥ १३॥ देखो देखो वन बन्यो आज उमाकंत॥ मानहुँ देखन तुमहिं आई ऋतु वसन्त॥ मानो तनु द्युति चम्पक कुसुम माल। वर वसन नील नूतन तमाल॥ कलकदलि जंघ पदकमल लाल। सूचक कटि केसरि गति मराल॥ भूषण प्रसून बहुविविध रंग। नूपुर किंकिणि कलरव विहंग॥ कर नवल बकुल पल्लव रसाल। श्रीफल कुच

कंचुकि लताजाल ॥ आनन सरोज कच मधुप गुंज । लोचन विशाल नवनील कंज ॥ पिक वचन चरित वर वरहि कीर । सित सुमन हास लीलासमीर ॥ कह तुलसिदास सुनु शिवसुजान । उर बसि प्रपंच रचै पंचबान ॥ करि कृपा हरिय भ्रमफंद काम । जेहिं हृदय बसहिं सुखराशि राम ॥ १४ ॥

राग मारू ।

दुसह दोष दुख दलनि करु देवि दाया । विश्व मूलासि जनकूलासि शर शूलधारिणि महामूल माया ॥ तडितगर्भाङ्ग सर्वाङ्ग सुन्दर लसत दिव्य पट भव्य भूषण विराजै । बाल मृगमंजु खंजनविलोचनि चन्द्रवदनि लखि कोटि रतिमार लाजै ॥ रूप सुख शीलसीमासि भीमासि रामासि वामासि वर बुद्धि बानी । छमुखहेरम्ब अम्बासि जगदम्बिके शम्भुजायासि जय जय भवानी ॥ चण्ड भुजदण्ड खण्डन विहण्डनि मुण्ड महिषमद भंग कर अङ्गतोरे । शुम्भ निःशुम्भ कुम्भीश रणकेशरिणि क्रोधवारिधि अरि वृन्द बोरे ॥ निगम आगम अगम गुर्वि तव गुण कथन उर्विधर कहत जेहि सहस जीहा । देहि मा मोहिं प्रण प्रेम यह नेम निज राम घनश्याम तुलसी पपीहा ॥ १५ ॥

राग रामकली ।

जय जय जगजननि देवि सुर नर मुनि असुर सेवि

भुक्ति मुक्तिदायनि भयहरणि कालिका। मङ्गलमुद सिद्धिसदनि पर्व शर्वरीश वदनि तापतिमिर तरुण तरणि किरणमालिका ॥ वर्मचर्म कर कृपाण शूल शैल धनुप बाण धरणि दलनि दानवदल रण करालिका। पूतना पिशाच प्रेत डाकिनि शाकिनि समेत भूत ग्रह वैताल खग मृगालि जालिका ॥ जय महेशभामिनी अनेकरूप नामिनी समस्त लोकस्वामिनी हिमशैल-बालिका। रघुपतिपद परम प्रेम तुलसी चह अचल नेम देहु ह्वै प्रसन्न पाहि प्रणतपालिका ॥ १६ ॥ जय जय भगीरथनन्दिनी मुनिचयचकोरचंदिनी नर नाग विबुधवन्दिनी जय जह्नुबालिका। विष्णुपद सरोज जासि ईशशीश पर बिभासि त्रिपथगासि पुण्यराशि पापछालिका ॥ विमल विपुल बहसिवारि शीतल त्रय तापहारि भँवरवरविभंगतर तरङ्गमालिका। पुरजन पूजोपहार शोभित शशि धवलधार भंजनिभवभार:भक्ति-कल्प थालिका॥निजतटवासी विहंग जल थल चर पशु पतंग कीट जटिल तापस सब सरिसपालिका ॥ तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुवंशवीर विचरत मति देहि मोहिं महिपकालिका ॥ १७ ॥ जयति जय सुरसरी जगदखिल पाविनी। विष्णुपदकंज मकरन्द इव अम्बुवर बहसि दुःखदहसि अघवृन्द विद्राविनी। मिलित जलपात्र अजयुक्त हरिचरणरज विरजवरवारि

त्रिपुरारि शिर धामिनी ॥ जह्नु कन्या धन्य पुण्यकृत सगरसुत भूधरद्रोणि विदरणि बहुनामिनी । यक्षगंधर्व मुनि किन्नरी दनुजगण मनुज मज्जहिं सुकृत पुण्ययुत कामिनी ॥ स्वर्गसोपान विज्ञान ज्ञानप्रदे मोहमद मदन पाथोज हिमयामिनी । हरित गंभीर वा नीर दुहुँ तीरवरमध्यधाराविशदविश्वअभिरामिनी। नीलपर्यंककृत शयन सर्पेश जनु सहस शीशावलीस्रोत सुरस्वामिनी॥ अमित महिमा अमित रूप भूपावली मुकुटमणि वंदि त्रैलोकपथ गामिनी । देहि रघुवीरपद प्रीति निर्भर मातु दास तुलसी त्रास हरणि भवभामिनी ॥ १८ ॥ हरणि पाप त्रिविधताप सुमिरत सुर सरित । बिलसति महि कल्पवेलि मुद मनोरथ फरित ॥ सोहत शशि धवलधार सुधा सलिल भरित । विमलतर तरङ्ग लसत रघुवरकेसे चरित ॥ तो विनु जगदंब गंग कलियुगका करित । घोर भव अपार सिंधु तुलसी किमि तरित ॥ १९ ॥ईश शीश वससि त्रिपथ लससि नभ पाताल धरनि । मुनि सुर नर नाग सिद्ध सुजन मङ्गल करनि ॥ देखत दुख दोषदुरित दाह दारिद दरनि । सगरसुतन शासति शमनिजल निधिजलभरनि ॥ महिमा को अवधि करसि बहुविधि हरि हरनि । तुलसी करु वाणि विमल विमलवारिवरणि॥ २० ॥

राग बिलावल।

यमुना ज्यों ज्यों लागी बाढन। त्यों त्यों सुकृत सुभट कलि भूपहिं निदरि लगे बहु काढन॥ ज्यों ज्यों जल मलीन त्यों त्यों यमगण मुख मलीन है आढन। तुलसिदास जगदघजवास ज्यों अनघमेघ लगे डाढन॥ २१॥

राग भैरव।

सेइय सहित सनेह देहभर कामधेनु कलिकाशी॥ शमनि शोक सन्ताप पाप रुज सकलसुमंगलराशी। मर्यादा चहुँओर चरणवर सेवत सुरपुरवासी॥ तीरथ सब शुभअंग रोम शिवलिङ्ग अमित अविनासी। अन्तरअयन अयन भलथन फल बच्छ वेद विश्वासी॥ गलकंबल वरुणा विभाति जनु लूम लसति सरितासी। पंडपाणि भैरव विषाण मल रुचि खलगण भयदासी॥ लोलदिनेश त्रिलोचन लोचन करणघंट घंटासी। मणिकर्णिका वदन शशि सुन्दर सुरसरि सुख सुखमासी॥ स्वारथ परमारथ परिपूरण पञ्चकोश महिमासी। विश्वनाथ पालक कृपालुचित लालति नित गिरिजासी॥ सिद्ध शची शारद पूजहिं मन जुगवत रहति रमासी। पञ्चाक्षरी प्राण मुद माधव गव्य सुपञ्चनदासी॥ ब्रह्म जीव सम राम नाम जुग आखर विश्वविकासी। चारितुचरति कर्म कुकर्म करि मरत जीव

गण घासी ॥ लहत परमपद पय पावन जेहि चहत प्रपञ्च उदासी । कहत पुराण रची केशव निजकर करतूति कलासी । तुलसी बसि हरपुरी रामजपु जो भयो चहै सुपासी ॥ २२ ॥

राग वसन्त ।

सब शोचविमोचन चित्रकूट । कलिहरण करणकल्याण बूट ॥ शुचि अवनि सुहावनि आलबाल । कानन विचित्र बारी विशाल ॥ मन्दाकिनिमालिनि सदा सींच । वरवारि विषम नर नारि नीच ॥ शाखा सुशृंग भूरुह सुपात । निरझर मधुवर मृदु मलयवात ॥ शुक पिक मधुकर मुनिवर विहारु । साधन प्रसून फल चारि चारु ॥ भवघोर घामहर सुखद छाँह । थप्यो थिर प्रभाउ जानकीनाह । साधक सुपथिक बडे भाग पाइ । पावत अनेक अभिमत अघाइ ॥ रस एक रहित गुणकर्मकाल । सिय राम लषण पालक कृपाल ॥ तुलसी जो रामपद चहिय प्रेम । सेइय गिरिकरु निरुपाधि नेम ॥ २३ ॥

राग कान्हरा ।

अब चित चेति चित्रकूटहि चल । कोपित कलि लोपित मङ्गल मग विलसत बढत मोह माया मल ॥ भूमि विलोक रामपद अंकित वन विलोक रघुवर विहारथल । शैलशृंग भवभंगहेतु लख दलन कपट पाखण्ड

दंभदल ॥ जहँ जनमें जग जनक जगतपति विधि हरि हर परि हरि प्रपंच छल। सुकृत प्रवेश करत जेहि आश्रम बिगत विषाद भये पारथ नल॥ न करु विलम्ब विचारु चारु मति वर्ष पाछिले सम अगिलो पल॥ मंत्र सो जाइ जपहि जो जपत भे अजर अमर हर अंचइ हलाहल ॥ राम नाम जप याग करत नित मज्जन पयपावन पीवत जल। करिहैं राम भावतो मनको सुख साधन अनयास महाफल ॥ कामदमणि कामता कल्पतरु सो युग युग जागति जगतीतल। तुलसी तोहिं विशेष बूझिये एक प्रतीति प्रीति एकै बल ॥ २४ ॥

राग धनाश्री।

जयति अंजनिगर्भ अम्भोधि संभूत विधुविबुध कुलकैरवानन्दकारी ॥ केसरी चारु लोचन चकोरक सुखद लोकगण शोक सन्तापहारी ॥ जयति जय बाल कपि केलि कौतुक उदित चंडकरमंडल ग्रासकर्त्ता। राहु रवि शक्र पवि गर्वखर्वी करण शरण भयहरण जय भुवन भर्त्ता ॥ जयति रणधीर रघुवीर हित देवमणि रुद्र अवतार संसारपाता। विप्र सुर सिद्ध मुनि आशिषाकारवपुष विमल गुण बुद्धि वारिधि विधाता ॥ जयति सुग्रीव शिक्षादि रक्षण निपुण वालि बलशालि वध मुख्य हेतू। जलधि लंघन सिंह सिंहिका मद मथन

रजनिचर नगर उत्पातकेतू ॥ जयति भूनंदिनी शोच मोचन विपिनदलन घननादवश विगत शंका ॥ लूम लीलाअनलज्वाल मालाकुलित होलिकाकरन लंकेश लंका ॥ जयति सौमित्र रघुनन्दनानन्दकर ऋच्छकपि कटक संघटविधाई ॥ वृद्धवारिध सेतु अमर मंगलहेतु भानुकुलकेतु रण विजयदाई ॥ जयति जय वज्रतनु दशन नख मुख बिकट चण्ड भुजदण्डतरु शैलपानी॥ समर तैलिकयंत्र तिल तमीचरनिकर पेरि डारे सुभट घालि घानी । जयति दशकंठ घटकरण वारिदनाद कदन कारन कालिनेमिहन्ता ॥ अघट घटना सुघट विघटन विकट भूमि पाताल जल गगनगन्ता ॥ जयति विश्वविख्यात वानैत विरुदावली विदुषवर्णत वेद विमलवानी । दास तुलसी त्रासशमन सीतारमण संग शोभित रामराजधानी ॥२६॥ जयति मर्कटाधीश मृगराज विक्रम महादेव मुदमंगलालय कपाली ॥मोह मद कोह कामादि खल संकुलाघोरसंसार निशिकिरनमाली ॥ जयति लसदञ्जनादितिजकपिकेसरी कश्यप प्रभवजगदार्ति हर्ता ॥ लोक लोकप कोक कोकनद शोकहर हंस हनुमान कल्याणकर्त्ता । जयति सुविशाल विकराल विग्रह वज्रसारसर्वांगभुजदण्डभारी । कुलिश नख दशन वर लसत

बालधि बृहद वैरि शस्त्रास्त्र धर कुधरधारी । जयति जानकी शोच सन्तापमोचन राम लक्ष्मणानन्द वारिज विकाशी । कीश कौतुककेलि लूम लंकादहन दलन कानन तरुन तेजराशी ॥ जयति पाथोधि पाषाण जलयानकर यातुधान प्रचुर हर्षहाता ॥ दुष्ट रावण कुम्भकर्ण पाकारिजित् मर्मभित्कर्म परिपाकदाता ॥ जयति भुवनैकभूषण विभीषण वरद विहितकृत राम संग्राम शाका ॥ पुष्पकारूढ सौमित्र सीतासहित भानुकुलभानुकीरतिपताका ॥ जयति परयन्त्र मन्त्राभिचार ग्रसनकार्मण कूटकृत्यादिहन्ता । शाकिनी डाकिनी पूतना प्रेत बैताल भूत प्रमथ यूथजन्ता । जयति वेदान्तविध विविधविद्याविशद वेदवेदांगविद ब्रह्मवादी । ज्ञान वैराग्य विज्ञानभाजनविभव विमल गुण गणत शुक नारदादी॥ जयति कालगुण कर्म्ममायामथननिश्चल ज्ञानव्रत सत्यरत धर्म्मचारी । सिद्ध सुरवृन्द योगीन्द्र सेवित सदा दास तुलसी प्रणत भय तमारी ॥ २६ ॥ जयति मंगलागार संसारभारापहार वानराकारविग्रह पुरारी । रामरोषानल ज्वालमालामिष-ध्वान्तचर शलभ संहारकारी ॥ जयति मरुदञ्जना-मोदमन्दिर नत ग्रीवसुग्रीव दुःखैकबन्धो । यातु-धानोद्धतक्रुद्धकालाग्निहर सिद्धसुरसज्जनानन्दसिन्धो ॥ जयति रुद्राग्रणी विश्वविद्याग्रणी विश्वविख्यात भट चक्र-

वर्ती । सामगाताग्रणी कामजेताग्रणी रामहित रामभक्तानुवर्ती ॥ जयति संग्राम जय राम सन्देश हर कौशला कुशल कल्याणभाषी । राम विरहार्कसन्तप्त भरतादि नर नारि शीतल करण कल्पशाषी॥ जयति सिंहासनासीनसीतारमण निरखि निर्भर हरष नृत्यकारी । रामसंभ्राज शोभासहित सर्वदा तुलसी मानस रामपुरविहारी ॥ २७॥ जयति वातसञ्जात विख्यात विक्रम वृहद्बाहु बल विपुल बालधिविशाला । जातरूपा चलाकार विग्रह लसत लोम विद्युल्लताज्वालमाला ॥ जयति बालार्कवरवदनपिंगलनयन कपिश कर्कशजटाजूटधारी । विकट भ्रुकुटी वज्र दशन नख वैरि मदमत्त कुंजर पुंज कुंजरारी ॥ जयति भीमार्जुनव्यालसूदनगर्वहर धनञ्जय रथत्राणकेतू । भीषम द्रोण करणादि पालित काल दृकसुयोधनचमू निधनहेतू ॥ जयति गत रात दातार हरतार संसार संकट दनुजदर्पहारी । ईति अति भीति ग्रह प्रेत चौरान व्याधि बाधा शमन घोर मारी ॥ जयति निगमागम व्याकरणकर्णलिपि काव्य कौतुक कला कोटिसिन्धो । सामगायक भक्तकामदायक वामदेव श्रीरामप्रिय प्रेमबन्धो । जयति धर्मांशु सन्दग्ध सम्पाति नवपक्ष लोचन दिव्य देह दाता । काल कलिपाप सन्ताप संकुल सदा प्रणत तुलसीदास तात माता ॥ २८ ॥ जयति निर्भरानन्द सन्दोह कपि

केशरी केशरीसुअन भुवनैकभर्त्ता। दिव्य भूम्यञ्जना-मंजुलाकरमणे भक्तसन्तापचिन्तापहर्ता॥ जयति धर्मार्थ कामापवर्गदविभो ब्रह्मलोकादिवैभवविरागी। वचन मानस कर्मसत्यधर्मव्रती जानकीनाथ चरणानु-रागी॥ जयति विहगेश बलबुद्धि वेगाति मद मथन मन्मथ मथन ऊर्ध्वरेता। महानाटक निपुण कोटि कवि कुलतिलक गान गुणगर्व गन्धर्व्व जेता॥ जयति मन्दोदरी केशकर्षण विद्यमान दशकण्ठ भट मुकुटमानी। भूमिजादुःख संजात रोषांतकृज्जातना-जन्तुकृतयातुधानी। जयति रामायण श्रवण संजात रोमाञ्च लोचनसजल शिथिलवाणी। रामपदपद्म मक-रन्दमधुकर पाहि दासतुलसी शरण शूलपाणी॥ २९॥

राग सारंग।

जाके गति है हनुमान की। ताको पैज पूजि आई यह रेखा कुलिश पषानकी॥ अघटित घटन ऐसी बिरुदावली नहीं आनकी। सुमिरत संकट शोचविमो-चन मूरति मोदनिधानकी॥ तापर सानुकूल गिरिजा हर लषण राम अरु जानकी॥ तुलसी कविकी कृपा विलोकनि खानि सकल कल्यानकी॥ ३०॥

राग गौरी।

ताकि है तमकि ताकी ओर को। जाको है सब भाँति भरोसो कपि केशरी किशोरको॥ जनरञ्जन

अरिगणगञ्जन मुख भञ्जन खलबलजोरको । वेद पुराण प्रगट पुरुषारथ सकल सुभट शिरमोरको ॥ उथपे थपन थप्यो उथपन पन विबुधवृन्द वन्दिछोरको । जलधि लंघि दहि लंक प्रबल बल दलन निशाचर घोरको ॥ जाको बाल विनोद समुझि जिय डरत दिवाकर भोरको । जाकी चिबुक चोट चूरण किय रदमद कुलिश कठोरको ॥ लोकपाल अनुकूल विलोकिबो चहत विलोचन कोरको । सदा अभय जय मुदमंगलमय जो सेवक रणरोरको ॥ भक्तकामतरु नाम राम परिपूरण चन्द्र चकोरको ॥ तुलसी फल चारों करतल यश गावत गई बहोरको ॥ ३१ ॥

राग बिलावल ।

ऐसी तोहिं न बूझिये हनुमान हठीले । साहब कहूं न रामसे तोसे न वसीले ॥ तेरे देखत सिंहके शिशु मेढक लीले ॥ जानत हों कलि तेरेऊ मन गुणगण कीले । हांक सुनत दशकन्धके भये बन्धन ढीले ॥ सो बल गयो किधौं भये अब गर्वगहीले । सेवकको परदा फटै तुम समरथ सीले ॥ अधिक आपुते आपनो सुनि मान सहीले ॥ शासति तुलसीदासकी सुनि सुयश तुही ले ॥ तिहूँकाल तिनको भलो जे रामरँगीले॥३२॥
समरथ सुवन समीरके रघुवीर पियारे । मोपर कीब तोहि जो करिलेहि भियारे । तेरी महिमाते चलैं चिञ्चि-

नीचियारे ॥ अँधियारो मेरी बार क्यों त्रिभुवन उजि-
यारे ॥ केहि करणी जन जानिकै सन्मान कियारे ॥
केहि अघ अवगुण आपने करि डारि दियारे। खाये
खोंची माँग मैं तेरो नाम लियारे ॥ तेरे बल बलि
आजलों जगजागि जियारे ॥ जो तोसों हो तौ फिरौं
करो हेतु हियारे। तौ क्यों वदन देखावतो कहि वचन
इयारे ॥ तोसों ज्ञाननिधन को सर्वज्ञ बियारे। हौं
समुझत सांई द्रोहकी गति छार छियारे ॥ तेरे स्वामी
रामसे स्वामिनी सियारे। तहँ तुलसीके कौनको काको
तकियारे ॥ ३३ ॥ अति आरत अतिस्वारथी अति-
दीन दुखारी । इनको विलग न मानिये बोलहिं न
विचारी ॥ लोकरीति देखी सुना व्याकुल नर नारी।
अति वरषे अनवरषेहूं देहिं दैवहिं गारी ॥ नाकहि
आये नाथसों शासति भये भारी। कहि आयो
कीबी क्षमा निज ओर निहारी ॥ समय साँकरे
सुमिरिये समरथ हितकारी। सो सब विधि ऊपर करै
अपराध बिसारी ॥ बिगरी सेवककी सदा साहबहिं
सुधारी। तुलसी पर तेरी कृपा निरुपाधि निरारी ॥
॥ ३४ ॥ कटु कहिये गाढे परे सुन समुझि सुसाईं।
करहिं अनभलेको भलो आपनी भलाई ॥ समरथ
शुभ जो पाइये बीर पीर पराई। ताहितके सब ज्यों
नदी वारिधि न बुलाई ॥ अपने २ को भलो चहै लोग

लुगाई। भावे जो जेहि तेहि भज शुभ अशुभ सगाई॥ बाँहबोल दै थापिये जो निज बरिआई। बिन सेवासों पालिये सेवककी नाई॥ चूक चपलता मेरियै तू बडो बडाई। होत आदरे ढीठ हौं अति नीच निचाई॥ वन्दिछोर बिरुदावली निगमागम गाई। नीको तुलसी-दासको तेरिही निकाई॥ ३५॥

राग गौरी।

मंगलमूरति मारुतनन्दन। सकल अमंगल मूल निकन्दन। पवनतनय सन्तनहितकारी। हृदय विराजत अवधविहारी। मातु पिता गुरु गणपति शारद। शिवासमेत शम्भु शुक नारद॥ चरण वन्दि विनवौं सब काहू। देहु रामपद नेह निबाहू॥ वन्दौं राम लषण वैदेही। जे तुलसीके परमसनेही॥ ३६॥

दण्डक।

लाल लाडिले लषण हित हौ जनके। सुमिरे संकटहारी सकल सुमंगलकारी पालक कृपालु अपने पनके॥ धरणीधरनहार भञ्जन भुवनभार अवतार साहसी सहसफनके। सत्यसन्ध सत्य परम-धर्मरत निर्मल करम वचन मनके॥ रूपके निधान धनुबान पानि तूणकटि महावीर विदित जितैया बडे रनके॥ सेवक सुखदायक सबल सब लायक गायक जानकीनाथ गुणगनके॥ भावते भरतके सुमित्रा

सीताके दुलारे चातक चतुर राम श्यामघनके। वल्लभ उर्मिलाके सुलभ सनेह वश धनी धन तुलसीसे निर-धनके ॥ ३७ ॥

राग धनाश्री ।

जयति लक्ष्मणानन्त भगवन्त भूधर भुजगराज भुव-नेशभूभारहारी । प्रबलपावक महाज्वालमालावमन शमनसन्ताप लीलावतारी ॥ जयति दाशरथि समर समरथ सुमित्रासुवन शत्रुसूदन राम भरतबन्धो । चारु चम्पकवरन वसन भूषण धरन दिव्यतर भव्य लावण्य-सिन्धो ॥ जयति गाधेय गौतम जनक सुखजनक विश्व कण्टक कुटिल कोटिहन्ता । वचन चय चातुरी परशुधरगर्व हर सर्वदा रामभद्रानुगन्ता॥जयति सीतेश सेवासरस विषयरसनिरस निरुपाधि धुरधर्मधारी । विपुलबलमूल शार्दूल विक्रम जलदनाद मर्दन महावीर भारी ॥ जयति संग्राम सागर भयङ्कर तरण रामहित करण वरबाहु सेतू । उर्मिलारमन कल्यान मंगल भ-वन दास तुलसी दोष दवन हेतू ॥ ३८ ॥ जयति भूमि-जारमन पदकंजमकरन्दरसरसिक मधुकर भरत भूरिभागी । भुवनभूषण भानुवंशभूषण भूमिपाल-मणि रामचन्द्रानुरागी ॥ जयति विबुधेश धनदादि दुर्लभ महाराजसंभ्राज सुखप्रद विरागी । खड्ग-धाराव्रती प्रथमरेखाप्रगट शुद्ध मतियुवतिपतिप्रेम

पाणी । जयति निरुपाधिभक्तिभाव यन्त्रितहृदय बंधु हितचित्रकूटाद्रिचारी । पादुकानृपसचिवपुहुमि पालक परमधर्म धुरधीरवर वीरभारी । जयति संजीवनीसमय संकटहनूमान धनुबाण महिमा बखानी । बाहुबलविपुल परमित पराक्रम अतुल गूढ गति जानकीजान जानी ॥ जयति रणअजित गन्धर्वगण गर्वहर फिर किये राम गुणगाथ गाता । माण्डवी चित्तचातक नवांबुदवरणशरण तुलसीदास अभयदाता ॥ ३९ ॥ जयति जय शत्रुकरि केशरी शत्रुहन शत्रुतम तुहिनहर किरण केतू । देव महिदेव महिधेनु सेवक सुजन सिद्ध मुनि सकल कल्याणहेतू ॥ जयति सर्वांग सुन्दर सुमित्रासुवन भुवन विख्यात भरतानुगामी । वर्मचर्मासि धनु बाण तूणीरधर शत्रु संकट शमन यत्प्रणामी ॥ जयति लवणांबुनिधि कुम्भसम्भव महा दनुज दुर्जनदवन दुरितहारी । लक्ष्मणानुज भरत राम सीताचरणरेणु भूषित भाल तिलकधारी ॥ जयति श्रुतिकीर्ति वल्लभ सुदुर्लभ सुलभ नमत नर्मद भक्तभक्ति दाता ॥ दास तुलसी चरण शरणसीदत विभो पाहि दीनार्त्त सन्ताप हाता ॥ ४० ॥ जयति श्रीजानकी भानुकुल भानुकी प्राणप्रियवल्लभातरणिभूपे । राम आनन्दचैतन्यघन विग्रहा शक्ति आह्लादनी साररूपे ॥ जयति चितचरणचिन्तनि जेहि धरत हृदि काम भय कोह मद मोह माया । रुद्र

विधि विष्णु सुर सिद्ध वन्दित पदे जयति सर्वेश्वरी रामजाया॥कर्म जप योग विज्ञान वैराग्य लहि मोक्षहित योगि जे प्रभु मनावैं॥ जयति वैदेहि सब शक्ति शिर-भूषणी ते न तव दृष्टि विन कबहुँ पावैं॥ जयति कोटि ब्रह्माण्ड जगदीशको ईश जिह निगम मन बुद्धिते अगम गावैं। विदित यह गाथ अह्लाद कुलमाथ सो नाथ तव दानते हाथ आवैं॥ दिव्य शतवर्ष जप ध्यान जब शिव धरचो राम गुरुरूप मिल पथ बतायो। चितै हित लीन लखि कृपा कीन्ही तबै दैव दुर्लभ देव दरश पायो॥ जयति श्रीस्वामिनी सेय शुभनामिनी दामिनी कोटि निज देह दरशैं॥ इन्दिराआदि दै मत्त गजगामिनी देवभामिनि सबै पाँव परशै॥ दुखित लखि भक्ति विन दरश निजरूप तव यजन जपतन्त्रते सुलभ नाहीं। कृपा परिपूर्ण नवकंजदललोचना प्रगट भइ जनक नृप अजिरमाहीं॥ रचित तव विपिन प्रिय-प्रेम प्रगटन करन लंकपति व्याज कछु खेल ठान्यो। गोपिका कृष्ण नवतुल्य बहु यत्न करि तोहिं मिलि ईश आनन्द मान्यो॥ हनि तव सुमुखि के संग रहि रंग सो विमुख सो देव नहिं नाह नेरो। अधम उद्ध-रण यह जान गहि शरण तव दास तुलसी भयो आय चेरो॥ ४१॥

राग केदारा ।

कबहुँक अंब अवसर पाइ । मेरीओ सुधि द्यायवी कछु करुण कथा चलाइ ॥ दीन सब अंगहीन छीन मलीन अघी अघाइ । नाम ले भरे उदर एक प्रभुदासी दास कहाइ ॥ बूझि हैं सो है कौन कहिवो नाम दशा जनाइ । सुनत रामकृपालुके मेरी बिगरिओ बनिजाइ॥ जानकी जगजननि जनकी किये वचन सहाइ । तरे तुलसीदास भव तव नाथ गुणगण गाइ ॥ ४२ ॥ कबहु समय सुधि द्याइबो मेरी मातु जानकी । जन कहाइ नाम लेत हौं किये पन चातक ज्यों प्यास प्रेम पानकी ॥ सरलप्रकृति आपु जानिके करुणानिधा-नकी । निजगुण अरिकृत अनहितो दास दोष सुरति चित रहत न दिये दानकी ॥ वानि विसारनशील हैं मानद अमानकी । तुलसिदास न विसारिये मन क्रम वचन जाके सपनेहुँ गति न आनकी ॥ ४३ ॥ जयति सच्चित् व्यापकानन्द परब्रह्म विग्रह व्यक्तलीलाव-तारी । विकल ब्रह्मादि सुर सिद्धसंकोचवश विमलगुण गेह नरदेहधारी ॥ जयति कोशलाधीशकल्याणकोशल-सुताकुशलकैवल्य फल चारु चारी । वेदवोधितकर्म-धर्मधरणी धेनु विप्रसेवक साधु मोदकारी ॥ जयति ऋषिमखपाल शमनसज्जनशाल शापवश मुनिवधू पाप-हारी । भंजि भवचाप दलिदाप भूपावली सहितभृगु-

नाथ नत माथ भारी ॥ जयति धार्म्मिक धुरधीर रघु-
वीर गुरु मातु पितु बंधुवचनानुसारी। चित्रकूटाद्रि
विन्ध्याद्रि दण्डकविपिनधन्यकृत पुण्यकाननविहारी ॥
जयति पाकारिसुतकाक करतूतिफल दानि खनि गर्त्त
गोपित विराधा। दिव्य देवीवेष देखि लखि निशिचरी
जनु विडंबित करी विश्वबाधा॥ जयति खर त्रिशिर
दूषण चतुर्दश सहस सुभट मारीच संहरकर्त्ता। गृध्रश-
बरी भक्तिविवश करुणासिंधु चरित निरुपाधित्रिविधा-
र्तिहर्त्ता ॥ जयति मदअन्ध कुकबन्ध वधि बालिबल-
शालिवधकरण सुग्रीव राजा। सुभट मर्कट भालुकटक
संघट सजत नमत पद रावणानुज निवजा ॥ जयति
पाथोधिकृतसेतु कौतुकहेतु कालमन अगम लई लल-
किलंका। सकुल सानुज सदल दलित दशकण्ठरण
लोकलोकप किये रहित शंका ॥ जयति सौमित्रि
सीतासचिवसहित चले पुष्पकारूढ निज राजधानी।
दास तुलसी मुदित अवधवासी सकल राम भे भूप
वैदेहि रानी ॥ ४४ ॥ जयति राजराजेंद्र राजीवलोचन
राम नाम कलिकामतरु श्यामशाली। अनय अंभोधि-
कुम्भज निशाचर निकर तिमिर घनघोर खर किरण
माली ॥ जयति मुनिदेव दशरत्थके देवमुनिवंद्य किये
अवधवासी। लोकनायक कोकशोक संकटशमन भानु-
कुलकमल कानन विकासी॥ जयति शृंगारसरतामरस-

दामद्युति देहगुण गेह विश्वोपकारी । सकल सौभाग्य सौन्दर्य सुखमारूप मनोभवकोटि गर्वापहारी । जयति सुभग शारंग सुनि खड्गसायक शक्ति चारु चर्मासि वर वर्मधारी । धर्मधुरधीर रघुवीर भुजबल अतुल हेलया-दलित भूभार भारी ॥ जयति कलधौतमणि मुकुट कुण्डल तिलक झलक भलिभाल विधुवदन शोभा । दिव्य भूषण वसन पीत उपवीत किय ध्यान कल्याणभाजननकोभा ॥ जयति भरत सौमित्रि शत्रुघ्नसेवित सुमुख सचिव सेवक सुखद सर्वदाता । अधम आरत दीन पतित पातकपीन सकृत नत मात्र कहैं पाहिपाता ॥ जयति जय भुवन दशचारि यश जगमगत पुण्यमय धन्यजय राम राजा । चरित सुरसरित कवि मुख्य गिरि निःसरित पिवत मज्जत मुदित सतसमाजा ॥ जयति वर्णाश्रमाचारि बर नारिनर सत्य शम दम दया दानशीला । विगत दुःखदोष संतोष सुख सर्वदा सुनत गावत रामराजलीला । जयति वैराग्यविज्ञान वारांनिधे नमत नर्मद पापताप-हर्त्ता । दास तुलसीचरण शरण संशयहरण देहि अव-लम्ब वैदेहिभर्त्ता ॥ ४६ ॥

राग गौरी ।

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरणभवभयदारुणं । नवकंजलोचन कंजमुख करकंज पदकंजारुणं ॥ कन्दर्प अगणित अमित छबि नवनीलनीरजसुन्दरं । पट पीत

मानहुँ तडित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरं ॥ प्रभु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्यवंश निकंदनं । रघुनन्द आनँदकन्द कोशलचन्द दशरथनन्दनं ॥ शिरमुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंगविभूषणं । आजानुभुज शर चापधर संग्रामजित खरदूषणं ॥ इति वदत तुलसीदास शंकर शेष मुनिमन रञ्जनं ॥ मम हृदयकंज निवास करु कामादिखलदल गञ्जनं ॥ ४६ ॥

राग रामकली ।

देव ! सदा राम जपु राम जपु राम जपु राम जपु राम जपु मूढ मन वारवारं । सकल सौभाग्य सुखखानि जिय जानि शठ मानि विश्वास वद वेदसारं ॥ कौशलेन्द्र नवनील कंजाभतन मदनरिपु कंज हृदचञ्चरीकं । जानकीरमन सुखभवन भुवनैक प्रभु समर भंजन परमकारुणीकं ॥ दनुजवन धूमध्वज पीन आजानुभुजदण्डकोदण्डवरचण्डवानं । अरुण कर चरण मुख नयन राजीवगुण अयन बहु मयन शोभानिधानं ॥ वासनावृन्दकैरवदिवाकर काम क्रोध मद कंज कानन तुपारं । लोभ अतिमत्त नागेन्द्र पञ्चाननं भक्तहित हरण संसार भारं ॥ केशवं क्लेशहं केशवन्दितपदद्वन्द्वमन्दाकिनीमूलभूतं ॥ सर्वदानन्दसन्दोहमोहापहं घोरसंसारपाथोधिपोतं ॥ शोक सन्देह पाथोदपटलानिलं पाप पर्वत कठिन कुलिशरूपं ॥ सन्तजन कामधुक धेनु विश्रामपद नाम कलि कलुष

भंजन अनूपं ॥ धर्मकल्पद्रुमाराम हरि धाम पथि सम्बलं मूलमिदमेव एकं । भक्ति वैराग्य विज्ञान सम दान दमनाम आधीन साधन अनेकं ॥ तेन तप्तं हुतं दत्तमेवाखिलं तेन सर्वं कृतं कर्मजालं । येन श्रीराम-नामाऽमृतंपानकृतमनिशमनवद्यमवलोक्यकालं ॥ श्वप-चखलभिल्लयवनादिहरिलोकगतनामबल विपुल मति-मलिनपरसी । त्यागि सब आश संत्रासभव पास असि निशित हरिनाम जपु दास तुलसी ॥ ४७ ॥

ऐसी आरती राम रघुवीरकी करहि मन हरण दुख द्वन्द्व गोविन्द आनन्दघन ॥ अचर चर रूप हरि सर्व-गत सर्वदा वसत इति वासना धूप दीजै ॥ दीप निज बोधगत क्रोध मद मोहतम प्रौढ अभिमान चितवृत्ति छीजै ॥ भाव अतिशय विशद प्रवर नैवेद्य शुभ श्रीर-मण परम सन्तोषकारी । प्रेम ताम्बूल गत शूलसंशय सकल विपुल भव वासना बीजहारी ॥ अशुभ शुभ कर्मघृत पूर्ण दश वार्तिका त्याग पावक सतोगुण प्रका-शं । भक्ति वैराग्य विज्ञान दीपावली अर्पि नीराजनं जगनिवासं ॥ विमल हृदिभवन कृत शान्तिपर्यंक शुभ शयन विश्राम श्रीरामराया । क्षमा करुणा प्रमुख तत्र परिचारिका यत्र हरि तत्र नहिं भेद माया । एहि आरती निरत सनकादि श्रुति शेष शिव देव ऋषि अखिल मुनि तत्त्वदरसी । करै सोइ तरै

परिहरै कामादि मल वदति इति अमलमति दास तुलसी ॥ ॥ ४८ ॥ हरति सब आरती आरती रामकी। दहति दुख दोष निर्मूलिनी कामकी ॥ सुभग सौरभ धूप दीप वर मालिका । उडत अघ विहग सुनि ताल करतालिका ॥ भक्त हृदि भवन अज्ञान तमहारिणी। विमल विज्ञानमयतेज विस्तारणी ॥ मोह मद कोह कलिकंज हिम यामिनी । मुक्तिकी दूतिका देह द्युति दामिनी ॥ प्रणत जन कुमुद वन इन्दुकर जालिका । तुलसी अभिमान महिषेश बहु कालिका ॥ ४९ ॥ दनुजवन दहन गुणगहन गोविन्द नन्दादि आनन्ददाताऽविनाशी ॥ शंभु शिव रुद्र शंकर भयंकर भीम घोर तेजायतन क्रोधरासी ॥ अनन्त भगवन्त जगदन्त अन्तक त्रास शमन श्रीरमण भुवनाभिरामं भूधराधीश जगदीश ईशान विज्ञान घन ज्ञानकल्याणधामं ॥ वासनाव्यक्त पावन परावरविभो: प्रगट परमात्माप्रकृतिस्वामी । चन्द्रशेखर शूलपाणि हर अनघ अज अमित अविछिन्न वृषभेशगामी ॥ नीलजलदाभतनु श्यामबहु कामछबि राम राजीवलोचन कृपाला। कंबुकर्पूरवपु धवल निर्मल मौलि जटा सुरतटिनि सित सुमन माला ॥ वसन किंजल्कधर चक्रशारंग दर कंज कौमोदकी अतिविशाला । मार करि मत्त मृगराज त्रय नयन हर नौमि अपहरण संसार ज्वाला ॥ कृष्ण करु-

णाभवन दवनकालीयखल विपुलकंसादि निर्वंशकारी। त्रिपुरमद भंग कर मत्त गजचर्मधर अन्धकोरग ग्रसन पन्नगारी॥ ब्रह्म व्यापक अकल सकल पर परमहित ज्ञानगोतीत गुण वृत्तिहर्ता। सिंधुसुत गर्वगिरि वज्र गौरीश भव दक्षमख अखिल विध्वंसकर्त्ता॥ भक्तिप्रिय भक्तजन कामधुकधेनु हरि हरण दुर्घट विकट विपति भारी। सुखद नर्मद वरद विरज अनवद्यखिलविपिन आनन्दवीथिनविहारी॥ रुचिर हरि शंकरी नाममन्त्रावली द्वन्द्व दुखहरनि आनन्दखानी। विष्णु शिवलोक सोपानसम सर्वदा वदति तुलसीदास विशद बानी॥ ५०॥ भानुकुलकमलरवि कोटि कन्दर्प छवि काल कलिव्यालमिव वैनतेयं। प्रबल भुजदण्ड प्रचण्ड कोदण्ड धर तूणवर विशिष बलमप्रमेयं॥ अरुण राजीवदल नयन सुखमा अयन श्याम तनु कान्ति वर वारिदाभं। तप्त काञ्चन वस्त्र शस्त्र विद्यानिपुण सिद्ध सुरसेव्य पाथोजनाभं॥ अखिल लावण्य गृह विश्व विग्रह परम प्रौढ गुणगूढ महिमा उदारं॥ दुर्द्धर्षदुस्तर दुर्ग स्वर्ग अपवर्गपति भग्न संसार पादप कुठारं॥ शापवश मुनिवधूमुक्तकृत विप्रहित यज्ञ रक्षण दक्ष पक्षकर्त्ता॥ जनक नृप सदसि शिवचाप भञ्जन उग्र भार्गवागर्वगरिमापहर्त्ता॥ गुरु गिरा गौरव अमर वसु दुस्त्यज राज्यत्यक्त सहित सौमित्रिभ्राता। संग

जनकात्मजा मनुज मनु सृत्य अज दुष्ट वध निरत त्रैलोक्यत्राता ॥ दण्डकारण्य कृतपुण्य पावन चरण हरण मारीच मायाकुरंगं । वालिबल मत्त गजराज इव केशरी सुहृद सुग्रीव दुखराशि भंगं ॥ ऋच्छ मर्कट विकट सुभट उद्भट समर शैल संकासरिपु त्रासकारी। बद्ध पाथोधि सुर निकरमोचन सकुल दलन दश शीश भुजबीस भारी । दुष्ट विबुधारि संघात अपहरण महि भार अवतार कारण अनूपं ॥ अमल अनवद्य अद्वैत निर्गुण सगुण ब्रह्म सुमिरामि नर भूपरूपं । शेष श्रुति शारदा शम्भु नारद सनक गणत गुण अन्त नहीं तव चरित्रं । सोइ राम कामारि प्रिय अवधपति सर्वदा दास तुलसी त्रास निधिवहित्रं ॥ ५१ ॥ जानकीनाथ रघु-नाथ रागादि तम तरणितारुण्य तनु तेजधामं॥ सच्चि-दानन्द आनन्दकन्दाकरं विश्वविश्रामरामाभिरामं ॥ नील नव वारिधर सुभग शुभ कान्तिकर पीत कौशेय वर वसनधारी । रत्न हाटक जटित मुकुट मण्डित मौलि भानु शत सदृश उद्योतकारी ॥ श्रवण कुण्डल भाल तिलक भ्रूरुचिर अति अरुण अम्भोज लोचन वि-शालं । वक्र अवलोक त्रैलोक्य शोकापहं मारंरिपु हृदय मानसमरालं ॥ नासिका चारु सुकपोल द्विजवज्रद्युति अ-धर बिम्बोपमा मधुरहासं। कण्ठ रद चिबुक वर वचनगम्भी-रतर सत्यसंकल्प सुरत्रासनाशं ॥ सुमन सुविचित्र नव

तुलसिकादलयुतं मृदुल वनमाल उर भ्राजमानं। भ्रमत आमोदवश मत्त मधुकरनिकर मधुरतर मुखर कुर्वंति गानं ॥ सुभग श्रीवत्स केयूरकंकणहार किंकिणी रटनि कटि तटरसालं। वाम दिशि जनकजासीनसिंहासनं कनक मृदु वल्लिवत तरु तमालं ॥ आजानुभुजदण्ड कोदण्डमण्डित बाम बाहु दक्षिण पाणि बाणमेकं। अखिल मुनि निकर सुर सिद्ध गन्धर्ववर नमत नर नाग अवनिप अनेकं ॥ अनघ अनछिन्न सर्वज्ञ सर्वेश खलु सर्वतोभद्रदाताऽसमाकं। प्रणत जन खेद विच्छेद छेद विद्यानिपुण नौमि श्रीराम सौमित्र साकं ॥ युगल पदपद्म सुख सद्म पद्मालयं चिह्न कुलिशादि शोभाति भारी। हनुमन्त हृदि विमल कृत परम मन्दिरसदा दास तुलसी शरण शोकहारी ॥ ५२ ॥ कौशलाधीश जगदीश जगदेक हित अमित गुण विपुल विस्तारलीला। गायन्ति तव चरित सुपवित्र श्रुति शेष शुक शम्भुसनकादि मुनि मननशीला ॥ वारिचर वपुषधर भक्तनिस्तारपर धरणिकृत नाव महिमातिगुर्वी। सकलयज्ञांशमय उग्र विग्रहक्रोड मर्दि दनुजेश उद्धरन उर्वी ॥ कमठ अतिविकट तनु कठिन पृष्ठोपरी भ्रमत मंदरकंडु सुख मुरारी। प्रगटकृत अमृत गो इन्दिरा इन्दु वृन्दारका वृन्द आनन्दकारी ॥ मनुज मुनि सिद्ध सुर नाग त्रासकदुष्ट दनुज द्विजधर्ममर्य्यादहर्त्ता ॥ अतुल मृगराजवपु

धरित बिद्दरित अरि भक्त प्रह्लाद अह्लादकर्त्ता॥ छलन बलि कपट बटुरूप वामन ब्रह्म भुवनपर्य्यंत पद तीनि करणं।चरण नख नीर त्रैलोक्य पावन परमविबुधजननी दुसह शोकहरणं॥ क्षत्रियाधीशकार निकरवर केशरी परशुधर विप्र शशि जलदरूपं। बीस भुजदंड दशशीश खंडन चंडवेगसायक नौमि रामभूपं॥भूमिभर भारहर प्रगट परमात्मा ब्रह्म नररूपधर भक्तहेतू। वृष्णिकुल कुमुद राकेश राधारमण कंसवंशाटवी धूमकेतू॥ प्रबल पाखंड महिमंडलाकुल देखि निंद्यकृतअखिल मखकर्मजालं। शुद्ध बोधैक घन ज्ञान गुण धाम अज बुद्ध अवतारवंदे कृपालं॥ काल कलिजनित मल मलिन मन सर्वनर मोह निशि निबिड यमनान्धकारं। विष्णु यश पुत्रकल्की दिवाकर उदित दास तुलसी हरण विपतिभारं॥५२॥सकल सौभग्यप्रद सर्वतोभद्रनिधि सर्व सर्वेशसर्वाभिरामं। शर्वहृदिकंज मकरंद मधुकर रुचिर रूपभूपालमणि नौमि रामं॥ सर्व सुखधाम गुणग्राम विश्रामपद नाम सर्वास्पद मतिपुनीतं। निर्मलं शांत सुविशुद्धबोधायतन क्रोध मदहरण करुणा निकेतं॥ अजित निरुपाधि गोतीतमव्यक्त विभुमेकमनवद्यमजमद्वितीयं। प्राकृतं प्रगट परमात्मा परमहित प्रेरकानंत वंदे तुरीयं॥ भूधरं सुंदरं श्रीवरं मदनमदमथन सौंदर्य सीमातिरम्यं। दुःप्राप्यदुःप्रेक्ष्यदुस्तर्क्य दुःपार संसार-

हर सुलभ मृदुभावगम्यं ॥ सत्यकृत सत्यव्रत सर्वद
पुष्ट सन्तुष्ट संकष्टहारी । धर्म वर्मणि ब्रह्म कर्म बोधैव
द्विज पूज्य ब्रह्मण्य जनप्रिय मुरारी ॥ नित्यनिर्ममनि
त्यमुक्त निर्माण हरि ज्ञानघन सच्चिदानन्दमूलं । सर्व
रक्षक सर्व भक्षकाध्यक्ष कूटस्थ गूढार्चिभक्तानुकूलं ।
सिद्ध साधक साध्य वाच्यवाचकरूप मंत्र जापक जाप्य
सृष्टिस्रष्टा । परमकारण कंजनाभ जलदाभतनु सगुण
निर्गुण सकल दृश्य द्रष्टा ॥ व्योमव्यापक विरजब्रह्मव
देशवैकुंठ वामन निमल ब्रह्मचारी । सिद्ध वृन्दारका
वृन्द वन्दित सदा खंड पाखंड निर्मूलकारी ॥ पूर्णान
न्द सन्दोह अपहरण संमोह अज्ञान गुण सन्निपातं
वचन मन कर्मगत शरण तुलसीदास भास पाथोधि इव
कुंभजातं ॥ ५४ ॥ विश्वविख्यात विश्वेश विश्वायतन
विश्वमर्य्याद व्यालारिगामी । ब्रह्मवरदेशवागीशव्यापक
विमल विपुल बलवान निर्वाणस्वामी ॥ प्रकृति महत्त
त्त्व शब्दादिगुण देवता व्योम मरुदग्नि अमलांबु उर्वी
बुद्धि मन इंद्रियाँ प्राणचित्तातमा कालपरमाणु चिच्छ
क्तिगुर्वी ॥ सर्वमेवात्र त्वद्रूप भूपालमणि व्यक्तमव्यक्त
गत भेद विष्णो । भुवन भवदंग कामारिवंदित पद
द्वन्द्व मंदाकिनीजनक जिष्णो ॥ आदि मध्यान्त
भगवंत त्वं सर्वगतमीश पश्यंति ये ब्रह्मवादी ।
यथा पट तंतु घट मृत्तिका सर्पस्रग् दारुकरिकनक

कटकांगदादी॥गूढ गम्भीर गर्वघ्नगूढार्थवित् गुप्त गोतीत गुरुज्ञानज्ञाता ॥ ज्ञेय ज्ञानप्रिय प्रचुर गरिमागार घोर संसारकर पार दाता ॥ सत्यसंकल्प अतिकल्प कल्पान्तकृत कल्पनातीत अहितल्पवासी । वनज लोचन वनज नाभ वनदाभ वपु वनचर ध्वज कोटि लावण्यरासी ॥ सुकर दुष्कर दुराराध्य दुर्व्यसनहर दुर्ग दुर्द्धर्ष दुर्गार्तिहर्ता ॥ वेदगर्भार्भकादर्भगुणगर्व अर्वागपरगर्वनिर्वापकर्त्ता ॥ भक्त अनुकूल भवशूल निर्मूलकर तूल अघनाम पावक समानं। तरल तृष्णा तमि तरुणि धरणीधरण शरण भयहरण करुणानिधानं ॥ बहुल वृन्दारु वृन्दारका वृन्दपद द्वन्द मंदारमालोरधारी ॥ पाहिमामीश संतापसंकुलसदा दास तुलसी प्रणत रावणारी ॥ ५५ ॥ सन्त सन्तापहर विश्व विश्रामकर राम कामारि अभिरामकारी । शुद्ध बोधायतन सच्चिदानंदघन सज्जनानंदवर्द्धनखरारी ॥शील समताभवन विषमता मतिशमन राम रमारमण रावणारी । खड्ग कर चर्मवर वर्मधर रुचिर कटितूण शर शक्ति शारंगधारी ॥सत्यसंधान निर्वाणप्रद सर्वहित सर्वगुण ज्ञान विज्ञानशाली । सघन तम घोर संसार भारशर्वरी नाम दिवसशेखरकिरण मालो ॥ तपन तीक्षण तरुण तीव्रतापघ्नतप रूप तनुभूप तमपर तपस्वी॥मानमद मदन मत्सर मनोरथ मथनमोह अम्भोधि मन्दर मनस्वी ॥ वेदविख्यात वरदेश

वासनविरज विमल वागीश वैकुंठस्वामी। काम क्रोधा-
दिमर्दन विवर्धन क्षमा शांत विग्रह विहगराज गामी॥
परमपावन पापपुंज मुंजाटवी अनल इवनिमिष निर्मू-
लकर्त्ता। भुवनभूषण दूषणारिभुवनेश भूनाथ श्रुतिमाथ
जयभुवनभर्त्ता॥ अमलअविचल अकल सकल संतप्त
कलिविकलता भंजनानन्दरासी। उरग नायकशयन
तरुण पंकजनयन क्षीरसागर अयन सर्ववासी॥ सिद्ध
कवि कोविदानन्ददायक पदद्वन्द मदात्म मनुजैर्दुरापं॥
यत्र संभूत अतिपूतजलसुरसरी दर्शनादेव अपहरति
पापं॥ नित्य निर्मुक्त संयुक्त गुणनिर्गुणानंतभगवन्त-
नियामक नियन्ता। विश्वपोषण भरण विश्वकारणक-
रण शरण तुलसीदास त्रासहंता॥ ५६॥ दनुजसूदन
दयासिंधु दंभापहन दहन दुर्दोषदुःपापहर्त्ता। दुष्टता दम-
न दमभवन दुःखौघहर दुर्गदुर्वासनानाशकर्त्ता॥ भूरिभू-
षण भानुमंत भगवंत तव भंजनाभयदभुवनेशभारी॥
भावनातीतभववंद्य भवभक्तहित भूमि उद्धरण भूधरण-
धारी॥ वर वदनवनदाभवागीश विश्वात्मा विरज वैकुं-
ठमंदिरविहारी। व्यापकव्योम वंदारुवामनविभो ब्रह्मवि-
द्ब्रह्मचिन्तापहारी॥ सहज सुंदर सुमुख सुमनशुभ सर्वदा
छशुस्वच्छंदचारी। सर्वकृत सर्वभृतसर्वजित् सर्वहित सत्य
संकल्पकल्पांतकारी॥ नित्यनिर्मोह निर्गुण निरंजन निजा

नंदनिर्वाण निर्वाणदाता। निर्भरानंद निःकंपनिःसीमनिर्मुक्त निरुपाधिनिर्ममविधाता ॥ महामंगलमूल मोदमहिमायतनमुग्ध मधुमथन मानद अमानी। मदन मर्दन मदातीत मायारहित मंजुमानाथपाथोजपानी ॥ कमललोचन कलाकोशकोदंडधर कोशलाधीश कल्याणरासी। यातुधान प्रचुरमत्त करी केसरी भक्तमन पुण्य आरण्यवासी। अनघ अद्वैत अनवद्य अव्यक्त अज अमित अविकार आनन्दसिंधो। अचल अनिकेत अविरल अनामय अनारंभ अंभोदनादघ्नबंधो ॥ दास तुलसी खेदखिन्न आपन्न इह शोकसंपन्न अतिशयसभीतं ॥ प्रणतपालक राम परमकरुणाधाम पाहि मामुर्विपति दुर्विनीतं ॥ ॥ ५७ ॥ देहि सतसंग निजअंग श्रीरंग भवभंगकारण शरण शोकहारी। येतु भवदंघ्रि पल्लवसमाश्रित सदा भक्तिरत विगत संशय मुरारी ॥ असुर सुर नाग नर यक्ष गंधर्व खग रजनिचर सिद्ध येचापि अन्ने। संत संसर्ग त्रयवर्गपर परमपद प्रापनिःप्राप्यगति त्वयि प्रसन्ने। वृत्रबलि बाणप्रह्लादमयव्याधगजगृध्र द्विजबंधुनिजधर्मत्यागी। साधुपदसलिल निर्धूतकल्मषसकल श्वपच यवनादि कैवल्यभागी। शांत निर्पेक्ष निर्मम निरामय अगुण शब्द ब्रह्मैकपरब्रह्मज्ञानी। दक्ष समदृक स्वदृक विगत अति स्वपरमति परमरति विरति तव चक्रपानी॥ विश्व उपकारहित व्यग्र चित सर्वदा त्यक्तमदमन्यु कृत

पुण्यरासी। यत्र तिष्ठंति तत्रैव अज शर्व हरि सहित गच्छन्ति क्षीराब्धिवासी। वेद पयसिंधुसुवि चारमंदर-महा अखिल मुनिवृंद निर्मथनकर्त्ता। सार सत्संगमुद्धृत्य इति निश्चितं वदत श्रीकृष्ण वैदर्भिभर्त्ता॥ शोक-संदेह भय हर्ष तम तर्षगण साधु सद्युक्ति विच्छेदकारी। यथा रघुनाथ सायकनिशाचरचमू निचय निर्दलन पटु वेग भारी॥ यत्र कुत्रापि मम जन्म निजकर्मवश भ्रमत जगयोगि संकट अनेकम्। तत्र त्वद्भक्तिसज्जनसमागम सदा भवतु मे राम विश्राममेकम्॥ प्रबल भव जनि-तत्रैव्याधिभेषजभक्तिभक्त भैषज्यमद्वैतदरसी। संत भग-वन्त अंतर निरंतर नहीं किमपि मति मलिन कह दास तुलसी॥ ५८॥ देहि अवलम्ब करकमल कम-लारमन दमन दुख शमन सन्ताप भारी। अज्ञानरा-केशग्रासनविधुंतुदगर्व कामकरिमत्तहरि दूषणारी॥ वपुष ब्रह्मण्डसुप्रवृत्तिलङ्कादुर्ग रचितमनादनुजमयरूप-धारी। विविधकोशौघ अति रुचिर मन्दिर निकर सत्वगुण प्रमुख त्रय कटककारी॥ कुनप अभिमान सागर भयंकर घोर विपुल अवगाह दुस्तर अपारम्। नक्र रागादि संकुल मनोरथ सकल संग संकल्पवीची-विकारम्॥ मोह दशमौलि तद भ्रातहंकार पाकारिजित कामविश्रामहारी। लोभ अतिकाय मत्सरमहोदरदुष्ट क्रोध पापिष्ठ विबुधान्तकारी॥ द्वेष दुर्मुख दम्भ खर

अकंपन कपट दर्प मनुजाद मदशूलपानी । अमित बल परमदुर्जननिशाचरनिकर सहितषड्वर्ग गो यातुधानी॥ जीवभवदंघ्रि सेवक विभीषणवसत मध्यदुष्टाटवीग्रसित चिन्ता॥नियमयम सकल सुरलोकलोकेश लंकेशवशनाथ अत्यन्तभीता ॥ ज्ञानअवधेश गृहगेहिनी भक्तिशुभ तत्र अवतार भूभारहर्त्ता । भक्तसंकष्टअवलोकपितुवाक्यकृतगमन किय गहन वैदेहिभर्त्ता ॥ कैवल्यसाधन अखिल भालु मर्कट विपुल ज्ञानसुग्रीव कृतजलाधिसेतू । प्रबलवैराग्यदारुणप्रभंजनतनय विषयवनभवनमिव धूमकेतू॥ दुष्टदनुजेश निर्वंशकृतदासहित विश्वदुखहरणबोधैकराशी । अनुजनिज जानकीसहित हरि सर्वदा दासतुलसीहृदयकमलवासी ॥ ५९ ॥ दीनउद्धरण रघुवर्य करुणाभवन शमनसन्ताप पापौघहारी। विमलविज्ञान विग्रह अनुग्रहरूपभूपवर विबुधनर्मदखरारी ॥ संसारकान्तार अतिघोरगम्भीरघन गहनतरुकर्मसंकुल मुरारी । वासनावल्लि खरकण्टकाकुलविपुल निविडविटपाटवी कठिन भारी ॥ विविधचित्तवृत्तिखग निकरसेनोलूक काकबकगृध्र आमिषअहारी । अखिल खलनिपुण छल छिद्रनिरखत सदा जीवजनपथिकमनखेदकारी ॥ क्रोधकरि मत्तमृगराज कन्दर्पमद दर्पवृक भालु अतिउग्र कर्म्मा । महिष मत्सर क्रूर लोभशूकर रूप फेरुछल दम्भ मार्जार धर्म्मा ॥ कपटमर्कटविकट

व्याघ्र पाखण्डमुखदुखमृगव्रातउत्पातकर्त्ता। हृदयअवलोकि यह शोकशरणागतं पाहि मां पाहि भो विश्वभर्त्ता॥ प्रबल अहंकार दुरघट महीधर महामोहगिरिगुहा निबिडान्धकारम्। चित्तवेताल मनुजाद मन प्रेत गण रोग भोगौघवृश्चिक विकारम्॥ विषयसुखलालसादंशमशकादिखल झिल्लिरूपादि सबसर्पस्वामी। तत्र आक्षिप्त तवविषममायानाथ अन्धमैं मन्दव्यालादगामी॥ घोरअवगाह भवआपगा पापजल पूरदुष्प्रेक्ष्य दुस्तर अपारा। मकरषड्वर्ग गोनक्रचक्राकुला कूल शुभ अशुभ दुखतीव्रधारा॥ सकलसंघट्टपोच शोचवश सर्वदा दास तुलसी विषम गहननस्तम्। त्राहि रघुवंशभूषण कृपाकर कठिन कालविकरालकलित्रासत्रस्तम्॥

॥ ६० ॥ नौमि नारायणं नरं करुणायणं ध्यानपारायणं ज्ञानमूलम्। अखिल संसारउपकारकारन सदय हृदय तपनिरत प्रणातानुकूलम्॥ श्यामनवतामरसदामद्युतिवपुषछबि कोटिमदनार्कअगणितप्रकाशम्। तरुणरमणीय राजीवलोचन ललित वदनराकेशकरनिकरहासम्॥ सकलसौन्दर्यनिधि विपुलगुणधामविधि वेदबुधशंभुसेवितअमानम्। अरुणपदकंज मकरंदमन्दाकिनी मधुपमुनिवृन्द कुर्वन्ति पानम्॥ शक्रप्रेरित घोरमारमद भंगकृत क्रोधगत बोधरत ब्रह्मचारी। मार्कण्डेयमुनिवर्यहितकौतुकी विनहिं कल्पान्त प्रभु प्रलयकारी॥ पुण्य-

वन शैलसरिबदरिकाश्रम सदासीनपद्मासनं एकरूपं। सिद्धयोगीन्द्रवृन्दारकानन्दप्रद भद्रदायक दरश अति अनूपं ॥ मानमनभंगचितभंगमद क्रोध लोभादिपर्वत दुर्गभुवनभर्त्ता। द्वेषमत्सर राग प्रबलप्रत्यूहप्रति भूरि निर्दयक्रूरकर्मकर्त्ता ॥ बिकटतरवक्रक्षुरधारप्रमदातीव्रद-र्पकन्दर्पगरखड्गधारा।धीरगंभीरमनपीरकारक तत्र केवराकावयं विगतसारा ॥ परमदुर्घट पन्थखलअसंगतसाथ नाथनहिंहाथवर बिरतियष्टी। दरशनारतदास त्रसित मायापास त्राहि हरि त्राहि हरि दास कष्टी ॥ दासतु-लसी दीन धर्मबलहीन श्रमित अतिखेदमतिमोहनासी। देहि अवलंब न विलंब अंभोजकर चक्रधर तेजबलस-र्मराशी ॥ ६१ ॥ सकलसुखकन्द आनन्दवन पुण्यकृत बिन्दुमाधव द्वन्द्वविपतिहारी। यस्यांघ्रिपाथोज अज शम्भु सनकादिशुक शेषमुनिवृन्द अलि निलयकारी ॥ अमलमर्कतश्याम कामशतकोटिछबि पीतपट तडित इव जलदनीलम्। अरुणशतपत्रलोचन विलोकनिचारु प्रणतजनसुखद करुणार्द्रशीलम् ॥ कालगजराजमृगराज दनुजेशवनदहनपावक मोहनिशिदिनेशम्। चारिभुज चक्रकौमोदकीजलजदर सरसिजोपरियथाराजहंसम् ॥ मुकुटकुंडलतिलक अलकअलिव्रात इव भ्रुकुटिद्विजअ-धरवरचारुनासा। रुचिरसकपोल दरग्रीव सुख-सीव हरि इंदुकरकुंदमिवमधुरहासा ॥ उरसि वनमाल सुवि-

शाल वनमंजरी भ्राजश्रीवत्सलांछनउदारम् । परमब्रह्मण्य अतिधन्य गत मन्यु अज अमितबलविपुल महिमाअपारम् ॥ हारकेयूरकरकनक कंकणरतन जटितमणि मेखला कटिप्रदेशम् । युगलपदनूपुरामुखर कल हंसवत सुभगसर्वांङ्गसौंदर्यवेशम् ॥ सकलसौभाग्यसंयुक्त त्रैलोक्यश्री दक्षदिशि रुचिरवारीशकन्या। वसत विबुधापगानिकटतटसदनवर नयननिरखंति नरतेतिधन्या॥ अखिलमंगलभवन निबिडसंशयशमनदमनव्रजनाटिवी कष्टहर्त्ता । विश्वधृत विश्वहित अजितगोतीत शिव विश्व पालनहरणविश्वकर्त्ता ॥ ज्ञानविज्ञान वैराग्यऐश्वर्यनिधि सिद्धि अणिमादि दे भूरिदानम् । ग्रसतभवव्यालअति त्रास तुलसीदासत्राहि श्रीराम उरगारियानम् ॥ ६२ ॥

राग आसावरी।

इहै परमफल परमबडाई । नखशिखरुचिरबिन्दुमाधवछबि निरखहिं नयन अघाई ॥ ।वशदकिशोर पीन सुंदर वपु श्याम सुरुचि अधिकाई । नीलकंज वारिद तमालमणि इन्ह तनुते द्युति पाई ॥ मृदुलचरण शुभ चिह्न पदज नख अति अद्भुत उपमाई। अरुण नील पाथोज प्रसव जनु मणियुत दलसमुदाई ॥ जातरूप मणिजटित मनोहर नूपुर जनसुखदाई। जनु हर उर हरि विविध रूप धरि रहे वरभवन बनाई ॥ कटितट रटति चारु किंकिणीरव

अनुपम वरणि न जाई। हेमजलज कलकलिनमध्य जनु मधुकर सुखर सोहाई॥ उर विशाल भृगुचरण चारु अति सूजत कोमलताई। कंकण चारु विविधभूषण विधि रचि निज करमन लाई॥ गजमणिमाल वीच भ्राजक कहि जाति न पदिक निकाई। जनु उडुगण मंडल वारिद पर नवग्रह रची अथाई॥ भुजगभोग भुजदण्ड कंज दर चक्र गदा बन आई। शोभासीव ग्रीव चिबुकाधर वदन अमित छवि छाई॥ कुलिश कुंद कुड्मल दामिनिद्युति दशनन देख लजाई। नासा नयन कपोल ललित श्रुति कुंडल भ्रू मोहिं भाई॥ कुंचित कच शिर मुकुट भालपर तिलक कहों समुझाई। अलप तडित युगरेख इंदुमहँ रहि तजि चंचलताई॥ निर्मल पीत दुकूल अनूपम उपमा हिय न समाई। बहुमणि युत गिरि नील शिखर पर कनक वसन रुचिराई॥ दक्ष भाग अनुराग सहित इन्दिरा अधिक ललिताई। हेमलता जनु तरुतमाल ढिग नील निचोल ओढाई॥ शतशारदा शेष श्रुति मिलि करि शोभा कहि न सिराई। तुलसिदास मतिमन्द द्वंद्वरत कहै कौन विधि गाई॥ ६२॥

राग जयतश्री।

मन इतनोई या तनुको परमफल। सब अँग सुभग विंदुमाधव छबि तजि स्वभाउ अवलोकु एक पल॥

तरुण अरुण अंभोज चरण मृदु नख द्युति हृदयतिमिरहारी। कुलिशकेतु जब जलज रेखवर अंकुश मन गज वशकारी॥ कनक जटित मणिनूपुरमेखल कटितट रटति मधुरवानी। त्रिवली उदर गँभीर नाभि सर जहँ उपजे विरंचि ज्ञानी॥ उर वनमाल पदिक अति शोभित विप्रचरण चित कहँ करषै। श्याम तामरसदामवर्णवपु पीतवसन शोभा वरषै॥ कर कंकण केयूर मनोहर देति मोद मुद्रिक न्यारी। गदा कंज दर चारु चक्रधर नागशुंडसम भुजचारी॥ कंबुग्रीव छबिसीव चिबुक द्विज अधर अरुण उन्नत नासा। नवराजीवनयन शशि आनन सेवकसुखद विशदहासा॥ रुचिर कपोल श्रवण कुण्डल शिर मुकुट सुतिलक भाल भ्राजै। ललित भ्रुकुटि सुंदर चितवनि कच निरखिमधुपअवलीलाजै॥ रूपशीलगुणखानि दक्ष दिशि सिंधुसुतारत पदसेवा। जाकी कृपाकटाक्ष चहत शिव विधि मुनि मनुजदनुज देवा॥ तुलसिदास भव त्रास मिटै तब जब मति यहि स्वरूप अटकै॥ नाहित दीन मलीन हीनसुख कोटि जन्म भ्रमि भ्रमि भटकै॥ ६४॥

राग वसन्त।

वन्दो रघुपति करुणानिधान। जाते छूटै भवभेद ज्ञान॥ रघुवंशकुमुदसुखप्रद दिनेश। सेवित पदपंकज अज महेश॥ निजभक्तहृदय पाथो-

जभंग। लावण्यवपुष अगणितअनंग॥ अति-प्रबल मोहतममारतंड॥ अज्ञानगहन पावकप्रचंड। अभिमानसिंधुकुंभजउदार। सुररंजन भंजन भूमिभार॥ रागादिसर्पगणपन्नगारि। कंदर्पनागमृगपति मुरारि॥ भवजलधिपोतचरणारविन्द। जानकीरमण आनन्दकन्द॥ हनुमंतप्रेमवापीमराल। निष्कामकामधुक गोदयाल॥ त्रैलोक्यतिलक गुणगहनराम। कह तुलसिदास विश्रामधाम॥ ६९॥

राग भैरव।

राम राम रटु राम राम रटु राम राम जपु जीहा। रामनाम नवनेह मेहको मन हठि होहि पपीहा॥ सबसाधनफलकूप सरितसर सागरसलिलनिरासा। रामनामरति स्वातिसुधाशुभसीकर प्रेमपियासा॥ गरजि तरजि पाषाण बरपि पवि प्रीति परखि जिय जानै। अधिकअधिक अनुराग उमँग उर पर परमिति पहिचानै॥ राम नामगति रामनाममति रामनाम अनुरागी। ह्वै गये हैं जे होंहिंगे आगे तेइ त्रिभुवन गनियत बडभागी॥ एक अंगमग अगम गवन करि विलंबन छिन छिन छाहैं॥ तुलसी हित अपनी अपनी दिशि निरुपधि नेम निबाहैं॥ ६६॥ रामजपु रामजपु रामजपु बावरे। घोरभवनीरनिधि नाम निज नावरे॥ एकही साधनसब ऋद्धि सिद्धि साधिरे। ग्रसे कलि-

रोग याग संशय समाधिरे ॥ भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो वामरे। रामनामहीसों अन्त सबहीको कामरे ॥ जग नभवाटिका रही है फलि फूलिरे। धुवां कैसे धौरहर देखि तू न भूलिरे ॥ रामनाम छाँडि जो भरोसो करै औररे। तुलसी परोसो त्यागि माँगै कूर कौररे ॥ ६७ ॥ रामनाम जपु जिय सदा सानुरागरे। कलि न विराग योग याग तप त्यागरे ॥ रामसुमिरण सब विधिहीको राजरे। रामको विसारिबो निषेध शिरताजरे ॥ रामनाम महामणि फणि जगजालरे। मणि लिये फणि जिये व्याकुल विहालरे ॥ रामनाम कामतरु देत फल चारिरे ॥ कहत पुराण वेद पंडित पुरारिरे ॥ रामनाम प्रेम परमारथको साररे। रामनाम तुलसीको जीवन अधाररे ॥ ६८ ॥ राम राम राम जीह जौलों तू न जपि है। तौलों तू कहूं ही जाय तिहूं ताप तपि है ॥ सुरसरि तीर विनु नीर दुख पाइहै। सुरतरुतर तोहिं दुःख दारिद्र सताइ है ॥ जागत वागत स्वप्ने न सुख सोइ है। जनम जनम युग युग रोइहै ॥ छूटिवेके यतन विशेष बाँध्यो जायगो। ह्वैहै विष भोजन जो सुधा सानि खायगो ॥ तुलसी तिलोक तिहूं काल तोसे दीनको। रामनामहीकी गति जैसे जल मीनको ॥ ६९ ॥ सुमिर सनेह सों तु नाम राम-रायको। संवर निसंवरको सखा असहाय को ॥ भाग

है अभागहूको गुण गुणहीनको ।गाहक गरीबको दयालु दानि दीनको ॥ कुल अकुलीनको सुन्यो है वेद साखि है। पाँगुरको हाथ पाँय आंधरेको आँखि है ॥माय बाप भूखे को अधार निराधारको । सेतु भवसागर को हेतु सुखसारको ॥ पतितपावन रामनामसों न दूसरो । सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सो ऊसरो ॥ ७० ॥ भलो भली भाँति है जो मेरे कहे लागि है । मन रामनामसों स्वभाव अनुरागि है ॥ रामनामको प्रभाव जानि जूडी आगि है । सहित सहाय कलिकाल भीरु भागि है ॥ राम नाम सों विराग योग जप जगि है। वाम विधि भालहू न कर्म दाग दागि है ॥ राम नाम मोदक सनेह सुधा पागि है । पाई परितोष तू न द्वार द्वार बागि है ॥ कामतरु रामनाम जोइ जोइमाँगि है । तुलसीदास स्वारथ परमारथ खागि है ॥ ७१ ॥ ऐसेऊरे मन साहब की सेवा सों होत चोररे । अपनी न बूझि न कहै को राँडरोररे ॥ सुनि मन अगम सुगम माइ बापसों । कृपासिन्धु सहजसखा सनेही आपसों॥ लोक वेद विदित बडो न रघुनाथ सो । सबदिन सब देश सबहीके साथ सो ॥ स्वामि सर्वज्ञ सों चलै न चोरी चारकी । प्रीति पहिचानि यह रीति दरबारकी॥ काय न कलेश लेश लेत मान मनकी । सुमिरे सकुचि रुचि जोगवत जनकी ॥ रीझे वश होत खीझे देतनिज

धामरे। फलत सकल फल कामतरु नामरे॥ बचे खोटो दाम न मिलै न राखे कामरे। सोऊ तुलसी निवाज्यो ऐसो राजा राम रे॥ ७२॥ मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई। हौंतो साँईद्रोही पै सेवकहित साँई॥रामसों बडो है कौन मोसों कौन छोटो। रामसों खरो है कौन मोसों कौन खोटो॥ लोक कहै राम को गुलाम हौं कहावों। एतो बडो अपराध भवन मन वावों। पाथ माथे चढै तृण तुलसी जो नीचो। बोरत न वारि ताहि जानि आपु सींचो॥ ७३॥ जागु २ जीव जड जोहै जगयामिनी। देह गेह नेह जानि जैसे घन दामिनी॥ सोवत स्वपने सहै संसृति सन्तापरे। बूडो मृग वारि खायो जेवरीको साँपरे॥ कहैं वेद बुध तूतो बूझिमन माँहिरे। दोष दुख स्वप्नके जागेहींपै जाहिंरे॥ तुलसी जागे ते जाइ ताप तिहुँ तायरे। रामनामशुचि रुचि सहज स्वभाय रे॥ ७४॥

राग विभास।

जानकीशकी कृपा जगावती सुजान जीव जागी त्यागि मूढताऽनुरागु श्रीहरे। करि विचार तजि विकार भजि उदार रामचन्द्र भद्रसिंधु दीनबंधु वेद वदतरे॥ मोहमय कुहू निशा विशाल काल विपुल व्याल सोयो खोयो सो अनूप स्वप्न जूपरे। अब प्रभात प्रगट ज्ञान भानुके प्रकाश पास नासरोग मोह द्वेष निबड तम

टरे ॥ भागे मद मान चोर भोर जानि यातुधान ॥ काम क्रोध लोभ क्षोभ निकर अपडरे । देखत रघुवरप्र-ताप बीते सन्ताप पाप ताप त्रिविधि प्रेम आप दूरही करे ॥ श्रवण सुनि गिरा गँभीर जागे अति धीर वीर वर वैराग तोष सकल सन्त आदरे । तुलसिदास प्रभु कृपालु निरखि जीवजन विहाल भंज्यो भवजाल परम मंगलाचरे ॥ ७५ ॥

राग ललित ।

खोटो खरो रावरो हौं रावरे सो झुठ क्यों कहागो जानौ सब हीके मन की । करम वचन हिये कहौं न कपट किये ऐसी हठ जैसी गाठि पानी परे सनकी ॥ दूसरो भरोसो नाहिं वासना उपासनाकी वासव विरंचि सुर नर मुनिगनकी । स्वारथके साथी मेरे हाथी श्वान लेवादेकाहू तो न पीर रघुवीर दीन जनकी ॥ साँप सभा साबर लबार भये देव दिव्य दुसह शासति कीजै आगेही या तनकी । साँचे परो पाऊँ पान पंचनमें पन प्रमाण तुलसी चातक आश राम श्याम घनकी ॥ ॥ ७६ ॥ रामके गुलाम नाम रामबोला राख्यो राम काम यहै नाम द्वै हों कबहूं कहत हौं । रोटि लूंगा नीके राखै आगेहूकी वेद भाषै भलो हैं तेरी ताते आनं-द लहत हौं ॥ बाँध्यो हौं कमर जड गरब गूढ निगड सुनत दुसह हौं तो शासति सहत हौं ॥ आरत अनाथ

नाथ कौशल कृपाल पाल लीन्हों छीनि दीन देख्यो दुरित दहत हौं। बूझ्यौ ज्योंहीं कह्यो मैं हूं चेरो ह्वैहौं रावरो जू मेरो कोऊ कहूं नाहिं चरण गहत हौं। भींजो गुरु पीठ अपनाइ गहि बाँह बोलि सेवक सुखद सदा विरद बहत हौं॥ लोग कहै पोचु सो न सोच न मेरे व्याह न बरेखी जाति पाँति न चहत हौं। तुलसी अकाज काज रामहीके रीझे खीझे प्रीतिकी प्रतीति मन मुदित रहत हौं॥ ७७॥ जानकी जीवन जगजीवन जगतहित जगदीश रघुनाथराजीवलोचन राम। शरदविधु सुखशील श्रीसदन वदन सहज सुंदरतनु शोभा अगणित काम॥ जगसुपिता सुमातु सुगुरु सुहित सुमीत सबको दाहिनो दीनबंधु काहूको न बाम। आरतहरण शरणद अतुलितदानि प्रणतपाल कृपालु पतितपावन नाम॥ सकलविश्ववन्दित सकल सुर सेवित आगम निगम कहैं रावरेई गुणग्राम। इहै जानिकै तुलसी तिहारो जन भयो न्यारो कै गनिबो जहाँ गने गरीब गुलाम॥ ७८॥

राग टोडी।

दीनको दयालु दानि दूसरो न कोऊ। जाहि दीनता कहौं हौं दीन देखौं सोऊ॥ सुनि सुर नर नाग असुर साहब तौ घनेरे। पै तौलौं जौलौं रावरे न नेकु नयन फेरे॥ त्रिभुवन तिहुँकाल विदित वदत वेद चारी।

आदि अन्त मध्य राम साहबी तिहारी ॥ तोहिं माँगि माँगनो न माँगिबो कहायो। सुनि स्वभाउ शील सुयश याचन जन आयो ॥ पाहन पशु विटप विहँग अपने कर लीन्हें। महाराज दशरथके रंक राय कीन्हें ॥ तू गरीबको निवाज हौं गरीब तेरो। बारेक कहिये कृपालु तुलसीदास मेरो ॥ ७९ ॥ तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी। हौं प्रसिद्ध पातकी तू पापपुं-जहारी ॥ नाथ तू अनाथको अनाथ कौन मोसों। मो समान आरत नहिं आरतहर तोसों ॥ ब्रह्म तु ही जीव तु ही ठाकुर हौं चेरो। तात मात गुरु सखा तु सब विधि हित मेरो ॥ तोहिं मोहिं नाते अनेक मानिये जो भावेज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावे॥८०॥ और काहि माँगिये को माँगिबो निवारे। अभिमतदा-तार कौन दुखदरिद्र दारे ॥ धर्म धाम राम काम कोटिरूप रूरो। साहब सब विधि सुजान दान खड्ग शूरो। सुसमय दिन द्वै निशान सबके द्वार बाजे। कुसमय दशरथके दानि तैं गरीब निवाजे ॥ सेवा विनु गुण विहीन दीनता सुनाये। जेजे तैं निहाल किये फूले फिरत पाये ॥ तुलसिदास याचकरुचि जानि दानि दीजै। रामचन्द्र चन्द्र तू चकोर मोहिं कीजै ॥ ८१ ॥ दीनबंधु सुखसिंधु कृपाकर कारुणीक रघुराई। सुनहु नाथ मन जरत त्रिविधज्वर करत फिरत बौराई ॥

कबहुँ योगरत भोगनिरत शठ हठ वियोग वश होई।
कबहुँ मोहवश द्रोह करत बहु कबहुँ दया अति सोई॥
कबहुँ दीन मतिहीन रंकतर कबहुँ भूप अभिमानी ।
कबहुँ मूढ पंडित बिडंबरत कबहुँ धर्मरत ज्ञानी ॥
कबहुँ देख जग धनमय रिपुमय कबहुँ नारिमय भासै ।
संसृति सन्निपात दारुणदुख विनु हरिकृपा न नासै ॥
संयम जप तप नेम धर्म व्रत बहु भेषज समुदाई ।
तुलसिदास भवरोग रामपद प्रेमहीन नहिं जाई ॥८२॥
मोहजनित मल लाग विविधविध कोटिहु जतन न जाई । जनम जनम अभ्यासनिरत चित अधिक २ लपटाई ॥ नयन मलिन परनारि निरखि मन मलिन विषय सँग लागे । हृदय मलिन वासना मान मद जीव सहज सुख त्यागे॥परनिन्दा सुनि श्रवण मलिन भये वचन दोष पर गाये । सब प्रकार मलभार लाग निज नाथचरण बिसराये ॥ तुलसिदास व्रत दान ज्ञान तप शुद्धिहेतु श्रुति गावै । रामचरण अनुराग नीर बिनु मल अति नाश न पावै ॥ ८३ ॥

राग जयतश्री ।

कछु है न आय गयो जनम जाय । अति दुर्लभ तनु पाइ कपट तजि भजे न राम मन वचन काय॥लरिकाई बीती अचेत चित चंचलता चौगुने चाय । यौवन ज्वर युवती कुपथ्य करि भयो त्रिदोष भरि मदन बाय॥

मध्य वयस धन हेतु गँवाई कृषी बणिज नाना उपाय। राम विमुख सुख लह्यो न सपनेहुँ निशि वासर तपो तिहूँ ताय॥ सेये नहिं सीतापति सेवक साधु सुमति भले भगति पाय। सुने न पुलकि तनु कहे न मुदित मन किये जे चरित रघुवंशराय॥ अब सोचत मणि विनु भुजंगज्यों विकल अंग दले जरा घाय। शिर धुनि धुनि पछितात मींजि कर कोउ न मीत हित दुसह दाय॥ जिन्ह लगि निज परलोक बिगारयो ते लजात होत ठाढे ठाँय। तुलसी अजहू सुमिरि रघुनाथहि तरयो गयन्द जाके एक नायँ॥ ८४॥ तौ तू पछितै है मन मींजि हाथ। भयो है सुगम तोको अमर अगम तनु समुझ धों कत खोवत अकाथ॥ सुखसाधन हरि-विमुख वृथा जैसे श्रमफलघृतहित मथे पाथ। यह विचारि तजि कुपथ कुसंगति चलि सुपंथमिलि भले साथ॥ देखु रामसेवक सुनि कीरति रटहिं नाम करिगान गाथ। हृदय आनु धनुबाण पाणि प्रभु लसे मुनिपटकटि कसे भाथ॥ तुलसिदास परिहरि प्रपंच सब नाउ रामपदकमल माथ। जनि डरपहि तोसे अनेक खल अपनाये जानकीनाथ॥ ८५॥

राग धनाश्री।

मन माधवको नेकु निहारहि। सुनु शठ सदारंकके धनज्यों छनछन प्रभुहि सँभारहि। शोभाशील ज्ञान-

गुणमन्दिर सुन्दर परम उदारहि । रञ्जनसन्त-अखिल अघगञ्जन भञ्जनविषय विकारहि । जो विनुयोग यज्ञ व्रत संयम गयो चहहि भवपारहि । तौ जनि तुलसिदास निशि वासर हरिपदकमल बिसा-रहि ॥ ८६ ॥ इहै कह्यो सुत वेद नित चहूं । श्रीरघु-वीरचरणचिन्तन तजि नाहिन ठौर कहूं ॥ जाके चरण विरंचि सेइ सिधि पाई शंकरहूं । शुकसनकादि मुक्त विचरत तेउ भजन करत अजहूं ॥ यद्यपि परमचपल श्री सन्तत थिर न रहति कतहूं । हरिपदपंकज पाइ अचलभई कर्म वचन मनहूं ॥ करुणासिंधु भक्तचिन्ता-मणि शोभा सेवतहूं । और सकल सुर असुर ईश सब खाये उरग छहूं ॥ सुरुचि कह्यो सोइ सत्य तात अति परुष वचन जबहूं । तुलसीदास रघुनाथविमुख नहिं मिटै विपति कबहूं ॥ ८७ ॥ सुनु मन मूढ शिखावन मेरो । हरिपद विमुख लह्यो न काहु सुख शठ यह समुझ सबेरो ॥ बिछुरे शशि रवि मन नयननि ते पावत दुख बहुतेरो । भ्रमत श्रमित निशि दिवस गगन महँ तहँ रिपुराहु बडेरो ॥ यद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँ-पुर सुयश घनेरो । तजे चरण अजहूं न मिटत नित बहिबो ताहू केरो ॥ छुटै न विपति भजे विनु रघुपति श्रुति सन्देह निबेरो । तुलसिदास सब आश छांडि करि होहु रामकर चेरो ॥ ८८ ॥ कबहूं मन विश्राम

न मान्यो। निशिदिन भ्रमत बिसारि सहज सुख जहँ तहँ इन्द्रिन तान्यो॥ यदपि विषयसँग सहे दुसह दुख विषमजाल अरुझान्यो। तदपि न तजत मूढ ममतावश जानतहूं नहिं जान्यो॥ जन्म अनेक किये नानाविधि कर्म कीच चित सान्यो। होइ न विमल विवेक नीर विनु वेद पुराण बखान्यो॥ निज हित नाथ पिता गुरु हरिसों हर्षि हृदय नहिं आन्यो। तुलसिदास कब तृषा जाइ सर खनतहिं जन्म सिरान्यो॥

॥ ८९ ॥ मेरो मन हरि हठ न तजै। निशिदिन नाथ देउँ शिष बहुविधि करत स्वभाउ निजै॥ ज्यों युवती अनुभवति प्रसव अतिदारुण दुख उपजै॥ है अनुकूल विसारि शूल शठ पुनि खल पतिहि भजै॥ लोलुप भ्रमत गृहपशु ज्यों जहँ जहँ शिर पदत्रान बजै। तदपि अधम विचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ लजै॥ हौं हार्यों करि यत्न विविध विध अतिशय प्रबल अजै। तुलसिदास वश होइ तबहिं जब प्रेरक प्रभु बरजै॥

॥ ९० ॥ ऐसी मूढता या मनकी। परिहरि रामभक्ति सुरसरिता आश करत ओसकनकी॥ धूमसमूह निरखि चातक ज्यों तृषित जानि मति घनकी। नहिं तहँ शीतलता न वारि पुनि हानि होत लोचनकी॥ ज्यों गच काच विलोकि श्वान जड छाँह आपने तनकी। टूटत अतिआतुर अहार वश क्षति विसारि आनन की॥

कहँलौं कहौं कुचाल कृपानिधि जानत हौ गति जनकी । तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दुख करहु लाज निजपनकी ॥९१॥ नाचतही निशि दिवस मरचो।तबहीते न भयो हरि थिर जबते जिव नाम धरचो॥बहु वासना विविध कंचुक भूषण लोभादि भरचो । चर अरु अचरगगनजलथलमेंकौननस्वांगुकरचो ॥ देवदनुज मुनिनागमनुजनहिंयाँचत कोउ उबरचो । मेरो दुसहदारिद्र दोषदुख काहू तो न हरचो ॥ थके नयन पद पाणि सुमतिबल संग सकल बिछुरचो । अब रघुनाथ शरण आयो जन भवभयविकल डरचो ॥ जेहि गुणते वश होहु रीझि करि सो मोहिं सब बिसरचो । तुलसिदास निज भवन द्वार प्रभु दीजै रहन परचो ॥ ९२ ॥ माधव जू मोसम मन्द न कोऊ । यद्यपि मीन पतंग हीनमति मोहिं नहिं पूजहिं ओऊ॥ रुचिर रूप आहार वश्य उन पावक लोह न जान्यो। देखत विपति विषय न तजत हौं ताते अधिक अयान्यो ॥ महामोहसरिता अपार महँ सन्तत फिरत बह्यो । श्रीहरिचरणकमल नौका तजि फिरि फिरि फेन गह्यो ॥ अस्थिपुरातन क्षुधित श्वान अति ज्यों भरि मुख पकरचो । निज तालूगत रुधिर पान करि मन सन्तोष धरचो ॥ परमकठिन भवव्यालग्रसित हौं त्रसित भयो अति भारी । चाहत अभय भेक शरणा-

गत खगपतिनाथ बिसारी ॥ जलचर वृन्द जाल अन्त-गत होत सिमिटि इकपासा। एकहि एक खात लाल-चवश नहिं देखत निज नाशा ॥ मेरे अघ शारद अनेक युग गनत पार नहिं पावै। तुलसिदास पतित-पावन प्रभु यह भरोस जिय आवै ॥ ९३ ॥ कृपा सो धौं कहां बिसारी राम। जेहि करुणा सुनि श्रवण दीन दुख धावत हौं तजि धाम ॥ नागराज निज बल विचारि हिय हारि चरण चित दीन। आरत गिरा सुनत खगपति तजि चलत विलम्ब न कीन ॥ दिति-सुत त्रास त्रसित निशि दिन प्रह्लाद प्रतिज्ञा राखी ॥ अतुलितबल मृगराजमनुजतनु दनुज हत्यो श्रुति साखी ॥ भूप सदसि सब नृप विलोकि प्रभु राखु कह्यो नर नारी। वसनपूरि अरिदर्प दूरि करि भूरि कृपा दनु-जारी ॥ एक एकते रिपुत्रासित जन तुम राखे रघुवीर। अब मोहिं देत दुसह दुख बहु रिपु कस न हरहु भव पीर ॥ लोभ ग्रास दनुजेश क्रोध कुरुराज बन्धु खल मार। तुलसिदास प्रभु यह दारुण दुख भंजहु राम उदार ॥९४॥ काहे ते हरि मोहिं बिसारो। जानत जन महिमा मेरे अघ तदपि न नाथ सँभारो ॥ पतितपु-नीत दीनहितअशरण शरण कहत श्रुति चारो ॥ हौं नहीं अधम सभीत दीन किधौं वेदन मृषा पुकारो ॥ खग गणिका गज व्याध पाँति जहँ तहँ होहूँ बैठारो।

अब केहि लाज कृपानिधान परसत पनवारो फारो ॥ जो कलिकाल प्रबल अति होतो तुव निदेश तें न्यारो । तौ हरि रोष भरोस दोष गुण तेहि भजते तजि गारो ॥ मसक विरंचि विरंचि मसक सम करहु प्रभाउ तुम्हारो । यह सामर्थ्य अछत मोहिं त्यागहु नाथ तहाँ कछु चारो ॥ नाहिन नरक परत मोकहँ डर यद्यपि हौं अति हारो । यह बडि त्रास दास तुलसी प्रभु नामहुँ पाप न जारो ॥ ९५ ॥ तऊ न मेरे अघ अवगुण गनिहैं । जो यमराज काज सब परिहरि यही ख्याल उर अनिहैं ॥ चलिहैं छूटि पुंज पापिनके असमंजस जिय जनिहैं । देखि खलल अधिकार प्रभू सो मेरी भूरि भलाई मनिहैं ॥ हँसि करिहै परतीति भक्त की भक्तशिरोमणि मनिहैं । ज्यों त्यों तुलसिदास कौशल-पति अपनायहि पर बनिहैं ॥ ९६ ॥ जो पै जिय धरिहो अवगुण जनके । तौ क्यों कटत सुकृत नख ते मो पै विपुल वृन्द अघ वनके ॥ कहिहै कौन कलुष मेरे कृत कर्म वचन अरु मनके । हारहिं अमित शेष शारद श्रुति गिनत एक यक छिनके । जो चित चढै नाम महिमा निज गुण गण पावन पनके ॥ तौ तुलसिहि तारिहौ विप्र ज्यों दशन तोरि यमगनके ॥ ९७ ॥ जो पैहरि जनके अवगुण गहते । तौ सुरपति कुरुराज बालिसों कत हटि बैर विसहते ॥ जो जप याग योग

व्रत वर्जित केवल प्रेम न चहते। तौ कत सुर मुनिवर विहाय ब्रज गोपिगेह बसि रहते॥ जो जहँ तहँ प्रण राखि भक्तको भजनप्रभाउ न कहते। तौ कलि कठिन कर्म मारग जड हम केहि भाँति निबहते॥ जो सुतहित लिय नाम अजामिलके अघ अमित न दहते। तौ यमभट शासति हर हमसे वृषभ खोजि खोजि न हते॥ जो जगविदित पतितपावन अति बांकुर विरद न वहते। तौ बहुकल्प कुटिल तुलसीसे स्वप्नेहु सुगति न लहते ॥ ९८ ॥ ऐसी हरि करत दास पर प्रीति। निज प्रभुता विसारि जनके वश होत सदा यह रीति॥ जिन बाँधे सुर असुर नाग नर प्रबल कर्मकी डोरी। सोइ अविच्छिन्न ब्रह्म यशुमति हठि बाँध्यो सकत न छोरी॥ जाकी माया वश विरंचि शिव नाचत पार न पायो। करतल ताल बजाइ ग्वाल युवतिन सोइ नाच नचायो॥ विश्वम्भर श्रीपति त्रिभुवनपति वेद विदित यह लीख। बलसों कछु न चली प्रभुता वरु है द्विज माँगी भीख॥ जाको नाम लिये छूटत भव जन्म मरण दुखभार। अम्बरीष हित लागि कृपानिधि सोइ जनम्यो दश बार॥ योग विराग ध्यान जप तप करि जे खोजत मुनि ज्ञानी। वानर भालु चपल पशु पांवर नाथ तहाँ रति मानी॥ लोकपाल यमकाल पवन रवि शशि सब आज्ञाकारी। तुलसिदास प्रभु उग्रसेनके द्वार बेंतकरधारी॥ ९९॥

विरद गरीबनिवाज रामको । गावत वेद पुराण शम्भु शुक प्रगट प्रभाव नाम को ॥ ध्रुव प्रह्लाद विभीषण कपिपति जड पतङ्ग पाण्डव सुदाम को । लोक सुयश परलोक सुगति इन्हमें को है राम काम को ॥ गणिका कोल किरात आदि कवि इन्हते अधिक बाम को । वाजिमेध कब कियो अजामिल गज गाये कब श्याम को ॥ छली मलीन हीन सबही अँग तुलसी सो छीन छाम को । नाम नरेश प्रताप प्रबल जग युग युग चालत चाम को ॥१००॥ सुनि सीतापति शील स्वभाउ । मोद न मन तनु पुलक नयन जल सो नर खेहर खाउ ॥ शिशुपनते पितु मातु बंधु गुरु सेवक सचिव सखाउ । कहत रामविधुवदन रिसौहैं स्वप्नेहुँ लख्यो न काउ ॥ खेलत संग अनुज बालक नित जुगवत अनट अपाउ। जीति हारि चुचुकारि दुलारत देत दिवावत दाउ ॥ शिला शापसन्ताप विगतभइ परशत पावन पाउ । दई सुगति सो न हेर हर्ष हिय चरण छुएको पछिताउ॥ भवधनुभंजि निदरि भूपति भृगुनाथ खाइ गएताउ । क्षमि अपराध क्षमाइ पाँयपरि इतो न अनत समाउ ॥ कह्यो राज वन दियो नारिवश गरि गलानि गयो राउ। ता कुमातुको मन जुगवत ज्यों निजतनु मर्म कुघाउ ॥ कपि सेवा वश भये कनौडे कह्यो पवनसुत आउ । देवे कौन कछू ऋणियां हौं धनिक तु पत्र लिखाउ ॥

अपनाए सुग्रीव विभीषण तिन न तज्यो छलछाउ।
भरतसभा सन्मानि सराहत होत न हृदय अघाउ॥
निज करुणा करतूति भक्तपर चपत चलत चरचाउ।
सकृत प्रणाम प्रणत यश वर्णत सुनत कहत फिर
गाउ॥ समुझि समुझि गुणग्राम रामके उर अनु-
राग बढाउ। तुलसिदास अनयास रामपद पइहै प्रेम
पसाउ॥ १०१॥ जाउँ कहाँ तजि चरण तुम्हारे।
काको नाम पतितपावन जग केहि अतिदीन पियारे॥
कौने देव बराइ विरदहित हठि हठि अधम उधारे।
खग मृग व्याध पषाण विटप जड यवन कवन सुर
तारे॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया विवश
विचारे। तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ
हारे॥ १०२॥ हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों।
साधनधाम विबुधदुर्लभ तनु मोहिं कृपा करि दीन्हों॥
कोटिहुँ मुख कहि जाइँ न प्रभुके एक एक उपकार।
तदपि नाथ कछु और माँगिहों दीजै परम उदार॥
विषय वारि मनमीन भिन्न नहिं होत कबहुँ पल एक।
ताते सहिय विपति अति दारुण जन्मत योनि अनेक॥
कृपाडोरि वंसीपद अंकुश परमप्रेम मृदुचारो। यहि
विधि वेधि हरहु मेरो दुख कौतुक राम तिहारो॥ है
श्रुतिविदित उपाय सकल सुर केहि केहि दीन निहारो।

तुलसिदास यहि जीव मोहरज्जु जोइ बांध्यो सोइ छोरो ॥ १०३ ॥ यह विनती रघुवीर गुसाईं । और आश विश्वास भरोसो हरु जियकी जडताई ॥ चहौं न सुगति सुमति संपति कछु ऋधि सिधि विपुल बडाई । हेतु रहित अनुराग रामपद बढो अनुदिन अधिकाई ॥ कुटिल कर्म लै जाय मोहिं जहँ तहँ अपनी बरिआई । तहँ तहँ जिनि छिन छोह छांडिये कमठ अंडकी नाईं॥ यह जगमें जहँ लगि या तनुकी प्रीति प्रतीति सगाई। ते सब तुलसिदास प्रभुही सों होहु सिमिटि एक ठाईं ॥ १०४ ॥ जानकीजीवनकी बलि जैहौं । चित कहै राम सीयपद परिहरि अब न कहूं चलि जैहौं ॥ उपजी उर प्रतीति स्वप्नेहुं सुख प्रभुपद विमुख न पैहौं । मन समेत या तनुके वासिन इहै शिखावन दैहौं ॥ श्रवणन और कथा नहिं सुनिहौं रसना और न गैहौं । रोकिहौं नयन विलोकत औरहिं शीश ईशही नैहौं ॥ नातो नेह नाथसों करि सब नातो नेह बहैहौं । यह छर भार ताहि तुलसी जग जाको दास कहैहौं ॥ १०५ ॥ अबलौं नशानी अब न नशैहौं । रामकृपा भवनिशा सिरानी जागे फिरि न डसैहौं ॥ पायो नाम चारु चिन्तामणि उर करते न खसैहौं । श्याम रूप शुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहि कसैहौं ॥ परवश जानि

हँस्यो इन इन्द्रिन निजवश ह्वै न हँसैहौं। मन मधुकर पन करि तुलसी रघुपतिपदकमल बसैहौं ॥ १०६ ॥

राग रामकली।

महाराज रामादरचो धन्य सोई। गरुअ गुणराशि सर्वज्ञ सुकृति शीलनिधि साधु तेहि सम न कोई ॥ उपल केवट कीश भालु निशिचर शबरि गीध शम दम दया दान हीने। नाम लिये राम किये परमपावन सकल नर तरत तिनके गुणगान कीने ॥ व्याध अपराधकी साध राखी कौन पिङ्गला कौन मति भक्ति भेई। कौन धौं सोमजाजी अजामिल अधम कौन गजराज धौं बाजपेई ॥ पांडुसुत गोपिका विदुर कुबरी सबहिं शोध किये शुद्धता लेस कैसो। प्रेम लखि कृष्ण किये आपने तिनहुँको सुयश संसार हरि हरको जैसो ॥ कोल खल भिल्ल यवनादि खस राम कहि नीच ह्वै ऊँच पदको न पायो। दीन दुखदमन श्रीरमन करुणाभवन पतितपावन विरद वेद गायो ॥ मन्दमति कुटिल खल तिलक तुलसी सरिस भो न तिहुँलोक तिहुँकाल कोऊ। नामकी कानि पहिचानि जन आपनो ग्रसत कलिव्याल रखु शरण सोऊ ॥ १०७ ॥

राग बिलावल।

है नीको मेरो देवता कोशलपतिराम। सुभग सरो-रुहलोचन सुठि सुन्दर श्याम॥ सिय समेत शोभित सदा छबि अमित अनङ्ग। भुज विशाल शर धनुधरे कटि चारु निषंग॥ बलि पूजा चाहत नहीं चाहै एक प्रीति। सुमिरतही मानै भलो पावन सब रीति॥ देहि सकल सुख दुख दहै आरत जनबंधु। गुण गहि अघ अवगुण हरे अस करुणासिंधु॥ देश काल पूरण सदा वद वेद पुराण। सबको प्रभु सबमों बसै सबकी गति जान॥ को करि कोटिक कामना पूजै बहु देव। तुलसि-दास तेहि सेइये शंकर जेहि सेव॥ १०८॥ बीर महा अवराधिये साधे सिधि होय। सकल काम पूरण करै जानै सबकोय॥ वेगि विलम्ब न कीजिये लीजै उपदेश। बीजमन्त्र जपिये सोई जो जपत महेश॥ प्रेमवारि तर्पण भलो घृत सहज सनेह। संशय समधि अगिन क्षमा ममता बलि देह॥ अघ उचाट मनवश करै मारै मद मार। आकरषै सुख सम्पदा सन्तोष विचार॥ जे यहि भाँति भजन कियो मिले रघुपति ताहि। तुलसिदास प्रभुपथ चढ्यो जो लेहु निबाहि॥ १०९॥ कस न करहु करुणा हरे दुखहरण मुरारि। त्रिविधिताप सन्देह शोक संशयभ-यहारि॥ यह कलिकालजनित मल मतिमन्द मलिन

मन। तेहि पर प्रभु नहिं कर सँभार केहि भाँति जियै जन॥ सब प्रकार समरथ प्रभो मैं सब विधि दीन। यह जिय जानि द्रवहु नहीं मैं कर्मविहीन॥ भ्रमत अनेक योनि रघुपति पति आन न मोरे। दुख सुख सहों रहौं सदा शरणागत तोरे॥ तो सम देव न कोउ कृपालु समुझौं मनमाहीं। तुलसिदास हरि तोषिये सो साधन नाहीं॥ ११०॥ कहु केहि काह ये कृपानिधे भवजनित विपति अति। इन्द्रिय सकल विकल सदा निज २ स्वभाउ रति॥ जे सुख सम्पति स्वर्ग नरक सन्तत सँग लागी। हरि परिहरि सोई यत्न करत मन मोर अभागी॥ मैं अति दीन दयालु देव सुनि मन अनुरागे। जो न द्रवहु रघुवीर धीर काहे न दुख लागे॥ यद्यपि मैं अपराधभवन दुखशमन मुरारे। तुलसिदास कहँ आश इहै बहु पतित उधारे॥ १११॥ केशव कहि न जाइ का कहिये। देखत तव रचना विचित्र असि समुझि मनहिं मन रहिये॥ शून्यभीति पर चित्र रंग नहिं तनु विनु लिखा चितेरे। धोये मिटै न मरे भीत दुख पाइ यहि तनु हेरे॥ रविकर नीर बसै अति दारुण मकर रूप तेहि माहीं। वदनहीनसो ग्रसै चराचर पान करन जे जाहीं॥ कोउ कह सत्य झूँठकह कोऊ युगल प्रबल करि मानै। तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम सो आपन पहिचानै॥ ११२॥ केशव कारणकौन

गुसाईं । जेहि अपराध असाधु जानि मोहिं तजेहु अज्ञकी नाईं ॥ परम पुनीत सन्त कोमलचित तिनहिं तुमहि बनिआई । तौ कत विप्र व्याध गणिकहि तारेहु कछु रही सगाई ॥ काल कर्मगति अगति जीवकी सब हरि हाथ तुम्हारे । सोई कछु करहु हरहु ममता मम फिरहुँ न तुमहिं बिसारे ॥ जो तुम तजहु भजौं न आन प्रभु यह प्रमाण प्रण मोरे । मन क्रम वचन नरक सुरपुर जहँ तहँ रघुबीर निहोरे ॥ यद्यपि नाथ उचित न होत अस प्रभुसों करौं ढिठाई । तुलसिदास सीदत निशि दिन देखत तुम्हरी निठुराई ॥ ११३ ॥ माधव अब न द्रवहु केहि लेखे । प्रणतपाल प्रण तोर मोर प्रण जिअउँ कमलपद देखे ॥ जब लगि मैं न दीन दयालु तैं मैं न दास तैं स्वामी । तब लगि जो दुख सहेउँ कहेउँ नहिं यद्यपि अन्तर्यामी ॥ तैं उदार मैं कृपण पतित मैं तैं पुनीत श्रुति गावै । बहुत नाथ रघुनाथ तोहिं मोहिं अब न तजे बनिआवै ॥ जनक जननि गुरु बंधु सुहृद पति सब प्रकार हितकारी । द्वैत रूप तम कूप परौं नहिं अस कछु यतन विचारी ॥ सुन अदभ्रकरुणावारिजलोचन मोचनभयभारी । तुलसिदास प्रभु तव प्रकाश बिनु संशय टरै न टारी ॥ ११४ ॥ माधव मो समान जगमाहीं । सब विधि हीन मलीन दीन अति लीन

विषय कोउ नाहीं ॥ तुम सम हेतु रहित कृपालु आरत हित ईश न त्यागी। मैं दुख शोक विकल कृपालु केहि कारण दया न लागी॥नाहिंन कछु अवगुण तुम्हार अपराध मोर मैं माना। ज्ञानभवन तनु दियहु नाथ सोउ पाय न मैं प्रभु जाना ॥ वेणु करील श्रीखण्ड वसन्तहि दूषण मृषा लगावै। सार रहित हतभाग्य सुरभि पल्लव सो कहु कहँ पावै ॥ सब प्रकार मैं कठिन मृदुल हरि हढविचार जिय मोरे। तुलसिदास प्रभु मोह शृंखला छुटिहि तुम्हारे छोरे॥ ११५ ॥ माधव मोहफाँस क्यों टूटै। बाहर कोटि उपाय करिय अभ्यन्तर ग्रन्थि न छूटै॥ घृतपूरण कराह अन्तर्गत शशिप्रतिबिम्ब दिखावै। ईंधन अग्नि लगाइ कल्पशत ओटत नाश न पावै॥ तरु कोटर महँ बस विहंग तरु काटे मरे न जैसे। साधन करि अविचार हीन मन शुद्ध होइ नहिं तैसे ॥ अन्तर मलिन विषय मन अति तन पावन करिय पखारे। मरइ न उरग अनेक जतन बलमीकि विविध विध मारे॥ तुलसिदास हरिगुरुकरुणा बिनु विमल विवेक न होई। बिनु विवेक संसार घोर निधि पार न पावै कोई ॥ ११६ ॥ माधव असि तुम्हारि यह माया। करि उपाय पचि मरिय तरिय नहिं जबलगि करहु न दाया ॥ सुनिय गुनिय समुझिय समुझाइय दशा हृदय नहिं आवै। जेहि अनुभव बिनु मोह जनित

भव दारुण विपति सतावै ॥ ब्रह्म पियूषमधुर शीतल जो पै मन सो रस पावै। तौ कत मृगजल रूपविषय कारण निशिवासर धावै ॥ जेहिके भवन विमल चिन्तामणि सो कत काच बटोरै। स्वप्ने परवश परयो जागि देखत केहि जाइ निहोरै ॥ ज्ञान भक्ति साधन अनेक सब सत्य झूँठ कछु नाहीं। तुलसिदास हरिकृपा मिटै भ्रम यह भरोस मनमाहीं ॥ ११७ ॥ हे हरि कवन दोष तोहिं दीजै। जेहि उपाय स्वप्नेहुँ दुर्लभ गति सोइ निशिवासर कीजै ॥ जानत अर्थ अनर्थ रूप तम कूप परव यहि लागे। तदपि न तजत श्वान अज खर ज्यों फिरत विषय अनुरागे ॥ भूत द्रोहकृत मोहवश्य हित आपनः मैं न विचारो। मद मत्सर अभिमान ज्ञान रिपु सब महँ रहनि अपारो ॥ वेद पुराण सुनत समुझत रघुनाथ सकलजगव्यापी। भेद नहिं श्रीखण्ड वेणु इव सारहीन मन पापी ॥ मैं अपराध सिंधु करुणाकर जानत अन्तर्यामी। तुलसिदास भव व्याल ग्रसित तव शरण उरगरिपुगामी ॥ ११८ ॥ हे हरि कवन यतन सुख मानहु। ज्यों गज दशन तथा मम करणी सब प्रकार तुम जानहु ॥ जो कछु कहिय करिय भवसागर तरिय वत्सपद जैसे। रहनि आनि विधि कहिय आन हरिपद सुख पाइय कैसे ॥ देखत चारु मयूर नयन शुभ बोल सुधा इव सानी। सविष

उरग आहार निठुर अस यह करणी वह बानी ॥ अखि-
ल जीव वत्सल निर्मत्सर चरणकमल अनुरागी। ते
तव प्रिय रघुवीर धीरमति अतिशय निज पर त्यागी॥
यद्यपि मम अवगुण अपार संसार योग्य रघुराया।
तुलसिदास निज गुण विचारि करुणानिधान करु
दाया ॥ ११९ ॥ हे हरि कवन यतन भ्रम भागै।
देखत सुनत विचारत यह मन निज स्वभाव नहिं
त्यागै॥ भक्ति ज्ञान वैराग्य सकल साधन यहि लागि
उपाई। कोउ भल कहउ देउ कछु कोउ असि वासना
हृदयते न जाई॥ जेहि निशि सकल जीव सूतहिं तव
कृपा पात्र जन जागै। निज करणी विपरीत देखि
मोहिं समुझि महाभय लागै॥ यद्यपि भग्नमनोरथ
विधि वश सुख इच्छित दुख पावै। चित्रकार करहीन
यथा स्वारथ बिनु चित्र बनावै॥ हृषीकेश सुनि नाउँ
जाउँ बलि अति भरोस जिय मोरे। तुलसिदास इन्द्रि-
यसम्भवदुख हरे बनिहैं प्रभु तोरे॥ १२० ॥ हे हरि
कस न हरहु भ्रम भारी। यद्यपि मृषा सत्य भासै जब
लगि नहिं कृपा तुम्हारी॥ अर्थ अविद्यमान जानिय
संसृत नहिं जाइ गोसांई। बिनु बाँधे निज हठ शठ
परवश परेउ कीरकी नाई॥ स्वप्ने व्याधि विविध बाधा
जनु मृत्यु उपस्थित आई। वैद्य अनेक उपाय करहिं
जागे बिनु पीर न जाई॥ श्रुति गुरु साधु स्मृति

संमत यह दृश्य सदा दुखकारी । तेहि विनु तजे भजे विनु रघुपति विपति सकै को टारी ॥ बहु उपायसंसा-तरण कहँ विमलगिरा श्रुति गावै । तुलसिदास मैं मोर गये विनु जिय सुख कबहुँ न पावै ॥ १२१ ॥ हे हरि यह भ्रमकी अधिकाई । देखत सुनत कहत समुझत संशय सन्देह न जाई ॥ जो जग मृषा तापत्रय अनुभव होहिं कहहु केहि लेखे । कहि न जाइ मृग-वारि सत्य भ्रमते दुख होइँ विशेखे ॥ सुभगसेज सोवत स्वप्ने वारिधि बूडत भय लागै । कोटिहुँ नाव न पार पाव सो जबलगि आपु न जागै ॥ अनविचार रमणीय सदा संसार भयंकर भारी । सम संतोष दया विवेक ते व्यवहारी सुखकारी ॥ तुलसिदास सब विधि प्रपंच जग यदपि झूठ श्रुति गावै ॥ रघुपति भक्ति सन्त संगति विनु को भवत्रास नशावै॥१२२॥ मैं हरि साधन करइ न जानी । जस आमय भेषज न कीन्ह तस दोष का वरबानी॥स्वप्ने नृप कहँ घटै विप्रवध विकल फिरै अघ लागे । वाजिमेध शत कोटि करै नहिं शुद्ध होइ विनु जागे ॥ स्रग महँ सर्प विपुल भयदायक प्रगट होइ अविचारे । बहु आयुध धरि बल अनेक करि हारहि मरइ न मारे ॥ निज भ्रमते रविकरसम्भवसागर अति-भय उपजावै । अवगाहत वोहित नौका चढि कबहूँ पार न पावै ॥ तुलसिदास जग आपु सहित जब

लगि निर्मूल न जाई। तब लगि कोटि कल्प उपाय करि मरिय तरिय नहिं भाई॥ १२३॥ अस कछु सछुझि परत रघुराया। विन तव कृपा दयालु दासहित मोह न छूटै॥ माया वाक्यज्ञानअत्यन्तनिपुण भवपार न पावै कोई। निशि गृहमध्य दीपकी बातिन्ह तम निवृत्त नहिं होई॥ जैसे कोउ इक दीन दुखी अति अशनहीन दुख पावै। चित्र कल्पतरु काम धेनु गृह लिखे न विपति नशावै॥ षटरस बहुप्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैनि बखानै। बिन बोले सन्तोष जनित सुख खाइ सोइ पै जानै॥ जब लगि नहिं निज हृदि प्रकाश अरु विषयत्रास मनमाहीं। तुलसिदास तब लगि जगयोनि भ्रमत स्वप्नेहुँ सुख नाहीं॥ १२४॥ जो निज मन परिहरै विकारा। तौ कत द्वैतजनित संसृति दुख संशय शोक अपारा॥ शत्रु मित्र मध्यस्थ तीनि ये मन कीन्हें बरियाई। त्यागब गहब उपेक्षनीय अहि हाटक तृणकी नाईं॥ अशन वसन पशु वस्तु विविध विधि सब महिमहँ रह जैसे। स्वर्ग नरक चर अचर लोक बहु बसत मध्य मन तैसे॥ विटप मध्य पुत्रिका सूत्र महँ कंचुक विनहिं बनाये। मनमहँ तथा लीन नाना तनु प्रगटत अवसर पाये॥ रघुपति भक्तिवारि छालित चित विनु प्रयासही सूझै। तुलसिदास कह चिद् विलास जग बूझत बूझत बूझै॥ ॥ १२५॥ मैं केहि कहौं विपति अति भारी। श्रीरघु-

वीर धीर हितकारी ॥ मम हृदय भवन प्रभु तोरा । तहँ बसे आइ बहु चोरा ॥ अति कठिन करहिं बरजोरा । मानहिं नहिं विनय निहोरा ॥ तम मोह लोभ अहङ्कारा । मद क्रोध बोध रिपु मारा ॥ अति करहिं उपद्रव नाथा । मर्दहिं मोहिं जानि अनाथा ॥ मैं एक अमित बटपारा । कोउ सुनै न मोर पुकारा ॥भागेहु नहिं नाथ उबारा । रघुनायक करहु सँभारा ॥ कह तुलसिदास सुनु रामा । लूटहि तस्कर तव धामा ॥ चिन्ता यह मोहिं अपार । अपयश नहिं होइ तुम्हार ॥ १२६ ॥ मन मेरे मानहि शिख मेरी । जो निज भक्ति चहै हरि केरी ॥ उर आनहिं प्रभु कृत हित जेते । सेवहिं ते जे अपनपौ चेते ॥ दुख सुख अरु अपमान बढाई । सबसम लेखहिं विपति विहाई ॥ सुनु शठ कालग्रसित यह देही । जनि तेहिलागि विदूषहि केही ॥ तुलसिदास विनु असि मति आये । मिलहिं न राम कपट लयलाये ॥ १२७ ॥ मैं जानी हरिपद रति नाहीं । सपनेहुँ नहिं विराग मन माहीं ॥ जे रघुवीरचरण अनुरागे । तिन्ह सब भोग रोग सम त्यागे ॥ कामभुजङ्ग डसत जब जाही । विषय नींब कटु लगत न ताही ॥ असमंजस अस हृदय विचारी । बढत शोचि नित नूतन भारी ॥ जब कब रामकृपा दुख जाई । तुलसि दास नहिं आन उपाई ॥ १२८ ॥ सुमिरु सनेह सहित सीतापति । रामचरण तजि

नहिंन आन गति ॥ जप तप तीरथ योग समाधी। कलि मति विकल न कछु निरुपाधी ॥ करतहुँ सुकृत न पाप सिराहीं । रक्तबीज जिमि बाढत जाहीं ॥ हरणि एक अघ असुर जालिका । तुलसिदास प्रभु कृपाकालिका ॥ १२९ ॥ रुचिर रसना तू राम राम राम क्यों न रटत । सुमिरत सुख सुकृत बढत अघ अमंगल घटत ॥ बिनु श्रम कलिकलुषजाल कटु कराल कटत । दिनकरके उदय जैसे तिमिर तोम फटत ॥ योग याग जप विराग तप सुतीर्थ अटत । बाँधिवेको भवगयन्दरेणुकी रज्जु वटत ॥ परिहरि सुरमणि सुनाम गुंजा लखि लटत । लालच लघु तेरो लखि तुलसि तोहिं हटत ॥ ॥ १३० ॥ राम राम राम राम राम राम जपत । मंगलमुद उदित होत कलिमल छलछपत ॥ कहुके लहे फल रसाल वबुर बीज बपत । हारहि जनि जन्मजाय गालगूल गपत ॥ काल कर्म गुण स्वभाव सबके शीश तपत । रामनाम महिमाकी चरचा चले जपत ॥साधन बिनु सिद्ध सकल विकल लोग लपत । कलियुग वर वनिज विपुल नाम नगर खपत ॥ नामसों प्रतीत प्रीति हृदय सुथिर थपत । पावन किय रावन रिपु तुलसिहुसे अपत ॥ १३१ ॥ पावन प्रेम रामचरणकमल जनम लाहु परम । रामनाम लेत होत सुलभ सकल धरम ॥ योग मख विवेक विरति वेद विदित

करम । करिबे कहँ कटु कठोर सुनत मधुर नरम। तुलसी सुनि ज्ञान बूझि भूलहि जनि भरम। तेहि प्रभुको तू होहि जेहि सबहिंकी शरम ॥ १२२ ॥ रामसे प्रीतमकी प्रीतिरहित जीव जाय जियत। जेहि सुख सुख मानि लेत सुख सो समुझ कियत ॥ जहँ तहँ जेहि योनि जनम महि पताल वियत। तहँ तहँ तू विषय सुखहि चलत लहत नियत ॥ कत विमोह लटचो फटचो गगन मगन सियत। तुलसी प्रभु सुयश गाइ क्यों न सुधा पियत ॥ १२३ ॥ तोसे हौं फिरि फिरि हित प्रिय पुनीत सत्य वचन कहत। सुनि मन गुणि समुझि क्यों न सुगम सुगम गहत ॥ छोटो बडो खोटो खरो जग जो जहँ रहत। अपने अपनेको भलो कहहु जो न चहत ॥ विधिलगि लघु कीट अवधि सुख सुखी दुखदहत। पशुलौं पशुपालईश बांधत छोरत नहत ॥ विषय मुद निहार भार शिरको कांधे ज्यों बहत। योंहीं जियजानि मानि शठ तू सासति सहत ॥ पायो केहि घृत विचारि हरिणवारि महत। तुलसी तकु ताहि शरण जाते सब लहत ॥ ॥ १२४ ॥तातेहों बार बार देवद्वार परि पुकार करत। आरति नति दीनता कहे प्रभु संकट हरत ॥ लोक-पाल शोक विकल रावण डर डरत। का सुन सकुचे कृपालु नरशरीर धरत ॥ कौशिक मुनि तीय जनक

शोच अनत जरत। साधन केहि शीतल भये सो न समुझि परत॥ केवट खग शबरि सहज चरण कमलन रत। सम्मुख तोहिं होन नाथ कुतरु सुफल फरत॥ बंधुवैर कपि विभीषण गुरुगलानि गरत। सेवा केहि रीझि राम किये सरिस भरत॥ सेवक भयो पवनपूत साहव अनुहरत। ताको लिये रामनाम सबको सुढर ढरत॥ जाने बिनु राम रीति पचि पचि जग मरत। परिहरि छल शरण गये तुलसिहुसे तरत॥ १३६॥

राग सूहो बिलावल।

राम सनेहीसों तैं न सनेही कियो।
अगम जो अमरनिहू सो तनु तोहिं दियो॥

छंद।

दियो सुकलजन्म शरीरसुंदर हेतु जो फल चारको। जो पाइ पंडित परमपद पावत पुरारि मुरारिको॥ यह भरतखण्ड समीप सुरसरि थऊ भलो संगति भली। तेरी कुमति कायर कल्पवल्ली चहति है विष फल फली॥ १॥ अजहूं समुझि चित्तदै सुनो परमारथ। है हित सो जगहूं जाहिते स्वारथ॥ स्वारथहि प्रिय स्वारथ सो कातैं कौन वेद बखानई। देखु खल अहि खल परिहरि सो प्रभुहि पहिचानई॥ पितु मातु गुरु स्वामी अपनपौ तिय तनय सेवक सखा। प्रिय लगत जाके प्रेमसों बिन हेत हित नहिं तैं लखा॥ २॥ दूरि

न सो हितू हेरहियही है । छलहि छाँडि सुमिरे छोह किये ही है ॥ किये छोह छाया कमल करकी भक्त पर भजतेहि भजै । जगदीशजीवन जीवको जो साज सब सबको सजै॥हरिहि हरिता विधिहि विधिता शिवहि शिवता जो दई। सोइ जानकीपति मधुर मूरति मोदमयमंगलमई ॥ ३ ॥ ठाकुर अति बडो शील सरल सुठि । ध्यान अगम शिवहूं भेंट्यो केवट उठि ॥ भरि अंकभेंट्यो सजलनयनसनेह शिथिल शरीरसों । सुर सिद्ध मुनि कवि कहत कोउ न प्रेमप्रिय रघुवीरसों ॥ खग शबरि निशिचर भालु कपि किये आपुते वन्दित बडे। तापर तिन्हकि सेवा सुमिरि जियजात जनु सकुचनि गडे ॥ ४ ॥ स्वामीको स्वभाव कह्यो सो जब उर आनिहैं । शोच सकल मिटिहैं राम भलो मनमानिहैं॥भलो मानिहैं रघुनाथ जोरि जो हाथ माथो नाइहै । तत्काल तुलसिदास जीवन जन्मको फल पाइहै ॥ जपि नाम करहि प्रणाम कहि गुणग्राम रामहिं धरि हिये । विचरहि अवनि अवनीश चरणसरोजमनमधुकर किये ॥१३६॥जिय जबते हरिते बिलगान्यो । तबते देह गेह निज जान्यो ॥ मायावश स्वरूप बिसरायो । तेहि भ्रमते दारुणदुख पायो ॥ पायो जो दारुण दुसह दुख सुख लेश स्वप्नेहु नहिं मिल्यौ । भवशूल शोक अनेक जेहि तेहि पंथ तू हठि हठि चल्यौ ॥ बहुयोनि जन्म

जरा विपति मतिमन्द हरि जान्यो नहीं । श्रीरामबिनु विश्राम मूढ विचार लखि पायो कहीं ॥ १ ॥ आनँद-सिंधु मध्य तव वासा । बिनु जाने कस मरसि पियासा॥ मृगभ्रम वारि सत्य जिय जानी।तहँ तू मगन भयो सुख मानी॥ तहँ मगन मज्जसि पान करि त्रयकाल जल नाहीं जहाँ ।निज सहज अनुभवरूप तू खल भूलि अब आयो तहाँ ॥ निर्मल निरंजन निर्विकार उदार सुखतैं परिह-रयो । निःकाज राज विहाय नृप इव स्वप्नकारागृह परयो ॥ २ ॥ तैं निज कर्मडोरि दृढ कीन्हीं । अपने करनि गाँठि गहि दीन्हीं॥ ताते परवश परयो अभागे। ताफल गर्भवास दुख आगे॥ आगे अनेक समूह संसृति उदरगत जान्यो सोऊ । शिरहेठ ऊपर चरण सङ्कट बात नहिं पूछै कोऊ ॥ शोणित पुरिष जो मूत्र मल कृमि कर्दमावृत सेवही । कोमल-शरीर गँभीर वेदन शीशधुनि धुनि रोवही ॥ ३ ॥ तू निज कर्मजाल जहँ घेरो । श्रीहरि संग तजो नहिं तेरो॥ बहुविधि प्रतिपालन प्रभु कीन्हों । परम कृपालु ज्ञान तोहिं दीन्हों ॥ तोहिं दियो ज्ञान विवेक जन्म अनेककी तब सुधि भई । तोहि ईशकी हौं शरण जाकी विषय माया गुण मई ॥ जेहि किये जीव निका-य वश रसहीन दिन दिन अति नई ॥ सो करौ वेगि सँभार श्रीपति विपति महँ जेहि मति दई ॥ ४ ॥

पुनि बहुविधि गलानि जिय मानी । अब जग जाइ भजों चक्रपानी ॥ ऐसेहि करि विचार चुप साधी।प्रसव पवन प्रेरेउ अपराधी॥प्रेर्यो जो परमप्रचण्ड मारुत कष्ट नाना तैं सह्यो।सो ज्ञान ध्यान विराग अनुभव यातना पावक दह्यो ॥ अति खेद व्याकुल अल्पबल छिन एक बोलि न आवई । तब तीव्र कष्ट न जान कोउ सब लोग हर्षित गावई ॥ ५ ॥ बाल दशा जेते दुख पाये। अतिअनीश नहिं जाहिं गनाये ॥ क्षुधा व्याधि बाधा भइ भारी । वेदन नहिं जानै महतारी ॥ जननी न जानै परि सो केहि हेतु शिशु रोदन करै । सोइ कर विविध उपाय जाते अधिक तुव छाती जरै ॥ कौमार शैशव अरु किशोर अपार अघ को कहि सकै । व्यतिरेक तोहि निर्दय महाखल आन कहु को सहि सकै ॥ ६ ॥ यौवन युवती संग रंग रात्यो । तब तू महा मोहमद मात्यो ॥ ताते तजी धर्म मर्यादा। बिसरे तब सब प्रथम विषादा ॥ बिसरे विषाद निकाय संकट समुझि नहिं फाटत हियो । फिरि गर्भगत आवर्त्त संसृति चक्र जेहि होइ सोइ कियो ॥ कृमिभस्म विट परिणाम तनु तेहि लागि वैरी भयो।पर-दार परधन द्रोहपर संसार बाढै नित नयो ॥ ७ ॥ देखतही आई विरुधाई । जो तैं स्वप्नेहुँ नाहिं बुलाई ॥ ताके गुण कछु कहे न जाहीं। सो अब प्रगट देखु जग-

माहीं ॥ सो प्रगट तनु जर्जर जरावश व्याधि शूल सतावई । शिरकम्प इन्द्रियशक्ति प्रतिहत वचन काहु न भावई ॥ गृहपालहू ते अति निरादर खान पान न पावई । ऐसिहु दशा न विराग तहँ तृष्णा तरंग बढ़ावई ॥ ८ ॥ कहि को सके महाभव तेरे । जन्म एकके कछुक गनेरे ॥ खानि चारि सन्तत अवगाही । अजहुँ न करु विचार मनमाही ॥ अजहूं विचार विकार तजि भजु राम जनसुखदायकं ॥ भवसिंधुदुस्तरजलरथं भजु चक्रधर सुरनायकं ॥ विनुहेतु करुणाकर उदार अपार मायातारनं ॥ कैवल्यपति जगपति रमापति प्राणपति गतिकारणं ॥ ९ ॥ रघुपति भक्ति सुलभ सुखकारी । सो त्रयताप शोकभयहारी ॥ विनु सतसंग भक्ति नहिं होई । ते तब मिलैं द्रवै जब सोई ॥ जब द्रवै दीनदयालु राघव साधु संगति पाइये । जेहि दरश परश समागमादिक पापराशि नशाइये ॥ जिन्हके मिले सुख दुख समान अमानतादिक गुण भये । मद मोह लोभ विषाद क्रोध सुबोधते सहजहि गये ॥ १० ॥ सेवत साधु द्वैत भय भागै । श्रीरघुवीर चरणलय लागै ॥ देहजनित विकार सब त्यागै । तब फिरि निजस्वरूप अनुरागै ॥ अनुरागसों निजरूप जो जगते विलक्षण देखिये । संतोष सम शीतल सदा दम देहवंत न लेखिये ॥ निर्मल निरामय एकरस तेहि हर्ष

शोक न व्यापई । त्रैलोक्यपावन सो सदा जाकी दशा ऐसी भई ॥ ११ ॥ जो तेहि पंथ चलै मन लाई । तौ हरि काहे न होइँ सहाई ॥ जो मारग श्रुति साधु दिखावै । तेहि पथ चलत सबै सुख पावै ॥ पावै सदा सुख हरिकृपा संसार आशा तजि रहै । स्वमेहुँ नहीं दुख देत दरशन बात कोटिक को कहै ॥ द्विज देव गुरु हरि संतबिनु संसार पार न पावई । यह जानि तुलसीदास त्रासहर रमापति गावई ॥ १२ ॥ १३७ ॥

राग बिलावल ।

जोपै कृपा रघुपति कृपालुकी वैर औरके कहा सरै । होइ न बांको बार भक्तको जो कोउ कोटि उपाय करै ॥ तकै नीच जो मीच साधुकी सोइ पामर तेहि मीच मरै । वेदविदित प्रह्लादकथा सुनि को न भक्तिपथ पाउँ धरै ॥ गज उधारि हरि थप्यो विभीषण ध्रुव अविचल कबहूं न टरै । अंबरीषकी शाप सुरति करि अजहुँ महामुनि ग्लानि गरै ॥ सो धों कहा जु न कियो सुयोधन अबुध आपने मान जरै । प्रभु प्रसाद सौभाग्य विजययश पांडवने बरिआई बरै ॥ जो जो कूप खनैगो परकहँ सो शठ फिरि तेहि कूप परै । स्वमेहुँ सुख न सन्तद्रोही कहँ सुरतरु सोउ विष फरनि फरै ॥ हैं काके द्वै शीश ईशके जो हठि जनकी सीम चरै । तुलसिदास रघुवीर बाहु बल सदा अभय काहू न

डरै॥१२८॥कबहूं सो करसरोज रघुनायक धरिहौ शीश मेरे। जेहि कर अभय किये जन आरत बारक विवश नाम टेरे॥ जेहि कर कमल कठोर शंभुधनु भंजि जन-के संशय मेट्यो। जेहि कर कमल उठाय बंधु ज्यों परम प्रीति केवट भेंट्यो॥ जेहि कर कमल कृपालु गीधकहँ उदक देइ निज लोक दियो। जेहिं कर वालि विदारि दासहित कपिकुलपति सुग्रीव कियो॥ आयो शरण सभीतभीषण जेहि करकमल तिलक दीन्हों। जेहि कर गहि शर चाप असुरहति अभयदान देवन्ह दीन्हों॥ शीतल सुखद छाँह जेहि करकी मेटति पाप ताप माया। निशि वासर तेहि करसरोजकी चाहत तुलसिदास छाया॥ १२९॥ दीन दयालु दुरित दारिद दुख दुनी दुसह तिहुँताप तई है। देव दुआर पुकारत आरत सबकी सब सुखहानि भई है॥ प्रभुके वचन वेदबुधसम्मत मम मूरति महि देवमई है। तिन्हकी मति रिस राग मोह मद लोभ लालची लीलि लई है॥ राज समाज कुसाज कोटि कटु कल्पत कलुष कुचाल नई है। नीति प्रतीति प्रीति परमिति पति हेतु वाद हठि हेरि हई है॥ आश्रम वर्ण धर्म विरहित जग लोक वेद मर्याद गई है। प्रजापतित पाखण्ड पापरत अपने अपने रंग रई है॥ शांतिसत्य शुभरीति गई घटि बढी कुरीति कपट कलई है। सीदत साधु साधुता शोचति

खल विलसति हुलसति खलई है परमारथ स्वारथ साधन भये अफल सकल नहिं सिद्धि सई है । कामधेनु धरणी कलि गोमर विवश विकल जामाति न वई है ॥ कलि करणी वरणिये कहाँलों करत फिरत विनु टहल टई है । तापर दाँत पीसि कर मींजत को जाने चित कहा ठई है ॥ त्यों त्यों बोझ चढत शिर ऊपर ज्यों ज्यों शील वश ढील दई है । सरुष वरजि तरजिय तरजनी कुम्हिलैहै कुम्हडेकी जई है ॥ दीजे दादि देखि नातो बलि मही मोद मंगल रितई है । मेरे भाग अनुराग लोग कहैं राम अवधि चितवनि चितई है ॥ विनती सुनि सानन्द हेरि हँसि करुणा-वारि भूमि भिजई है । रामराज भयो काज शकुन शुभ राजाराम जगत विजई है ॥ समरथ बडो सुजान सुसाहब सुकृत सैन हारत जितई है । सुजन स्वभाव सराहत सादर अनायास साँशति बितई है ॥ उथपे थपन उजारि बसावन गई बहोरि विरद सदई है । तुलसी प्रभु आरत आरति हर अभय बाँह केहि केहि न दई है ॥ १४० ॥ ते नर नरकरूप जीवति जग भवभञ्जन पदविमुख अभागी । निशिवासर रुचि पाप अशुचिमन खलमति मलिन निगमपथ त्यागी ॥ नहिं सतसंग भजन नहिं हरिको श्रवण न रामकथा अनुरागी। सुत वित दार भवन ममता निशि सोवत जाति न

कबहुँ मति जागी ॥ तुलसिदास हरिनाम सुधा अजि शठ हठि पियत विषय विष मांगी । सूकर श्वान शृगाल सरिस जन जन्मत जगत जननिदुख लागी ॥ ॥ १४१ ॥ रामचन्द्र रघुनायक तुमसों हौं विनती केहि भाँति करों । अघ अनेक अवलोकि आपने अनघ नाम अनुमानि डरों ॥ परमदुखदुखी सुखी परसुखते सन्तशील नहिं हृदय धरों । देखि आनकी विपति परमसुख सुनि सम्पति विनु आगि जरों ॥भक्ति विराग ज्ञान साधन कहि बहुविधि डहँकत लोकफिरों। शिव सरबस सुखधाम नाम तव बेंचि नरकप्रद उदर भरों ॥ जानत हूं निज पाप जलधि जिय जल सीक-रसम सुनत लरों । रजसम पर अवगुण सुमेरु करि गुण गिरि सम रजते निदरों । नाना वेष बनाइ दिवस निशि परवित जेहि तेहि जुगति हरों । एको पल न कबहुँ अलोल चित हित दै पदसरोज सुमिरों ॥ जो आचरण विचारहु मेरो कलपकोटि लगि औटि मरों ॥ तुलसिदास प्रभुकृपा विलोकनि गोपद ज्यों भवसिंधु तरों ॥ १४२ ॥ सकुचत हौं अति राम कृपानिधि क्यों करि विनय सुनावों । सकल धर्म विपरीत करत केहि भाँति नाथ मन भावों ॥ जानत हूं हरि रूप चराचर मैं हठि नयन न लावों । अंजन केश शिखा युवती तहँ लोचन शलभ पठावों ॥ श्रवणन्हिको कथातिहारी यह

समुझों समुझावों । तिन्ह श्रवणन्हि परदोष निरन्तर सुनिसुनि भरिभरि तावों ॥ जेहि रसना गुण गाइ तिहारे विनु प्रयास सुख पावों । तेहि मुखपर अपवाद भेक ज्यों रटि रटि जन्म नशावों ॥ करहु हृदय अतिविमल बसहिं हरि कहि कहि सबहिं शिखावों । हौं निज उर अभिमान मोह मद खलमण्डली बसावों ॥ जो तनु धरि हरिपद साधहिं जन सो विनु काज गँवावों। हाटक-घट भरि धरचो सुधागृह तजि नभ कूप खनावों ॥ मन क्रम वचन लाइ कीन्हें अघ ते करि यतन दुरावों। पर प्रेरित ईर्षावश कबहुँक कियो कछु शुभ सो जनावों॥ विप्र द्रोह जनु बाँट परचो हठि सबसों वैर वढावों । ताहू पर निजमति विलास सब सन्तन माँझ गनावों॥ निगम शेष शारद निहोरि जो अपने दोष कहावों । तौ न सिराहिं कल्पशत लागि प्रभु कहा एक मुख गावों ॥ जो करणी अपनी विचारों तौ कि शरण हौं आवों । मृदुल स्वभाव शील रघुपतिको सो बल मनहिं दिखावों ॥ तुलसिदास प्रभु सो गुण नाहीं जेहि स्वप्नेहुँ तुमहिं रिझावों। नाथ कृपा भव-सिंधु धेनुपद सम जो जानि सिरावों ॥ १४२ ॥

सुनहु राम रघुवीर गुसांई मन अनीतिरत मेरो । चरणसरोज बिसारि तिहारे निशिदिन फिरत अनेरो ॥ मानत नाहिं निगम अनुशासन त्रासन काहू केरो। भूल्यो

शूल कर्म कोल्हुन्ह तिल ज्यों बहु बारनि पेरो ॥ जहँ सत्संग कथा माधवकी स्वप्नेहुँ करत न फेरो। लोभ मोह मद काम क्रोधरत तिन्हसों प्रेम घनेरो॥ परगुण सुनत दाह पर दूषण सुनत हर्ष बहुतेरो। आप पापको नगर बसावत सहि न सकत परखेरो ॥ साधन फल श्रुति सार नाम तव भव सरिता कहँ बेरो। सो परकेर काकिनी लागि शठ बेंचि होत हठि चेरो॥ कबहुँ कहौं संगति स्वभावते जाउँ सुमारग नेरो। तब करि क्रोध संग कुमनोरथ देत कठिन भट भेरो ॥ इकहौं दीन मलीन हीनमति विपति जाल अति घेरो। तापर सही न जाइ करुणानिधि मनको दुसह दरेरो॥ हारि परयों करि यत्न बहुत विधि ताते कहत सबेरो। तुलसिदास यह त्रास मिटै जब हृदय करहु तुम डेरो ॥ १४४ ॥

सो धों को जो नाम लाज ते नहीं राख्यो रघुवीर। कारुणीक बिनु कारणही हरि हरी सकल भवभीर ॥ वेदविदित जगविदित अजामिल विप्रबन्धु अघधामा। घोर यमालय जात निवारयो सुत हित सुमिरत नामा॥ पशु पाँवर अभिमान सिंधु गज ग्रस्यो आइ जब ग्राह। सुमिरत सुकृत सपदि आये प्रभु हरयो दुसह उर दाह ॥ व्याध निषाद गृध्र गणिकादिक अगणित अवगुणमूल। नाम ओटते राम सबनिकी दूरि करी सब शूल ॥ केहि आचरण घाटिहौं तिन्हते रघुकुलभूषण

भूप । सीदत तुलसिदास निशि बासर परयो भीमतम-कूप ॥ १८५ ॥ कृपासिंधु जनदीनदुआरे दादि न पावत काहे । जब जहँ तुमहिं पुकारत आरत तब तिन्हके दुख दाहे॥गज प्रह्लाद पांडुसुत कपि सबके रिपु संकट मेटयो । प्रणत बन्धुभय विकल विभीषण उठि सो भरत ज्यों भेंटयो ॥ मैं तुम्हरे लै नाम ग्राम एक उर आपनें बसावों । भजन विवेक विराग लोगभले क्रम क्रम करि ल्यावों ॥ सुनि रिसभरे कुटिल कामादिक करहिं जोर बरिआई । तिन्हहिं उजारि नारि अरि धन पुर राखहिं राम गुसाईं ॥ सम सेवा छल दान दंड हौं रचि उपाय पचिहारयो । बिनु कारणके कलह बडो दुख प्रभुसों प्रगटि पुकारयो ॥ सुरस्वारथी अनीश अलायक निठुर दयाचित नाहीं । जाउँ कहाँ को विपति निवारक भवतारक जगमाहीं ॥ तुलसी यदपि पोच तौ तुम्हरो और न काहू केरो । दीजे भक्ति बाँह बेरकज्यों सुबस बसै अब खेरो ॥ १८६ ॥ हौं सब विधि राम रावरो चाहत भयो चेरो । ठौर ठौर साहबी होत है ख्याल काल कलि केरो ॥ काल कर्म इन्द्रिय विषय गाहक गण घेरो । हौं न कबूलत बाँधिकै मोल करत करेरो ॥ बंदिछोर तेरो नाम है विरुदैत बडेरो । मैं कह्यो तब छल प्रीतिकै मांगे उर डेरो ॥ नाम ओट अबलगि बच्यों मलयुग जग जेरो । अब गरीबजन

पोषिये पाइबो न हेरो ॥ जेहि कौतुक बक श्वानको प्रभु न्याय निबेरो । तेहि कौतुक कहिये कृपालु तुलसी है मेरो ॥ १४७ ॥ कृपासिंधु ताते रहों निशि दिन मन-मारे । महाराज लाज आपुहि निज जाँघ उघारे ॥ मिल्यो रहैं मारचो चहैं कामादि संघाती । मो बिनु रहैं न मेरि ये जारै छल छाती ॥ बसत हिये हित जानि मैं सबकी रुचि पाली । कियो कथिकको दंड हौं जड-कर्मकुचाली ॥ देखी सुनी न आजुलौं अपनायत ऐसी । करहिं सबै शिर मेरही फिरि परै अनैसी ॥ बडे अले-खौं लखिपरे परिहरे न जाहीं । असमंजसमें मगन हौं लीजै गहि बाहीं ॥ वारक बलि अवलोकिये कौतुक जन जीको । अनायास मिटि जाइगो संकट तुलसीको ॥ १४८ ॥ कहौं कौनमुँह लाइकै रघुबीर गुसांई । सकुचत समुझत आपनी सब सांइ दोहाई ॥ सेवत वश सुमिरत सखा शरणागत सोहौं । गुणगण सीता-नाथके चित करत न हो हौं ॥ कृपासिंधु बंधुदीनके आरत हितकारी । प्रणतपालविरुदावली सुनि जानि बिसारी ॥ सेइ न धेइ न सुमिरिकै पदप्रीति सुधारी । पाइ सुसाहिब रामसों भरि पेट बिगारी ॥ नाथ गरी-बनिवाज है मैं गही गरीबी । तुलसी प्रभु निज ओर-ते बनि परै सो कीबी ॥ १४९ ॥ कहाँ जाउँ कासों कहौं और ठौर न मेरे । जन्म गँवायो तेरही द्वार

किंकर तेरे ॥ मैं तो बिगारी नाथसों आरतिके लीन्हें ।
तोहिं कृपानिधि क्यों बनै मेरीसी कीन्हें ॥ दिन दुर-
दिन दुर्दशा दिन दुखदिन दूषण । जबलौं तू न
विलोकि है रघुवंशविभूषण ॥ देह पीठविनु डीठ
मैं तुम विश्वविलोचन । तासों तुहीं न दूसरो नत शोच
विमोचन ॥ पराधीन देवदीन हौं स्वाधीन गुसांईं ।
बोलनिहारेसों करै बलि विनय कि झांईं ॥
आपु देखि मोहिं देखिये जन मानिय साँचो ।
बडी ओट रामनामकी जेहि लयो सो बाँचो ॥
रहनि रीति रामरावरी नित हिय हुलसी है । ज्यों भावै
त्यों करु कृपा तेरो तुलसी है ॥ १९० ॥ रामभद्र
मोहिं आपनो शोच है अरु नाहीं । जीव सकल
संतापके भाजन जगमाहीं ॥ नातो बडे समर्थसों एक
ओर कियो हूँ । तोको मोसे अति घने मोको इक
तोहूँ ॥ बडि गलानि हानि है हिये सर्वज्ञ गुसाँईं ।
कूर कुसेवक कहत हौं सेवककी नाँईं ॥ भलो
पोच रामको कहै मोहिं सब नर नारी । बिगरे
सेवक श्वान ज्यों साहब शिर गारी ॥ असमं-
जस मनको मिटै सो उपाय न सूझै । दीनबंधु कीजै
सोई बनिपरै जो बूझै ॥ बिरुदावली विलोकिये तिन्ह
में कोई होहौं । तुलसी प्रभुको परिहरचो शरणागत
सोहौं॥१९१॥जो पै चेराई रामकी करतो न लजातो ।

तौ तू दास कुदाम ज्यों कर कर न बिकातो ॥ जपत जीह रघुनाथको नाम नहिं अलसातो। बाजीगरके सूम ज्यों खल खेह न खातो ॥ जो तू मन मेरे कहे राम नाम कमातो ॥ सीतापति सम्मुख सुखी सब ठावँ समातो ॥ राम सुहाते तोहि जो तू सबहिं सोहातो ॥ काल कर्म कुल कारनी कोऊ न कोहातो ॥ रामनाम अनुरागही जिय जो रति आतो। स्वारथ परमारथ पथी तोहिं सब पतिआतो । सेइसाधु सुनि समुझिकै पर पीर पिगतो। जन्मकोटिको काँदलो हृद हृदय थिरातो। भव-मग अगम अनन्त है विनु श्रमहि सिरातो । महिमा उलटे नामको मुनि कियो किरातो ॥ अमर अगमतनु पाइसो जडजायनजातो । होतो मंगल मूल तू अनुकूल विधातो ॥ जो मन प्रीति प्रतीति सों राम नामहि रातो। तुलसी रामप्रसाद सो तिहुँ ताप न तातो ॥ १५२ ॥

राम भलाई आपनी भल कियो न काको। युग युग जानकीनाथ जग जागत साको ॥ ब्रह्मादिक विनती करी कहि दुख वसुधाको । रविकुलकैरवचन्द भो आनन्द सुधाको ॥ कौशिक गरत तुषार ज्यों तकि तेज तियाको । प्रभु अनहित हितको दियो फल कोप कृपाको ॥ हरचो पाप आप जाइकै सन्ताप शिलाको। शोचमगन काढचो सही साहब मिथिलाको ॥ रोष राशि भृगुपति धनी अहमिति ममताको। चितवत

भाजन कर लियो उपसम समताको। मुदित मानि आयसु चले वन मातु पिताको॥ धर्मधुरन्धर धीर धुर गुण शीलजिताको॥ गुह गरीब गत ज्ञातिहू जेहि जिउ न भखा को। पायो पावन प्रेमते सन्मान सखा को॥ सद्गति शबरी गिद्धकी सादर कर ताको। शोच सींव सुग्रीवके संकटहरताको॥ राखि विभीषण को सकै तेहि काल कहा को। आज विराजत राजहो दशकण्ठ जहां को। वालिसवासी औधके बूझिय नखाको॥ ते पाँवर पहुँचे तहाँ जहँ मुनि मन थाको। गति न लहै रामनामसों विधिसों शिरजाको। सुमिरत कहत प्रचारिकै वल्लभ गिरिजाको॥ अकनि अजामिलकी कथा सानन्द नभाको। नाम लेत कलिकालहूं हरिपुरहि नगाको॥ रामनाम महिमा करै काम भूरुह आको। साक्षी वेद पुराण है तुलसीतन ताको॥ १५३॥ मेरे रावरी गति है रघुपति बलि जाउँ॥ निलज नीच निर्धन निर्गुण कहँ जग दूसरो न ठाकुर ठाउँ॥ हैं घर घर भव भरे सुसाहिब सूझत सबनि आपनो दाउँ। वानर बंधु विभीषण हित विन कोशलपाल कहूं न समाउँ॥ प्रणतारति भंजन जनरंजन शरणागत पविपंजर नाउँ। कीजै दास दास तुलसी अब कृपसिंधु विनु मोल बिकाउँ॥ १५४॥ देव दूसरो कौन दीनको दयाल। शील निधान सुजान शिरोमणि शरणागत प्रिय प्रणतपाल॥

को समर्थ सर्वज्ञ सकल प्रभु शिव सनेह मानस मराल॥ को साहब किये मीत प्रीति वश खग निशिचर कपि भील भाल॥ नाथ हाथ माया प्रपञ्च सब जीव दोष गुण कर्म काल। तुलसिदास भलो पोच रावरो नेकु निरखि कीजिये निहाल॥ १५५॥

राग सारंग।

विश्वास एक राम नामको। मानत नहीं प्रतीति अनत ऐसोई स्वभाव मन वामको॥ पढिबो परचो न छठी छमत ऋग यजुर अथर्वण सामको॥ व्रत तीरथ तप सुनि सहमत पचि मरै करै तन छामको॥ कर्मजाल कलिकाल कठिन आधीन सुसाधित दामको॥ ज्ञान विराग योग जप तप भय लोभ मोह कोह कामको॥ सब दिन सब लायक भव गायक रघुनायक गुण-ग्रामको। बैठे नाम काम तरु तर डर कौन घोर घन घामको॥ को जानै जैहे को यमपुर को सुरपुर पर-धामको। तुलसिहि बहुत भलो लागत जग जीवन रामगुलामको॥ १५६॥ कलि नाम कामतरु रामको। दलनिहार दारिद दुकाल दुख दोष घोर घन घामको॥ नाम लेत दाहिनो होत मन वाम विधाता वामको। कहत मुनीश महेश महातम उलटे सुधे नामको॥ भलो लोक परलोक तासु जाके बल ललित ललामको। तुलसी जग जानियत नाम ते शोच न कूच मुका-

मको ॥ १५७॥ सेइये सुसाहब रामसो । सुखद सुशील सुजान शूर शुचि सुन्दर कोटिक काम सो ॥ शारद शेष साधु महिमा कहैं गुण गण गायक साम सो । सुमिरि सप्रेम नाम जासों रति चाहत चन्द्र ललाम सो ॥ गमन विदेश न लेश कलेशको सकुचत सकृत प्रणाम सो । साखी ताको विदित विभीषण बैठो है अविचल धाम सो ॥ टहल सहज जन महल महल जागत चारों युगयाम सो । देखत दोष न खीझत रीझत सुनि सेवक गुणग्राम सो ॥ जाके भजे तिलोक तिलक भये त्रिजग योनि तनु ताम सो । तुलसी ऐसे प्रभुहि भजै जो न ताहि विधाता वामसो॥ १५८ ॥

राग नट ।

कैसे देउँ नाथहि खोरि । काम लोलुप भ्रमत मन हरिभक्ति परिहरि तोरि ॥ बहुत प्रीति पुजाइवे पर पूजिबे पर थोरि । देत शिष शिखयो न मानै मूढता असि मोरि ॥ किये सहित सनेह जे अघ हृदय राखै चोरि । संग वश किये शुभ सुनाये सकल लोक निहोरि ॥ करों जो कछु धरों सचि पचि सुकृत शिला बटोरि । पैठि उर वरवश दया-निधि दम्भ लेत अजोरि ॥ लोभ मनहिं नचाव कपि ज्यों गरे आशा डोरि । बात कहौं बनाइ बुधज्यों बर-विराग निचोरि ॥ एतेहुं पर तुम्हरो कहावत लाज

अँचइ घोरि। निजलता पर रीझि रघुबर देह तुलसिहिं छोरि॥ १५९॥ है प्रभु मेरोई सब दोषु। शीलसिंधु कृपालु नाथ अनाथ आरतपोषु॥ वेष वचन विराग मन अघ अवगुणनिको कोषु। राम प्रीति प्रतीति पोलो कपट करतब ठोषु॥ राग रंग कुसंगही सो साधु संगति रोषु। चहत केहरि यशहि सेइ शृगाल ज्यों खरगोसु॥ शंभु शिखवन रसनहूं-नित रामनामहिं घोषु। दम्भहू कलिनाम कुम्भज शोच सागरसोषु॥ मोद मंगल मूल अति अनुकूलनिज निरयोषु। राम नाम प्रभाव सुनि तुलसिहुं परम सन्तोषु॥ १६०॥ मैं हरि पतितपावन सुने। मैं पतित तुम पतितपावन दोउ बानक बने॥ व्याध गणिका गज अजामिल साखि निगमनि भने। और अधम अनेक तारे जात कापै गने॥ जानि नाम अजानि लीन्हें नरक यमपुर मने। दास तुलसी शरण आयो राखिये अपने१६१॥

राग मलार।

तोसों प्रभु जोपै कहुँ कोउ होतो। तौ सहि निपट निरादर निशि दिन रटि लटि ऐसो घटि कोतो॥ कृपा सुधा जलदानि माँगिबो कहो सो साच निसोतो। स्वाति सनेह सलिल सुख चाहत चित चा-तकको पोतो॥ काल कर्म वश मन कुमनो-रथ कबहुँ कबहुँ कछु भोतो। ज्यों मुदमय बसि मीन

वारि तजि उछरी भभरि लेत गोतो ॥ जितो दुराउ दास तुलसी उर क्यों कहि आवत ओतो । तेरे राज राय दशरथके लयो बयो बिनु जोतो ॥ १६२ ॥

राग सोरठ ।

ऐसो को उदार जगमाहीं । विनु सेवा जो द्रवै दीन-पर रामसरिस कोउ नाहीं ॥ जो गति योग विराग यत्नकरि नहिं पावत मुनि ज्ञानी । सो गति देत गिद्ध शबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी ॥ जो सम्पति दशशीश अर्पि करि रावण शिव पहँ लीन्हीं । सो सम्पदा विभीषण कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्हीं॥ तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो । तौ भज राम काम सब पूरण करैं कृपानिधि तेरो ॥ १६३ ॥ एकै दानि शिरोमणि साँचो । जिहिं यांच्यो सो याचकतावश फिरि बहुनाच न नाचो ॥ सब स्वारथी असुर सुर नर मुनि कोउ न देत विनु पाये । कोशलपाल कृपालु कल्पतरु द्रवत सकृत शिर नाये ॥ हरिहुँ ओर अवतार आपने राखी वेद बडाई । लै चिउरा निधि दई सुदामहिं यद्यपि बाल मिताई ॥ कपि शबरी सुग्रीव विभीषण को नहिं कियो अयाची। अब तुलसिहि दुख देति दयानिधि दारुण आश पिशाची ॥ १६४ ॥ जानत प्रीति रीति रघुराई । नाते सब हाते करि राखत रामसनेह सगाई ॥ नेह निबाहि

देह तजि दशरथ कीरति अचल चलाई। ऐसेहुँ पितुते अधिक गीध पर ममता गुण गुरुआई॥ तियविरही सुग्रीव सखा लखि प्राणप्रिया बिसराई। रण परचो बंधु विभीषणहीको शोच हृदय अधिकाई॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भइ जब जहँ पहुनाई। तब तहँ कहि शबरीके फलनिकी रुचि माधुरी न पाई॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णन रहत सकुचि शिर नाई। केवट मीत कहे सुख मानत वानर बंधु बडाई॥ प्रेम-कनौडो रामसों प्रभु त्रिभुवन तिहुँकाल न भाई॥ ऋणी तोर हौं कह्यो कपिसों ऐसी मानिहि को सेव-काई॥ तुलसी राम सनेह शील लखि जो न भक्ति उर आई। तौ तोहिं जन्मि जाय जननी जड तनु तरुणता गवाँई॥ १६५॥ रघुवर रावरि यहै बडाई। निदरि गनी आदरगरीब पर करत कृपा अधिकाई॥ थके देव साधन अनेक करि सपनेहुँ नहिं देत दिखाई। केवट कुटिल भालु कपिको नृप कियो सकुल सँग भाई॥ मिलि मुनिवृन्द फिरत दण्डकवन सो चरचौ न चलाई। बारहिं बार गृध्र शबरीकी वर्णत प्रीति सुहाई॥ श्वान कहेते किये पुर बाहर यती गयन्द चढाई॥ तियनि-न्दक मतिमन्द प्रजा रज निज नय नगर बसाई॥ यह दरबार दीनको आदर रीति सदा चलि आई। दीन-दयालु दीन तुलसीकी काहु न सुरति कराई॥ १६६॥

ऐसे राम दीनहित कारी। अतिकोमल करुणानिधान बिन कारण परउपकारी ॥ साधन हीन दीन निज अघ वश शिला भई मुनिनारी ॥ गृहते गवनि परशि पद पावन घोर शापते तारी ॥ हिंसारत निषाद तामस वपु पशु समान वनचारी। भेंटचो हृदय लगाइ प्रेमवश नहिं कुल जाति विचारी॥ यद्यपि द्रोह कियो सुरपतिसुत कहि न जाइ अतिभारी। सकल लोक अवलोकि शोकहत शरणगये भय टारी ॥ विहँगयोनि आमिष अहारपर गीध कौन व्रतधारी। जनक समान क्रिया ताकी निजकर सब भाँति सँवारी ॥ अधमजाति शबरी योषित शठ लोक वेदते न्यारी। जानि प्रीति दै दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी॥ कपि सुग्रीव बंधुभय व्याकुल आयो शरण पुकारी। सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो बालि सहि गारी ॥ रिपुको अनुज विभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी। शरण गये आगे ह्वै लीन्हों भेंटचो भुजा पसारी ॥ अशुभ होइ जिनके सुमिरेते वानर ऋच्छ विकारी। वेदविदित पावन किये ते सब महिमा नाथ तुम्हारी ॥ कहँ लगि कहों दीन अगणित जिन्हकी तुम विपति निवारी। कलिमलग्रसित दास तुलसी पर काहे कृपा बिसारी ॥ १६७ ॥ रघुपति भक्ति करत कठिनाई। कहत सुगम करणी अपार जाने सोइ जेहि

बनिआई ॥ जो जेहि कला कुशल ताकहँ सोइ सुलभ सदा सुखकारी । सफरी सम्मुख जल प्रवाह सुरसरि बहै गज भारी ॥ ज्यों शर्करा मिलै सिकतामहँ बलते न कोउ विलगावै । अति रसज्ञ सूक्षम पिपीलिका विनु प्रयासही पावै ॥ सकल दृश्य निज उदर मेलि सोवै निद्रा तजि योगी । सोई हरिपद अनुभवै परमसुख अतिशय द्वैत वियोगी ॥ शोक मोह भय हर्ष दिवस निशि देश काल तहँ नाहीं । तुलसिदास यहि दशा-हीन संशय निर्मूल न जाहीं ॥ १६८ ॥ जोपै राम चरण रति होती । तौ कत त्रिविधशूल निशिवासर सहते विपति निसोती ॥ जो संतोष सुधा निशिवासर स्वप्नेहुँ कबहुँक पावै । तौ कत विषय विलोकि झूंठ जल मन कुरंग ज्यों धावै ॥ जो श्रीपति महिमा विचारि उर भजते भाव बढाए । तौ कत द्वार २ कूकर ज्यों फिरते पेट खलाए ॥ जे लोलुप भये दास आशके ते सबहिके चेरे । प्रभु विश्वास आश जीती जिन्ह ते सेवक हरिकेरे ॥ नहिं एकौ आचरण भजनको विनय करत हौं ताते । कीजै कृपा दास तुलसी पर नाथ नामके नाते ॥ १६९ ॥ जो मोहिं राम लागते मीठे । तौ नवरस षटरस अनरस ह्वै जाते सब सीठे ॥ वंचक विषय विविध तनु धरि अनुभवे सुने अरु डीठे । यह जानत हौं हृदय आपने स्वप्ने न अघाइ उबीठे ॥ तुल-

सिदास प्रभु सों एकहि बल वचन कहत अति ढीठे । नामकि लाज राम करुणा करि केहि न दिये करि चीठे ॥ १७० ॥ यों मन कबहूँ तुमहिं न लाग्यो । ज्यों छल छाँडि स्वभाव निरन्तर रहत विषय अनुराग्यो ॥ ज्यों चितई परनारि सुने पातक प्रपंच घर घरके । त्यों न साधु सुरसरितरंग निर्मल गुणगण रघुवरके ॥ ज्यों नासा सुगंधरसवश रसना पटरसरतिमानी । रामप्रसाद माल जूँठन लगि त्यों न ललकि ललचानी ॥ चंदन चन्द्रवदनि भूषण पट ज्यों चह पांवर परस्यो । त्यों रघुपतिपदपद्म परशको तनु पातकी न तरस्यो ॥ ज्यों सब भाँति कुदेव कुठाकुर सेए वपु वचन हियेहूं । त्यों न राम सुकृतज्ञ जे सकुचत सकृत प्रणाम किये हूँ ॥ चंचल चरण लोभ लगि लोलुप द्वार द्वार जग बागे । रामसीय आश्रमनि चलत त्यों भये न श्रमित अभागे ॥ सकल अंगपदविमुख नाथ मुख नामकी ओट लई है । है तुलसिहि परतीति एक प्रभु मूरति कृपामई है ॥१७१॥ कीजै मोके यमयातनामई । राम तुमसे शुचि सुहृद साहिबहि मैं शठ पीठि दई ॥ गर्भवास दश मास पालि पितु मातु रूप हित कीन्हों । जडहि विवेक सुशील खलहि अपराधिहि आदर दीन्हों ॥ कपट करौं अन्तर्यामिहुसों अघ व्यापकहि दुरावौं । ऐसहु

कुमति कुसेवक पर रघुपति न कियो मनवाओं ॥ उदर भरों किंकर कहाइ बेंच्यो विषयनि हाथ हियो है। मोसे वंचकको कृपालु छल छाँडिके छोहु कियो है ॥ पल पलके उपकार रावरे जानि बूझि सुनि नीके। भिद्यो न कुलिशहुते कठोर चित कबहुँ प्रेम सिय पीके॥ स्वामीकी सेवक हितता सब कछु निज सांइ दोहाई। मैं मति तुला तौलि देखो भई मेरिहि दिशि गरुआई॥ एतेहु पर हित करत नाथ मेरो करि आयो अरु करिहैं। तुलसी अपनी ओर जानियत प्रभुहि कनोडोई भरिहैं ॥ १७२ ॥ कबहुँक हों यहि रहनि रहौंगो। श्रीरघुनाथ कृपालु कृपाते संत स्वभाउ गहौंगो ॥ यथालाभ संतोष सदा काहू सों कछु न चहौंगो। परहित निरत निरंतर मन क्रम वचन नेम निबहौंगो ॥ परुष वचन अति दुसह श्रवण सुनि तेहि पावक न दहौंगो। विगत मान सम शीतल मन पर गुण अवगुण न कहौंगो ॥ परिहरि देहजनित चिन्ता दुख सुख समबुद्धि सहौंगो। तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि अविचल हरि भक्ति लहौंगो ॥ १७३ ॥ नाहिन आवत आन भरोसो। यहि कलिकाल सकल साधनतरु है श्रम फलनि फरोसो ॥ तप तीरथ उपवास दान मख जेहि जो रुचै करो सो। पायहि पै जानिबो कर्म फल भरि

भरि वेद परोसो ॥ आगम विधि जप योग करत नर सरत न काज खरोसो। सुख स्वप्नेहु न योग सिधि साधन रोग वियोग धरोसो ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह मिलि ज्ञान विराग हरोसो। बिगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम घरोसो ॥ बहुमत मुनि बहुपंथ पुराणनि जहाँ तहाँ झगरोसो। गुरु कह्यो राम भजन नीको मोहिं लागत राम राज डगरोसो ॥ तुलसी विनु परतीति प्रीति फिर फिरि पचि मरै मरोसो। रामनाम वोहित भवसागर चाहै तरन तरोसो ॥ ॥ १७४ ॥ जाके प्रिय न राम वैदेही। सो छाँडिये कोटि वैरीसम यद्यपि परमसनेही ॥ तज्यो पिता प्रह्लाद विभीषण बंधु भरत महतारी। बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज वनितनि भयो मुद मंगलकारी ॥ नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँलों। अञ्जन कहा आँखि जेहि फूटै बहुतक कहों कहाँलों ॥ तुलसी सो सब भाँति परमहित पूज्य प्राणते प्यारो। जासों होय सनेह रामपद एतो मतो हमारो ॥ १७५ ॥ जो पै रहनि रामसों नाहीं। तौ नर खर कूकर शूकर से जाय जियत जग माहीं ॥ काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूँख प्यास सबहीके। मनुज देह सुर साधु सराहत सो सनेह सिय पीके ॥ शूर सुजान सुपूत सुलक्ष

गनियत गुण गरुआई। विनु हरिभजन इँद्रायणके फल तजत नहीं करुआई॥ कीरति कुल करतूति भूतिभलि शील स्वरूप सलोने। तुलसी प्रभु अनुराग रहित जस सालन शाक अलोने॥ १७६॥ राख्यो राम सुस्वामी सों नीच नेह न नातो। एते अनादर होतहूं ते नहातो॥ जोरे नए नाते नेह फोकटके फीके। देहके दाहक गाहक जीके॥ अपने अपनेको सब चाहत नीको। मूल दुहूंको दया दूलह सी को॥ जीवके जीवनप्राणके प्यारे। सुखहूको सुख राम सो बिसारे॥ कियो करैगो तोसे खलको भलो। ऐसे सुसाहबसों तू कुचाल क्यों चलो॥ तुलसी तेरी भलाई अजहूँ बूझै। राडउ राउत होत फिरिकै जूझै॥ १७७॥ जो तुम त्यागो राम हों तो नहिं त्यागों। परिहारि पाँय काहि अनुरागों॥ सुख सुप्रभु तुमसो जगमाहीं। श्रवण नयन मन गोचर नाहीं॥ हौं जडजीव ईश रघुराया। तुम माया-पति हौं वशमाया॥ हौं तो कुयाचक स्वामी सुदाता। हौं कुपूत तुमही पितु माता॥ जो पै कहूं कोउ बूझत बातो। तौ तुलसी विनु मोल बिकातो॥ ॥ १७८॥ भयेहूं उदास राम मेरे आश रावरी। आरतस्वारथी सब कहें बात बावरी॥ जीवनको दानीघन कहा ताहि चाहिये। प्रेम नेमको निबाहे चातक सराहिये॥ मीनते न लाभ लेश पानी पुण्य पीनको।

जलविनु थल कहां मीचु विनु मीते मीनको ॥ बडे हीकी ओट बलि बाँचि आये छोटे हैं। चलत खरेके संग जहाँ तहाँ खोटे हैं ॥ यहि दरबार भलो दाहिनो वामको। मोको शुभदायक भरोसो रामनामको॥ कहत नशानी ह्वैहै हिये नाथ नीकी है। जानत कृपानिधान तुलसीके जीकी है ॥ १७९ ॥

राग बिलावल।

कहां जाउँ कासों कहौं को सुनै दीनकी । त्रिभुवन तुहीं गति सब अंगहीनकी ॥ जगदीश घर घरनि घनेरे हैं। निराधारको अधार गुण गण तेरे हैं॥ गजराज तोसे काज खगराज तजि धायो को। मोसे दोष कोप पोसे माय जायो को॥ मोसे क्रूर कायर कुपूत कौडी आधके। किये बहुमोल तैं करैया गीधश्राद्धके ॥ तुलसीकी तेरेही, बनाये बलि बनैगी। प्रभुकी विलम्ब अम्ब दोष दुख जनैगी ॥ १८० ॥ बारक विलोकि बलि कीजै मोहिं आपनो। राय दशरथके तू उथपन थापनो ॥ साहब शरणपाल सबल न दूसरो । तेरो नाम लेतही सुखेत होत ऊसरो ॥ वचन करम तेरे मेरे मन गडे हैं। देखे सुने जाने मैं जहान जेते वडे हैं ॥ कौने कियो समाधान सनमान शिलाको। भृगुनाथसों ऋषी जितय्या कौन लीलाको ॥ मातु पितु बंधु हित लोक वेदपालको। बोलको अचल नत करत निहाल

को ॥ संग्रही सनेहवश अधम असाधु को । गीध शबरीको कहो करि है शराध को ॥ निराधारको अधार दीनको दयालु को ॥ मीत कपि केवट रजनी चरभालु को ॥ रंक निर्गुणी नीच जितने निवाजे हैं । महाराज सुजन समाज ते विराजे हैं ॥ सांची बिरुदावली न बढि कहि गई है।शीलसिंधु ढील तुलसीकीबार भईहै॥१८१॥केहू भाँतिकृपासिन्धु मेरी ओरहेरिये।मोको और ठौर न सुटेक एक तेरिये ॥ सहस शिलाते अति जड मति भई है । कासों कहौं कौने गति पाहनहिं दई है ॥ पद राग याग चहौं कौशिक ज्यों कियो है। कलि मल खल देखि भारी भीति भयो है ॥ करम कपीश वालि बली त्रास त्रस्यो हौं । चाहत अनाथ नाथ तेरी बाँह बस्यो हौं॥महामोह रावण विभीषण ज्यों हयो है। त्राहि तुलसी त्राहि तुलसी तिहूं ताप तयो है ॥ ॥ १८२ ॥ नाथ गुणगाथ सुनि होत चित चाउ सो । राम रीझिबेकी जानो भगति न भाउ सो ॥ करम स्वभाव काल ठाकुर न ठांउ सो । सुधन न सुतन न सुमन सुआउसो॥याँचो जल जाहि कहैं अमिय पिआउ सो। कासों कहौं काहूसों न बढत हिआउ सो । बाप बलि जाउँ आपु करिये उपाउ सो । तेरेही निहारे परै हारेहू सुदाउ सो ॥ तेरेही सुझाये सूझै असुझ सुझाउ सो । तेरेही बुझाये बूझे अबुझ बुझाउ सो ॥ नाम अवलम्ब

अम्बु हीन मीन राउ सो ॥ प्रभु सों बनाइ कहौं जीह जरि जाउ सो ॥ सब भाँति बिगरी है एक सब नाउ सो। तुलसी सुसाहिबहि दियो है जनाउ सो ॥ १८२ ॥

राग आसावरी।

राम प्रीतिकी रीति आप नीके जनियत हैं ॥ वडेकी बडाई छोटेकी छोटाई दूरि करै ऐसी विरदावलि बलि वेद मनियत हैं ॥ गीधको कियो शराध भीलनीके खायो फल सोऊ साधु सभा भलीभाँति भनियत हैं। रावरे आदरे लोक वेदहूँ आदरियत योग ज्ञानहूते गरू गनियत हैं ॥ प्रभुकी कृपा कृपालु कठिन कलिहूं काल महिमा समुझि उर अनियतहैं। तुलसी परायेवश भये रस अनरस दीनबंधु द्वारे हरि हठ ठनियत हैं॥१८४॥ राम नामके जपे जाइ जियकी जरनि। कलिकाल अपर उपायते अपाय भये जैसे तम नाशिवेको चित्रके तरनि ॥ करम कलाप परिताप पाप साने सब ज्यों सुफूल फूलै तरु फोकट फरनि। दंभ लोभ लालच उपासना विनाशिनीके सुगति साधन भई उदर भरनि ॥ योग न समाधि निरुपाधि न विराग ज्ञान वचन विशेष वेष कहूं न करनि। कपट कुपथ कोटि कहनि रहनि खोटि सकल सराहैं निज २ आचरनि ॥ मरत महेश उपदेश है कहा करत सुरसरि तीर काशी धरम धरनि॥ रामनामको प्रताप हर कहैं जपैं आप युगयुग जानै

जगवेदहूं वरनि ॥ मति रामनामहींसों रति रामनाम-हींसों गति रामनामहीकी विपति हरनि। रामनामसों प्रतीति प्रीति राखे कबहुँक तुलसी ढरैंगे राम आपनी ढरनि ॥ १८५ ॥ लाज न लागत दास कहावत ॥ सो आचरण बिसारि शोच तजि जो हरि तुम कहँ भावत॥ सकल संग तजि भजत जाहि मुनि जप तप याग बनावत। मोसम मन्द महाखल पाँवर कौन जतन तेहि पावत ॥ हरि निर्मल मलग्रसित हृदय असमंजस मोहिं जनावत। जेहि सर काक कंक बक शूकर क्यों मराल तहँ आवत ॥ जाकी शरण जाइ कोविद दारुण त्रय-ताप बुझावत। तहूँ गये मद मोह लोभ अति सरगहु मिटत नशावत ॥ भवसरिता कहँ नावसंत यह कहि औरनि समुझावत। हौं तिन्हसों हरि परम वैर करि तुम-सों भलो मनावत॥ नाहिंन और ठौर मो कहँ ताते हठि नातो लावत। राखु शरण उदार चूडामणि तुलसिदास गुण गावत ॥ १८६॥ कौन यतन विनती करिये। निज आचरण विचारि हारि हिय मानि डरिये ॥ जेहि साधन हरि द्रवहु जानि जन सो हठि परिहरिये।जाते विपति जाल निशि दिन दुख तेहि पथ अनुसरिये ॥ जानतहूँ मन वचन कर्म परहित कीन्हें तरिये। सो विपरीत देखि परसुख विनु कारणही जरिये॥ श्रुति पुराण सबको मत यह सतसंग सुदृढ धरिये। निज अभिमान मोह ईर्षा-

वृश तिन्हहिं न आदरिये ॥ सन्त सोइ प्रिय मोहिं सदा जाते भवनिधि तरिये। कहा अब नाथ कौन बलते संसार शोक हरिये ॥ जब कब निज करुणा स्वभाउते द्रवहु तो निस्तरिये। तुलसिदास विश्वास आन नहिं कत पचि २ मरिये ॥ १८७ ॥

ताहि ते आयो शरण सबेरे। ज्ञान विराग भक्ति साधन कछु स्वप्नेहुँ नाथ न मेरे ॥ लोभ मोह मद काम क्रोध रिपु फिरत रैनि दिन घेरे। तिन्हहिं मिले मन भयो कुपथ रत फिरै तिहारेहि फेरे ॥ दोष निलय यह विषय शोकप्रद कहत सन्त श्रुति टेरे। जानतहूं अनु-राग तहाँ अति सो हरि तुम्हरेहि प्रेरे ॥ विष पियूष सम करहु अग्नि हिम तारि सकहु बिनु बेरे। तुम सम ईश कृपालु परमहित पुनि न पाइहौं हेरे ॥ यह जिय जानि रहौं सब तजि रघुवीर भरोसे तेरे। तुलसिदास यहि विपति वागुरौ तुमसों बनिहि निबेरे ॥ १८८ ॥

मैं तू अब जान्यो संसार। बांधि न सकहि मोहिं हरिके बल कपट अगार। देखतहीं कमनीय कछु नाहिंन पुनि पुनि किये विचार। ज्यों कदली तरु मध्य निहा-रत कबहूँ न निकरत सार ॥ तेरे लिये जनम अनेक मैं फिरत न पायो पार। महा मोह मृगजल सरिता-महँ बोर्‍यो हौं बारहिं बार ॥ सुनु खल छल बल कोटि किये वश होहिं न भक्त उदार। सहित सहाय तहाँ

बसि अब जेहि हृदय न नंदकुमार। तासों करहु चातुरी जो नहिं जानै मर्म तुम्हार। सो परि मरै डरै रज्जु अहिते बूझै नहिं व्यवहार॥ निज हित सुनु शठ हठ न करहि जो चहहि कुशल परिवार। तुलसिदास प्रभुके दासन्ह तजि भजहि जहाँ मद मार॥ १८९॥

राग गौरी।

राम कहत चलु राम कहत चलु राम कहत चलु भाई रे। नाहिं तो भव बेगारि महँ परिहौ छूटत अति कठिनाई रे॥ बाँस पुरान साज सब अठ कठ सरल तिकोन खटोला रे। हमहिं दिहल करि कुटिल करमचंद मन्द मोल बिनु डोला रे॥ विषम कहार मारमदमाते चलहिं न पाँव बटोरा रे। मन्द बिलन्द अभेरा दलकन पाइय दुख झकझोरा रे॥ कांट कुराय लोटन लपेटन ठाँवहि ठाँउँ बझाऊं रे। जस २ चलिय दूरि तस २ निजबासन भेंट लगाऊँ रे॥ मारग अगम संग नहिं सम्बल नाउँ गाऊं कर भूलारे। तुलसिदास भवत्रास हरहु अब होहु राम अनुकूला रे॥ १९०॥ सहज सनेही रामसों तैं कियो न सनेह। ताते भव भाजन भयो सुनु अजहुँ शिखावन एह॥ जो सुख मुकुर विलोकिये अरु चित न रहै अनुहारि। त्यों सेवतहुँ न आपने ये मातु पिता सुत नारि॥ दै दै सुमन तिल बासकै अरु खरि परिहरि रस लेत। स्वारथहित भूतल भरे मनमेचक

तनुसेते ॥ करिबी त्यों अब करतु हैं करिबेहित मीत अपार। कबहुँ न कोउ रघुवीरसों नेह निबाहनिहार ॥ जासों सब नातो फुरै तासों न करी पहिचानि। तातै कछु समझों नहीं कहा लाभ कह हानि ॥ साँचो जान्यो झूँठको झूठे कहँ साँचो जानि। कौन गयो कौन जात है कौन जैहै करि हित हानि ॥ वेद कह्यो बुध कहतहैं अरु होहुँ कहत हों टेरि। तुलसी प्रभु साँचो हितू तू हियेकी आँखिन हेरि ॥ १९१ ॥ एक सनेही साँचिलो केवल कोशलपालु। प्रेमकनोडो राम-सों नहिं दूसरो दयालु ॥ तनु साथी सब स्वारथी सुर व्यवहार सुजान। आरत अधम अनाथहित को रघु-वीर समान ॥ नाद निठुर सम चर शिखी सलिल सनेह न शूर। शशि सरोग दिनकर बडे पयद प्रेमपथ क्रूर ॥ जाको मन जासों बँध्योताको सुखदायक सोइ॥सर-लशील साहब सदा सीतापतिसरिस न कोइ॥सुनि सेवा सहि को करै परिहरैको दूषण देखी। केहि दिवान दिन हीनको आदर अनुराग विशेखी ॥ खग शबरी पितु मातु ज्यों माने कपिको किये मीत। केवट भेंटचो भरत ज्यों ऐसो कहु पतित पुनीत ॥ देइ अभागहि भाग को को राखे शरण सभीत। वेद विदित विरदावली कवि कोविद गावत गीत ॥ कैसेउ पाँवर पातकी जेहि लई नामकी ओट। गांठी बाँध्यो दामसौं परख्यो न

फेरि खर खोट ॥ मन मलीन कलिकिलविषी होत सुनत जासु कृतकाज । सो तुलसी कियो आपनो रघुवीर गरीब निवाज ॥ १९२ ॥ जोपै जानकीनाथसों नातो नेह न नीच । स्वारथ परमारथ कहा कलि कुटिल बिगोयो बीच ॥ धर्म वर्ण आश्रमनिके पैयत पोथिही पुरान । करतब विन वेष देखिये ज्यों शरीर बिनु प्रान ॥ वेद विहित साधन सबै सुनियत दायक फल चारि । राम प्रेम बिनु जानिबो जैसे सरसरिता बिन वारि ॥ नाना पथ निर्वाणके नाना विधान बहु-भाँति । तुलसी तू मेरे कहे जपु रामनाम दिन राति ॥ ॥ १९३ ॥ अजहुँ आपने रामके करतब समुझत हित होइ । कहुँ तू कहँ कोशलधनी तोको कहा कहत सब कोइ॥ रीझि निवाज्यो कबहिं तू कब खीजि दई तोहिं। चारि दर्पण वदन निहारिकै सुविचार मान हिय हारि॥ बिगरी जन्म अनेककी सुधरत लगै पल न आधु । पाहि कृपानिधि प्रेमसों कहै कौन राम कियो साधु ॥ वाल्मीकि केवटकथा कपि भील भालु सनमान । सुनि सन्मुख जो न रामसों तिहिं को उपदेशहि ज्ञान ॥ का सेवा सुग्रीवकी का प्रीति रीति निरवाहु । जासु बंधु वध्यो व्याध ज्यों सो सुनत सोहात न काहु॥भजन बिभी-षणको कहा फल कहा दियो रघुराज । राम गरीबनिवा-जके बडी बाँह बोलकी लाज ॥ जपहि नाम रघुनाथको

चर्चा दूसरी न चालु॥सुमुख सुखद साहब सुधी समरथ कृपालु नतपालु ॥ सजल नयन गद्गद गिरा गह्वर मन पुलक शरीर । गावत गुणगण रामके केहिकी न मिटी भवभीर ॥ प्रभु कृतज्ञ सर्वज्ञ हैं परिहरु पाछिली गलानि । तुलसी तोसों रामसों कछु नइ न जान पहिचानि ॥ १९४ ॥ जो अनुराग न राम-सनेहीसों । तो लह्यो लाहु कहा नरदेहीसों ॥ जो तनु धरि परिहरि सब सुख भय सुमति राम अनुरागी । सो तनु पाइ अघाइ किये अघ अवगुण अधम अभागी ॥ ज्ञान विराग योग जप तप मख जग मुद मग नहिं थोरे । राम प्रेम बिनु नेम जाय जैसे मृग जल जलधि हिलोरे ॥ लोक विलोकि पुराण वेद सुनि समुझि बूझि गुरु ज्ञानी । प्रीति प्रतीति रामपदपंकज सकल सुमंग-लखानी ॥ अजहुँ जानि जिय मानि हारि हिय होइ पलक मह नीको । सुमिरि सनेह सहित हित रामहिं मानु मतो तुलसीको ॥ १९५ ॥ बलि जाउँ हों राम गुसाईं । कीजिय कृपा आपनी नाईं ॥ परमारथ सुरपुर साधन सब स्वारथ सुखद भलाई । कलि सकोपलोपी सुचाल निज कठिन कुचाल चलाई ॥ जहँ तहँ चित चितवत हित तहँ नित नव विषाद अधिकाई । रुचि भावती भभरि भागहि समुहाहि अमित अनभाई ॥ अधि मगन मन व्याधि विकल तन वचन मलीन

झुठाई। एतेहु पर तुमसों तुलसीकी प्रभु सकल सनेह सगाई ॥ १९६ ॥ काहेको फिरत मन करत बहु जतन मिटै न दुख विमुख रघुकुल वीर ॥ कीजै जो कोटि उपाय त्रिविधि ताप न जाइ कह्यो जो भुज उठाइ मुनिवर कीर। सहज टेव बिसारि तु ही धौं देखु विचारि मिलै न मथत वारि घृत बिनु क्षीर। समुझि तजहिं भ्रम भजहिं पद युग्म सेवत सुगम गुण गहन गम्भीर ॥ आगम निगम ग्रन्थ ऋषि मुनि सुर सन्त सबहीको एक मत सुनु मतिधीर। तुलसिदास प्रभु बिन प्यास मरै पशु यद्यपि है निकट सुरसरि तीर ॥१९७॥ नाहिन चरणरति ताहि ते सहों विपति कहत श्रुति सकल मुनि मतिधीर। बसे जों शशि उछंग सुधा स्वादित कुरंग ताहिको भ्रमनिरखि रविकर नीर ॥ सुनिय नाना पुराण मिटत नहीं अज्ञान पढिय न समुझिये जिमि खग कीर। बूझत बिनहिं पाश सेमर सुमनआश करत चरत तेइ फल बिनु हीर॥ कछु न साधनसिद्धि जानों न निगम विधि नहिं जप तप वशमन न समीर॥तुलसिदास भरोस परमकरुणा कोश प्रभु हरि है विषमभवभीर॥ १९८ ॥ मन पछितैहै अवसर बीते। दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु कर्म वचन अरु हीते ॥ सहसबाहु दशवदन आदि नृप बचे न काल बलीते। हम हम करि धन धाम सँवारे अन्त

चले उठि रीते ॥ सुत वनितादि जानि स्वारथरत न करु नेह सबहीते । अन्तहुँ तोहिं तजैंगे पामर तू न तजहि अबहींते॥ अब नाथहिं अनुरागु जागु जड त्यागु दुराशा जीते । बुझै न कामअग्नि तुलसी कहुँ विषय भोग बहु घीते ॥ १९९ ॥ काहेको फिरत मूढ मन धायो । तजि हरि चरण सरोज सुधारस रविकर जल लायो ॥ त्रिजगदेव नर असुर अपर जग योनि सकल भ्रमि आयो । गृह वनिता सुत बंधु भये बहु मातुपिता जिन्ह जायो ॥ जाते निरय निकाय निरंतर सोइ न तोहिं सिखायो । तवहित होइ कटहिं भववन्धन सो मगु तोहिं न बतायो ॥ अजहुँ विषय कहँ जतन करत यद्यपि बहुविधि डहँकायो । पावक काम भोग घृतते शठ कैसे परत बुझायो ॥ विषयहीन दुख मिले विपति अति सुख स्वप्नेहु नहिं पायो । उभय प्रकार प्रेत पावत ज्यौं धन दुखप्रद श्रुति गायो॥ छिन छिन क्षीण होत जीवन दुर्लभ तनु वृथा गँवायो। तुलसिदास हरि भजहि आश तजि कालउरग जग खायो ॥ २०० ॥ तांबेसों पीठि मनहुँ तनु पायो । नीच मीच जानत न शीशपर ईश निपट बिसरायो ॥ अवनि रवनि धनधाम सुहृद सुतको न इन्हहिं अपनायो । काके भये गए सँग काके सब सनेह छल छायो ॥ जिन्ह भूपनि जगजीति बाँधि यम अपनी

बाँह बसायो। तेऊ काल कलेऊ कीन्हें तू गिनती कब आयो॥ देखु विचार सार का साँचो कहा निगम निज गायो। भजहि न अजहुँ समुझि तुलसी तेहि जेहि महेश मन लायो॥ २०१॥ लाभ कहा मानुष तनु पाये। काय वचन मन स्वप्नेहुँ कबहुँक घटत न काज पराए॥ जो सुख सुरपुर नरक गेह वन आवत बिनहिं बुलाए। तेहि सुख कहँ बहु जतन करत मन समुझत नहिं समुझाए॥ परदारा परद्रोह मोहवश कियो मूढ मन भाए। गर्भवास दुखराशि यातना तीव्र विपति बिसराए॥ भय निद्रा मैथुन अहार सबके समान जग जाए। सुरदुर्लभतनु धरि न भजे हरि मद अभिमान गँवाए॥ गई न निज परबुद्धि शुद्ध ह्वै रहे न रामलय लाए। तुलसिदास यह अवसर बीते का पुनिके पछि-ताए॥ २०२॥ काज कहा नरतनु धरि सारयो। पर उपकार सारश्रुति को सो धोखेहुमें न विचारयो॥ द्वैत-मूल भय शूल शोकफल भवतरु टरै न टारयो। राम-भजन तीक्ष्ण कुठार लै सो नहिं काटि निवारयो॥ संशय सिंधु नाम बोहित भजि निज आतमा न तारयो। जन्म अनेक विवेकहीन बहु योनि भ्रमत नहिं हारयो॥ देखि आनकी सहज सम्पदा द्वेष अनल मन जारयो। शम दम दया दीन पालन शीतल हिय हरि न सँभारयो। प्रभु गुरु पिता सखा रघुपतिमें मन क्रम

वचन बिसारचो। तुलसिदास यहि आशशरण राखिहि जेहि गीध उधारचो ॥ २०३ ॥ श्रीहरिगुरुपद कमल भजहु मन तजि अभिमान। जेहि सेवत पाइय हरि सुखनिधान भगवान ॥ परिवा प्रथम प्रेम बिनु राम मिलन अतिदूरि । यद्यपि निकट हृदय निज रहे सकल भरि पूरी ॥ दुइज द्वैत मति छाँडि चरहि महि मंडल धीर। विगत मोह माया मद हृदय सदा रघु-वीर ॥ तजि त्रिगुण पर परमपुरुष श्रीरमण मुकुन्द । गुण स्वभाव त्यागे बिनु दुर्लभ परमानन्द ॥ चौथि चारि परिहरहु बुद्धि मन चित अहँकार। विमल विचार परमपद निज सुख सहज उदार ॥ पाँचइ पाँच परस रस शब्द गन्ध अरु रूप। इन्ह कर कहा न कीजिये बहुरि परब भवकूप ॥ छठि षडवर्ग करिय जप जनक-सुतापति लागि। रघुपति कृपा वारि बिनु नहिं बुताइ लो भागि ॥ सातैं सप्तधातु निर्मित तनु करिय विचार। तेहि तनु केर एक फल कीजिये पर उपकार । आठइँ आठ प्रकृति पर निर्विकार श्रीराम । केहि प्रकार पाइय हरि हृदय बसहिं बहुकाम ॥ नवमी नव-द्वारपुर बसि जेहि न आपु भल कीन्ह । ते नर योनि अनेक भ्रमत दारुण दुख दीन्ह ॥ दशइँ दशहु कर संयम जो न करिय जिय जानि। साधन वृथा होइँ सब मिलहिं न शारँगपानि ॥ एकादशी एक मन वश-

कै सेवहु जाइ। सोइ व्रत कर फल पावै आवागमन नशाइ ॥ द्वादशि दान देहु अस अभय होइ त्रैलोक। पर हित निरत सो पारन बहुरि न व्यापके शोक। तेरसि तीन अवस्था तजहु भजहू भगवन्त। मनक्रम-वचनअगोचर व्यापक व्याप्य अनन्त ॥ चौदशि चौदह भुवन अचर रूप गोपाल। भेद गये विनु रघुपति अति न हरहिं जगजाल ॥ पूनो प्रेम भक्ति रस हरि-रस जानहिं दास। सम शीतल गत मान ज्ञानरत विषय उदास ॥ त्रिविध शूल होलिय जारिय खेलिय अब फाग। जो जिय चहसि परमसुख तौ यहि मार-ग लाग ॥ श्रुति पुराण बुध संमत चांचरि चरित मुरारि। करि विचार भवतरिय परिय न कबहुँ यम-धारि ॥ संशय शमन दमन दुख सुखनिधान हरि एक। साधु कृपा विनु मिलहिं न करिय उपाइ अनेक ॥ भव-सागर कहँ नाउ शुद्ध सन्तनके चरण। तुलसिदास प्रयास विनु मिलहिं राम दुखहरण ॥ २०४ ॥

राग कान्हारा।

जो मन लागै रामचरण अस। देह गेह सुत वित कलत्र महँ मगन होत बिनु यतन किये जस ॥ द्वन्द्व रहित गत मान ज्ञान रत विषय विरत खटाई नाना-कस। सुखनिधानसुजान कोशलपति है प्रसन्न कहु क्यों न होहिं वस ॥ सर्व भूतहित निर्व्यलीक चित

भक्ति प्रेम दृढ नेम एक रस । तुलसिदास यह होइ तबहिं जब द्रवै ईश जेहि हते शीशदश ॥ २०५ ॥ जो मन भज्यो चहै हरि सुरतरु । तौ तजि विषय विकारसार भजु अजहूँ जो मैं कहौं सोइ करु । सम संतोष विचार विमल अति सतसंगति ए चारि दृढ करि धरु । काम क्रोध अरु लोभ मोह मद राग द्वेष निःशेष करि परिहरु ॥ श्रवण कथा मुखनाम हृदय हरि शिर प्रणाम सेवा कर अनुसरु । नयनन निरखि कृपा समुद्र हरि अग जग रूप भूप सीतावरु ॥ इहै भक्ति वैराग्य ज्ञान यह हरितोषन यह शुभ व्रत आचरु । तुलसिदास शिवमत मारग यहि चलत सदा स्वप्नेहुँ नाहिंन डरु ॥ २०६ ॥ नाहिं न और कोऊ शरण लायक दूजो श्रीरघुपति सम विपति विवारण । काको सहज स्वभाव सेवक वश काहि प्रणत पर प्रीति अकारण ॥ जन गुण अलप गनत सुमेरु करि अवगुण कोटि विलोकि बिसारन । परमकृपालु भगत चिन्तामणि विरद पुनीत पतितजनतारन ॥ सुमिरत सुलभ दासदुख सुनि हरि चलत तुरत पटपीत सँभारन । साखि पुरान निगम आगम सब जानत द्रुपदसुता अरु वारन ॥ जाको यश गावत कवि कोविद जिन्हके लोभ मोह मद मारन । तुलसिदास तजि आश सकल भजु कोशलपति मुनिवधू उधारन ॥ २०७ ॥ भजिवे लायक सुखदा-

यक रघुनायक सरिस शरण पद दूजो नाहिं न। आनँदभवन दुख दमन शोकशमन रमारमन गुण गनत सिराहिं न॥ आरत अधम कुजाति कुटिल खल पतित सभीत कहूं जे समाहिं न। सुमिरत नाम विवशहू बारक पावत सो पद जहाँ सुर जाहिं न॥ जाके पदकमल लुब्ध मुनि मधुकर विरति जे परम सुगतिहु लुभाहिं न। तुलसिदास शठ तेहि न भजसि कस कारुणीक जो अनाथहि दाहिन॥ २०८॥

राग कल्याण।

नाथसों कौन विनती कहि सुनावौं। त्रिविध अनगनित अवलोकि अघ आपने शरण सम्मुख होत सकुचि शिर नावौं॥ विरचि हरिभक्तको वेष वर वाटिका कपटदल हरित पल्लवनि छावौं। नाम लगि लाइ लासा ललित वचन कहि व्याध ज्यों विषय विहँगनि बझावौं॥ कुटिल शत कोटि मेरे रोम पर वारियहि साधु गनतीमो पहिलहिं गनावौं। परमबर्बर खर्व गर्व पर्वत चढ्यो अज्ञ सर्वज्ञ जनमणि जनावौं। साँच किधौं झूंठ मोको कहत कोउ कोउ रामरावरो होहुँ तुम्हरोइ कहावौं॥ विरदकी लाज करि दास तुलसीहि देव लेहु अपनाइ अब देहु जनि बावौं॥ २०९॥

नाहिनो नाथ अवलंब मोहिं आनकी। कर्म मन वचन प्रण सत्य करुणानिधे एक गति राम भवदीय पदत्रा-

णकी ॥ कोह मद मोद ममता यह तन जानि मन बात नहिं जाति कहि ज्ञान विज्ञानकी । काम संकल्प उर निरखि बहु वासनहिं आश नहिं एकहू आंक निर्वानकी ॥ वेद बोधित कर्म धर्म विनु अगम अति यदपि जिय लालसा अमरपुर जानकी । सिद्ध सुर मनुजादि सेवत कठिन द्रवहिं हठयोग दिये भोग वलि प्राणकी ॥ भक्ति दुर्लभ परम शंभु शुकमुनि मधुप प्यारु पदकंज मकरंद मधु पानकी । पतितपावन सुनत नाम विश्रामकृत भ्रमत पुनि समुझि चित ग्रन्थि अभिमानकी ॥ नरक अधिकार मम घोर संसारतम कूप कहि भूप मोहिं शक्ति अपानकी । दास तुलसी सोऊ त्रास नहिं गनत मन सुमिरि गुह गीध गज ज्ञाति हनु-मानकी ॥ २१० ॥ और कहँ ठौर रघुवंशमणि मेरे ॥ पतितपावन प्रणतपाल अशरण शरण बाँकुरे विरद विरुदैत केहि केरे । समुझि जियदोष अति रोष करि राम ज्यहि करत नहिं कान विनती वदन फेरे ॥ तदपि ह्वै निडर हौं कहौं करुणासिंधु क्यों बरहि जात मुनि-बात बिन हेरे । मुख्य रुचि होत वसिबेको पुर रावरे राम तेहि रुचिहि कामादि गण घेरे ॥ अगम अपवर्ग अरु स्वर्ग सुकृतैक फल नाम बल क्यों बसा यमनगर नेरे । कतहुँ नहिं ठाउँ कहँ जाउँ कोशलनाथ दीन वित-हीन हौं विकल विनु डेरे ॥ दास तुलसीहि बास देहु अब

करि कृपा वसत गज गृध्र व्याधादि जेहि खेरे ॥२११॥ कबहुँ रघुवंशमणि सो कृपा करहुगे। जेहि कृपा व्याध गज विप्र खल नर तरे तिन्हहिं सम मानि मोहिं नाथ उद्धरहुगे ॥ योनि बहु जन्मि किए कर्म खल त्रिविधविधि अधम आचरण कछु हृदय नहिं धरहुगे। दीनहित अजित सर्वज्ञ समरथ प्रणतपाल चित मृदुल निजगुणनि अनुसरहुगे ॥ मोह मद मान कामादिखल मंडली सकुल निर्मूल करि दुसह दुख हरहुगे। योग जप यज्ञ विज्ञान ते अधिक अति अमल दृढ भक्ति दै परमसुख भरहुगे ॥ मन्द जन मौलिमणि सकल साधनहीन कुटिल मन मलिन जिय जानि जो डरहुगे। दास तुलसी वेद विदित विरुदावली विमल यश नाथ केहि भाँति विस्तरहुगे ॥ २१२ ॥

राग केदारा।

रघुपति विपति दवन। परमकृपालु प्रणतप्रतिपालक पतित पवन ॥ क्रूर कुटिल कुल हीन दीन अतिमलीन यवन। सुमिरत नाम राम पठए सब अपने भवन॥ गज पिंगला अजामिलसे खल गनेधौं कवन। तुलसीदास प्रभु केहि न दीन्हि गति जानकीरमन ॥ २१३ ॥

हरि सम आपदाहरन। नहिं कोउ सहज कृपालु दुसह दुखसागरतरन ॥ गज निजबल अवलोकि कमल गहि

गयो शरन । दीन वचन सुनि चले गरुड तजि सुना-भूधरन ॥ द्रुपदसुताको लग्यो दुशासन नगन करन । हा हरि पाहि कहत पूरे पट विविध बरन ॥ इहै जानि सुर नर मुनि कोविद सेवत चरन । तुलसिदास प्रभु को न अभय कियो नृग उद्धरन ॥ २१४ ॥

राग कल्याण ।

ऐसी कौन प्रभुकी रीति । विरद हेत पुनीत परिहरि पांवरनि पर प्रीति ॥ गई मारन पूतना कुच कालकूट लगाइ । मातुकी गति दई ताहि कृपालु यादवराइ ॥ कामसोहित गोपिकनपर कृपा अतुलित कीन्हि । जगतपिता विरंचि जिन्हके चरणकी रज लीन्हि ॥ नेमते शिशुपाल दिन प्रति देत गनि गनि गारि । कियो लीन सुआपमें हरि राजसभा मँझारि ॥ व्याध चित दै चरण मारयो मूढमति मृगजानि । सो सदेह स्वलोक पठयो प्रगट करि निजबानि ॥ कौन तिन्हकी कहै जिन्हके सुकृत अरु अघ दोउ । प्रगट पातकरूप तुलसी शरण राख्यो सोउ ॥ २१५ ॥ श्रीरघुवीरकी यह वानि । नीचहूंसों करत नेह सुप्रीति मन अनुमानि ॥ परम अधम निषाद पाँवर कौन ताकी कानि। लियो सो उर लाइ सुत ज्यों प्रेमको पहिचानि॥गीध कौन दयालु जो विधि रच्यो हिंसा सानि। जनक ज्यों रघुनाथ ताकहँ दियो जल निज पानि ॥ प्रकृति मलिन

कुजाति शबरी सकल अवगुण खानि। खात ताके दिये फल अति रुचि बखानि बखानि॥ रजनिचर अरु रिपुं विभीषण शरण आयो जानि। भरतज्यों उठि ताहि भेंटत देहदशा भुलानि॥ कौन सुभग सुशील वानर जिनहिं सुमिरत हानि। किये ते सब सखा पूजे भवन अपने आनि॥ राम सहज कृपालु कोमल दीन हित दिन दानि। भजहि ऐसे प्रभुहि तुलसी कुटिल कपट न ठानि॥ २१६॥ हरि तजि और भजिये काहि। नाहिनै कोउ रामसों ममता प्रणत पर जाहि॥ कनककशिपु विरंचिको जन करम मन अरु बात। सुतहि दुखवत विधि न वरज्यो कालके घर जात॥ शम्भु सेवक जान जग बहुबार दिये दशशीश। करत राम विरोध सो स्वप्नेहुँ न हटक्यो ईश॥ और देवनकी कहा कहों स्वारथहिके मीत। कबहुँ काहु न राखिलियो कोउ शरण गयउ सभीत॥ कोन सेवत देत संपति लोकहू यह रीति। दास तुलसी दीन पर एक रामहीकी प्रीति॥ २१७॥ जोपै दूसरो कोउ होइ। तो हौं बारहिं बार प्रभु कत दुख सुनावौं रोइ॥ काहि ममता दीन पर काको पतितपावन नाम। पापमूल अजामिलहिं केहि दियो अपनो धाम॥ रहे शंभु विरंचि सुरपति लोकपाल अनेक। शोकसरि बूडत करिसहि दई काहु न टेक॥ विपुल भूपति सदसि महँ नर नारि कह्यो प्रभु पाहि।

सकल समरथ रहे काहु न वसन दीन्हों ताहि ॥ एक मुख क्यों कहों करुणासिंधुके गुणगाथ। भक्तहितधरि देह कहा न कियो कोशलनाथ ॥ आपसे कहुँ सौंपिये मोहिं जो पै अतिहिं घिनात। दास तुलसी औरविधि क्यों चरण परिहरि जात ॥ २१८ ॥ कबहिं देखाइहौ हरि चरण। शमन सकल कलेश कलिमल सकल मंगलकरण ॥ शरद भव सुन्दर तरुण तर अरुणवारिज वरण। लच्छि लालित ललित करतल छबि अनूपम धरण ॥ गंग जनक अनंग अरिप्रिय कपटु बटु बलिछरण। विप्रतिय मृग वधिकके दुख दोष दारुणदरण॥ सिद्ध सुर मुनि वृन्दवन्दित सुखद सब कहँ शरण। सकृत उर आनत जिनहिं जन होत तारणतरण ॥ कृपासिंधु सुजान रघुवर प्रणत आरतिहरण। दरश आस पियास तुलसीदास चाहत मरण ॥ २१९ ॥ द्वारे हौं भोरहीको आज। रटत रहिहौ आरि और न कौरहीते काज ॥ कलिकराल दुकाल दारुण सब कुभांति कुसाज। नीच जन मन ऊंच जैसी कोढमेंकी खाज ॥ हहरि हिय में सदय बूझ्यो जाइ साधु समाज। मोहुसे कहुँ कतहुँ कोउ तिन कह्यो कोशलराज ॥ दीनता दारिददलैको कृपावारिधिवाज।दानि दशरथ रायके तुम बानइत शिरताज ॥ जनमको भूखो भिखारी हौं गरीबनेवाज। पेट भरि तुलसिहि जेंवाइय

भक्तिसुधासुनाज ॥२२०॥ करिय सँभार कोशलराय। और ठौर न और गति अवलम्ब नाम विहाय ॥ बूझि अपनी आपनो हित आप बाप न माय। राम राउर नाम गुरु सुरु स्वामि सखा सहाय ॥ राम राज न चले मानस मलिनके छल छाय । कोप तेहि कलि-काल कायर मुयहि घालत घाय॥ लेत केहरिसों बयर ज्यों भेक हनि गोमाय। त्योंहि रामगुलाम जानि नि-काम देव कुदाय ॥ अकनि याके कपट करतब अमित अनय अपाय। सुखी हरिपुर बसत होत परिक्षितहि पछिताय ॥ कृपासिंधु विलोकिये जन मनकी शासति साय। शरन आयो देव दीनदयालु देखन पाय॥ निकट बोलि न बरजिये बलिजाँउ हनिय न हाय। देखिहैं हनुमान गोमुख नाहरनिके न्याय ॥ अरुण मुख भ्रु विकट पिंगल नयन रोष कषाय। वीर सुमिरि समी-रको घटिहै चपल चित चाय ॥ विनय सुनि विहँसे अनुज सो वचनके कहिभाय। भलि कही कह्यो लषण हूं हँसि बने सकल बनाय ॥ दई दीनहि दादि सो सुनि सुजन सदन बधाय। मिटे संकट शोच पोच प्रपंच पाप निकाय ॥ पेखि प्रीति प्रतीति जन पर अवगुण अनघ अमाय। दास तुलसी कहत मुनिगण जयति जय उरगाय ॥ २२१ ॥ नाथ कृपाहीको पन्थ चित-वत दीन हौं दिन राति। होइ धौं केहि काल दीनब-

यालु जानि न जाति॥ सगुण ज्ञान विराग भक्तिसुसाधननिकी पाँति। भजे विकल विलोकि कलि अघअवगुणनिकी थाति॥अति अनीति कुरीति भइ भुइ तरनिहूंते ताति। जाउँ कहँ बलिजाउँ कहुँ ना ठाउँ मति अकुलाति॥ आप सहित न आपनो कोउ बाप कठिन कुभाँति। श्यामघन सींचिये तुलसी शालि सफल सुखाति॥ २२२॥ बलि जाउँ और कासों कहौं। सद्गुणसिंधु स्वामि सेवक हित कहुँ न कृपानिधि सों लहौं॥ जहँ २ लोभ लोल लालचवश निजहित चित चाहनि चहौं। तहँ २ तरणितकत उलूक ज्यों भटकी कुतरु कोटर गहौं॥काल स्वभाउ करमविचित्र फलदायक सुनि शिर धुनि रहौं। मोको तौ सकल सदा एकहि रस दुसह दाह दारुण दहौं॥ उचित अनाथ होइ दुखभाजन भयो नाथ किंकरनहौं। अब रावरो कहाय न बूझिये शरणपाल शाँसति सहौं॥ महाराज राजीवविलोचन मगन पाप सन्तापहौं। तुलसी प्रभु जब जेहि तेहि विधि राम निबाहे निरवाहौं॥ २२३॥ आपनो कबहूँ करि जानि हो। राम गरीबनिवाज राजमणि विरद लाज उर आनिहो॥ शीलसिंधु सुन्दर सब लायक समरथ सद्गुण खानि हो। पाल्यो है पालत पालहुगे प्रणत प्रेम पहिचानि हो॥ वेद पुराण कहत जग जानत दीनदयालु दीन दानि हो। कहि आवत बलिजाउँ मनहुँ मेरी

बार बिसारे बानि हो ॥ आरत दीन अनाथनिके हित मानत लौकिक कानि हो। है परिणाम भलो तुलसीको शरणागत भय भानिहो ॥ २२४ ॥ रघुवरकी कबहूं मन लागिहै। कुपथ कुचाल कुमति कुमनोरथ कुटिल कपट कब त्यागिहै। जानत गरल अमिय विमोहवश अमिय गनत करि आगि है। उलटी रीति प्रीति अपनेकी तजि प्रभुपद अनुरागिहै ॥ आखर अर्थ मंजुमृदु मोदक राम प्रेम पगिपागिहै। ऐसे गुण गाइ रिझाइ स्वामिसों पाइ है जो मुहँ माँगिहै॥ तू यहि विधि सुख शयन सोइ है जियकी जरनि भूरि भागिहै। रामप्रसाद दास तुलसी उर रामभगति योग जागिहै ॥ २२५ ॥ भरोसो और आइ है उर ताके। कहूं लहै जो रामहि सो साहबके अपने बल जाके ॥ कै कलिकाल कराल न सूझत मोह मार मद छाके। कै सुनि स्वामि स्वभाउ न रह्यो चित जो हित सब अँग थाके॥ हौं जानत भलि-भाँति अपनपौ प्रभुसों न साके। उपल भील खग मृग रजनीचर भले एक सुन्यो करतब काके॥ मोको भलो रामनाम सुरतरु सो रामप्रसाद कृपालु कृपाके। तुलसी सुखी निशोच राज ज्यों बालक माय बबाके ॥२२६॥ भरोसो जाहि दूसरो सो करो। मोको तो रामको नाम कल्पतरु कलिकल्याण फरो॥ कर्म उपासन ज्ञान वेदमत सो सब भाँति खरो। मोहिंतो श्रावणके अंध-

हि ज्यौं सूझत रंग हरो ॥ चाटत रहौं श्वान पातरि ज्यों कबँहु न पेट भरो। सो हौं सुमिरत नाम सुधारस पेपत परुसि धरो ॥ स्वारथ औ परमारथ हूं को नहिं कुंजरो नरो। सुनियत सेतु पयोधि पषाणनि करि कपि कटक तरो ॥ प्रीति प्रतीति जहाँ जाकी तहँ ताको काज सरो। मेरे तो माय बाप दोउ आखर हों शिशुअरनि अरो ॥ शंकर साखि जो राखि कहों कछु तो जरि जीह गरो। अपनो भलो रामनामहिंते तुलसिहिं समुझिपरो॥२२७॥

नाम राम रावरोई हितु मेरे। स्वारथ परमारथ साथि-न्हसों भुज उठाइ कहौं टेरे॥जननी जनक तज्यो जन्मि कर्म बिनु विधिहूं सृज्यो हों अवढेरे। मोहसे कोउ २ कहत रामहिको सो प्रसंग केहि केरे ॥ फिरचों ललात बिनु नाम उदरलगि दुखउ दुखित मोहिं हेरे। नाम प्रसाद लहत रसाल फल अबहों बबुर बहेरे ॥ साधत साधु लोक परलोकहि सुनि गुनि जतन घनेरे। तुल-सीके अवलंब नामको एक गाँठि कइ फेरे ॥२२८॥

प्रिय रामनाम ते जाहि न रामो। ताको भलो कठिन कलिकालहुँ आदि मध्य परिणामो ॥ सकुचत समुझि नाममहिमा मद लोभ मोह कोह कामो। राम नाम जप निरत सुजन पर करत छाँह घोर घामो ॥ नाम प्रभाउ सही जो कहै कोउ शिला सरोरुह जामो। जो सुनि सुमिरि भागभाजन भइ सुकृतशील भीलभामो ॥

वाल्मीकि अजामिलके कछु हुतो न साधन सामो। उलटे पलटे नाम महातम गुंजनि जितो ललामो॥ राम ते अधिक नाम करतब जेहि किए गत गामो। भये बजाइ दाहिने जो जपि तुलसिदासहु से बामो॥ २२९॥ गरैगी जीह जो कहौं और को हौं। जानकी-जीवन जनम जनम जग ज्यायो तिहारेहि कौरको हौं॥ तीनि लोक तिहुँ काल न देखत सुहृद रावरे जोरको हौं। तुम्हसों कपट करि कल्प २ कृमि ह्वै हौं नरक घोरको हौं॥ कहा भयो जो मन मिलि कलि-कालहि कियो भुरूट भोरको हौं। तुलसिदास शीतल नित यहि बल बडे ठेकाने ठौरको हौं॥ २३०॥ अकारणको हितू और को है। विरद गरीबनिवाज कौनको भौंह जासु जन जोहै॥ छोटो बडो चहत सब स्वारथ जो बिरंचि बिरचो है। कोल कुटिल कपि भालु पालिबो कौन कृपालुहि सोहै॥ काको नाम अनख आलस कहें अघ अवगुणनि बिछोहै। को तुलसीसे कुसेवकु संग्रह्यो शठ सब दिन सांई द्रोहै॥ २३१॥ और मोहिं कोहै काहि कहि हौं। रंकराज ज्यों मनको मनोरथ जेहि सुनाइ सुख लहिहौं॥ यमयातना योनि संकट सब सहे दुसह अरु सहिहौं। मोको अगम सुगम तुम्हको प्रभु तउ फल चारि न चहिहौं॥ खेलि-बेको खग मृग तरु किंकर ह्वै रावरो रामहौं रहिहौं।

यहि नाते नर कहुँ सचुपैहौं या विनु परम पदहु दुख दहिहौं ॥ इतनी जिय लालसा दासके कहत पानही गहिहौं । दीजे वचन कि हृदय आनिये तुलसीको पन निर्वहिहौं ॥ २३२ ॥ दीनबंधु दूसरो कहँ पावों । को तुम बिनु परपीर पाइहै केहि दीनता सुनावों ॥ प्रभु अकृपालु कृपालु अलायक जहँ २ चितहि डोलावों । इहै समुझि सुनि रहों मौनहीं कहि भ्रम कहा गँवावों ॥ गोपद बुडिबे योग कर्म करों बातनि जलधि थहावों । अति लालची काम किंकर मन मुख रावरो कहावों ॥ तुलसी प्रभु जियकी जानत सब अपनो कछुक जनावों। सो कीजै जेहि भाँति छाँडि छल द्वार परो गुण गावों ॥ २३३ ॥ मनोरथ मनको एकै भाँति । चाहत मुनि मन अगम सुकृत फल मनसा अघन अघाति ॥ कर्म भूमि कलि जन्म कुसंगत मति विमोह मद माति । करत कुयोग कोटि क्यों पैयत परमारथ पद शांति ॥ सेइ साधु गुरु सुनि पुराण श्रुति बूझ्यो राग बाजी तांति । तुलसी प्रभु स्वभाव सुरतरुसों ज्यों दर्पण मुखकांति ॥ २३४ ॥ जन्म गयो वादिहिं वर बीति। परमारथ पाले न पर्‍यो कछु अनुदिन अधिक अनीति ॥ खेलत खात लडकपन गो चलि यौवन युवतिन्ह लियो जीति।रोग वियोग शोक श्रम संकुल बडी वय वृथहि अतीति । राग रोष ईर्षा

विमोहवश रुची न साधु समीति। कहे न सुने गुण-गण रघुवरके भइ न रामपद प्रीति॥ हृदय दहत पछिताय अनल अब सुनत दुसह भवभीति। तुलसी प्रभुते होइ सो कीजिय समुझि विरदकी रीति॥ २३५॥ ऐसेहि जन्म समूह सिराने। प्राणनाथ रघुनाथसे प्रभु तजि सेवत चरण विराने॥ जे जड जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने। सूखत वदन प्रशंसत तिन्ह कहँ हरिते अधिक करि माने॥ सुख हित कोटि उपाय निरन्तर करत न पाँय पिराने। सदा मलीन पंथके जल ज्यों कबहुँ न हृदय थिराने॥ यह दीनता दूरि करिबेको अमित यतन उर आने। तुलसी चित चिन्ता न मिटै विनु चिन्तामणि पहिचाने॥ २३६॥ जो पै जिय जानकी नाथ न जाने। तौ सब कर्म धर्म श्रमदायक ऐसेइ कहत सयाने॥ जे सुर सिद्ध मुनीश योगविद वेद पुराण बखाने। पूजा लेत देत पलटे सुख हानि लाभ अनुमाने॥ काको नाम धोखेहुँ सुमिरत पातकपुंज सिराने। विप्र वधिक गज गृद्ध कोटि खल कौनके पेट समाने॥ मेरुसे दोष दूरि करि जनके रेणुसे गुण उर आने। तुलसिदास तेहि सकल आश तजि भजहि न अजहुँ अयाने॥२३७॥ काहे न रसना रामहिं गावहि। निशि दिन पर अपवाद वृथा कत रटि २ राग बढावहि॥

नरमुख सुन्दर मन्दिर पावन बसि जनि ताहि लजावहि। शशि समीप रहि त्यागि सुधा कत रवि कर जल कहँ धावहि॥ काम कथा कलि कैरव चन्दिनि सुनत श्रवण दै आवहि। तिनहिं हटकि कहि हरिकल कीरति कर्ण कलंक नशावहि॥ जातरूप मति जुगुति रुचिर मणि रचि रचि हार बनावहि। शरण सुखद रवि कुल सरोज रवि राम नृपहि पहिरावहि। वादविवाद स्वाद तजि भजि हरि सरस चरित चित लावहि। तुलसिदास भवतरहिं तिहूं पुर तू पुनीत यश पावहि॥ ॥ २३८ ॥ आपनो हित रावरे सो जो पै सूझै। तौ जनु तनुपर अछत शीश सुधि क्यों कबन्ध ज्यों जूझै॥ निज अवगुण गुण राम रावरे लखि सुनि मति मन रूझै। रहनि कहनि समुझनि तुलसीकी को कृपालु विनु बूझै ॥ २३९ ॥ जाको हरि दृढ कारि अंग करचो। सोइ सुशील पुनीत वेदविद विद्या गुणनि भरचो॥ उत्पति पांडुतनयकी करणी सुनि सतपन्थ डरचो। ते त्रयलोक्य पूज्य पावन यश सुनि २ लोक तरचो॥ जो निज धर्म वद बोधित सो करत न कछु बिसरचो। विन अवगुण कृकलासकूप मज्जत करगहि उधरचो॥ ब्रह्म विशिख ब्रह्माण्ड दहन क्षम गर्भ न नृपति जरचो। अजर अमर कुलिशहुँ नाहिंन वधसो पुनि फेन मरचो॥ विप्र अजामिल अरु सुरपति ते

कहा जो नहिं बिगरयो। उनको कियो सहाय बहुत उरको सन्ताप हरयो ॥ गणिका अरु कन्दर्पते जग-महँ अघ न करत उबरयो। तिनको चरित पवित्र जानि हरि निज हृदि भवन धरयो ॥ केहि आचरण भलो मानै प्रभु सो तो न जानि परयो। तुलसिदास रघुनाथ कृपाको जोवत पन्थ खरयो ॥ २४० ॥ सोइ सुकृती शुचि साँचो जाहि राम तुम रीझे । गणिका गृध्र वधिक हरिपुर गये लैकरसी प्रयाग कब सीझे ॥ कबहुँ न डग्यो निगम मगते पग नृप जानि जिते दुख पाये। जग धौं कौन दीक्षित जाके सुमिरत लै सुनाम वाहन तजि धाये ॥ सुर मुनि विप्र विहाइ बडे कुल गोकुल जन्म गोपगृह लीन्हों। बायो दियो विभव कुरुपतिको भोजन जाइ बिदुर घर कीन्हों ॥ मानत भलहि भलो भक्तनते कछुक रीति पारथहि जनाई । तुलसी सहज सनेह रामवश और सबै जलकी चिक-नाई ॥२४१ ॥ तब तुम मोहूंसे शठनिको हठि गति देते। कैसेहुँ नाम लेहि कोउ पामर सुनि सादर आगे ह्वै लेते ॥ पापखानि जिय जानि अजामिल यमगण तमकि ताइ ताको भेते। लिये छुडाइ चले कर मींजत पीसत दाँत गये रिसि रेते॥ गौतम तिय गज गृद्ध विटप कपि हे नाथहि नीके मालुम नेते । तिन्ह तिन्हका जनि साधु समाज तजि कृपासिंधु तब २ उठि गेते॥ अजहुँ

अधिक आरत यहि द्वारे पतित पुनीत होत नहिं केते। मेरे पासंगहु न पूजिहै है गएहैं होने खल जेते ॥ हौं अबलौं करतूति तिहारिय चितवतहुतो न रावरे चेते । अब तुलसी पूतरो बाँधि है सहि न जात मोपै परिहास एते ॥ २४२ ॥ तुम सम दीनबंधु न दीन कोउ मोसम सुनहु नृपति रघुराई । मो सम कुटिल मौलिमणि नहिं जग तुम सम हरि न हरन कुटिलाई ॥ हौं मन वचन कर्मपातक रत तुम कृपालु पतितनि गतिदाई । हौं अनाथ प्रभु तुम अनाथ हित चित यह सुरति कबहुँ नहिं जाई ॥ हौं आरत आरतिनाशक तुम कीरति निगम पुराणनि गाई । हौं सभीत तुम हरण सकल भय कारण कौन कृपा बिसराई ॥ तुम सुख धाम राम श्रमभंजन हौं अति दुखित त्रिविध श्रम पाई । यह जिय जानि दासतुलसी कहँ राखहु शरण समुझि प्रभु-ताई ॥ २४३॥ यहै जानि चरणन्ह चित लायो। नाहिंन नाथ अकारणको हित तुम समान पुराण श्रुति गायो॥ जननि जनक सुत दार बंधुजन भये बहुत जहँ २ हौं जायो । सब स्वारथ हित प्रीति कपट चित काहू ना हरिभजन सिखायो ॥ सुर मुनि मनुज दनुज अहि किन्नर मैं तनु धरि शिर काहि न नायो । जरत फिरत त्रयताप पापवश काहु न हरि करि कृपा जुडायो ॥ यत्न अनेक किये सुख कारण हरिपद विमुख सदा

दुख पायो। अब थाक्यो जलहीन नाव ज्यों देखत विपति जाल जग छायो॥ मो कहँ नाथ बूझिये यह गति सुखनिधान निजपति बिसरायो। अब तजि रोष करहु करुणा हरि तुलसिदास शरणागत आयो॥ ॥ २४४॥ याहि ते मैं हरि ज्ञान गँवायो। परि हरि हृदय कमल रघुनाथहि बाहर फिरत विकल भयो धायो॥ ज्यों कुरंग निज अंग रुचिर मद अति मति-हीन मर्म नहिं पायो। खोजत गिरि तरुलता भूमि बिल परम सुगन्ध कहाँते धौं आयो॥ ज्यों सर विमल वारि परिपूरण ऊपर कछु सिवार तृण छायो। जारत हियो ताहि तजिहौं शठ चाहत यहि विधि तृषा बुझायो॥ व्यापत त्रिविधताप तनु दारुण तापर दुसह दरिद्र सतायो। अपनेहिं धाम नाम सुरतरुतजि विषय बबूर बाग मन लायो॥ तुम सम ज्ञाननिधान मोहिं सम मूढ न आन पुराणनि गायो। तुलसीदास प्रभु यह विचारि जिय कीजै नाथ उचित मन भायो॥ २४५॥ मोहिं मूढ मन बहुत बिगोयो। याके लिए सुनहु करु-णामय मैं जग जन्म जन्म दुख रोयो॥ शीतल मधुर पियूष सहज सुख निकटहिं रहत दूरि जनु खोयो। बहुभाँतिन श्रम करत मोहवश वृथहिं मन्दमति वारि विलोयो॥ कर्म कीच जिय जानि सानि चित चाहत कुटिल मलहि मल धोयो। तृषावन्त सुरसरि विहाय

शठ फिरि २ विकल अकाश निचोयो ॥ तुलसिदास प्रभु कृपा करहु अब मैं निजदोष कछू नहिं गोयो। डासतही गइ बीति निशा सब कबहुं न नाथ नींद भरि सोयो ॥ २४६ ॥ लोक वेदहूँ विदित बात सुनि समुझि मोहमोहित विकल मति थिति न लहति। छोटे बडे खोटे खरे मोटेऊ दूबरे राम रावरे निबाहे सबहीकी निबहति ॥ होती जो आपने वश रहती एकही रस दुनी न हरष शोक शासति सहति। चहतो जो जोई जोइ लहतो सोइ सोइ केहू भाँति काहू की न लालसा रहति ॥ कर्मकाल स्वभाव गुण दोष जीव जग माया ते सो सभय भौंह चकित चहति। ईशनि दिगीशनि योगीशनि मुनीशनिहू छोडते छोडायेते जो गहायेते गहति ॥ शतरंजको सो राज काठको सब समाज महाराज बाजी रची प्रथम न नहति। तुलसी प्रभुके हाथ हारिबो जीतिबो नाथ बहु वेष बहु मुख शारदा कहति ॥ २४७ ॥ राम जपु जीह जानि प्रीति सों प्रतीति मानि रामनाम जपे जैहै जीकी जरनि। राम नाम सों रहनि रामनामकी कहनि कुटिल कलि-मल शोकसङ्कट हरनि ॥ रामनामको प्रभाउ पूजियत गणराउ कियो न दुराउ कही आपनि करनि॥भवसागरको सेतु काशी हूं सुगति हेतु जपत शारद शंभु सहित घर-नि ॥ वाल्मीकी व्याध हैं अगाध अपराधनिधि मरा मरा

जपें पूजै मुनि अमरनि। रोक्यों विन्ध्य सोख्यो सिंधु घ-
टजहूं नामबल हार्‍यो हिय खारो भयो भूसुर डरनि॥
नाम महिमा अपार शेष शुक बार २ मति अनुसार
बुध वेदहु वरनि।नामरति कामधेनु तुलसीको कामतरु
रामनाम है विमोह तिमिर तरनि॥२४८॥ पाहि पाहि
रामपाहि रामभद्र रामचंद्र सुयश श्रवण सुनि आयो हौं
शरण। दीनबन्धु दीनता दरिद्र दाह दोष दुख दारुण
दुसह दर दरप हरण॥जब २ जगजाल व्याकुल करम
काल सब खल भूप भये भूतलभरण।तब२तनु धरि भूमि-
भार दूरि करि थापे मुनि सुर साधु आश्रम वरण॥
वेद लोक सब साखी काहु कीरती न राखी रावणकी
वन्दि लागे अमर मरण।ओकदै विशोक किये लोकपति
लोकनाथ रामराज भयो धर्म चारिहु चरण॥शिला गुह
गृद्ध कपि भील भालु रातिचर ख्यालही कृपालु कीन्हे
तारण तरण। पील उद्धारण शीलसिंधु ढील
देखियति तुलसी पै चाहत गलानिहीं गरण॥
॥२४९॥ भली भाँति पहिचाने जाने साहब जहाँ-
लौं जग जूडे होत थोरेही २ गरम। प्रीति न
प्रवीन नीति हीन रीतिके मलीन मायाधीन सब किये
कालहूँ करम॥ दानव दनुज बडे महामूढ मूढ चढे
जीते लोक नाथ नाथ बलनिभरम॥ रीझि २ दिये
वर खीझि २ घाले घर आपने निवाजे कौन काहूके

शरम । सेवा सावधान तू सुजान समरथ साँचो सद्गुणधाम राम पावन परम ॥ सुरुख सुमुख एकरस एकरूप तोहिं विदित विशेषि घट २ के मरम । तोसों नतपाल न कृपाल न कंगाल मोसों दयामें बसत देव सकल धरम ॥ राम कामतरु छाँह चाहै रुचि मन माहँ तुलसी विकल बलि कलि कुधरम ॥ २५० ॥ तो हौं बार बार प्रभुहि पुकारि कै खिजावतौं न जोपै मोकों हो तो कहुँ ठाकुर ठहर । आलसी अभागे मोसे तैं कृपालु पाले पोसे राजा मेरे राजाराम अवध शहर ॥ सेए न दिगीशन दिनेश औ गणेश गौरी हित कै न माने विधि हरिउ न हर । राम नामहिंसों योग क्षेम नेम प्रेमपण सुधा सो भरोसे एहु दूसरो जहर ॥ समाचार साथके अनाथ नाथ कासों कहौं नाथहीके हाथ सब चोरऊ पहर । निज काज सुर काज आरतके काज राज बूझिये विलंब कहा कहूं न गहर ॥ रीति सुनि रावरी प्रतीति प्रीति रावरे सों डरत हों देखि कलिकालको कहर । कहेही बनैगी कै कहाये बलि जाउँ राम तुलसी तू मेरी हारी हिये न हहर ॥ २५१ ॥ राम रावरो स्वभाव गुण शील महिमा प्रभाउ जान्यो हर हनुमान लषण भरत । जिन्हके हिये सुथल राम प्रेम सुरतरु लसत सरस सुख फूलत फरत ॥ आप माने स्वामीके सखा

सुभाय पति ते सनेह सावधान रहत डरत। साहब सेवक रीति प्रीति परमिति नीति नेमको निबाह एक-टेक न रटत॥ शुक सनकादिक प्रह्लाद नारदादि कहैं रामकी भगति बडी विरत निरत। जाने बिनु भक्ति न जानिबो तिहारे हाथ समुझि सयाने नाथ पगनि परत॥ क्षमत विमत न पुराण मत एक पथ नेति नेति नेति नित निगम करत। औरनिकी कहा चली एकै बात भले भली राम नाम लिये तुलसीहूंसे तरत॥ २९२॥ बाप आपने करत मेरी घनी घटि गई। लालची लबारकी सुधारिये बारक बलि रावरी भलाई सबहीकी भली भई॥ रोगवश तनु कुमनोरथ मलिनमन पर अपवाद मिथ्या वाद वाणी हुई। साध-नकी ऐसी विधि साधन बिना न सिद्धि बिगरी बनावै कृपानिधि कृपानई॥ पतितपावन हित आरत अनाथ-निको निराधारको अधार दीनबंधु दई। इन्हमें न एको भयो बूझि न जूझे न जयो ताहि ते त्रितापतयो लुनि-यत बई॥ स्वांग सूधो साधुको कुचाल कलित अधिक परलोक फीकी मति लोक रंग रई। बडे कुसमाज राज आजु लौं जो पाये दिन महाराजकेहू भाँति नाम ओट लई॥ राम नामको प्रताप जानियत नीके आप मोको गति दूसरी न विधि निरमई। खीझिबे लायक करतब कोटि कोटि कटु रीझिबे लायक तुलसीकी निल-

जई ॥२५३॥राम राखिये शरण राखि आये सबदिन। विदित त्रिलोक तिहूं काल न दयालु दूजो आरत प्रण-तपाल कोहै प्रभु बिन ॥ लाले पाले पोषे तोषे आलसी अभागी अघी नाथ पै अनाथनि सो भये न उऋन । स्वामी समरथ ऐसो हौं तिहारो जैसो तैसो कालचाल हेरि होति हिए घनी घिन ॥ खीझि रीझि बिहँसि अनख क्यों हूं एक बार तुलसी तू मेरो बलि कहियत किन । जाहि शूल निरमूल होहिं सुख अनुकूल महा-राज राम रावरी सों तेहि छिन ॥ २५४ ॥ राम रावरो नाम मेरो मातु पितु है । सुजन सनेही गुरु साहब सखा सुहृद राम नाम प्रेम अविचल वितु है ॥ शत कोटि चरित अपार दधि निधि मथि लियो काढि वामदेव नाम घृतु है । नामको भरोसो बल चारिहूं फलको फल सुमिरिये छाँडि छल भलो कृत है ॥ स्वारथ साधक परमारथ दायक नाम राम नाम सारिखो न और हितु है । तुलसी स्वभाव कही साँचिये परैगी सही सीता-नाथ नाथनके चितहूं को चितु है ॥ २५५ ॥ राम रावरो नाम साधु सुरतरु है । सुमिरे त्रिविधधाम हरत पूरत काम सकल सुकृत सरसिजको सर है ॥ लाभ-हूको लाभ सुखहूको सुख सरबस पतितपावन डरहूको डर है । नीचहूको ऊँचेहूको रंकहूको रायहूको सुखद सुखद आपनो सो घरहै ॥ वेदहुँ पुराणहुँ पुरारिहुँ

पुकारि कह्यो नाम प्रेम चारि फलहूको फल है। ऐसे राम नामसों न प्रीति न प्रतीति मन मेरे जान जानिबो सोई नर खर है। नामसों न मातु पितु हित बंधु गुरु साहिब सुधि सुशील सुधारक है। नाम सों निबाह नेह दीनको दयालु देहु दास तुलसीको बलि बडो वर है ॥ २६६ ॥ कहे बिनु रह्यो न परत कहे रामरस न रहत। तुमसे सुसाहव की ओट जन खोटो खरो कालकी करमकी कुशासति सहत ॥ करत विचार सार पैयत न कहूं कछु सकल बडाई सब कहाँ ते लहत। नाथकी महिमा सुनि समुझि आपनी ओर हेरि हारिकै हहरि हृदय दहत ॥ सखा न सुसेवक न सुतिय न प्रभु आप माय बाप तुही साँचो तुलसी कहत। मेरी तो थोरी है सुधरैगी बिगरियो बलि राम रावरी सो रही रावरो चहत ॥ २६७ ॥ दीनबंधु दूरियो किये दीनको न दूसरो शरण। आपको भलो है सब आपनेको कोऊ कहूं सबको भलो है राम रावरो चरण ॥ पाहन पशु पतंग कोल भील निशिचर काच ते कृपानिधान किए सुवरण। दंडक पुहुमि पाँय परशि पुनीत भई उकठे विटप लागे फूलन फरण ॥ पतित पावन नाम बामहू दाहिनो देव दुनी न दुसह दुख दूषण दरण। शील-सिंधु तोसों ऊंची नीचियो कहत शोभा तोसों तुही तुलसीकी आरति हरण ॥ २६८ ॥ जानि पहिचानि

मैं बिसारे हौं कृपानिधान एतो मान ढीठ हौं उलटि देत खोरि हौं । करत यतन जासों जोरिवेको योगीजन तासों क्यों हूं जुरी सो अभागो बैठे तोरि हौं ॥ मोसे दोष कोशको भुवनकोश दूसरो न आपनी समुझि सूझि आयो टकटोरि हा । गाडीके श्वानकी नाईं माया मोहकी बडाई छिनहिं तजत छिन भजत बहोरिहौं ॥ बडो सांईं द्रोही न बराबरी मेरी करै कोऊ नाथकी शपथ किये कहत करोरि हौं । दूरि कीजे द्वार ते लबार लालची प्रपंची सुधासों सलिल शूकरि ज्यों गह डोरि हौं ॥ राखिये नीके सुधारे नीच को डारिये मारि दुहू ओर की विचारि अब न निहोरि हौं । तुलसी कही है सांची रेख बार २ खांची ढील किये नाम महिमाकी नाव बोरिहौं ॥ २५९ ॥ रावरी सुधारी जो बिगारी बिगरेगी मेरी कहो बलि वेद किन लोकु कहा कहैगो।प्रभुको उदास भाउ जनको पाप प्रभाउ दुहूं भाँति दीनबंधु दीन दुख दहैगो ॥ मैं तो दियो छाती पवि लयो कलिकालदवि शासति सहस परवश को न सहैगो। बांकी|विरदावली बनैगी पालेही कृपालुअन्त मेरो हाल हेरियो न मन रहेगो ॥ करमी धरमी साधु सेवक विरतरत आपनी भलाई थल कहां को न लहैगो । तेरे मुँह फेर मोसे कायर कपूत कूर लटे लटपटेनिको कौन परिगहैगो ॥ काल पाय फिरत दशा दयालु सबही की

तोहिं विनु मोहिं कबहूं न कोऊ चहैगो। वचन करम हिये कहौं राम सौंह किये तुलसीपै नाथके निबाहे निबाहैगो ॥ २६० ॥ साहब उदास भये दास खास खीस होत मेरी कहा चली हौं बजाइ जाइ रह्यो हौं ॥ लोकमें न ठाउँ परलोकको भरोसो कौन हौं तौ बलिजाउँ राम-नाम होते सह्यो हौं ॥ करम स्वभाव काल काम कोह लोभ मोह ग्रह अति गहनि गरीब गाढे गह्यो हौं। छोरिवेको कोटि भट पाहि प्रभु महाराज बांधिवेको पाहि तिहुँ ताप पाप दह्यो हौं ॥ रीझि बूझि सबकी प्रतीति प्रीति एही द्वार दूधको जरचो पियत फूंकि २ मह्यो हौं। रटत रटत लटचो जाति पाँति भाँति घटचो जूठनिको लालची चह्यो न दूध नह्यो हौं ॥ अनत चह्यों न भलो सुपथ सुचाल चल्यो नीके जिय जानि इहाँ भलो अनचह्यो हौं। तुलसी समुझि समुझायो मन वार वार आपनोंसो नाथहूँसों कहि निरवह्यो हौं ॥ ॥ २६१ ॥ मेरी न बने बनाये मेरे कोटि कलप लौं राम रावरे बने बनाये पल पाउँ मैं। निपट सयाने हौ कृपानिधान कहा कहौं लिये बेर बदली अमोलमणि आउ मैं ॥ मानस मलीन करतब कलिमल पीन जीह-हूं न जप्यो नाम बक्यों आउ बाउ मैं। कुपथ कुचाल चल्यो भयो न भूलिहूं भलो बाल दशाहूं न खेल्यो खेलत उदाउ मैं ॥ देखी देखा दंभ ते कि संग ते भई

भलाई प्रगटि जनाई कियो दुरित दुराउ मैं। राग रोष द्वेष पोषे गोगण समेत मन इनकी भगति कीन्हीं इनहींको भाउ मैं॥ आगिलो पाछिलो अबहूंको अनुमानही ते बूझियत गति कछु कीन्हौं तो न काउ मैं। जग कहै रामकी प्रतीति प्रीति तुलसीहू झूठे सांचे आश्रय साहब रघुराउ मैं॥ २६२॥ कह्यो न परत विनु कह्यो न रह्यो परत बडो सुख कहत बडे सो बलि दीनता। प्रभु की बडाई बडी आपनी छोटाई छोटि प्रभु की पुनीतता आपनी पाप पीनता॥ दुहूँ ओर समुझि सकुचि सहमत मन सन्मुख होत सुनि स्वामी समीचीनता। नाथ गुणगाथ गाए हाथ जोरि माथो नाए नीचऊ निवाजे प्रीति रीति की प्रवीणता॥ यहि दरबार है गरब ते सरबहानि लाभ योग क्षेमको गरीबी मिस कीनता। मोटो दश कन्ध सों न दूबरो विभीषण सों बूझि परि रावरेकी प्रेम पराधीनता॥ यहां की सयानप अयानप सहस सम सूधो सतभाय कहै मिटति मलीनता। गृद्ध शिला शबरी की सुधि सब दिन किए होइगी न सांई सों सनेह हित हीनता॥ सकल कामना देत नाम तेरो कामतरु सुमिरत होत कलिमल छल क्षीनता। करुणानिधान वरदान तुलसी चहत सीतापति भगति सुरसरि नीर मीनता॥ २६३॥ नाथ नीके कै जानि बी ठीक जन जीय

की। रावरो भरोसो नाह कैसे प्रेम नेम लियो रुचिर रहनि रुचि मति तीय की॥ दुकृत सुकृत वश सबही सों संग परचो परखि पराई गति आपनेहूं कीयकी। मेरे भलेको गोसाई पोचको न शोच होय सकल किये कहीं सोंह सांची सियपीय की॥ ज्ञानहूं गिराके स्वामी बाहर अन्तर्यामी यहाँ क्यों दुरैगी बात मुखकी औ हीयकी। तुलसी तिहारो तुमहीं ये तुलसीके हित राखि कहूं हौं जो पै ह्वतो हो माखी घीयकी॥ ॥ २६४॥ मेरो कह्यो सुनि पुनि भावै तोहिं करि सो। चारिहूं विलोचन विलोक तू तिलोक महँ तेरो तिहुँ-काल कहुँ कोहै हितु हरि सो॥ नए नए नेह अनुभये देह गेह वसि परिखे प्रपंची प्रेम परत उघरि सो। सुहृद समाज दगाबाजिही को सौदा सूत जब जाको काज तब मिले पाँय परिसो॥ विबुध सयाने पहिचाने कैधौं नाहीं नीके देत एक गुण लेत कोटि गुण भरिसो। करम धरम श्रम फल रघु-बर विनु राख कोसो होम है ऊसर कैसो बरिसो॥ आदि अन्त बीच भलो भलो करै सबहीको जाको यश लोक वेद रह्यो है बगरि सो। सीतापति सारिखो न साहब शीलनिधान कैसे कल परै शठ बैठो सो विसरि सो॥ जीवको जीवन प्राण प्राणको परमहित प्रीतम पुनीत कृत नीच निदरि सो। तुलसी तोको

कृपाल जो कियो कोशलपाल चित्रकूटको चरित्र चेतु चित करि सो ॥ २६५ ॥ तन शुचि मन रुचि मुख कहौं जन हौं सिय पीको। केहि अभाग जान्यो नहिं जो न होइ नाथसों नातो नेह न नीको ॥ जल चाहत पावक लहौं विष होत अमीको। कलि कुचालसन्तनि कही सोइ सही मोहिं कछु फहम न तरनि तमीको ॥ जानि अन्ध अञ्जन कहै बन बाघिनि घीको। सुनि उपचार विकार को सुविचार करौं जब तब बुद्धि बल हरे हीको ॥ प्रभु सो कहत सकुचत हौं परौं जनिफिरि फीको। निकट बोलि बलि बरजिये परिहरै ख्याल अब तुलसिदास जड जी को ॥ २६६ ॥ ज्यों ज्यों निकट भयो चहों कृपालु त्यों त्यों दूरि परचो हौं। तुम चहुँ युग रस एक राम हौं हूं रावरो यदपि अघ अवगुणन्हि भरचोहौं॥ बीच पाइ नीच बीचहीं छरनि छरचोहौं। हौं सुवरण कुवरण कियो नृप ते भिखारि करि सुमतिते कुमति करचो हौं ॥ अगणित गिरिकानन फिरचो विनु आगि जरचोहौं। चित्रकूट गये मैं लखी कलिकी कुचाल सब अब अपडरनि डरचोहौं। माथ नाइ नाथ सों कहौं हाथ जोरि खरचोहौं। चीन्हों चोर जिय मारिहै तुलसीसों कथा सुनि प्रभुसों गुदरि निवरचोहौं ॥ २६७ ॥ प्रण करिहौं हठि आजुते राम द्वार परचोहौं। तू मेरो यह बिन कहे उठिहौं ॥ न

जनम भरि प्रभुकी सौं करि निबरयोहौं ॥ दै दै धक्का यमभट थके टारे न टरयोहौं। उदर दुसह शासति सही बहुबार जनमि जग नरक निदरि निकरयोहौं॥ मचला लै छाँडिहौं जेहि लाग अरयोहौं। तुम दयालु बनि है दिये बलि विलंब न कीजिये जात गलानि गरयो हौं ॥ प्रगट कहत जो सकुचिये अपराध भरयोहौं। तो मनमें अपनाइये तुलसिहि कृपा करि कलिवि- लोकि हहरयोहौं ॥ २६८ ॥ तुम अपनायो तब जानि- हौं जब मन फिरि परिहै। जेहि सुभाव विषयनि लग्यो तेहिं सहज नाथ सों नेह छाँडि छल करि है ॥ सुतकी प्रीति प्रतीति मीतकी नृप ज्यों डर डरिहै। अपनो सो स्वारथ स्वामीसों चहुँ बिधि चातक ज्यों एकटेक ते नहिं टरिहै ॥ हरषि है न अति आदरे निदरे न जरि मरिहै। हानि लाभ दुख सुख सबै समचित हित अनहित कलि कुचाल परिहरिहै ॥ प्रभु गुण सुनि मन हरषि है नीर नयननि ढरिहै। तुलसिदास भयो राम- को विश्वास प्रेम लखि आनन्द उमँगि उर भरि है ॥ ॥ २६९ ॥ राम कबहुँ प्रिय लागिहौ जैसे नीर मीन- को। सुख जीवन ज्यों जीवको मणि ज्यों फणिको हित ज्यों धन लाभ लीन को ॥ ज्यों स्वभाव प्रिय लगति नागरी नागर नवीनको। त्यों मेरे मन लालसा करिये करुणा कर पावन प्रेम पीनको ॥ मनसाको

दाता कहैं श्रुति प्रभु प्रवीन को। तुलसिदासको भावतो बलिजाउँ दयानिधि दीजै दान दीन को॥२७०॥ कबहुँ कृपा करि रघुवीर मोहूँ चितैहो। भलो बुरो जन आपनो जिय जानि दयानिधि अवगुण अमित वितैहो॥ जन्म जन्म हौं मन जित्यो अब मोहिं न जितैहो। हौं सनाथ ह्वैहों सही तुमहूं अनाथपति जो लघुतहि न भितैहो॥ विनय करों अप भयहुं ते तुम्ह परसहितैहो। तुलसिदास कासों कहै तुमहीं सब मेरे प्रभु गुरु मात पितै हो॥ २७१ ॥ जैसो हौं तैसो हौं राम रावरो जन जनि परि परिहरिये। कृपासिंधु कोशल-धनी शरणागतपालक ढरनि आपनी हरिये॥ हौं तो बिगरायल और को बिगरो न बिगरिये। तुम सुधारि आए सदा सबकी सबही विधि अब मेरियो सुधरिये॥ जग हँसिहै मेरे संग्रहे कत एहि डर डरिये। कपि केवट कीन्हे सखा जेहि शील सरलचित तेहि स्वभाव अनुसरिये॥ अपराधी तउ आपनो तुलसी न बिस-रिये। टूटियो बाँह गरे परै फूटे हूं विलोचन परि होत हितकारिये॥ २७२ ॥ तुम जनि मन मैलो करो लोचन जनि फेरो। सुनहु राम विनु रावरे लोकहुँ परलोकहुँ कोउ न कहूँ हितु मेरो॥ अवगुण अलायक आलसी जानि अधम अनेरो। स्वारथके साथिन तज्यो तिजरा कैसो टोटक औचट उलटि न

हेरो ॥ भक्ति हीन वेद बाहिरो लखि कलिमल घेरो। देवनिहूं देव परिहरयो अन्याव न तिनको हौं अपराधी सब केरो ॥ नामकी ओट लै पेट भरत हौं पै कहावत चेरो। जगत् विदित बात ह्वै परी समुझिये धौं अपने लोककी वेद बडेरो ॥ ह्वै है जब तब तुम्हहिं ते तुलसीको को भलेरो। दीन दिन हूं दिन बिगरि है बलिजाउँ बिलंब किए अपनाइये सबेरो ॥ २७३ ॥ तुम तजि हौं कासों कहौं और को हितु मेरे। दीनबंधु सेवक सखा आरतनाथ पर सहज छोहू केहि केरे ॥ बहुत पतित भवनिधि तरे बिनु तारिनी बिनु बेरे। कृपा कोप सति भायहुँ धोखेहु तिरिछेहुँ राम तिहारेहि हेरे ॥ जो चितवनि सौंधी लगे चितइये सबेरे। तुलसिदास अपनाइये कीजै न ढील अब जीवन अवधि अति नेरे ॥२७४॥ जाऊँ कहाँ ठौर है कहां देव दुखित दीन को। को कृपालु स्वामी सारिखो राखे शरणागत सब अंग बल विहीनको ॥ गणिहिं साहब लहै सेवा समीचीन को। अधन अगुण आलसिनको पालबो फबिआयो रघुनायक नवीन को ॥ मुख के कहा कहौं विदित है जीकी प्रभु प्रवीन को। तिहुँकाल तिहुँलोकमें एक टेक रावरी तुलसीसे मनमलीन को ॥ २७५ ॥ द्वार द्वार दीनता कही काढि रद परी पाहूं। है दयालु

दुनि दशदिशा दुख दोष दलन क्षम कियो न संभा-
षण काहूँ ॥ तनु जनेउ कुटिल कीट ज्यों तज्यों मातु
पिताहूं । काहेको रोष दोष काहिधौं मेरेही अभाग
मोसों सकुचत सब छुइ छाहूं । दुखित देखि संतन
कह्यो शोचै जनि मन माहूं । तोसे पशु पाँवर
पातकी परिहरे न शरण गए रघुवर ओर निवाहूं ।
तुलसी तिहारो भये भयो सुखी प्रीति प्रतीति विनाहूं।
नामकी महिमा शीलनाथको मेरो भलो विलोकि
अबते सकुचाहूं सिहाहूं ॥ २७६ ॥ कहा न कियो
कहां न गयो शीश काहि न नायों । राम रावरो
बिन भये जन जनमि जनमि जग दुख दशहूं दिशि
पायों ॥ आश विवश खास दास ह्वै नीच प्रभुनिज
नायों । हाहा करि दीनता कही द्वार द्वार बारबार परी
न छार मुहँ बायों ॥ अशन वसन विन बावरो जहँ
तहँ उठि धायों।महिमा अति प्रिय प्राणते तजि खोलि
खलनि आगे खिन खिन पेट खलायों ॥ नाथहाथ कछु
नाहिं लग्यो लालच ललचायों। सोच कहौं नाच कौन
सो जौ न मोहिं लोभ लघु निलज नचायों॥श्रवण नयन
मन मग लगे सब थल पतितायों । सूंडमारि हिय हारिकै
हित हेरिहहारि अब चरण शरण तकि आयों॥दशरथके
समरथ तुम्हीं त्रिभुवन यशगायो।तुलसी नमत अवलो-
किये बलि बांह बोल दै विरदावली बुलायो ॥२७७॥

रामराय बिन रावरे मेरेको हितू सांचो। स्वामी सहित सबसों कहों सुनि गुनि विशेषि कोउ रेख दूसरी खांचो॥ देह जीव योगके सखा मृषा टाच न टांचो। किये विचार सार केदलि ज्यों मणि कनक संग लघु लसत बीच बिच कांचो॥ विनयपत्रिका दीनकी बाप आपुही बांचो। हिये हेरि तुलसी लिखी सो स्वभाव सही करि बहुरि पूछियेहि पांचो॥२७८॥
पवनसुवन रिपुदवन भरत लाल लषण दीनकी। निज निज अवसर सुधि किये बलिजाउँ दास आश पूजि है खास खीनकी॥ राज द्वार भली सब कहैं साधु समी-चीन की। सुकृत सुयश साहब कृपा स्वारथ परमारथ गति भयेगति विहीनकी॥समय सँभारि सुधारिवी तुलसी मलीनकी। प्रीति रीति समुझाइवी नतपाल कृपालुहि परमिति पराधीनकी॥ २७९॥ मारुतिमन रुचि भर-तकी लखि लषण कही है। कलिकालहूं नाथ नामसों प्रतीति प्रीति एक किंकरकी निबही है॥ सकल सभा सुनि लै उठी जानि रीति रही है। कृपा गरीबनिवाज की देखत गरीबको साहब बांह गही है॥ विहँसि राम

कह्यो सत्य है सुधि मैंहूँ लही है । मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथकी परी रघुनाथहाथ सही है२८०॥

यदि रघुपतिभक्तिर्मुक्तिदा वक्ष्यते सा
सकलकलुषहर्त्रीं सेवनायाप्रयासात् ।
शृणुत सुमतिमन्तो निर्मिता रामभक्तै-
र्जगति तुलसिदासै रामगीतावलीयम् ॥१॥

इति श्रीतुलसीदासकृत विनयपत्रिका समाप्ता ।



॥ श्रीः ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-

कलिधर्माधर्मनिरूपण।



जिसमें
वर्तमान कलिमल विधान, चारों वर्णोंका
आचार अविचार धर्म अधर्म
उदाहरणों युक्त वर्णित है।



खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.



संवत् १९८८, शकाब्दाः १८५३.

श्रीरामपंचायतन ॥



॥ श्रीः ॥

अथ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत कलि धर्म्माधर्म निरूपण ।



चौ०—रेवातीरसुदेश सुग्रामा।बसहिंविप्र इकशंकरनामा॥
धर्मशील शुचि साधु स्वभाऊ।भूलिकुमारग धरै नपाऊ॥
सुत विनीत पतिपूजक नारी।गृहसमाजसबभाँतिसुखारी॥
रेवा मज्जन सज्जन सेवा। प्रिय गुरु अतिथि भीयमहिदेवा॥
सुजन शिरोमणि गुणगण गेहू। शिवसेवकहरिचरणसनेहू॥
सुने निगमआगम विधिनाना। रामायण इतिहासपुराना॥
लोकचतुरपरलोक सयाना।जीवन धन हरिहर गुणगाना॥
आश्रम वरण धर्म युगधर्मा। कर्म विकर्म कुकर्म सुकर्मा॥

दोहा—ज्ञान विराग उपासना, कर्म अनेक प्रकार।
शंकर सादर धर्म सब, समुझे बारहिंबार॥

मुनिप्रणीतनृपगनमनुवानी। नरकस्वर्गअपवर्गकहानी॥
सब हित धर्म रहस्यघनेरे। पुण्य प्रबंध विमल बहुतेरे॥
सुकविसुभाषितसरलसुहाये।सुनेसकलजहँजहँजगपाये॥
युगप्रसंगकलिकालस्वभाऊ। सुनिमनसोचभूमिसुरराऊ॥
मतिअनुहारकहैकविसोई। कलिकुचालिजगप्रगटनहोई॥
कलिमलमलिनसकलनरनारी।वर्णधर्मनहिंआश्रमचारी॥
नीचनिरंकुशनिठुरनृपाला। सचिवस्वारथीक्रूरकराला॥
राजसरिससबप्रजाअभागी।दुसहदुरितदुखदारिददागी॥

दोहा—दंभसहित सब धर्म कलि, छल समेत व्यवहार ।
स्वारथ सहित सनेह सब, रुचि अनुहर आचार॥
विप्र सुमारग पाउँ न देहीं । बेंचहिं वेद धर्म दुहि लेहीं॥
हरिहरपरिहरि पूजहिं प्रेता । सभासुवेषकुचालि निकेता॥
बोलतकोकिलकरतरकागा । वितहितहोमनेमजपजागा॥
कहतकरतषटकर्म सुजाना । सेवाकरिकरिलेहिंकुदाना ॥
पूजनपठन न होतप्रवीना। छल मलीनमनधनआधीना॥
वासर सो नहिंहोंय सुपापी।पर अपकार परायण पापी॥
कलिइहिविधिबुधविप्रविगोये।मूढविशेषछुठाहिंहिंखोये॥
परहिंकूपजहँदिनहि उजारे। किहिअवलंवहिअंधविचारे॥
दोहा—धर्म सुतीरथ मंत्र सुर, महिमहिदेव विचार ।
ते छलि कलिमल किय प्रथम,योगीहरिसोधार॥
क्षत्रीछलमय कलिमल मूला । वंचकविप्रवेदप्रतिकूला॥
अपनेधर्म न सुपनेहु बलही। समर सपरसशूरलरमरही॥
नीचविचारनीच व्यवहारू । नीचजीविकानीचअचारू ॥
क्षत्रिजातअभिमाननलेही । कर्ममलेच्छजीतियशलेही ॥
शूर सहाय सबल बल जेई । क्षत्रीजाति कहावत तेई ॥
तीसरवर्ण विशेष विवाकी । सेवा करिजगजीवनजाकी॥
सूलनसुधनहिंसोइसुजाती । सकल वरणसंकर उतपाती॥
आश्रममध्यमुख्यसंन्यासी।तिहिकीन्हेकलिकालनिवासी
दोहा—वरणविवेक विरागमय, मानसकलिमलखानि ।
मुंडित मूँड कषाय पट, दंडकमंडलुपानि ॥

सुन कलह प्रिय पाइकपीना।संयम नेम दया दम हीना॥
ब्रह्म कहावहिंब्रह्म निरूपन।जगवंचक वितहितबहुरूपन॥
वासर साधहिं योगसमाधी।भोगपरायणशांति उपाधी॥
बोलनिवेष हंस बक करणी। पंडित विहतयतीगतिवरणी॥
परमसूढ परमारथवादी। परमहंस बहु वेष विषादी॥
पढेबिप्रढिगरहि यति होता। परमहंसपथपाप निसोता॥
आश्रमनहिंकलिकाननबासी।कुटिलकुटीचरकलिमलरासी
बटुब्रतरहितसकलगुणखाली।पढिसुनिकुलगुरुकरहिंकुचाली
दोहा-निलजनिरंकुशनिठुरसब, पढे थोर बहु गाल॥
आश्रम वरण विगोइ सब,गलगाजत कलिकाल॥
गृहीगृहाश्रमधर्मविहीना।धरणिधाम धन सोच मलीना॥
सुरगुरुपितरअतिथिअपवादी। स्वारथरतपरमारथवादी॥
कपटीकोलकुमारगगामी।कुधनकुधामकुभामिनिस्वामी॥
कुमतिकुशीलकुजीवनिजीवहिं। सुरसरितीरकूपजलपीवहिं
करहिंअधर्मकर्ममनवानी। चलहिंवामपथ ज्ञान गुमानी॥
अवगुणअघनअघाहिंअमापी।चहहिंसुकृतफलपामरपापी
आश्रमवरणसुधर्ममलिनसे।जगसरकलिहिमहुएनलिनसे
थोरबहुतकहुँकहुँकोईकोई। आश्रमदुखितवरणपहिलोई॥
दोहा-सकलधर्मविपरीतिकलि,कलपितकोटिकुपंथ।
पुण्य पराइ पहार वन, दुरे पुराण सुग्रंथ॥
निजनिजधर्मविमुखसबलोगा।भोगहीनरतिरोगवियोगा।
क्षमाक्षीनपटुपीनप्रकोपू। दिनदिनअशुभउदयशुभलोपू॥

सत्य सनेह शील सुखवीते । शमदमदानदयाजन रीते॥
धर्मपंचविधिकलिमलभाँडे । सबहिबजाइवेद पथछाँडे॥
कर्मकलापउपासनज्ञाना । तप जप तीरथ व्रतबहुदाना॥
वितहितसकलसदंभसहेतू।छलमलनिधिकलिकपटनिकेतू॥
कलि उतपात होहिं बहुतेरे । भूमिरु कंप विघात घनेरे॥
लूकपातदिगदाहविशाला । निशिसुरेशधनुकेतुकराला॥

दोहा—काई सुरसरि विमल जल, भूमीमलिनसुथान ।
फूलहिंफलहिंकुसमयतरु, सूचकअशुभनिदान ॥

तिनकरफलदुखदुरितदुकाला॥विविधव्याधिवशप्रजाविहाला
ईतिभीतिमहिकृषीमलीना।फरहिंकुविटपसुतरुफलहीना॥
घटहिंसुवस्तुसुनाजसुयोगा।बढहिंकुवस्तुकुधानकुयोगा॥
विद्यावनिजकृषीसिवकाई।निपटथोरफलश्रम अधिकाई॥
अन्नपान फल रस लघुस्वादा।पाठथोरबडवादविवादा॥
धेनुथोरपयपयघृतथोरा । अबलसाधुजनखलबरजोरा ॥
सुमतिमंत्रऔषधिसबलोपे।कपटमंत्रविषकलिमलरोपे॥
बरसहिंऊसरसालिसुखाहीं।उलटीरीतिसकलकलिमाहीं॥

दोहा—गोंड गुआर गँवार नृप, यमन महा महिपाल ।
साम न दान न भेदकलि, केवल दंड कराल ॥

चोरचारुलघुलंपटलोभी।सचिवसभासदमदमहिछोभी॥
राजसरिससबराजसमाजी।प्रजाविकलबडराजविराजी॥
देश उजारि नरेश प्रतापा । जरहिंजीवजगतीनहुतापा ॥
भूपतिवंचकप्रजाअभागी।प्रजाजरहिंअवनिपअधमागी॥

प्रजा रोष मृग विहंगसमाजा।राजा विषम गयवृषवाजा॥
महिमुदितमुनिप्रजाअकाजू।प्रजाकहहिंकबजाइहि राजू
राजउप्रजापरस्परखोटे।जगजन्महिंकरि·कलिमलमोटे॥
सुखहितकरहिंकुचालकलेशू।सहहिंदुसहदुखदेशविदेशू॥
दो०-प्रीति सगाई सकल गुण, वणिज उपाय अनेक।
कलबलछलकलिमलमलिन, डहकतएकहिएक॥
वणिजमहाजनसाहुसुनामा। बोलनिदाहिनकरनीवामा॥
उभयवरदहरकरहिंकिसाना।जोतहिंगोमगसरजुभथाना॥
बाँधिवरदमुँहुदाँवरिदेहीं।तिहअघसबनिशिचरहरि लेहीं॥
धरणिधामधनधरमविहीना।प्रियपरिजनअपमानमलीन।
अशनवसनबिनुबंधुवियोगी।कुमतिकुसाजकुरूपकुरोगी॥
कलहीकुटिलकठिनकटुवादी।फिरहिंविकलबिललातविषादी।
नींदभूखआलसवशकीन्हे।सुखसद्गुणकलिमलहरिलीन्हे
आरतिअछीअनाथअभागी। सबनरनारिजरहिंजठरागी॥
दोहा-ठाकुर क्रूर कुसचिव सब, पुरुष नारि आधीन।
गुरु वितहित सब शिष्यवश, मूरख विवश प्रवीन॥
धनीकुलीनधनीगुणसागर। धनीसाधुसबभाँतिउजागर॥
विबुध वेदगुरु विप्रविरोधी। धनीपूजिहहिंपापपयोधी॥
विनधनमुनिगणगरहिंगलानी।सहहिंनिरादरघरघरमानी॥
धनहितकहहिंदिवसकरराती। नीचहिनवहिंबडेसबभांती॥
साधुसुजातिसुशीलसुजाना।विनधनजनदुखदोषनिधाना॥
कलिकेवलधन मूल भलाई। बुधि विवेकबलविनयबडाई॥

प्रीति सहेतु अकारण कोही। सबपितुमातुबंधुगुरुद्रोही ॥
पिशुनपंचपंडितछलवादी। बकतलबारसुकविअपवादी ॥
दो०—चोर चतुर वटपारभट, प्रभु प्रिय भडुँवाभंड।
सब भक्षक परमारथी,कलि कुपंथ पाखंड ॥
सबकविकोविदकलानिकेता। साधकसिद्धसधर्मसचेता ॥
इस सब भाँति बडे सबछोटे। हमबिनखोरखरेसबखोटे॥
सकलकहहिंहमसरिसनदूजा।कोकहिमानइकोकहिपूजा ॥
लोकवेद मरयाद विसारी। सब नरनारियथारुचिकारी॥
वकतासबकोउसुनै न वानी। सबयाचकजगकोउनदानी॥
सबसिखवैंजनसुनैनकोऊ । गुरुशिषअंधबधिरसमदोऊ॥
सुतपितुमातहाथविनुब्याहे।पुनिरिपुहोहिंनारिमुखचाहे ॥
तिय वशतनयवसैंससुरारी। परिहरिलोकलाजकुल गारी॥
दो०—कामचारिनी करकसा, घरमें नारि प्रधान।
तियगुण सील विहीनसब,दूषण दुरित निधान॥
विध वाबहुसौभागिनिथोरी।कठिनकरममनबोलतभोरी॥
विध वाभूषणवसनविशेषी।सौभागिनिसिहाहिंसुनिदेखी॥
हिंदू तुरकउभयकलिजीते।निजनिजकरमधरम विपरीते॥
गृही दरिद्र यती धनवाना । नागर कूर गँवार सुजाना॥
शूद्र पुराणिक विप्रकिसाना। युवा जरठगुणजरठजुवाना॥
विप्र वर्म असि शरधनुधारी। पुस्तकपाणिनीचनरनारी॥
विप्र कछौटी पहिरि अन्हाहीं । शूद्रसदर्भनिमज्जनजाहीं॥
जातिपाँतिबहु भेद अचारा। एक वरण सबकिएविचारा॥

छंद—सब वरण एक विचार कीन्हे कौलकुलिकलिमलमई।
बहु वेष बहु मत शैव शाक्तिक सौर सुरसेवा नई॥
सब जाति पाँति जमाति जोरहिं जटिलभूत भयावने।
अति रोष दोष निधान मानी खान पान अपावने॥
सोरठा—कलि पाषंड प्रचार, प्रबल पाप पामर पतित।
तुलसी उभय अधार, राम नाम सुरसरित जल॥
सभासराहियसोरविशेषी।श्रवणअगसकहआँखिन्हि देषी
करि प्रपंच वंचै परघाती। सोइ बडधीर तासु बड छाती॥
कौडीकारणकहहिंकुसाखी।ऋणअवनीकमरण आभिलाषी।
शठहि सुमति साहसी जुवारी।जीवन थोर दुरास अपारी॥
साँचिबातजिहिसभावखानी।हँसहिंलोगबडकूवकज्ञानी॥
जहाँ होहिं जपयज्ञ पुराना।विरतिविवेकविचार न नाना॥
कथाकीर्त्तनसाधुसमाजा। तहँविशेषकलिकालविराजा॥
दो॰—शूर समर रथ तीर्थ पुनी, कपट कुचालि कुसाज।
मनहुँ भवासो मारि कलि, राजत सहित समाज॥
बचहिंगायविसाहहिंछेरी।दुहगा सुतिय सुहागिनि चेरी॥
घर पर पर घर सुरसरि सेतू।दूर करहिं निज कीरति हेतू॥
हरिपरग्रंथकरहिंनिजग्रंथा।चहहिंसुयशसुखचलहिंकुपंथा।
काटहिंसुरतरुबवहिंबबूरे। निजघरवरहिं बतावहिं धूरे॥
भलकमनासकहहिंगतिगंगा।तुलसिहिहँसहिंसराहहिभंगा।
गुरुपितुमातुसाधुसिखपेली।तीरथचलहिंसमाजसकेली॥

सुथलसुतीरथवनसुरथाना।तहाँतुरककलिकरहिंमशाना॥
प्रीतिप्रतीतनकाहुकिकाहू । सबठगचोरमहाजन साहू ॥
दोहा—मंदिर मूरति मलिन कलि, थान प्रधान विचारि।
ते सब सादर पूजिहहिं, फलहिं भगति अनुहारि॥
विष्णुभक्तिमहिमाअधिकाई।चहुँयुगबडचहुँवेद बडाई ॥
कालकर्मगुणप्रकृतिप्रभाऊ।भक्तिसमीपजाहिंनहिं काऊ॥
कर्मक देव ज्ञान विज्ञाना।जप तप योग उपासन नाना॥
भक्ति अनुग्रह जापर होई।सोबडसबलसपन पर सोई ॥
पक्षपात नहिं कबहुँ सुभाऊ।लोक वेद बड भक्ति प्रभाऊ॥
आपविमलकलिकालमलीना।असविचारिहरिभक्तिप्रवीना।
अलखअनूपनिरूपनजाई । भक्ति सुथललघुरूपसमाई॥
सब भगवंत सुग्रंथ सयानी।जिमि माधुरी रसाल समानी
दो०—तुलसी कानन साधु मन, गुरु पद प्रेम प्रमान ।
भरत चरित सुर सरित जल, राम भक्ति विश्राम॥
अमलभक्तिपथअमलअनेका।लखहिंविमलजनविमलविवेका
भक्ति विशेष भक्ति विश्रामा।ते थोरे जन तलधिललामा।
भक्तिनिवासमनुजमन देषी।कलिहिसकुचसंतापविशेषी॥
भक्तिभानुकलिकलुषउलूका।सोचविलोकतलोचनटूका ॥
भक्ति आस सबशूक समाना।वास देतकलिकपटसयाना॥
राम भक्त कहुँ कहुँद्वैचारी।अनघअमानअमलअविकारी।
ते महिमंडल मंडन रूपा।प्रीति रामपद अचलअनूपा ॥
तिनकहँकालिकृतयुगसमसाजू।सुकृतनसुखदयथायुवराजू॥

दो०—जो हरि भक्त कहाय जग, वित हित करत कुफेर।
दंड कपट पाषंड भट, पठइ किये कलि जेर॥
तेकलिवशबहुनाचहिंनाचा।भूलिनबोलहिंसपनेहुसाचा॥
तिलकविचित्रमनोहरमाला।वसनविभूषणवचनरसाला॥
मिलतमधुरगावतमृदुवानी।करमकठिननहिंजाइबखानी॥
गूढ गर्व अघ अवगुण गरुये। राम प्रेम परमारथ हरुये॥
देव पितर महि देव विरोधी। मोहलोभ वशलंपटक्रोधी॥
ज्ञानविरागसुनत जरिमरहीं। आश्रमबरणधर्मपरिहरहीं॥
तजिसुकर्मकुलरीतिसुहाई।कलपिकुपंथकुचालि चलाई॥
खान पानकर थोर विचारू। एकादशी बिशेष अचारू॥
दो०—बडे भाग तजि जगत गुरु, उपदेशहिं सबकाहु।
सरवस गुरुहि समर्पिए, लेहु जन्म कर लाहु॥
हिंदू तुरक नारिनर हीजा। सबकहँदेहिं समंत्रसबीजा॥
बेचहिंनिजहरिनामनगीना।लोलुपलोभविषयबडपीना॥
वेदपुराण भागवत गीता। पढि गुणअर्थकहहिंविपरीता॥
सुधनि सुनारि धनी वशहोई। पुरुषारथ परमारथसोई॥
वेषवरणहरिभक्तिविराजा।जियहुलसतकलिसहितसमाजा
शंकरनाम सुनत मरिजाई। सेवत यवन सुजन्म सिराई॥
वितहितअंगबंगमगबासी। वितविनवाइलगावहिंकासी॥
दो०—उपदेशक आचरण अस, पढहिं सुनहिं सब ग्रन्थ।
ये उपदेशे नारि नर, कहे न चले कुपंथ॥

ये गुरु बडे नीच उपदेशे । काल पाय पछितांहिं ठगेसे ॥
गुरु नग दिये न अवगथ गाठी। खाई बेचतमहडालाठी॥
विन वित भक्ति नभक्तसुहाहीं।सुखसंतापशोचमनमाहीं॥
बहुत उपाय किये धन लागी।दिनदिनदुनीदुरासादागी॥
सुमतिनसुनियनस्वामिसखाई।विनवितसबहितमीतवड़ाई
होइ न कृषी वणिज नहिं सेवा। गये कुदेश भयेगुरुदेवा॥
अचईडभयलोकगति घोरी । विष्णुसुधर्मतजेतृण तोरी॥
शिष्य कहाय बडेगुरु केरे । करि छलदंभकपटबहुतेरे ॥
दोहा–जिहिविधिउरकेअपगुरु,सहसभाँति सोइरीति ।
करिप्रपंचवंचित सबहि,डरत न करत अनीति॥
सधनसुधर्मनारिनरभोरी । लोकवेदगति सामुझि थोरी॥
तेकरिशिष्यसकलअपनाये।कलिपभक्तिमयवचनसुनाये॥
गुरुविमूढशिषनिपट कुमेधा । जुरासमाजवामभये वेधा॥
सोविधिकहाहिंजोइमन भावा ।सोइनिषेधजोनाहिंहैआवा॥
आपुगये गुरुगये बिगारे। वातल बावर बीछी मारे ॥
सोवरनियकुचालिकिहिभाँती।एकपातजेमहिं सबजाती॥
कोरिचमारगोडगुरु देवा। तिनकर करहिं महीसुर सेवा॥
भजाहिंजबाहिंतजिज्ञातजनेई।तबसराहिशिषकरिअहिंतेई॥
दोहा–साखी शब्दी दोहरा,कहि कहिनी उपखान ।
भक्ति निरूपण भक्त कलि,निंदत वेद पुरान ॥
नाम सुनामवाम पथगामी । कायर कूर कुतरकी कामी॥
सकलसुभायकुनिंदिक मंदा।कुल कुठारतियनरकुलवृंदा॥

कलिपाषंडप्रचंडप्रचारा। संडभंडसब,विधि व्यवहारा॥
भगत कहाय अघाय अभैरे। देखत कोमल करम करेरे॥
भगत नारि नर भक्ति विहीना।दंभ निधान प्रपंचप्रवीना॥
लोकहुवेदभगतिपथमोटा।जिनकेलिये लागिसोइ तोंटा॥
तिनके करतबकिमिकहिजाहीं।एकहि आंकभलाई नाहीं॥
कहतसकलकलिकालकुचाली।बाढैकथावृथा शिरखाली
दोहा—तिहिते कही सहेतु कलि, कथा समास समेत॥
सुनिसदंभ शठ सकुचिहहिं, सुजन ह्वैहैं सुचेत॥
कलियुगकहेउँसुमतिअनुहारी।सुनेउनभयउपजेंद्वैचारी॥
कलियुग मानस पातक नाहीं।पुण्य पुनीत मनोरथ माहीं॥
वाचिकपापजाहिंपछिताने।शिवसुमिरतसुरसरितअन्हाने
कायिककलुषकठिनकलिकाला।सद्यफलहिंपरिणामकराला
पुनि संसार दोषकलि थोरे।करतहिं कहकति घोर कठोरे॥
करै जो संग समान सलोना।जान बठत करता सम सोना॥
हरि शंकरहिभायभजिभोरे।पावहिंसुजनसफलश्रमथोरे॥
जो छल छाँडि धर्मरतिहोई।फलैसुधासनशिरधरि सोई॥
दो॰—अन्नदान सब यज्ञ मय, निरुपधि धर्म निधान।
तपतीरथ सुरसरित जल, दरशन मज्जन पान॥
कलि केवल परमारथ हेतू। राम नाम भवसागर सेतू॥
साधननामसिद्धिफलधामा।जेहिनप्रतीतिताहिविधिवामा
कृतयुग जोरल योग समाधी।त्रेता कर्म परम निरुपाधी॥

द्वापर हरिपद पूज सप्रीती।पाव परमगति नर जगजीती॥
कलिजपिनामसरुचिविश्वासा।सोफलसुलभसबैअनियासा।
तेसुकृतीशुचिसाधुसुजाना। सदगुणशीलरसीलनिधाना॥
जेहरि नाम जपत दिन राती।प्रीति प्रतीति सप्रेम सुभाँती
राम महातमचहुँयुगभारी।कलि विशेष दायकफलचारी॥
दो०–यथा भूमि सब बीजमय, नखत निवास अकास।
राम नाम सब धर्ममय, जानत तुलसीदास॥
यहविश्वासजासुजिय नाहीं।जोबनजारिजात जग माहीं॥
धर्महीनकलिपातक पीना।यथाढोल धुनिसुनियनवीना॥
होइ असंगल मंगल रासी । यथाकेतुग्रह जगत उमासी॥
नीप अधीन कालगुणदोषा। लोक वेदमतिनाहिनधोषा॥
भयेवेणुमहिषादिक राजा।पुण्यकालकलिकाल विराजा॥
विक्रमादिअवनिपकलिजाये।कृतत्रेता सब धर्म चलाये॥
काल कर्म महिपाल अधीना।कहतपुराणविनीतप्रवीना॥
दोहा–यथा अमल पावक पवन, पाय सुसंग कुसंग।
कहिय कुवास सुवास तिमि,काल महीश प्रसंग॥
शंकर काल चालिसुनिदेषी।दिनदिनबढतविषादविशेषी॥
विप्रजन्मगुहभाउविशाला। करमभूमिनशकालकराला॥
कृशतन नींद भूख भई थोरी।गृहकृतप्रीतिहोतमतिभोरी॥
जागत वागत सोवद सपने।सुमिरे सबै सोचमन अपने॥
विनाअमर अमृततनु साधा।गये जायपरलोक न साधा॥

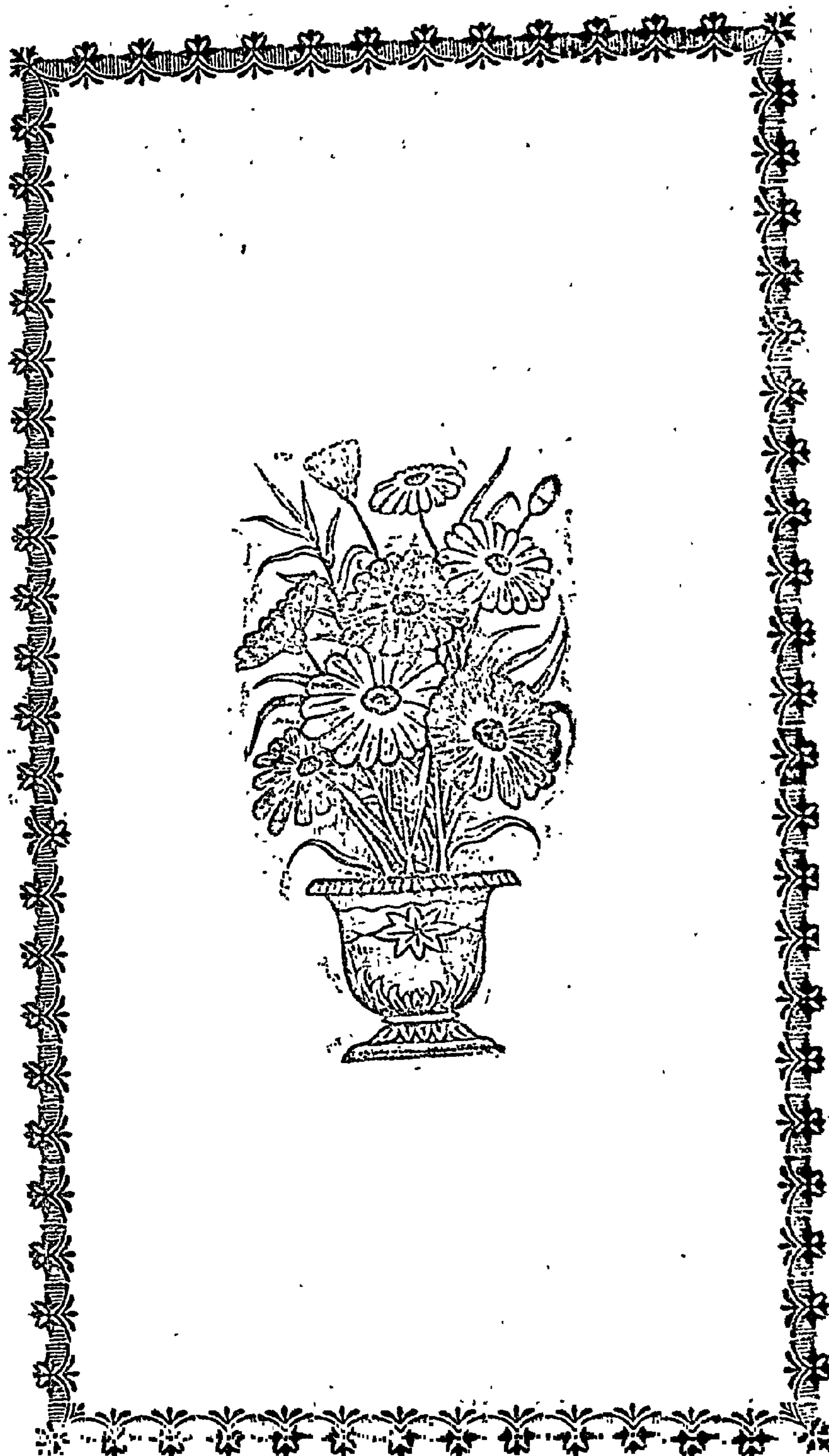
बिलसतखातबालपनबीता। भयेतरुणतरुणीमनजीता॥
बढतवयसअधिबढतदुरासा।बुधि विवेकबलतेजहरासा॥

दोहा—हम हमार अविचारखंड, भूरिभार धरि शीश।
शठ हठ परवश भयेइमि,कीर कोसकृमि कीश॥

सो०—कह शंकर मत संत, वेदपुराण विचार सब। द्रवें जानकी कंत, तब छूटै संसारभय॥ अब विनवों मन तोहिं, होहि राम पदकमल रति। अपथन प्रेरौ मोहिं, सुनहु सिखावन परमहित॥ करुणासिंधुदयाल, तुमबिन अवर न दूसरो। पतितनको प्रतिपाल, करै कौन तुम विन प्रभो॥ कह यह तुलसीदास, भववारिध बंधन हन्यो॥ तब छूटै भवफांस,जब रघुवीर कृपा करो॥ नर तन धरि करिकाज, साज त्यागि मद मानको।गाइ नाथ रघुराज,माँजि माँजि मनविमल वर॥

इति श्रीगुसाँई तुलसीदासकृत कलि धर्माधर्म निरूपणं सम्पूर्णम्।

दो०--कलिचरित्र तुलसी कथित, द्विज ज्वालाप्रसाद।
सोध्यो मति अनुसारसब, सुनितेहि मिटै विषाद॥
सकल वेद अरु शास्त्रको, यही सारको सार।
मन वच कर्म सयान तजि, भजिये रामउदार॥



॥ श्रीः ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-

छप्पय रामायण।



जिसमें

सातोंकांडरामायणकी कथा अति रुचिर छप्पय छन्दोंमें अतीव सरलपदोंसे वर्णित है.



खेमराज श्रीकृष्णदास,

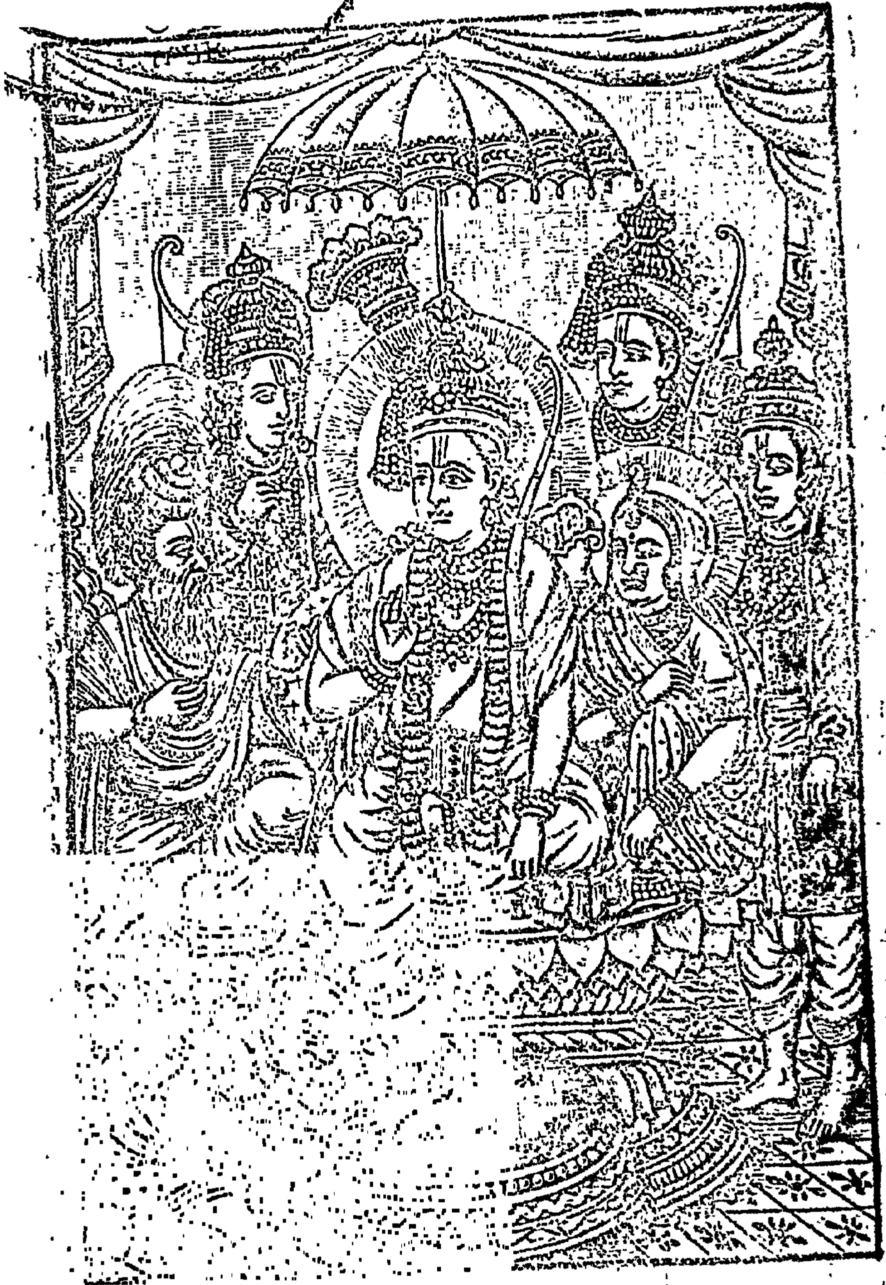
अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.



संवत् १९८८, शकाब्दाः १८५३.

॥ श्रीरामपंचायतन ॥



श्रीः

अथ छप्पयरामा[illegible]

छप्पय ।

श्रीगुरुचरणसरोज वन्दि गणनाथ मनवों ॥ जेहि प्रसाद शुभ होय राम सोइ विनय सुनावों ॥ आरतभ-ञ्जन राम नाम श्रुति साधुन गाई ॥ सुमिरत गाढे नाथ होत सबठौर सहाई ॥ श्रीपति रघुपति अवधपति करहुँ नाम सो जापना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक सन्तापना ॥ १ ॥ रहि कपोत शिशु पति-समेत बैठे तरुपासा ॥ गगन उडे शंचान भूमितल अग्नि प्रकासा ॥ व्याधा गहिकर बाण देखि लोचन जल मोचित ॥ पक्षी सो मनमहँ सभीत दंपति उर शोचित ॥ दुष्ट दवन करुणायतन राखिलेहु शरणापना ॥ कृपा करिय श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥ २ ॥ उठे ततक्षण मेघ वृष्टि जल अनल बुताने ॥ निकसि भुअंगम डसे सुधी व्याधा बिकलाने ॥ निसरेउ करते तीर जाय शंचानहिं मारी ॥ अस्तुति करत कपोत नाथ प्रणतारतिहारी ॥ सो प्रभु होहु दयालु मम जिमि कपोतरिपु दापना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोकसंतापना ॥ ३ ॥ जै जै मीन वराह कमठ नरहरि

श्रीबामन ॥ परशुराम श्रीराम कृष्ण जन हित खल-
दामन ॥ जगन्नाथ कलिकी नमामि दशविधि वपु धा-
रन ॥ अमितरूप अगणित चरित्र कृत नाम उदारन॥
सुररंजन सज्जन सुखद सियानाथ अरिजापना ॥ कृपा
करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥ ४ ॥
वधि ताडका सुबाहु विप्रमख रक्षक रघुपति ॥ मोचित
बाहन शाप भक्त वरदायक शुभगति ॥ प्रण विदेहको
राखि राम खंडचौ धनु शंकर ॥ दीन्ह शरासनबाण
जानि रामहिं सुपरशुधर ॥ सिय विवाहि गवने अवध
छूटे जनककलापना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम
हरहु शोक संतापना ॥ ५ ॥ राज त्यागि वन चले
असुरमारन सुरकारज॥केवट धोवत चरण त्रिलोचन अज
पदजारज ॥ चित्रकूट बसि अमित कोल भिल्लन करि
पावन ॥ भरत तोषिकृत चरण पीठ दै शोक नशावन॥
चले भरत स्तुति करत राखिलिय विरदापना ॥ कृपा
करहु श्रीरामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ॥६ ॥ पाहि
कहत बचि प्राण चक्षु इक हते जयंता ॥ वधि विराधखर-
दूषणादि मुनि सुयश कहंता ॥ हेम कपट मृग प्राण दीन्ह
प्रभु शरके लागत ॥ गति गृध्रहि दै हति कबंध शबरी
शरणागत ॥ बालित्रास सुग्रीव रह गिरि पर करत
कलापना ॥ कृपा करहुश्रीरामचंद्र मम हरहु शोक
संतापना॥७॥ हनुमत चीन्हेउँ नाम नाथ निजदासहि

जानी॥भक्ति विमलवर देइ मित्रकृत शारँगपानी॥बालि वधो कपिराज साजि ऋतुमेह गँवाये॥ करमुद्रिक्क दे सिय उदेश हनुमान पठाये॥ वहाँ सिया निशिदिन जपत रामनाम मन आपना॥कृपा करहु श्रीरामचंद्र मम हरहु शोक संतापना॥८॥हर्षि चले हनुमान भाग्य निज-करत वडाई॥ खोजत सर गिरि खोह ऋच्छ कपि संग सगाई॥ गये सिंधुतट सकल शोक वश सुनि संपाती॥ सुनि सपक्ष होय जोह सिया यह सुर आराती॥ निरखि सिंधु ठहरे सभै करहिं विलाप कलापना॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना॥९॥ पुलकि उठे हनुमान कान सुनि बयन ऋछेशा॥चलत महाधुनि गरजि डोलु गिरि दिग्गज शेशा॥ सुरसा वदन समाय सिंहिको वधत सिधाये॥प्रभुप्रताप जल-यान पार सागर होइ आये॥मुष्टिक हनि तहँ लंकिनी सुमिरि चले हरि आपना॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना॥ १० ॥ गृह गृह शोधत चले जोह कतहूं नहिं पाये॥ लगे उचारण रामनाम सुनि विभीषण आये॥ सन्तत मिलि दुहुँ करत मुदित जिमि वासर कोका॥ युक्ति विभीषण बूझि आय जहँ विटप अशोका॥ मौन लई कपि छपि गुणत युक्ति होय प्रगटापना॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥ ११ ॥ तेहि अवसर दशकं-

धरनारि सँग आय डेरावा ॥ प्रभु प्रताप रवि आपु नखत सुनि गृहहि सिधावा ॥ विरहवंत होय अनल तबहिं माँग्यहु वैदेही ॥ शोकहरन मुद्रिका दीन्ह कपि अवसर तेही ॥ चीन्हि हरष विस्मय तेहि दुखभंजन प्रभु आपना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥ १२ ॥ वरणि रामगुण करि प्रणाम बोले हनुमाना ॥ हौं अनुचर तव नाथ मातु मैं सुँदरी आना ॥ निकट बोलि सुनि अमिय वचन पूछी कुशलाता ॥ कहेउ कुशल दोउ बंधु शोच कीजै जनि माता ॥ कपि मुख रामसंदेश सुनि कहै सीता विरहापना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥ १३ ॥ सिय प्रबोधि लै तब निदेश सुसमीरकुमारा ॥ गये बाग फल खाय तोरि तरु रक्षक मारा ॥ सुवन वधे सुनि विसहुबाहु घननाद पठाये ॥ लंक दहन हित कीश तासुकर आपु बँधाये ॥ दनुज बांधि पट लाय दियो लूम देखि कीशापना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥ १४ ॥ ज्वालावन्त कराल कीश चढि कनक अटारी ॥ नगर शोर चहुँ ओर जरनलागे नर नारी ॥ वातजात बल-पुंज हाँक सुनि दनुज सकाने ॥ बाल वृद्ध संपति विहाय सब जरत पराने ॥ जरा लंक बचु एक घर विभीषणके हरि जपना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र

मम हरहु शोक संतापना ॥ १५ ॥ श्रम विहाय पुरजारि सिंधुमहँ लूम बुताई ॥ आय मातु पदपद्म वंदि कपि मांगु रजाई ॥ सहिदानी कछु देहु मातु सुधि प्रभुहि जनावों ॥ चूडामणि दै कह्यो मातु बहु विनय सुनावों ॥ कहेउ मोरिस्तुति नाथजू शरण लाज रखु आपना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥ १६ ॥ विविधभाँति दै धीर मातुपद वंदि कपीशा ॥ चले शुभाशिष पाय आय भेंटे सब कीशा॥चरण चूमि करि कीश सकल पूछहिं कुशलाई॥ कहत कथा सबभाँति आय मधुवन फल खाई ॥ वंदि रामपद कंज कहि सीता सुधि इतिहासना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥१७॥ विरह अनल तनु तप्त आपुहित राखी नैना ॥ अब विलम्ब जनि करहु सिया हे राजिवनैना ॥ शक्रसुवनमृग हेम जातु तव बाण प्रतापा ॥ जनु कबंध अरु बालि कहा भै सो शर चापा ॥ सिया विनय चरणन पडी चूडामणि दिहि आपना ॥ कृपा करहु श्रीरामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ॥१८॥ सिया विनय सुनि सिया-नाथ करगहि धनुतीरा। उतरे कटक समूह संग लै सागर नीरा ॥ मिले विभीषण आय पाहि कहि जय अवधेशा ॥ प्रणतपाल करि अभै तासु पुनि कहि लंकेशा ॥ तारनसिन्धु उपल पुनि कृत शंकरस्थापना॥

कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना॥१९॥
रामेश्वर सुखधाम राम कहि श्रीमुखवानी ॥ जासु नाम
उच्चार प्रेम गति पावत प्रानी ॥ गिरिजारमन दयालु
दीनहित दानी अवढर ॥ जनपर होहु दयालु दीन
हित सो गौरीवर ॥ उमारमन मम दुखदमन हरहु शोक
संतापना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक
संतापना ॥ २० ॥ जलनिधि उतरे पार भालु कपि
कटक समेता ॥ पठै बसीठी बूझि मरम गढ उठे
सचेता ॥ चारि यूथ होइ लगे वीर सब सुभट जुझारे॥
प्रभुप्रताप करि दाप ऋच्छ कपि कटक सँहारे ॥ कंप
अकंप आदि कहते कहि जैजैनाथापना ॥ कृपा करहु
श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥ २१ ॥ महो-
दर अतिकाय आदि कहँ हति हनुमंता ॥ हांकि समर-
महँ मेघनादकहँ हत्यो अनन्ता ॥ अहिरावण वध
कियउ राम सेवक सुखदाई ॥ दल पाछे करसोंह त्रोण
कटि कसि द्वौ भाई ॥ कृपादृष्टि करि विपुल बल नाथ
दियो दल आपना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम
हरहु शोक संतापना ॥ २२ ॥ कुम्भकर्ण अति विक-
टरूप आवा दलमाहीं ॥ दपटि पटकि भट भालु कीश
मरदे महिमाहीं ॥ उठि बहोरि तेहि अस्त्र शस्त्र छांडे
कपि दलपर ॥ दल पाछे करि सौंह लीन्ह निज शर-
सीतावर ॥ वध्यो ताहि निजपाणि प्रभु देव जयति

करु जापना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥ २३ ॥ रावण आयो सौंह बंधुपर शैल चलावत ॥ दल पाछे करि सौंह ताहि प्रभु आपु खेलावत ॥ कहत देव अब जनि विलम्ब कर दुष्टहिं मारो ॥ त्रिभुवन विजय समेत नाथ निजपुर पगु धारो ॥ सुनि पुकार रावण हते राज विभीषण थापना॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥ २४ ॥ प्रभु सिख लै हनु अंगदादि गये सिया लेवाई ॥ निसरि दियो ते सिया शपथ मिसु प्रभुपहँ आई ॥ शोभित जानकिराम संग कपिदल हर्षाने ॥ जैजैजैति उचार देव मुनि साधुन गाने ॥ ब्रह्मादिक स्तुति करत छवि निहारि नाथापना ॥ कृपा करहु श्रीरामचन्द्र मम हरहु शोक संतापना ॥ २५ ॥ चढ़ि पुष्पक आरूढ राम सिय लषण समेता ॥ चले अवध ले सखा संग प्रभु कृपानिकेता ॥ आये तीरथराज भोजि हनुमान भरतपहँ ॥ वातजात सानन्द जात प्रभु भरत दरशकहँ ॥ भरत विरह वारिधि मगन राम देहु दर्शापना ॥ कृपा करहु श्रीरामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ॥२६॥ हनूमान जलयान भेंटकरि जलनिधि-पारा ॥ कहेउ कुशल लै समाचारचलु पवनकुमारा।

भरत आय गुरु निकट मातु पुरलोग जनाई ॥ पुलकि
उठे समस्वाति वारि जनु चातक पाई ॥ गंग पूजि सिय
राम चलेब पाय कुशल अनुजापना ॥ कृपा करहु
श्रीरामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ॥ २७ ॥ उतरि
यानते पुर समीप भेंटे मुनि गुरुजन ॥ भरत चरण
हिय लाय पुनिक भेंटे रिपुसूदन ॥ लषण भरत सानंद
मिले सानुज द्वौ भाई ॥ हुँकरि गाय दिन अंत धाय
जनु वच्छ पिआई ॥ मिलि परिजन सानंद सिय रा
चले भवनापना ॥ कृपा करहु श्रीरामचंद्र मम हर
शोक संतापना ॥ २८ ॥ गुरु अनुशासन सचि
साजि अभिषेक बनाई ॥ रामसिंहासन राज्य दीन गु
मुनि समुदाई ॥ भरत गहे कर छत्र चँवर सिय रा
निहारे ॥ मुदित जन्म फल पाय मातु आरती उतारे
वेदस्तुति करि जयति भनि भक्ति देहु रामापना ॥ कृप.
करहु श्रीरामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ॥ २९ ॥
छुटे बंदि सब विबुध कोटि तेंतीस हरषिकै ॥ स्तुति
करत बनाय पुष्प जय माल बरषिकै ॥शंभु आय कृत
विविधभांति स्तुति श्रीरामा ॥ पाय रजाय सुचले देव
सब निजनिजधामा ॥ बिदा कियो सब सखहि प्रभु
देव जयति करु जापना ॥ कृपा करहु श्रीरामचंद्र मम

हरहु शोक संतापना ॥ ३० ॥ रामचरित अवगाह सिंधु कोइ पार न पावा ॥ शेप शारदा निगम नेति कहि निज मुख गावा ॥ शंभु उमासन भरद्वाजसों याज्ञ-वल्क्य मुनि ॥ कागभुशुण्डिसों गरुड मानसिक कहि तुलसी गुनि ॥ कहै सुनै रतिरामपद एक राजमति आपना ॥ कृपा करहु श्रीरामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ॥ ३१ ॥

इति श्रीछप्पयरामायण तुलसीदासकृत समाप्त ॥



श्रीवेङ्कटेशाय नमः ।

श्रीसीतारामाभ्यां नमः ।

अथ श्रीहनुमानबाहुक प्रारंभः ।

छप्पय ।

सिंधुतरनसियसोचहरनरविबालवरनतनु ॥ भुजविशालमूरतिकराल कालहुको कालजनु ॥ गहनदहननिरदहनलंकनिःशंकवंकभुव ॥ यातुधानबलवानमानमदद्वनपवनसुव॥ कह तुलसिदास सेवतसुलभसेवकहितसंततनिकट ॥गुनगनतनमतसुमिरतजपतशमनसकलसंकटविकट ॥१॥ स्वर्णशैलसंकासकोटिरवितरुनतेजघन॥ उरविशालभुजदंडचंडनखवज्रवज्रतन ॥ पिंगनयनभ्रुकुटीकरालरसना दशनानन ॥ कपिसकेसकरकसलंगूरखलदलबलभानन ॥ कहतुलसिदासबसजासुउरहनुमूरतमूरतिविकट ॥ संतापपापतेहिपुरुषकहँ सपनेहुँनहिंआवतनिकट ॥ २ ॥ झूलना ॥ पंचमुखभृगुमुख्यभट असुरसुरसर्वसरिसमरसमरत्थशूरो ॥ बाँकुरोवीरविरुदैतविरुदावली वेदवंदीवदतपैजपूरो ॥ जासुगुणगाथरघुनाथकहजासुबलजलविपुलजल भरितजगजलधिकूरो ॥ दीनदुखदवनको कौनतुलसीसहैपवनकोपूतरजपूतरूरो ॥ ॥ ३ ॥ घनाक्षरी ॥ भानुसोंपढनहनुमानगएभानुमनअ-

नुमानिशिशुकेलिकियोफेरफारसो ॥ पाछिलेपगनिगमगगनमगनमनक्रम कौनभ्रम कपिबालकविहारसो ॥ कौतुक विलोकि सुरपाल हरिहर विधि लोचननि चकाचौंधि चित्तनि खँभारसो ॥ बल कैधौंवीररसधीरजकैसाहसकैतुलसीशरीरधरेसबनिकोसारसो ॥ ४ ॥ भारतमें स्मरथक रथकेतुकपिराजगाज्योसुनिकुरुराजदलहलबलभो ॥ कह्योद्रोणभीषम समीरसुतमहावीरवीररसवारिनिधिजाकोबलजलभो ॥ वानरसुभायबालकेलि भूमिभानुलगिफलंगफलांगहूतेघाटिनभतलभो ॥ नायनाथमाथजोरिजोरिहाथजोधाजोहैंहनुमान देखेजगजीवनकोफलभो ॥ ५ ॥ गोपदपयोधिकरिहोलिकाज्यों लायलंकनिपटनिशंकपरपुरगलबलभो । द्रोणसोपहारलियोख्यालहींउखारिकरिकंदुकज्यों कपिखेलबेलकैसोफलभो ॥ संकटसमाजअसमंजसमेंरामराजकाजजुगपूंगनिकोकरतलपलभो ॥ साहसीसमत्थतुलसीकोनाहजाकीबांहलोकपालनीकोफिरिफिरिथिरथलभो ॥ ६ ॥ कमठकीपीठिजाकेगोडनिकीगाडैमानोनापकेभाजनभरिजलनिधिजलभो ॥ यातुधानदावनपरावनकोदुर्गभयो महामीनवासतिमितोमनिकोथलभो ॥ कुंभकर्णरावणपयोदनादईंधनकोतुलसीप्रतापजाकोप्रबलअनलभो॥भीषमकहतमेरे अनुमाहहनुमानसारिखोत्रिकालनत्रिलोकमहाबलभो॥७॥ दूतरामरायको सपूत पूतपौनको तुअंज-

नीकोनंदनप्रताप भूरिभानुसो ॥ सीयसोचशमनदुरित-
दोषदमनशरनआएअवनलखनप्रियप्रानसो ॥ दशमुख-
दुसह दरिद्रदरिवेको भयोप्रगटत्रिलोकओकतुलसीनि-
धानसो ॥ ज्ञानगुनवानबलवानसेवासावधानसाहेबसुजा-
नउरआनुहनुमानसो ॥ ८ ॥ दवनदुवनदलभुवनविदि-
तबलवेदयशगावतविबुधवंदीछोरको ॥ पापतापतिमिर-
तुहिनविघटन पटुसेवकसरोरुह सुखदभानु भोरको॥लो-
कपरलोकतेविसोकसपने न सोकतुलसीकहीएहैभरोसो
एकओरको ॥ रामकोदुलारोदासवामदेवको निवासना-
मकलिकामतरुकेसरीकिसोरको ॥ ९ ॥ महाबलसींव
महा भीममहावानयतमहावीरविदितवरायोरघुवीरको ॥
कुलिशकठोरतनु जोरपरैरोररनकरुणाकलितमनधारमी-
कधीरको ॥ दुर्जनकोकालसोकरालपालसज्जनकोसुमि-
रेहरनहारतुलसीकेपीरको ॥ सीयसुखदायकदुलारोरघु-
नायककोसेवकसहायकहैसाहसीसमीरको ॥१०॥ रचि-
वेको विधिजैसेपालिवेकोहरिहरमीचमारिवेको ज्यायवे-
कोसुधापानभो ॥ धारिवेकोधरनितरनितमदलिवेकोसो-
खिवेकृशानुपोषिवेकोहिमभानुभो ॥ खलदुखदोषिवेको
जनपरितोषिवेकोमागिवोमलीनताकोमोदकसुदानभो ॥
आरतकीआरतीनिवारिवेकोतिहूं पुरतुलसीकोसाहिब
हठीलो हनुमानभो ॥११॥ सेवकसेवकाईजानिजानकी-
समानैकानिसानुकूलशूलपानिनवैनाथनाककी ॥ देवी-

देवदानवदयावनेह्वैजोरैंहाथबापुरेवराकऔरराजारानारा-
कको ॥ जागतसोवतबैठेवागतविनोदमोद ताकैजोअन-
र्थसोसमर्थएकआंकको ॥ सबदिनरूरोपरैपूरोजहांतहां
ताहिजाकेहैभरोसहियहनुमानहांकको ॥ १२ ॥ सानुग-
सगौरिसानुकूल शूलपाणिताहि लोकपालसकललषण
रामजानकी ॥ लोकपरलोकको विसोकसोत्रिलोकता-
हितुलसीतमाहिकहिंकहावीरआनकी ॥ केसरी किसोर-
वंदीछोरकेनिबाजेसबकीरतिविमलकपिकरुणानिधानकी
बालकज्यौं पालि हैं कृपालुमुनि सिद्धताको जाकेहि-
हुएलसति हांकहनुमानकी ॥ १३ ॥ करुणानि-
धानबल बुद्धिकेनिधानमोदमहिमानिधान गुनज्ञानके
निधानहौ॥ वामदेवरूपभूपरामकेसनेहीनामलेतदेतअर्थ-
धर्मकामनिरवानहौ ॥ आपनो प्रभावसीतानाथकोसुभा-
वशीललोकवेद विधिहुविदुखहनुमानहौ ॥ मनकीवच-
नकीकरमकीतिहूंप्रकारतुलसी तिहारोतुमसाहिबसुजान-
हौ ॥१४॥ मनको अगमतनसुगम कियेकपीशकाजमहा-
राजकेसमाजसाजसाजे हैं ॥ देववंदीछोररणरोर केस-
रीकिसोरयुगयुगजगतेरेविरदविराजहैं ॥ वीरवरजोरघ-
टिजोर तुलसीकीओरसुनिसकुचानेसाधुखलगणगाजेहैं॥
विगरीसँवारअंजनीकुमारकीजे मोहिंजैसेहोतआएहनु-
मानकेनिवाजेहैं ॥ १५ ॥ मत्त गयंद ॥ सुजानशिरो-
मणिहौहनुमानसदाजनकेमनवासतिहारो ॥ ढारो विगा-

रोमैंकाकोकहाकेहिकारणखीझतहौंतोतिहारो ॥ साह-बसेवक नातेतेहातोकियौतोतहांतुलसीकोनचारो ॥दोष-सुनाएतेआगेहुँ कोहुसियारतहौंमनतौहियहारो॥ १६॥
तेरे थपे उथपैनमहेशथपै थिरकोकपिजेघरघाले ॥
तेरे निवाजेगरीबनिवाजविराजितवैरिनके उरशाले ॥
संकटसोचसबैतुलसीलिये नामफटैमकरीकेसेजाले ॥
बूढभएबलिमेरेहिवारकि हारपरेबहुतैनतपाले ॥ १७॥
सिंधुतरे बडेवीरदलेखलजालेहैलंकसेवंकमवासे ॥ तैर-णकेहरिकेहरिके विदलेअरिकुंजरछैलछवासे ॥ तोसों समर्थसुसाहिबसेइसहैतुलसीदुखदोष दवासे ॥ वानर-बाजबढेखलखेचरलीजतक्यौंनलपेटिलवासे ॥ १८॥
अच्छविमर्दनकाननभानिदशाननआननभाननिहारो ॥
वारिद नाद अकंपनकुंभकरन्नसेकुंजरकेहरिवारो ॥राम-प्रतापहुतासनकच्छविपच्छसमीरसमीरदुलारो ॥ पाप-तेशापतेतापतिहूंतेसदातुलसीकहँसो रखवारो॥ १९ ॥
घनाक्षरी ॥ जानत जहानजनहनुमानकोनिवाज्यौ मन-अनुमानिबलिबोलनविसारिए ॥ सेवायोगतुलसी कबहूं कहांचूकपरीसाहेबसुभावकपिसाहेबसंभारिए ॥ अप-राधीजानिकीजैसासतिसहसभाँतिमोदकमरैजोताहिमा-हुरनमारिये ॥ साहसीसमीरकेदुलारेरघुबीरजूकेबाँहपीर

महावीरवेगिहीनिवारिये ॥ २० ॥ बालकविलोकि वलिवारेतेआपनोकियोदीनबंधुदयाकीन्हीनिरुपधिन्यारिये ॥ रावरो भरोसोतुलसीकेरावरोईबलआशारावरीयेदासरावरो विचारिये ॥ बडो विकरालकलिकोकोनविहालकियोमाथेपगुबलीकोनिहरिसोनिवारिये ॥ केसरीकिशोररणरोरवरजोरवीरबाहूपीरराहुमातुज्यौंपछारिमारिये॥२१॥ उथपेथपनथिरथपेउथपनहारकेसरीकुमार बलआपनो संभारिये ॥ रामकेगुलामनिकोकामतरुरामदूतमोसेदीनदूबरकोतकियातिहारिये॥ साहिबसमर्थतोसोंतुलसीकेमाथेपरसोऊअपराधविनु वीरबाँधिमारिये ॥ पोषरीविसालबाहूंबलिवारिचरपीरमकरीज्योंपकरिकैबदनविदारिये ॥ २२ ॥ रामकोसनेहरामसाहसलषणसियरामकीभगतिसोचसंकटनिवारिये ॥ मुदमरकटरोगवारिनिधिहेरिहारे जीवजाम्बवंतकोभरोसोतेरोभारिये ॥ कूदिएकृपालुतुलसीसोंप्रेमपयतेसुथलसुवेलभालबैठिकैविचारिये ॥ महावीरबाँकुरेवराकी बाहुपीर क्योंनलंकिनी ज्यौंलातघातहीमरोरिमारिये ॥ २३ ॥ लोकपरलोकहू तिलोकनविलोकियततोसोंसमरथचषचारिहूनिरिहारिए ॥ कर्मकाल लोकपालअगजगजीवजालनाथहाथसबनिजमहिमाविचारिए ॥ खा-

सदासरावरोनिवासतेरोतासुउरतुलसीसोंदेवदुखीदेखिय-
तभारिए ॥ वाततरुमूलबाहुशूलकपिकछुवेलिउपजीस-
केलिकपिखेलहीउखारिये ॥ २४ ॥ करम कराल कंस
भूमिपालकेभरोसेवकभगिनीकाहुतेकहांडरैगी ॥ वडी
विकरालबालघातिनीनजातकहि बाहुबलबालक छवीले
छोटेछरैगी ॥ आइहैंबनायवेषआपतूविचारिदेखपाप-
जाय सबकोगुणीकेपालेपरैगी ॥ पूतनापिशाचिनीजौं-
कपिकीन्हतुलसीकीबाहु परिमहावीरतेरेमारेमरैगी ॥
॥२५॥ भालकीकिकालकीकिरोषकी त्रिदोपकीहै वेदन-
विषमपापतापछलछाहँकी॥करमनकूटकीकियंत्रमंत्रवूट-
कीपराहिजाहिपापिनीमलीनमनमाहकी॥पायहैसजाय-
नतकहतबजायतोहिवावरीनहोहिवानिजानिकपिनाहकी।
आनहनुमानकीदोहाईबलवानकीशपथमहावीरकीजोर है
पीरबाहँकी ॥ २६ ॥ सिंहिकासंहारिबलिसुरसासुधारि-
छललंकिनीपछारिमारिवाटिका उजारीहै ॥ लंकापरजा-
रिमकरीविदारीवारवार यातुधान धारिधूरिधानीकरि-
डारी है ॥ तोरियमकातरिमंदोदारिकढौरिआनिरावणकी
रानिमेघनादमहतारीहै ॥ भीरबाहँपीरकीनिपटराखीम-
हावीरकौनसेसकोचतुलसीके सोच भारीहै ॥ २७ ॥
तरीबालकेलिवीरसुनिसहमतधीरनूलतशरीरसुधिशक्र-

विराहकी ॥ तेरीबांहबसतविसोकलोकपालसबतेरोनाम लिएरहैआरतिनकाहुकी ॥ सामदानभेद वेहदहूलवेद्-धिद्धिहाथकपिनाथहीके चोटीचोरसाहुकी ॥ आलस अनखपरीहाँसकिसिखावनहै एतेदिनरहीपीरतुलसीके बाहुकी ॥२८॥ टूकनिकोघरघरडोलतकंगाल बोलिबा-लज्योंकृपालतनपालपालिपोसोहै ॥ कीन्हीहैसंभारसार-अंजनीकुमारवीरअपनोविसारीहै नमेरेभरोसोहै॥एतनो-परेखोसबभाँतिसमरथआजुकपिनाथसाँचीकहोकोत्रिलो कतोसोहै ॥ सासतिसहत दासकीजैपेषिपरिहासचीरी-कोमरनखेलबालकनिकोसोहै ॥२९॥ आप·नेहीपापते-त्रितापतेकीशापते बढीहै बाहवेदनकहीनसहिजातिहै ॥ औषधअनेकयंत्रमंत्रटोटकादिकिएवादिभएदेवतामनाय अधिकातिहै॥करतारभरतार हरतारकर्मकालकोहै जग-जालजोनमानतिइतातिहै॥चेरोतेरोतुलसीतूमेरोकह्योरा-मदूतढीलतेरीवारमोहिंपीरतेपिरातिहै॥३०॥दूतरायको-सपूतपूतवायकोसमर्थहाथपायकोसहाय असहायको ॥ बांकीविरुदावलिविदितवेदगाइयत रावणसोंभटभयोमु-ठिकाकेघायको ॥ एते बडे साहेबसमर्थकोनिवाजोआ-जुसीदतसुसेवक वचनमनकायको ॥ थोरिवाहूपीरकी बडीगलानि तुलसीको कौन पापको पलोपप्रगट-

प्रभायको ॥ ३१॥ देवीदेवदनुजमनु मुनिसिद्धनागछोटे
बडेजीवजेतेचेतनअचेतहैं ॥ पूतनापिशाचीयातुधानी-
यातुधानवामरामदूतकीरजाइमाथेमानिलेतहैं ॥ घोरयंत्र-
मंत्रकूटकपटकुयोगरोगहनुमानआनसुनिछांडतनिकेतहैं ।
क्रोधकीजेकर्मकोप्रबोधकीजैतुलसीको सोधकीजैतिन-
कोजोदोषदुखदेतहैं॥३२॥ तेरेबलवानरजितायेरनरावन-
सेतेरेघालेयातुधानधाएघरघरके॥तेरेबलरामराजकियेस
बसुरकाजसकलसमाजसाजसाजेरघुवरके॥तेरेगुणमानसु
निगीरवानपुलकितसजलविलोचनविरंचिहरिहरके॥ तुल
सीकेमाथपरहाथफेरोज्ञानकीसनाथबूझिएनादसदुखांतो-
सेकनिगरके॥३३॥पालेतेरेटूकको परेहूंचूकमूकिये नकूर-
कौडीटुकोहों आपनीओरहेरिये ॥ भोरानाथभोरेहीसरो-
षहोतथोरेदोषपोषितोषि थापिआपनोनअवडेरिये॥अंबु-
तुहौ अम्बुचरअम्बुतुहौडिंभसोनबूझिएविलंबअवलंब-
मेरेतेरिये॥बालक विकलजानिपाहिप्रेमपहिचानितुलसी-
केबांहेपरलांबीलूमफेरिये ॥३४॥ घेरिलियोरोगनिकुलो-
गनिकुयोगनिज्यौंवासरजलदघनघटाधकिनाईहै । वर-
षतवारिपीरजारियेजवासेजसरोषविनुदोषधूममूलम लि-
नाईहै ॥ करुणानिधानहनुमानमहाबलवानहेरिहँसिहांकि
फूंकि फौजेतेउडाई है ॥ खाएहुतेतुलसीकुरोगराडराकस

निकेशरीकिशोरराखेवीरबरियाईहै ॥२५॥ मत्तगयन्द ॥
रामगुलामतुहींहनुमान गुसांइ सुसाईंसदाअनुकूलो ॥
पाल्यौहौंबालकआखरदूपितुमातुज्यौंमंगलमोदसमूलो॥
बाहुकीवेदनाबांहपगारपुकारतआरतआँनदभूलो ॥ श्रीर-
घुवीरनिवारिये पीररहोंदरबार परोलटिलूलो ॥ २६ ॥
घनाक्षरी ॥ कालकीकरालताकरमकठिनाईकीधोंपाप-
केप्रभावकी सुभायबायबावरे ॥ वेदनकुभांतिसोसहीन-
जातिरातिदिनसोईबांहगहीजोगहीसमीरडावरे ॥ लायो
तरुतुलसीतियारोसोनिहारिवारिसींचिएमलीनभोकुपीर-
तापतावरे॥ भूतनिकी आपनीपराई है कृपानिधानजानि-
यतसबहीकीरीतिरामरावरे॥२७॥पाँयपीरपेटपीरबहुपीर
मुखपीरजरजरसकलशरीरपीर मईहै॥ देवभूतपितरकर-
मखलकालग्रहमोहिंपरदवरिदमानकसीदईहै ॥ होंतोवि-
नमोलहीं विकानोवलिवारेहीतेंओढरामनामकोललाटलि
खिलईहै॥ कुम्भजकेकिंकरविकलवूडेगोखुरनि हायराम-
रायएसीहालकहूंभई है ॥२८॥ बाहुकसुबाहुनीचलीचर-
मलीचमिलिमुहँपीडकेतु जाकुरोगयातुधानहै ॥रामना-
मजपजागाकियो चाहौसानुरागकालकैसेदूतभूतकहामेरो
मानहै ॥ सुमिरेसहाइरामलषणआखरदोऊ जिनके
साकेसमूहजागतजहानहै ॥ तुलसीसँभारिताडकासँहारि

मारिभटवेधैवरगदसेबनाइबानवानहै ॥ ३९ ॥ बालपने
सूधेमगरामसनमुखभयो रामनामलेतमांगिखातठकठा-
कहौं ॥ परचौ लोकरीतिमें पुनीतप्रीतिरामरायमोहवश
बैठोतोरितरकितराकहौं ॥ खोटे खोटेआचरण आचरत
अपनायो अंजनीकुमारसोध्यौरामपानिपाक हौं॥ तुल-
सीगुसांई भयोभोंडेदिनभूलिगयोताकेफलपावतनिदान
परिपाकहौं॥४०॥ अशनवसनहीनविषमविषादलीनदेखि
दीनदूबरोकरैनहायहायको ॥ तुलसीअनाथसोसनाथर-
घुनाथकियोदियो फलशीलसिंधुआपनेसुभायको ॥नीच
एहिबीचपतिपाइभरुआइगो विहायप्रभुभजनवचनमन-
कायको ॥ तातेतनुपेषियतघोरवरतोरमिसि फूटि फूटि
निकसतलोनरामरायको ॥ ४१ ॥ जीवों जग जानकी
जीवनकोकहायजन मरिवेकोवाराणसीवारिसुरसरिको ॥
तुलसीके दुहूं हाथ मोद कहैं ऐसे ठाँव जाके जिये मुए
सोचकरिहैं नलरिको॥ मोको झूठो सांचो लोग रामको
कहत सब मेरे मनमानहै न हरकोन हरिको॥ भारी पीर
दुसह शरीरतेविहालहोतसोऊ रघुवीरविनुसकैदूरिकरिको
॥४२॥ सीतापति साहेब सहाय हनुमाननित हित उप-
देशको महेश मानो गुरुकै । मानस वचन काय शरण
तिहारी पाय तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुरकै ॥

व्याधिभूतजनितउपाधिकाहूखलकी समाधिकीजैतुल-
सीकोजानिजन फुरकै॥ कपिनाथरघुनाथभोलानाथभूत-
नाथ रोगसिंधुक्योंनडारियत गायखुरकै ॥ ४३ ॥
कहौंहनुमानसों सुजानरामरायसोंकृपानिधानशंकरसो
सावधानसुनिये ॥ हरषविषादरागरोष गुणदोषमईवि-
रची विरंचि सवदेखियतदुनिये ॥ मायाजीवकालके
करमकेसुभायकोकरैयाराम वेदकहैं सांचीमनगुनिये ॥
तुमसेकहानहोयहाहासोबुझैयेमोहिंहोहूरहौं मौनहींवयो-
सोजानिलुनिये ॥ ४४ ॥

इति श्रीगुसाईंतुलसीदासकृतहनुमानबाहुकसमाप्त ।





श्रीगणेशाय नमः ।

अथ हनूमानचालीसा ।

दोहा ।

श्रीगुरुचरणसरोजरज, निजमनमुकुरसुधार ।
वरणो रघुवर विमलयश, जो दायकफलचार ॥१॥
बुद्धिहीनतनुजानिकैं, सुमिरों पवनकुमार ॥
बलबुधिविद्यादेहु मोहिं, हरहु कलेश विकार ॥

चौपाई—जयहनुमानज्ञानगुणसागर ॥ जयकपीशतिहुँलोकउजागर ॥ रामदूतअतुलितबलधामा ॥ अंजनिपुत्रपवनसुतनामा महावीरविक्रमबजरंगी ॥ कुमतिनिवारसुमतिकेसंगी ॥ कंचनवर्णविराज सुवेशा ॥ काननकुंडलकुंचितकेशा ॥ हाथवज्रऔध्वजाविराजे ॥ काँधेमूंजजनेऊसाजै ॥ शंकरसुवनकेसरीनंदन ॥ तेजप्रतापमहाजगवंदन ॥ विद्यावानगुणीअतिचातुर ॥ रामकाज करिवेको आतुर ॥ प्रभुचरित्रसुनिवेकोरसिया॥रामलषण सीतामनबसिया ॥ सूक्ष्मरूपधरिसियहिं दिखावा ॥ विकटरूपधरिलंकजरावा ॥ भीमरूपधरिअसुरसँहारे ॥ रामचन्द्रके काजसँवारे ॥ लायसजीवनलषणजिवाये ॥

श्रीरघुवीरहृदयभरलाये ॥ रघुपतिकीनीबहुतबडाई ॥ तुममसप्रियाभरतसमभाई ॥ सहसवदनतुमरोयशगावै॥ असकहि श्रीपति कण्ठ लगावै ॥ सनकादिकब्रह्मादि मुनीशा ॥ नारदशारदसहितअहीशा ॥ यमकुबेरदिगपाल जहांते ॥ कविकोविदकहिसकैंकहांते ॥ तुमउपकारसुग्रीवहिकीन्हा ॥ राममिलायराजपददीन्हा ॥ लंकेश्वरभयेसबजग जाना ॥ वीरपराक्रमकीर्तिबखाना॥ युगसहस्रयोजनजोभानू ॥ लीलाताहिमधुरफलजानू ॥ प्रभुमुद्रिका मेलिमुखमाहीं ॥ जलधिलाँघि गये अचरजनाहीं ॥ दुर्गमकाजजगतके जेते ॥ सुगम अनुग्रह तुमरे तेते ॥ रामदुलारेतुमरखवारे ॥ होतनआज्ञाविनपैसारे ॥ सबसुखलहैतुम्हारीशरना ॥ तुमरक्षककाहूकोडरना ॥ अपनातेजसम्हारौआपै ॥ तीनोंलोकहाँकते कांपै ॥ भूतपिशाचनिकटनहिंआवै ॥ महावीर जब नाम सुनावै ॥ नाशैरोगहरैसबपीरा ॥ जपतनिरंतरहनुमतवीरा ॥ संकटसेहनुमानछुडावै ॥ मनक्रमवचनध्यानजोलावै ॥ सबपररामतपस्वी राजा ॥ तिनकेकाजसकलतुमसाजा ॥ औरमनोरथ जोकोइलावै ॥ तासु अमितजीवनफलपावै ॥ चारोंयुगपरतापतुम्हारा ॥ है परसिद्धजगतउजियारा ॥ साधुसंतकेतुमरखवारे ॥

असुरनिकंदनरामदुलारे ॥ अष्टसिद्धिनवनिधिकेदाता ॥ असवरदीनजानकीमाता ॥ रामरसायनतुम्हरेपासा ॥ सादरतुमरघुपतिकेदासा ॥ तुम्हरेभजनरामकोपावै ॥ जन्मजन्मको दुखबिसरावै ॥ अंतकालरघुवरपुरजाई ॥ जहांजन्महरिभक्तकहाई ॥ औरदेवताचित्तनधरई ॥ हनुमतसेयसबैसुखकरई ॥ संकटहरैमिटै सबपीरा ॥ जोसुमिरैहनुमतबलवीरा ॥ जैजैजैहनुमानगुसाई ॥ कृपा-करोगुरुदेवकिनाई ॥ यह शतबारपाठकरजोई ॥ छूटै वंदिमहासुखहोई ॥ जो यहपढहनुमानचालीशा ॥ होय सिद्धसाखी गौरीशा ॥ तुलसीदाससदाहरिचेरा ॥ कीजै दासहृदयमहँडेरा ॥

दोहा–पवनतनयसंकटहरण, मंगलमूरतिरूप ॥
रामलषणसीतासहित, हृदयबसोसुरभूप ॥

इति श्रीहनुमानचालीसा सपूर्णा।



अथ संकटमोचनहनुमानाष्टक।



मत्तगयंदछंद ॥ बालसमैरविभक्षिलियो, तबतीनहुलोक भयोअँधियारो ॥ ताहिसोंत्रासभई जगको, यहसंकट-काहुसोंजातनटारो ॥ देवनिआनिकरीविनती, तबछाँडि दियोरविकष्टनिवारो ॥ कोनहिंजानतहै जगमेंप्रभु, संकटमोचननामतुम्हारो ॥ १ ॥ बालिकित्रासकपीश-बसे गिरि, जातमहाप्रभुपंथनिहारो ॥ चौंकिमहामुनि-शापदियोतबचाहियकौन विचारविचारो ॥ कैद्विजरूप-लियायमहाप्रभु, सोतुमदास कुशोक निवावारो ॥ कोन० ॥२॥ अंगदकेसँगलेनगयेसियखोजकपीशयेवैन उचारो ॥ जीवतनाबचिहौ हमसोंजु, विनासुधिलीयइ-हांपगुधारो ॥ हेरिथकोतटसिंधुसबैतब, लेंसियकीसुधि-प्राणउबारो ॥ को० ॥ ३ ॥ रावणत्रासदईसियकोतब-राक्षसिकोकहिशोकनिवारो ॥ ताहिसमैहनुमान महाप्रभु, जाय महारजनीचरमारो ॥ चाहतिसीयअशोकसों आगि सुदैप्रभुमुद्रिविषादनिवारो ॥ को० ॥ ४ ॥ बाणलग्यो उरलक्ष्मणकेतब, प्राणतजेउ सुत राव-णमारो ॥ लेगृहवैद्यसुषेणसमेत, तभीगिरिद्रोण सुवीरउपारो ॥ आनिसजीवनिहाथदईतबलक्ष्मणकेतुम-प्राण उबारो ॥ को० ॥ ५ ॥ रावणयुद्धअजानकियो

तबनागकिपाश सबैशिरडारो ॥ श्रीरघुनाथ समेतसबै-
दलसोहभयोतबसंकटभारो ॥ आनिखगेशतबैहनुमानजु,
बंधनकाटिसुत्रासनिवारो ॥ कोनहिं० ॥ ६ ॥ बंधुसमे-
तजबैअहिरावण, लैरघुनाथपतालसिधारो ॥देविहिपूजि
भलीविधिसोंबलि, देहु सबै मिलि मंत्रविचारो ॥ जाय
सहाय भये तबहीं, अहिरावण सैन्य समेत सँहारो ॥
कोन० ॥७॥ कार्य कियेबडदेवनकेतुम, वीरमहाप्रभुदेख
विचारो ॥ कौन सुसंकटमोर गरीबकूं, जो तुमसों नहिं
जातहै टारो ॥ वेगिहरोहनुमानमहाप्रभु, जे कछु संकट
होय हमारो ॥ को नहिं० ॥ ८ ॥

दोहा—लालदेहलालीलसै, अरु धरिलाललँगूर ।
वज्रदेह दानवदलन, जयजयजयकपिशूर ॥
यहअष्टकहनुमानको, विरचिततुलसीदास ।
गंगादासजुप्रेमसों, पढे होय दुखनास ॥

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृतसंकटमो-
चनहनुमानाष्टकं संपूर्णम् ।

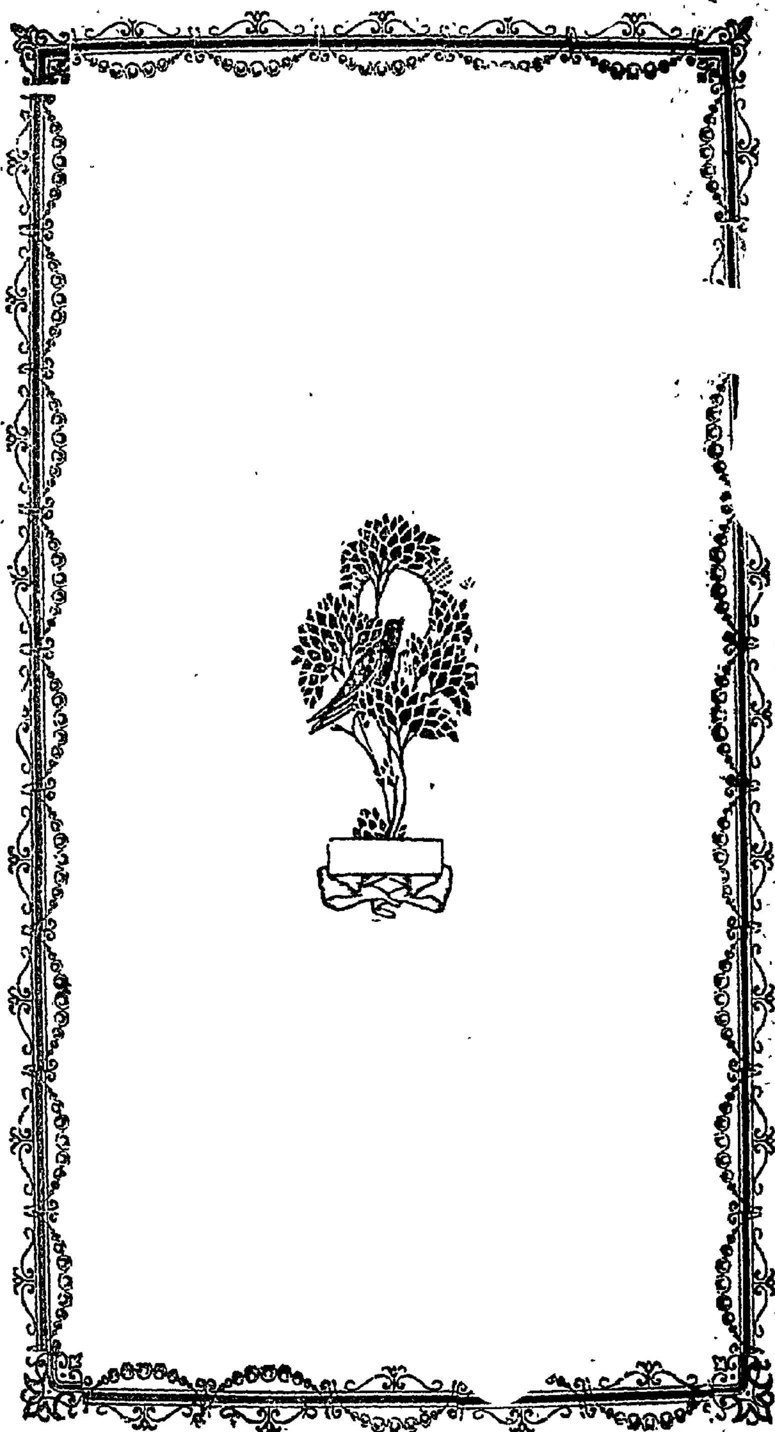
पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण—बम्बई.

पुरानि ॥ मिलहि योगी जरठ तिन्हहिं दिखाउ निर-
गुण खानि ॥ नवलनंदकुमारके व्रज सगुण सुयश
बखानि ॥ तू जो हम आदरचो सोतो नवकमलहीकी
कानि ॥ तजहिं तुलसी समुझि एह उपदेशिबेकी
बानि ॥ ५२ ॥ काहेको कहत वचन सवाँरि॥ज्ञान-
गाहक नाहिंने व्रज मधुप अनत सिधारि ॥ जुगुति धूम
बघारिवेको समुझि हैं न गँवाँरि ॥ योगिजन मुनिमंड-
लीमें जाइ रीती ढारि ॥ सुनैं तिन्हकी कौन तुलसी
जिन्हहि जीति न हारि ॥ सकति खारो कियो चाहत
मेघहूको वारि ॥ ५३ ॥ ऐसे हौंहूं जानति भृंग ॥
नाहिंने काहू लह्यो सुख प्रीति करि इक अंग ॥ कौन
भीर जो नीरदहि जेहि लागि रटत विहंग ॥ मीनजल
बिनु तलफि तनु तजै सलिल सहज असंग ॥ पीर
कछु नहिं मनहिं जाके विरह विकल भुअंग ॥ व्याध
विशिष विलोक नहिं कलगान लुब्ध कुरंग ॥ श्याम
घन गुनवारि छवि मणि मुरलि तान तरंग॥लग्यो मन
बहुभाँति तुलसी होइ क्यों रसभंग ॥ ५४ ॥ ऊधो
प्रीति करि निरमोहियनसों को न भयो दुखदीन ॥ सुनत
समुझत कहत हम सब भईं अति अप्रवीन ॥ अहिकु
रंग पतंग पंकज चोर चातक मीन ॥ वैठि इनकी पाँति

अब सुख चहत मन मतिहीन ॥ निठुरता अरु नेहकी गति कठिन परति कहीन ॥ दास तुलसी सोच नित निजप्रेम जानि मलीन ॥५५॥(राग गौरी)सुनत कुलिशसम वचन तिहारे ॥ चित दै मधुप सुनहु सोउ कारण जाते जात न प्राण हमारे ॥ ज्ञान कृपान समान लगत उर विहरत छिन २ होत निनारे ॥ अवधि जरा जोरति इठि पुनि पुनि याते तनु रहत सहत दुख भारे ॥ पावक विरह समीर श्वासतनु तूल मिले तुम्ह जारनिहारे ॥ तिनहिं निदरि अपने हितकारण राखत नयननि पुनि रखवारे ॥ जीवत कठिन मरनकी यह गति दुसह विपति व्रजनाथ निवारे ॥ तुलसिदास यह दशा जानि जिय उचित होइ सो कहो अलिप्यारे ॥ ५६ ॥ छपद सुनहु वर वचन हमारे ॥ विनु व्रजनाथ ताप नयननकी कौन हरै हरि अतर कारे ॥ कनककुंभ भरि भरि पियूषजल वरशत शक्र कल्पशत हारे ॥ कदलि सीप चातकको कारज स्वाति वारिबिनु कोउ न सँवारे॥ सब अँग रुचिर किशोर श्यामघन जेहि हृदि जलज वसत हरि प्यारे ॥ तेहि उर क्यों समात विराटवपु सो महि सरित सिंधु गिरि भारे॥ बच्यो अतिप्रेम प्रलयके वट ज्यों विपुल योग जल बोरि न पारे ॥



अथ संकटमोचनहनुमानाष्टक ।



मत्तगयंदछंद ॥ बालसमैरविभक्षिलियो, तबतीनहुलोक भयोअँधियारो ॥ ताहिसोंत्रासभई जगको, यहसंकट-काहुसोंजातनटारो ॥ देवनिआनिकरीविनती, तबछाँडि दियोरविकष्टनिवारो ॥ कोनहिंजानतहै जगमेंप्रभु, संकटमोचननामतुम्हारो ॥ १ ॥ बालिकित्रासकपीश-बसे गिरि, जातमहाप्रभुपंथनिहारो ॥ चौंकिमहामुनि-शापदियोतबचाहियकौन विचारविचारो ॥ कैद्विजरूप-लियायमहाप्रभु, सोतुमदास कुशोक निवावारो ॥ कोन० ॥२॥ अंगदकेसँगलेनगयेसियखोजकपीशयेवैन उचारो ॥ जीवतनाबचिहौ हमसोंजु, विनासुधिलीयइ-हांपगुधारो ॥ हेरिथकोतटसिंधुसबैतब, लेसियकीसुधि-प्राणउबारो ॥ को० ॥ ३ ॥ रावणत्रासदईसियकोतब-राक्षसिकोकहिशोकनिवारो ॥ ताहिसमैहनुमान महाप्रभु, जाय महारजनीचरमारो ॥ चाहतिसीयअशोकसों आगि सुदैप्रभुमुद्रिविषादनिवारो ॥ को० ॥ ४ ॥ बाणलग्यो उरलक्ष्मणकेतब, प्राणतजेउ सुत राव-णमारो ॥ लेगृहवैद्यसुषणसमेत, तभीगिरिद्रोण सुवीरउपारो ॥ आनिसजीवनिहाथदईतबलक्ष्मणकेतुम-प्राण उबारो ॥ को० ॥ ५ ॥ रावणयुद्धअजानकियो

तबनागकिपाश सबैशिरडारो ॥ श्रीरघुनाथ समेतसबै-
दलमोहभयोतबसंकटभारो ॥ आनिखगेशतबैहनुमानजु,
बंधनकाटिसुत्रासनिवारो ॥ कोनहिं० ॥ ६ ॥ बंधुसमे-
तजबैअहिरावण, लैरघुनाथपतालसिधारो ॥देविहिंपूजि
भलीविधिसोंबलि, देहु सबै मिलि मंत्रविचारो ॥ जाय
सहाय भये तबहीं, अहिरावण सैन्य समेत सँहारो ॥
कोन० ॥७॥ कार्य कियेबडदेवनकेतुम, वीरमहाप्रभुदेख
विचारो ॥ कौन सुसंकटमोर गरीबकूं, जो तुमसों नहिं
जातहै टारो ॥ वेगिहरोहनुमानमहाप्रभु, जे कछु संकट
होय हमारो ॥ को नहिं० ॥ ८ ॥

दोह–लालदेहलालीलसै, अरु धरिलाललँगूर ।
वज्रदेह दानवदलन, जयजयजयकपिशूर ॥
यहअष्टकहनुमानको, विरचिततुलसीदास ।
गंगादासजुप्रेमसों, पढे होय दुखनास ॥

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृतसंकटमो-
चनहनुमानाष्टकं संपूर्णम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना--

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस
कल्याण-बम्बई.